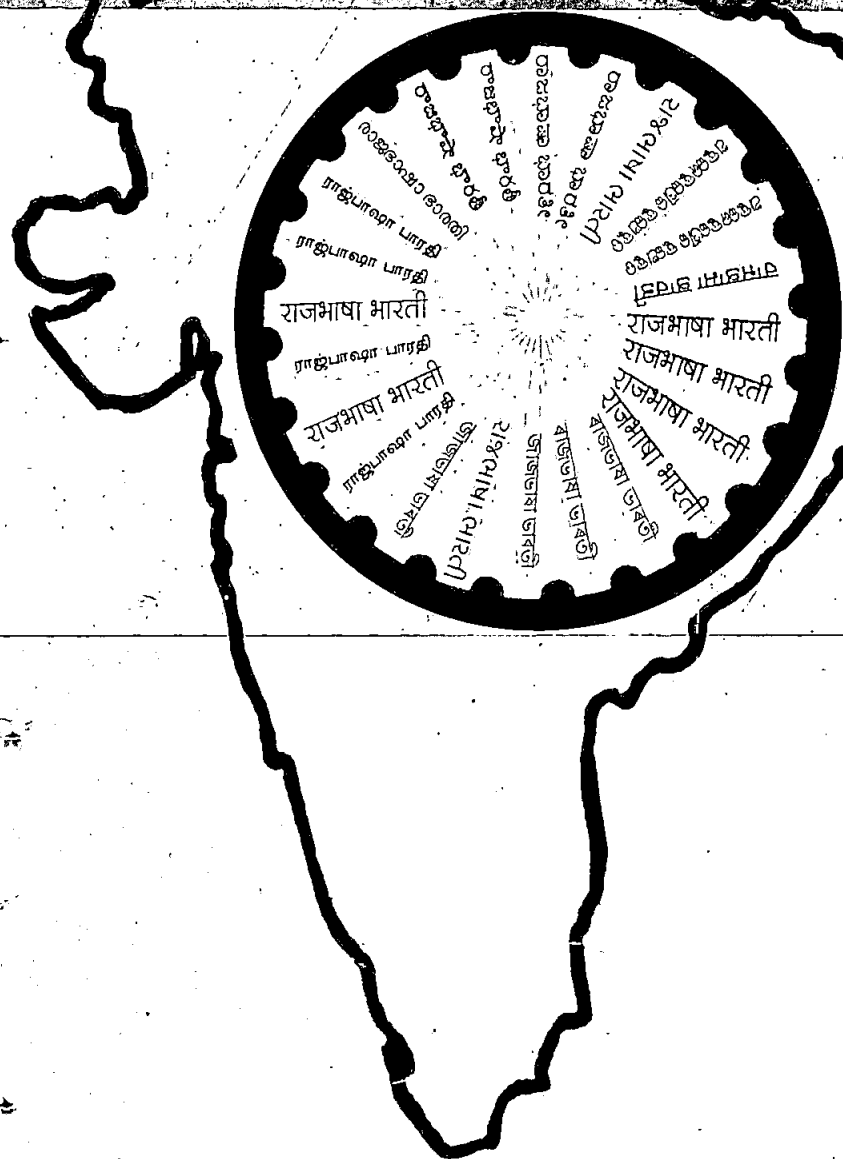


राजभाषा भारती



राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

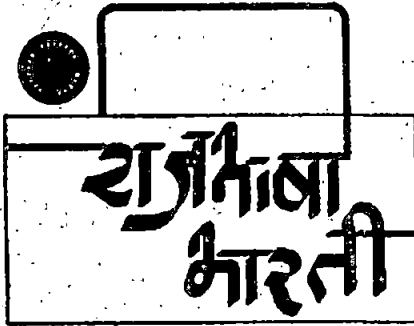
जन जन की भाषा है हिंदी



विशाखापट्टणम में दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार समारोह एवं विचार मंथन का उद्घाटन करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन जी तथा अन्य अधिकारीगण ।



विशाखापट्टणम में दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार समारोह एवं विचार मंथन में पुरस्कार वितरण करते हुए गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन जी ।



राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 34

अंक : 131

जुलाई-सितंबर, 2011

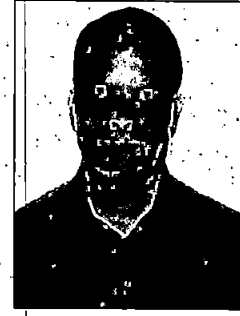
- **संरक्षक :**
ए.एन.पी. सिन्हा, भा.प्र.से.
सचिव, राजभाषा विभाग
- **परामर्शदाता :**
डी.के. पाण्डेय
संयुक्त सचिव (रा.भा.-I)
आर.के. कालिया
संयुक्त सचिव (रा.भा.-II)
- **संपादक :**
रमेश बाबू अणियेरी
निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 24643622
- **सहायक संपादक :**
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 24698054
- **निःशुल्क वितरण के लिए :**
पत्रिका में प्रकाशित लेखों
में व्यक्त विचार एवं
दृष्टिकोण संबंधित लेखक के
हैं। सरकार अथवा राजभाषा
विभाग का उनसे सहमत
होना आवश्यक नहीं है।
- **अपना लेख एवं सुझाव भेजें :**
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन, खान मार्किट,
नई दिल्ली-110003
ईमेल— patrika-ol@nic.in
- **राजभाषा के व्यापक प्रसार हेतु**
सुझाव दें एवं इनाम पाएं।

विषय-सूची	पृष्ठ
राजभाषा विभाग के नए सचिव	(iv)
I संपादकीय	(v)
II चिंतन	
1. अनुवाद कला : एक परिचय	—डॉ. सीता राम अधिकारी 1
2. राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी मौलिक अनुवाद की सार्थकता : एक अवलोकन	—देव ज्योति भट्टाचार्य 4
3. देवनागरी लिपि : समस्याएं एवं समाधान	—डॉ. कमलेश सिंह 6
4. हिंदी के प्रचार-प्रसार और राजभाषा विभाग	—देवेन्द्र उपाध्याय 8
III साहित्यिकी	
5. हिंदी के वर्चस्व कवि त्रिलोचन	—डॉ. के. मंजुला 10
6. साही का साहित्य	—डॉ. वी. कुमार 15
IV विश्व हिंदी दर्शन	
7. वैश्वीकरण और भारतीय भाषाएं	—श्री गुलाबराव हाडे 19
V पर्यावरण	
8. एक पेड़ की आत्मकथा	—एन. आर. मातोंडकर 24
VI कृषि	
9. भारतीय कृषि एवं जन-जीवन के अप्रतिम महाविज्ञानी : घाघ एवं भड्डरी	—डॉ. राज किशोर 26
VII जीव-जन्तु	
10. जीव-जन्तुओं का अजीबो गरीब संसार	—कुलदीप कुमार 32
VIII स्वास्थ्य	
11. स्वास्थ्य-बूटी "एलोवेरा"	—आर. एस. सेंगर एवं रेणु चौधरी 34
IX इतिहास	
12. भारतीय सिक्कों में नागरी लिपि	—कैलाश चंद्र गुप्त 38

विषय-सूची	पृष्ठ
X राजभाषा संबंधी गतिविधियां	
(क) कार्यक्रमों का आयोजन	
—संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण।	42
—दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार एवं विचार-मंथन विशाखापट्टणम ।	45
—केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 35वीं बैठक।	50
(ख) राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए पहलात्मक कदम	
—अंतर्विभागीय समन्वय का सुदृढीकरण ।	51
(ग) केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की उपलब्धियां	53
(घ) विभिन्न कार्यालयों की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें	54
“ग” क्षेत्र: एनएचपीसी लि. कोलकाता; दूरसंचार, कटक;	54
“क” क्षेत्र: उत्तर मध्य रेलवे, इलाहाबाद; पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर; प्रधान लेखाकार, जयपुर; केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, भोपाल; भारतीय जीवन बीमा निगम, वाराणसी;	55
(ङ) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें	57
“ग” क्षेत्र: हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि. पंचग्राम; सिंडीकेट बैंक, मणिपाल; स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया, कोलकाता;	57
“ख” क्षेत्र: पश्चिम रेलवे, राजकोट; पश्चिम रेलवे मुंबई; हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पो., मुंबई; आयकर आयुक्त, लुधियाना;	58
“क” क्षेत्र: मुख्य आयकर आयुक्त, इलाहाबाद; पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा; बैंक नोट मुद्रणालय, देवास; पंजाब नेशनल बैंक, नई दिल्ली; राष्ट्रीय रोग नियंत्रक केंद्र जगदलपुर; एन एच पी सी लि., चम्बा; दिल्ली (उपक्रम)	60
(च) कार्यशालाएं	65
“ग” क्षेत्र: दूरदर्शन, हैदराबाद; आकाशवाणी, कोलकाता; उप रेशम कीट, कुन्नूर; दूरसंचार, दावणगेरे; केंद्रीय रेशम बोर्ड, कोलकाता; प्रधान महालेखाकार ओडिशा; आकाशवाणी, कड़पा; जिपमेर, पुदुचेरी; भारी पानी संयंत्र, अनगुल; भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन;	65
“ख” क्षेत्र: हवाई अड्डा, गोवा; भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक रोड; गोला बारूद फैक्टरी, पुणे;	68
“क” क्षेत्र: न्यूक्लियर पावर कार्पो. ऑफ इंडिया लि. कैगा; बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, बालाघाट; राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र जगदलपुर; एम एस एम ई विकास संस्थान, करनाल; राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान नई दिल्ली; दूरदर्शन राजकोट; हवाई अड्डा, जयपुर; केंद्रीय तस्तर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची;	70
(छ) हिंदी दिवस	75
“ग” क्षेत्र: प्रधान महालेखाकार, चेन्नई; टेलीफोन, चेन्नई; आकाशवाणी चेन्नई; जनगणना कार्य निदेशालय, तिरुवनंतपुरम; ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद; आकाशवाणी, हैदराबाद; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, विजयवाड़ा; दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, तृशूर; कंयर बोर्ड, कोच्ची; मुख्य आयकर आयुक्त, गुवाहाटी; एन.टी.पी.सी., अंगुल; आकाशवाणी इम्फाल; कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम; पावर ग्रिड कार्पो. ऑफ इंडिया लि., जम्मू; आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, भुवनेश्वर; आकाशवाणी, कोलकाता; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कोलकाता; आकाशवाणी, गान्तोक; बोंगाइगांव रिफाइनरी, चिराग;	75

विषय-सूची	पृष्ठ
“ख” क्षेत्र: आकाशवाणी, नागपुर; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, मुंबई; गोला बारूद फैक्टरी, पुणे; हवाई अड्डा गोवा; भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक रोड; केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला पुणे; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, गोवा; दूरदर्शन केंद्र, मुंबई; दूरदर्शन, नागपुर; मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर; भारतीय मास्यिकी सर्वेक्षण, गोवा; रेलवे स्टाफ कालेज, बड़ोदरा; ग्रेफ केंद्र, पुणे; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़;	84
“क” क्षेत्र: दूरदर्शन, नई दिल्ली; पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर; मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, अम्बाला; परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र जयपुर; कर्मचारी राज्य बीमा निगम, फरीदाबाद; पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, नई दिल्ली; क्षेत्रीय उत्पादन अनुसंधान केंद्र, रांची; केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली; महानिदेशालय, भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल, नई दिल्ली; मुख्य आयकर आयुक्त भोपाल; बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, भंडारा; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, जयपुर; दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र, अकोला; कोयला खान भविष्य निधि, रांची; एन एच पी सी लि., चम्बा; 88 बटा. केरिपुबल, नई दिल्ली; बैंक ऑफ इंडिया, हजारीबाग; खान सुरक्षा महानिदेशालय, ग्वालियर; खान सुरक्षा महानिदेशालय, उदयपुर; केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नई दिल्ली; सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम विकास संस्थान, पटना; पूर्ति प्रभाग वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, नई दिल्ली; आकाशवाणी, पटना; उत्तर मध्य रेलवे, इलाहाबाद;	89
XI संगोष्ठी/सम्मेलन	99
नराकास, अमृतसर; पश्चिम रेल, राजकोट; पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, नई दिल्ली;	
XII पुरस्कार/प्रतियोगिताएं	101
आकाशवाणी, पणजी; बैंक ऑफ इंडिया, नई दिल्ली; उप रेशम कीट प्रजनन केंद्र, कुन्नूर; एच एल एल, तिरुवनंतपुरम;	
XIII प्रशिक्षण	
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, कोलकाता;	103
XIV कार्यालय ज्ञापन	105
XV भेंटवार्ता	113
XVI पाठकों के पत्र	117

राजभाषा विभाग के नए सचिव



श्री ए.एन.पी. सिन्हा, भा.प्र.से. (बिहार : 1974) ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सचिव के रूप में 03 अक्टूबर, 2011 को अपना कार्यभार ग्रहण किया।

श्री एन.एन.पी. सिन्हा, बिहार से हैं। आपने पटना साइंस कॉलेज, पटना से बी एस सी (आनर्स) और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, यू.के. से एमएससी की उपाधि प्राप्त की। अपने प्रथम प्रयास में वे भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिए चुने गए।

श्री सिन्हा भारतीय प्रशासनिक सेवा के बिहार संवर्ग से हैं। आपने बिहार सरकार के महत्वपूर्ण विभागों में शीर्ष पदों पर कार्य किया। इसके पश्चात् आपने लगभग 5 वर्षों तक केंद्र सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय और योजना आयोग में 2 वर्षों तक कार्य किया। आप 3 वर्षों से ज्यादा पंचायती राज मंत्रालय के सचिव भी रहे।

आपने खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय में एकीकृत खाद्य कानून बनाने तथा मॉडल स्टेट एक्साइज पालिसी/कराधान/अधिनियम/नियम बनाने में अग्रणीय भूमिका निभाई। खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र के लिए “कल्पनादृष्टि-2015, कार्यनीति और कार्य योजना” तथा राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी, उद्यमिता और प्रबंध संस्थान (NIFTEM) का विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने में मुख्य भूमिका निभाई।

योजना आयोग में 11वीं योजना का दस्तावेज तैयार करने और शिक्षा क्षेत्र के व्यापक विस्तार एवं रिफार्म्स पर योजना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपने एकाउंटिंग सुधार और वित्तीय प्रबंधन प्रणाली का रोडमैप तैयार करने में अग्रणीय भूमिका निभाई। साथ ही कई महत्वपूर्ण विषयों पर नीति विषयक पेपर बनाए। राष्ट्रमंडल खेल (CWG) के संदर्भ में दिल्ली को विश्व-स्तरीय सिटी बनाने का ब्लू प्रिंट बनाया।

भारतीय प्रशासनिक सेवा के इन कर्मठ प्रशासक के कुशल मार्गनिर्देशन और नेतृत्व में राजभाषा विभाग हिंदी के प्रसार को प्रभावी बनाने में समर्थ होगा।

—संपादक



साहित्य और जीवन के संबंध तथा कला के प्रयोजन के बारे में विगत कई दशकों से चर्चाएं चल रही हैं। काल, स्थान, रचना आदि को पहले से भिन्न दृष्टि से देखने वाली नई साहित्य सर्जनशैली आज की विशिष्टता है। “राजभाषा भारती” के इस अंक में ऐसी रचनाएं समाविष्ट हैं, जिनकी सर्जनशैली विलक्षणयुक्त है।

“राजभाषा भारती” के इस अंक में “चिंतन” स्तंभ के अंतर्गत “अनुवाद कला: एक परिचय” लेख में डॉ. सीताराम अधिकारी ने यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति की अकुलाहट ने ही अनुवाद को जन्म दिया। अपने विचारों एवं भावों को दूसरे तक पहुँचाने के मनुष्य के प्रयासों से अनुवाद फला-फूला। इसी स्तंभ में प्रकाशित “राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी मौलिक अनुवाद की सार्थकता: एक अवलोकन” लेख में यह व्यक्त किया गया है कि राजभाषा कार्यान्वयन में मूलभूत प्रगति हुई है, परंतु अब भी अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सके। डॉ. कमलेश सिंह का “देवनागरी लिपि : समस्याएं एवं समाधान” नामक लेख लिपियों में पाई जाने वाली कुछ समस्याओं पर प्रकाश डाल रहा है। “चिंतन” स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित अंतिम लेख “हिंदी के प्रचार-प्रसार और राजभाषा विभाग” लेख में श्री देवेन्द्र उपाध्याय ने राजभाषा विभाग के गठन के बाद, हिंदी के प्रचार-प्रसार में हुए सार्थक परिणाम का परिचय कराया है। “साहित्यिकी” स्तंभ में डॉ. के. मंजुला के लेख में मानवतावादी, समाजवादी न्याय और स्वतंत्रता तथा सत्य के पक्षपाती त्रिलोचन की सृजनात्मक शक्ति पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला गया है। डॉ. वी. कुमारन् “साही का साहित्य” शीर्षक लेख में सामाजिक समस्याओं के सूक्ष्म विश्लेषण में, उसके सम्प्रेषण में विजयदेव नारायण साही के काव्यों की भूमिका पर प्रकाश डाल रहे हैं। “विश्व हिंदी दर्शन” स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित “वैश्वीकरण और भारतीय भाषाएं” शीर्षक लेख में श्री गुलाबराय हाडे बदलते परिवेश में, भारतीय समाज के आत्मसंगठन और आत्म संघर्ष की प्रक्रिया के दौरान भारतीय भाषाओं की भूमिका पर गहन मनन चिंतन कर रहे हैं। हमें आशा है “पर्यावरण स्तंभ” के अंतर्गत, प्रस्तुत श्री एन. आर. मातोंडकर की रचना “एक पेड़ की आत्मकथा” पाठकों को जरूर आकर्षित करेगी।

“कृषि” स्तंभ के अंतर्गत प्रस्तुत डॉ. राज किशोर का “भारतीय कृषि एवं जन-जीवन के अप्रतिम महाविज्ञानी : घाघ एवं भड्डरी” शीर्षक लेख भारतीय

कृषि, ऋतुओं, ज्योतिष, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सामाजिक नीतियों एवं आचार-विचार तथा शकुन-अपशकुन आदि विषयों के महाविज्ञानी घाघ एवं भड्डरी के बारे में है। “जीव-जन्तु” स्तंभ में प्रस्तुत श्री कुलदीप कुमार का लेख हमें “जीव-जन्तुओं के अजीबो गरीब संसार” में ले जा रहा है। “स्वास्थ्य” स्तंभ के अंतर्गत “स्वास्थ्य-बूटी एलोवेरा” शीर्षक ज्ञानवर्धक लेख स्वस्थ शरीर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के लिए वनस्पतियों के योगदान के बारे में है। “भारतीय सिक्कों में नागरी लिपि” शीर्षक श्री कैलाशनाथ गुप्ता के लेख में नागरी लिपि का किस प्रकार भारतीय सिक्कों में प्रयोग शुरू हुआ, इसकी कहानी आकर्षक ढंग से अंकित है।

“राजभाषा भारती” के इस अंक में अन्य नियमित स्तंभ भी हैं। आपके उपयोगी सुझाव एवं सहयोग की प्रतीक्षा रहेगी।

सर्वप्रथम उल्लेखनीय है कि अक्टूबर-दिसंबर, 2010, जनवरी-मार्च, 2011 तथा अप्रैल-जून, 2011 अवधि के अंक अपरिहार्य कारणों से हम प्रकाशित नहीं कर सके। अतः इस अंक को जुलाई-सितंबर, 2011 के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। भविष्य में हर तिमाई का अंक उसी तिमाही में पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास रहेगा।

—संपादक

अनुवाद कला : एक परिचय

—डॉ. सीताराम अधिकारी*

किसी एक भाषा की सामग्री का दूसरी भाषा में रूपान्तर अनुवाद कहलाता है। एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद का कार्य है। संभवतः मानव जन्म के साथ ही अनुवाद का जन्म हुआ। मनुष्य के भावनाओं की अभिव्यक्ति की अकुलाहट ने ही अनुवाद को जन्म दिया। अपने विचारों एवं भावों को मनुष्य दूसरे तक पहुंचना चाहता है और इस चाह के प्रयास से अनुवाद आज फला फूला है।

अनुवाद कला का प्रारंभ किस काल से हुआ, यह कोई नहीं कह सकता। लिखित रूप में अनुवाद का समय आंका जा सकेगा, किंतु अनुवाद का मौखिक रूप बहुत पुराना है।

भारत में अनुवाद की परंपरा पुरानी है। अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है 'पुनः कथन' अर्थात् पहले कही गई बात को फिर से कहना। अनुवाद में हम एक भाषा में कही गई बात को उसके कहे जाने के बाद दूसरी भाषा में कहते हैं, दूसरी भाषा में पुनः उसी बात को प्रस्तुत करते हैं। एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना जिससे पहले कथन का ठीक उसी अर्थ में दूसरी भाषा लोग ग्रहण कर सकें। अनुवाद में किसी भाषा में व्यक्त विचारों की दूसरी भाषा में यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति होती है। यहां यथासंभव कहने का तात्पर्य यह है कि श्रोत भाषा में व्यक्त भावों एवं विचारों को लक्ष्य भाषा में अधिक से अधिक समान अभिव्यक्ति देना होता है।

लिखित अनुवाद में लिखी गई रचना को अन्य भाषा में फिर से लिखना अर्थात् रूपान्तरण करना होता है। संस्कृत साहित्य में अनुवाद का प्रयोग मिलता है। वेद, पुराण आदि में अनुवाद शब्द का प्रयोग 'पुनः कथन' के अर्थ में ही मिलता है। कय्यट ने महाभाष्यकार की टीका में लिखा है

'यदा प्रतियत्न प्रमाणांतरावगत मत्यर्थ कार्यान्तरार्थ प्रयोक्ता प्रतिपद्यते तदानुवादो भवति'—अर्थात् किसी और प्रमाण से विदित बात को ही दूसरे कार्य के लिए किसी के द्वारा श्रोता से जब कहा जाता है तब अनुवाद होता है। मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार कुल्लुक भट्ट ने भी अनुवाद का अर्थ 'पुनः कथन' ही माना है।

भावों की अभिव्यक्ति के दो माध्यम हैं—क्रियात्मक अभिव्यक्ति और भाषिक अभिव्यक्ति। क्रियात्मक अभिव्यक्ति में मनुष्य अपने भावों को शारीरिक क्रिया के माध्यम से किसी दूसरे मनुष्य को अभिव्यक्त करता है। जब कोई खुश होता है तो उसके चेहरे में एक चमक आ जाती है, वह हंसमुख होता है। देखने वाले समझ जाते हैं कि आज वह खुश है। जब कोई दुखी होता है तो उसकी अभिव्यक्ति से ही दूसरों को पता चल जाता है कि यह व्यक्ति दुखी है। उसके चेहरे में चमक नहीं होती। वह लोगों से बातें नहीं करना चाहता इत्यादि। क्रोधित होने पर किसी का चेहरा लाल हो जाता है; वह कांपने लगता है और कुछ बडबडाने लगता है। शारीरिक क्रियाएं अभिव्यक्ति में सहायक बनती हैं। यहां कोई भाषा की जरूरत नहीं पड़ती। कोई भी भाषा बोलने वाले इस अभिव्यक्ति को समझ सकते हैं। संसार के किसी भी कोने का व्यक्ति इसे सहज ही अर्थ ग्रहण कर सकता है, चाहे वह विद्वान हो या अनपढ़। अतः क्रियात्मक अभिव्यक्ति में किसी भाषा की जरूरत नहीं पड़ती। यह सहज और सरल अभिव्यक्ति है। इस प्रकार की अभिव्यक्ति को हम संकलन कर भविष्य के लिए नहीं रख सकते अर्थात् इन अभिव्यक्तियों का संचय नहीं होता।

भाषिक अभिव्यक्ति इतनी सहज नहीं होती। इस प्रकार की अभिव्यक्ति के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता

* कुबेरलेखा पो. मोतबंग, मणिपुर-795107

है। अपनी मातृभाषा की आंशिक अभिव्यक्ति के लिए भी एक बालक को दो से अधिक वर्ष लगते हैं। अपनी मातृभाषा की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए व्यक्ति को बहुत परिश्रम करना पड़ता है। फिर अन्य भाषा की बात तो दूसरी ही है। उसमें पूरी तरह दक्षता प्राप्त करना कितना मुश्किल कार्य है; वही जानता है जो इस कार्य में लगा है। किसी दूसरी भाषा के मौखिक कथन को अनुवाद कर अन्य किसी को समझाने का कार्य तक इतना सहज नहीं होता। फिर एक रचना को हबहु रूप में, भावों एवं विचारों को समेटे दूसरी भाषा में अनुवाद संघर्षपूर्ण कार्य है।

अनुवाद का संबंध एक भाषा विशेष की सुरक्षित सामग्री को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने से होता है। हम अन्य समाज की संस्कृति, सभ्यता आदि से परिचित होना चाहते हैं, जानना चाहते हैं कि वे हमसे कितने आगे या पीछे हैं। उनकी संस्कृति, विचार हमसे कितनी भिन्न हैं। उक्त समाज ने प्रगति के किस पद्धति को अपनाया? इन सभी प्रश्नों के उत्तर के लिए भी अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है।

अनुवाद के कई प्रकार हैं। प्रकृति के आधार पर इनके निम्न दो मुख्य प्रकार हैं।

शब्दानुवाद—इस प्रकार के अनुवाद में मूल रचना के प्रत्येक शब्द का अनुवाद होता है। जैसे अंग्रेजी वाक्य I have some work at home का हिंदी में 'मुझे घर में कुछ काम है' होगा जो अर्थपूर्ण है। किंतु It is raining cats and dogs का 'बिल्ली और कुत्ते की वर्षा हो रही है' होगा। यहां वाक्य का अर्थ नहीं निकाला जा सकता क्योंकि हिंदी का गठन कुछ अलग तरीके से होता है।

भावानुवाद में भावों और विचारों को कभी-कभी सटीक रूप में प्रस्तुत कर पाना संभव नहीं होता। भाषा का रूप भी बदल सकता है। अनुवाद में श्रोत भाषा का गंध रहता है। कभी-कभी शब्दानुवाद हास्यास्पद हो जाता है।

भावानुवाद—यहां शब्द, वाक्य आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है। मूल रचना के भाव पर ही विशेष महत्व दिया जाता है और अनुवादक अपने अनुसार उस भाव को अनुवाद कर देता है। शब्दानुवाद में किसी रचना के शरीर पर ध्यान न देकर उसकी आत्मा पर ही ध्यान रहता है। इसमें कभी वाक्य का अनुवाद होता है तो कभी पैराग्राफ का ही।

भावानुवाद में मूल लेखक का व्यक्तित्व पीछे रह जाता है और अनुवादक का व्यक्तित्व उभर आता है। अनुवादक अपनी भाव सम्पदा, विचार सम्पदा तथा शैली से पाठक को आक्रान्त कर लेती है। फिर भी आज शब्दानुवाद से बढ़कर भावानुवाद को अनुवाद की उपयोगी पद्धति माना जाता है। इसमें शब्द-शब्द पर अनुचित उलझनों से मुक्ति मिलती है और यह दूसरी भाषा के महत्वपूर्ण भावों एवं विचारों को अपनी भाषा में लाता है।

विषय का ज्ञान होना अनुवादक के लिए बहुत ही आवश्यक है। विषय के सही ज्ञान के बिना अनुवादक मूल सामग्री को भलिभांति नहीं समझता और भयंकर भूल कर देता है। शब्दानुवाद या भावानुवाद दोनों ही कई बार व्यर्थ हो जाते हैं। इस स्थिति में रूढ़ अर्थ की आवश्यकता पड़ती है। शब्दानुवाद से ही किसी तरह अनुवाद तो हो जाता है किंतु, अर्थ बिल्कुल अलग हो जाता है। जैसे 'सिल्वर फिश' (Silver Fish) को कोई 'रजत मछली' कह दें तो बड़ी भूल होगी क्योंकि सिल्वर फिश कोई मछली नहीं होती।

अनुवाद करते समय यह ध्यान रहना चाहिए कि उसमें शब्दानुवाद और भावानुवाद दोनों ही आ जाएं। इससे अनुवाद में एक मिठास आ जाती है। यदि भावानुवाद के चक्कर में ऐसे शब्द आ गए जो सटीक अर्थ न दे सकें तो उस अनुवाद में मिठास नहीं रहती। एक जापानी कवि के हाडकू का हिंदी अनुवाद उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है

The Old Pond
A Frog jumps in
Plop.

(Zenin—English literature and oriental classics,
p-207)

हिंदी कवि शमशेर बहादुर सिंह द्वारा किया गया अनुवाद—

एक पुराना तालाब
और उछलते मेढक की आवाज
पानी के भीतर (बीच)।

कवि अज्ञेय द्वारा किया गया अनुवाद—

'ताल पुराना
कूदा दादूर
गुडूप।

इन दोनों अनुवादों में से दूसरा सटीक लगता है क्योंकि इसमें ध्वनि, शब्द और अर्थ में मूल से साम्य रखा गया है।

अतः अनुवाद का स्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा और विषय का अच्छा जानकारी होना अनिवार्य होता है। इसके पास इन तीनों के सन्दर्भ ग्रंथ भी रहने चाहिए। सबसे पहले उसे आधार सामग्री को भलिभांति समझ लेना चाहिए। यहाँ उसे विभिन्न कोशों की सहायता लेने की जरूरत पड़ती है। सामग्री को समझ लेने के बाद उसे शब्दानुवाद या भावानुवाद (जो अपेक्षित होगा) करना चाहिए। अंत में अनुवादक को देखना चाहिए कि मूल का ठीक अनुवाद में आ जाए।

मनुष्य का स्वभाव स्वार्थी होता है। इस स्वार्थ की पूर्ति के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। अंग्रेज भारत में व्यापार के उद्देश्य से आए। बाद में उन्होंने यहाँ के प्रशासन पर भी अधिकार जमाने की योजना बनाई। इसके लिए उन्होंने भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों को अंग्रेजी अनुवाद करवाया और अंग्रेजों के ग्रन्थों का भारतीय भाषाओं में। अनुवाद ही नहीं अंग्रेजी ने यहाँ की विभिन्न भाषाएँ भी सीख लीं। उन्होंने सबसे पहले शैक्षिक पद्धति को बदलने के लिए अंग्रेजी पुस्तकों को हिंदी, बंगाली, उर्दु आदि भाषाओं में अनुवाद करवाया। जब देश गुलाम हुआ तो यहाँ के लोगों को आक्रांताओं की संस्कृति, सभ्यता, विचार आदि जानने के लिए भारतीयों को अंग्रेजी सीखनी पड़ी। यदि भारतीय इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह पता लगता है कि विदेशी भाषा को सीखने का और अनुवाद करने का कार्य पुराने समय से चला आ रहा है।

आज अनुवाद प्रयोजन की दृष्टि से बहुमुखी और बहुआयामी बन चुका है। अनुवाद अन्य भाषा और मानव समुदाय में संचित विकसित ज्ञान विज्ञान के आयात का माध्यम बन गया है। यह आज देश विदेश के राजनीतिक जीवन की अनिवार्यता भी बन गया है।

अनुवाद का भारत जैसे देश में बहुत ही महत्व है। भाषिक दृष्टि से यदि हम देखें तो यहाँ भाषा को लेकर

समस्या ही समस्या है। हिंदी राष्ट्रभाषा है किंतु अंग्रेजी ने अपना स्थान आज तक नहीं छोड़ा। इसके अलावा वह और मजबूत रूप धारण कर रही है। हिंदी राष्ट्रभाषा है पर देश में ज्यादातर कामकाज अंग्रेजी में होता है। भारत के दक्षिण प्रदेशों में जाएं तो हिंदी 'अनिमत्रित अतिथि' की तरह जी रही है। पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी 'अवहेलित हिंदी' के रूप में बैठी है। उत्तर और मध्य भारत के कई राज्य आक्सीजन लगाकर इसे बचाए हुए हैं। हिंदी के विद्वान नाम और अर्थ कमाने के लिए ही हिंदी भाषा को अपना रहे हैं। उन्हें हिंदी के विषय में कहीं भाषण देना पड़े तो अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का प्रयोग करते हैं। वे अंग्रेजी मिश्रित हिंदी बोलने का मजा लेते हैं और यह भी साबित करना चाहते हैं कि भारत में अंग्रेजी जानने वाले हिंदी विद्वानों की कमी नहीं है। हिंदी बोलते-बोलते यदि वे अंग्रेजी के दो चार शब्द उसमें फिट करने में सक्षम हो गए तो वे Inferiority Complex के शिकार नहीं होंगे।

वास्तव में कहें तो अंग्रेजी से अनुवाद के बिना भारत में बहुत सारे कार्य नहीं होते। प्रगति की ओर बढ़ते विश्व के साथ अपने को भी ले जाने के लिए यह आवश्यक हो गया है। यदि हम मातृभाषा या राष्ट्रभाषा तक ही सीमित रह गये तो हमें विश्व की जानकारी नहीं होगी और अपना कुछ विश्व को भी नहीं दे पाएंगे। यहाँ यह बात नहीं कि हमें अंग्रेजी ही सीखनी चाहिए, लेकिन यह तो सच है कि संसार के विकसित देशों की भाषाओं से अनुदित पुस्तकों के ज्ञान के बिना हम विश्व के प्रगति की पूरी जानकारी नहीं पा सकते। विश्व की महान कृतियों के अनुवाद से अन्य भाषा भाषी लोगों को बहुत फायदा मिलता है।

संदर्भ—

1. प्रो. राजमणि शर्मा—अनुवाद विज्ञान, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2004
2. भोलानाथ तिवारी, ओमप्रकाश गाबा—अनुवाद की व्यवहारिक समस्याएँ, शब्दकार, दिल्ली, 1999
3. रीतारानी पालीवाल—अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2004

राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी मौलिक अनुवाद की सार्थकता : एक अवलोकन

—देवच्योति भट्टाचार्य, भा. भू. स.*

भूमिका :

हिंदी संसार में दूसरी सबसे बड़ी भाषा का दर्जा हासिल किए है। पहला स्थान चीनी भाषा, दूसरा स्थान हिंदी तथा तीसरा स्थान अंग्रेजी का है। भारत के बाहर करीब 170 विश्व विद्यालयों में हिंदी का अध्ययन हो रहा है। अमेरिका, सोवियत संघ, इंग्लैंड, चीन, जापान, इटली, फ्रांस, युगोस्लाविया, जर्मनी तथा अनेक यूरोपीय एवं एशियाई देशों में हिंदी पठन-पाठन की उत्तम व्यवस्था है। पर दुःख की बात यह है कि हमारे अपने देश में हिंदी प्रचार-प्रसार की कुछ समस्याएं हैं। भारत जैसे एक विशाल राष्ट्र के लिए यह बहुत स्वाभाविक है। क्योंकि हमारे देश में अनेक भाषा-भाषी एवं संस्कृतियों से जुड़े हुए हैं। विभिन्न प्रदेशों की आंचलिक भाषाओं में अनेक भिन्नताएं हैं। हिंदी वलय में भी क्षेत्रीय भाषा एक समान नहीं है। जिसके कारण राजभाषा कार्यान्वयन में कुछ समस्या होती हैं, परन्तु एक प्रांत से दूसरे का संबंध जोड़ने के लिए एक सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता है। हिंदी ही ऐसी एकमात्र भाषा हो सकती है। स्वाधीन भारत में विकास एवं स्थिरता कायम रखने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है। इसलिए देश के महान विचारकों एवं दार्शनिकों ने काफी चिंतन तथा मनन करने के बाद हिंदी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया। देश की स्वतंत्रता को स्थिर बनाए रखने के लिए हमारी राष्ट्रभाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः राजभाषा कार्यान्वयन हमारा संवैधानिक दायित्व है एवं इसकी सार्थकता हमारी निष्ठा पर निर्भर करती है। हमारी संस्कृति तब तक अपूर्ण है, जब तक हम अपनी राष्ट्रभाषा को प्रतिष्ठित करने में असमर्थ हैं।

आज हिंदी माध्यम से विज्ञान, तकनीकी, व्यवसाय, अर्थशास्त्र, समुद्र विज्ञान आदि अनेक विषयों पर उच्च

स्तरीय शिक्षा हासिल हो रही है। अब तक पर्याप्त हिंदी शब्दावली समृद्ध हो चुकी है। हिंदी में मूल शब्दों की संख्या करीब दो लाख पचास हजार है। हिंदी में हर अर्थ के लिए अलग-अलग शब्द हैं। अंग्रेजी में सही उच्चारण के लिए शब्दकोश की आवश्यकता पड़ती है, पर हिंदी में केवल अर्थ देखने के लिए ही शब्दकोश की जरूरत पड़ती है। अभियंत्रणा से लेकर चिकित्सा-विज्ञान तक अनेक ग्रंथ अब हिंदी में भी उपलब्ध होने लगे हैं। अफसोस की बात यह है कि, कुछ लोग केवल स्वार्थसिद्धि के लिए अधूरे मन से हिंदी को स्वीकार करने की बात करते हैं। परन्तु आम आदमी को ज्ञान-विज्ञान की बारीक उपलब्धियों को समझाने के लिए सरल राजभाषा अंग्रेजी से ज्यादा प्रभावशाली है। देश के प्रत्येक कोने में हिंदी सरलता से समझी जाती है, इसकी लिपि वैज्ञानिक एवं सुबोध है। जैसे यह बोली जाती है वैसे ही लिखी जाती है। हिंदी में इतना प्रचार-प्रसार होने के बावजूद भी यदि हमें पूरी तरह अंग्रेजी पर आश्रित होना पड़े तो यह दिवालियापन से कम नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि राजभाषा कार्यान्वयन में मूलभूत प्रगति हुई है। परन्तु अब भी अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सके। इस दिशा में हमारे प्रयास निरन्तर जारी हैं।

कुछ महत्वपूर्ण विषय :

14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान निर्मात्री सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाने का निश्चय किया। हिंदी न केवल एक या कुछ प्रांतों में बोली तथा समझी जाती है बल्कि सम्पूर्ण भारत में यह एक ऐसी भाषा है जो देश के उत्तरी कोने से दक्षिण तक और सुदूर पूर्व से पश्चिम तक के भारतवासी द्वारा समझी जाती है। इसी महत्वपूर्ण विशेषता को ध्यान में रखकर हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में हम सबने स्वीकार किया है। भारत की जनसंख्या

*निदेशक (स.त.) पू.त.प्र.-II, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, विशाखापट्टनम-18

करीब 120 करोड़ हैं, जिनमें से 80% लोग हिंदी बोलने, पढ़ने या लिखने जानते हैं। हिंदी भारत की अन्य भाषाओं की प्रतियोगी या बाधक नहीं है, पर सहायक है। इसलिए गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने क्षेत्रीय भाषाओं को प्रांत-प्रांत की रानी तथा हिंदी को आधुनिक भाषाओं के हार की “मध्याणी” कहा है। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने कहा था कि राष्ट्रीय मेल और राजनैतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी प्रचार आवश्यक है। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के विचारों में “भारतीय लोग, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है। आचार्य डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के गौरवमय पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए काफी प्रयास किए। उन्होंने अनेक प्रमाणिक हिंदी ग्रंथ लिखे। देश में ही नहीं, विदेशों में भी इन ग्रंथों की प्रशंसा हुई तथा देश की कई भाषाओं में इनके अनुवाद प्रकाशित हुए। अतः देश के स्वतंत्र अस्तित्व एवं स्वाभिमान के लिए हिंदी की रक्षा करना अत्यन्त जरूरी है। हमारे देश की स्वतंत्रता तथा अखण्डता को स्थिर रखने के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह काम हमारा संवैधानिक दायित्व है, विभिन्न सरकारी कार्यों में हम जिस तरह लक्ष्य हासिल कर रहे हैं, उसी तरह हिंदी प्रचार-प्रसार में भी प्रयासरत होना पड़ेगा।

तकनीकी अनुवाद की आवश्यकता :

प्राचीन काल से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कर चुका है। हिंदी तकनीकी शब्द भंडार का इतिहास इस बात का प्रमाण है। इस क्षेत्र में ज्ञान का विस्तार दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अतः तकनीकी शब्दों के अनुवाद एवं अनुसंधान निरन्तर होने की आवश्यकता है। तकनीकी शब्दों के अनुवाद के समय हिंदी के साथ-साथ यदि अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को भी उचित रूप से चयन किया जाता है तो शब्द भंडार और भी समृद्ध होंगे। यह कार्य पारस्परिक तालमेल तथा समन्वय के साथ भाषायी संस्कृति के विकास के लिए भी आवश्यक है। तकनीकी अनुवाद कठिनाई एवं क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग राजभाषा कार्यान्वयन के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। कहीं-कहीं तकनीकी शब्दावली में कुछ अव्यावहारिक शब्दों की उत्पत्ति हो जाती है। जिससे अनुवाद समझना कठिन होता है। भाषाओं पर अच्छी पकड़

तथा विषय-वस्तु पर सही जानकारी न होने के कारण अनुवाद प्रभावित होता है। विषय समझने के लिए अनुवादक को उस विषय से संबंधित विशेषज्ञ की सहायता लेनी चाहिए, क्योंकि विषय ज्ञान के बिना अनुवाद, व्यावहारिक तथा यथार्थ नहीं होता है, तकनीकी शब्दों को हिंदी में ढालने के लिए वैज्ञानिक विशेषज्ञों के साथ-साथ भाषाविदों को भी आवश्यक भूमिका निभानी पड़ेगी। इस समवेत प्रचेष्टा में एक ऐसा लचीला एवं रसीला शब्द का निर्माण होगा जो प्रादेशिक सीमा को पार करके सार्वजनिक तथा राष्ट्रीय परिवेश में प्रतिष्ठित हो सके। उदाहरण के लिए कुछ शब्द जैसे : सक्रिय ज्वालामुखी, जलीय पर्यावरण, तटीय भूतकनीकी, महाद्वीपीय निक्षेप, भारी खनिज संन्द्रण, अष्णजलीय खनिज, विलयन धातुकर्म, सागर ताप ऊर्जा रूपान्तरण, अनुसंधानी जहाज, विभ्रंश घाटी, मौसम रेखाचित्र आदि शब्द समुद्र सर्वेक्षण में प्रचलित एवं प्रतिष्ठित हो चुके हैं। विकास तथा अनुसंधान के फलस्वरूप विश्व के कोने-कोने में विभिन्न भाषाओं में प्रति दिन नए शब्दों का जन्म होता है। इन शब्दों की जानकारी मूल रूप से हिंदी में मौजूद नहीं है। इसलिए नित्य परिवर्तनशील संसार में तकनीकी अनुवाद की भूमिका अत्यन्त आवश्यक है।

डॉ. जयंत नालीकर जैसे विद्वानों का कहना है कि “थोड़े से अभ्यास से विज्ञान पर एक सीमा तक हिंदी में अच्छा अनुवाद हो सकता है। क्योंकि आम जनता के विज्ञान पिपासा को बढ़ाने के लिए सरल एवं सुगम वैज्ञानिक लेख का सहारा लेना बहुत ही जरूरी है। किंतु अफसोस यह सपना अभी तक पूरा नहीं हो सका।” हमें इस अफसोस को दूर करने के लिए तकनीकी शब्दों को सक्रियता के साथ प्रयोग करना चाहिए जिससे शब्दों की प्रासंगिकता एवं चमक में वृद्धि हो। हमें विज्ञान एवं तकनीकी के उत्कृष्ट ग्रंथों को विकसित करना है। पाठक इन पुस्तकों के महत्व समझकर इन पर आकृष्ट होने से ही तकनीकी अनुवाद के उद्देश्य यथार्थ रूप से सार्थक सिद्ध होंगे, शब्दावली निर्माण से ही समस्या का पूर्ण समाधान नहीं हो जाता है। नए शब्दों की वस्तुनिष्ठ तथा यथार्थपरक ढंग से आंकलन होना चाहिए। संवाद, संगोष्ठी-परिचर्चाओं के आयोजन करके शब्द भंडार को निरन्तर विकसित करना पड़ेगा। जिससे क्लिष्ट शब्दों पर विचार-विमर्श करके आवश्यकता अनुसार शब्दों का परिवर्तन

(शेष पृष्ठ 9 पर)

देवनागरी लिपि : समस्याएं एवं समाधान

—डॉ. कमलेश सिंह*

शुद्धता, स्पष्टता तथा सरलता की दृष्टि से देवनागरी लिपि का स्थान विश्वभर की लिपियों में सर्वोपरि है; लेकिन कोई भी लिपि जिस भाषा के लिए बनती है, उसके लिए पर्याप्त तथा उपयुक्त होती है। किंतु कालान्तर में ध्वनियों में विकार आ जाता है तथा लिपि वही रह जाती है तो किंहीं चिह्नों का अभाव या आधिक्य पैदा हो जाता है। फलस्वरूप लिपियों में कुछ समस्याएं दिखाई पड़ने लगती हैं। यथा —

- एक वैज्ञानिक लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण होना चाहिए। देवनागरी में ल, अ, इ आदि के लिए दो-दो चिन्ह हैं।
- वैज्ञानिक लिपि में चिन्ह लेखन में उसी क्रम में आना चाहिए। इस दृष्टि से नागरी में बहुत कमियां हैं। जैसे — 'उ', 'ऊ', 'ऋ' की मात्राएँ नीचे तथा 'ए', 'ऐ' की ऊपर दी जाती हैं।
- देवनागरी लिपि के ध्वनि चिन्ह सर्वत्र स्पष्ट नहीं हैं। यथा—ख (खाना-रवाना)। इसी प्रकार शिरोरेखा न होने पर तथा लगाए जाने की स्थिति में 'ध', 'घ' जैसे वर्ण अदल-बदल कर पढ़े जाने की आशंका बनी रहती है।
- भारतीय भाषाओं की अनेक प्राचीन ध्वनियाँ लुप्त हो गई हैं। उनके लिए जो लिपिचिन्ह थे, वे अब वैज्ञानिक दृष्टि से त्रुटिपूर्ण हैं। जैसे — 'ऋ' का 'र' की तरह, 'ष' का 'श' तथा 'ख' की तरह प्रयोग होने लगा है।
- देवनागरी में कई वर्णों के दो-दो रूप प्रचलित हैं। जैसे — भ-झ, अ-अ। अंकों में भी यही स्थिति है — ६-६, ४-४ आदि।
- देवनागरी में शिरोरेखा का प्रयोग अनावश्यक अलंकरण के रूप में होता है। इससे लेखक को अतिरिक्त श्रम करना पड़ता है।

- देवनागरी में संयुक्त करने की कोई निश्चित पद्धति नहीं है। कभी वर्णों का संयोग आमने-सामने होता है तो कभी ऊपर-नीचे। जैसे — क्क, ट्ट आदि।
- देवनागरी लिपि बड़ी होने के कारण हिंदी का टाइपराइटर बड़ा बनाना पड़ता है। संयुक्ताक्षरों की भी कठिनाई इस दृष्टि से विचारणीय है।
- देवनागरी लिपि में लेखन के लिए बार-बार हाथ उठाना पड़ता है, इससे ज्यादा श्रम करना पड़ता है तथा गति बाधित होती है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि में कई समस्याएं विद्यमान हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु व्यक्तिगत, संस्थागत तथा सरकारी प्रयास किए गए हैं। व्यक्तिगत प्रयासों में प्रथम नाम गोविन्द रानाडे का आता है लेकिन व्यवस्थित रूप से सुधारों का श्रीगणेश तिलक ने 'केसरी' के माध्यम से 1904 से किया। तिलक ने 190 टाइपों का तिलक-टाइप फॉट बनाया था। सुनीत कुमार चटर्जी ने देवनागरी की समस्या का समाधान रोमन लिपि में खोजा लेकिन चटर्जी जी को मान लेने पर हमारा प्राचीन साहित्य से संबंध टूट जाएगा। श्री निवास ने अल्पप्राण व्यंजन (क, च, ट, प) पर ही ध्वनि-चिन्ह लगा कर उसे महाप्राण व्यंजन बना देने का सुझाव दिया था लेकिन इस सुधार को मानने पर नागरी में व्यापक तौर पर सुधार करना पड़ेगा। डॉ. गोरखनाथ ने हिंदी टाइप संख्या 700 से घटाकर 200 करने के लिए उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ की मात्राओं, अनुस्वार तथा अर्धचिन्ह को कुछ दाहिनी ओर हटा कर लिखने का सुझाव दिया। विनोबाभावे ने भी 'लोकनागरी' के माध्यम से कुछ सुधार करवाया।

संस्थाओं के सुधारों में वर्धा की 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति', 'नागरी प्रचारिणी सभा' तथा 'हिंदी-साहित्य-सम्मेलन' के नाम लिए जा सकते हैं। 'राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति' वर्धा ने 14 सुधारों का प्रस्ताव किया। वर्धा समिति के सुधार 'अ' की बारहखड़ी के नाम से प्रसिद्ध हैं। 'नागरी प्रचारिणी सभा' ने सुझाव के रूप में संस्कृत-देवनागरी लिपि का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' ने सुधार संबंधी 14 प्रस्तावों को बताया था। इनमें शिरोरेखा की आवश्यकता, प्रत्येक वर्ण का ध्वनि के उच्चारण क्रम में लिखना, संयुक्ताक्षरों में उच्चारण क्रमों का निर्वाह करना। वर्धा-समिति ने नये प्रस्तावों की अपेक्षा हिंदी-साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित सुझावों की पुष्टि की।

लिपि सुधार संबंधी प्रशासकीय प्रयासों के संबंध में तीन प्रयत्न [हिन्दुस्तानी-शीघ्र लिपि, लेखन-यंत्र समिति (1948) तथा उ.प्र. सरकार के प्रयत्न] गिनाए जाते हैं। इनमें उ.प्र. सरकार का प्रयत्न प्रमुख है। 1947 में उ.प्र. सरकार ने नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में एक समिति गठित की थी। इस समिति को 'वर्धा समिति', 'नागरी प्रचारिणी सभा' तथा 'हिंदी-साहित्य सम्मेलन' के प्रस्ताव पूर्णतः स्वीकृत न हुए। 'अ' की बारहखड़ी को भ्रामक माना गया। इस समिति ने मात्र मशीनों के लिए लिपि में अधिक परिवर्तन को खारिज कर दिया। इस समिति की मुख्य सिफारिशें निम्न थीं -

- अनुस्वार तथा पंचमकार के बदले 'ँ' का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- विविध अक्षरों में 'अ', 'झ', 'ध', 'भ', 'त्र' को अपनाया जाए।
- शिरोरेखा लगाई जाए।
- किसी व्यंजन के नीचे दूसरा व्यंजन नहीं जोड़ना चाहिए।
- संयुक्त व्यंजन में पहले व्यंजन की पाई हटा दी जाए तथा शेष व्यंजन हलन्तू करके लिखा जाए।
- केवल पूर्ण विराम को छोड़कर अंग्रेजी के विराम चिन्हों का प्रयोग किया जाए।

अभी इस समिति का कार्य पूर्ण नहीं हुआ था तब भी उ.प्र. सरकार ने 1953 में लखनऊ-सम्मेलन आयोजित किया। इसमें किंचित परिवर्तनों के साथ नरेन्द्र देव कमेटी की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया गया। इन कतिपय संशोधन निम्न हैं -

- छोटी 'इ' की मात्रा बाईं तरफ न लगा कर दाईं तरफ लगाई जाए।
- 'र' के मेल से बने शब्दों में रेफ लगाने के बजाय हलन्तू का प्रयोग किया जाए।
- संयुक्ताक्षर लिखते समय खड़ी पाई युक्त वर्ण में से खड़ी पाई हटा दी जाए।
- 'त्र' को निकाल दिया जाए।

इन संशोधनों का स्वागत न होने पर उ.प्र. सरकार ने पुनः 1957 में सम्मेलन बुलाया इसमें छोटी 'इ' तथा रेफ के संबंध में निर्णयों को रद्द कर दिया गया, शेष निर्णय ज्यों के त्यों बने रहे। केंद्र सरकार ने 1959 में शिक्षा मन्त्रियों के सम्मेलन में 1953 तथा 1957 के निर्णयों को मान्यता दी, साथ में ऋ, लृ रखने की कोई आवश्यकता न समझी। 'ड़', 'ढ़' जो 1953 तथा 1957 के सम्मेलनों में अस्वीकृत थे, रख लिए गए।

एक बात ओर टाइपिंग के लिए वर्ण सुधार की बात कही जाती रही है। पुराने संस्कृतग्रंथों की लिपि को लेकर कठिनाई थी। टाइपिंग के लिए लिपि सुधारने से पुराने ग्रंथों को पढ़ने में नए छात्रों को कठिनाई की बात कही गई लेकिन कम्प्यूटर के आने के साथ देवनागरी लिपि में टाइपिंग की समस्या का अंत हो गया है।

अब तक की लिपि-समाधान चर्चा से स्पष्ट है कि सभी सुझावों में कतिपय सकारात्मक हैं तो कतिपय नकारात्मक तथा कुछ हास्यास्पद। लिपि का संबंध वास्तव में समग्र साक्षर जनता से होता है, अतएव किसी लिपि को जनता में प्रचलित करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी सहानुभूति पा करके ही आगे बढ़ा जाए। वस्तुतः देवनागरी लिपि का विकास स्वाभाविक ढंग से हो रहा है। उसके विकास में अगर सुधारक आमूल परिवर्तन न करें तो उत्तम रहेगा।

हिंदी के प्रचार-प्रसार और राजभाषा विभाग

—देवेन्द्र उपाध्याय*

संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था और पिछले साठ वर्ष में राजभाषा के रूप में हिंदी कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है। हिंदी ही एकमात्र भाषा है जो देश को एकसूत्र में बांधने में सक्षम है। वास्तव में राजभाषा विभाग के प्रयासों का ही परिणाम है कि हम देश के किसी भी कोने में जाएं, हिंदी अपरिचित नहीं रह गई है, बल्कि आम लोगों की भाषा बन चुकी है।

राजभाषा विभाग अगर न होता तो क्या होता? यह ऐसा सवाल है जिसे टाला नहीं जा सकता। राजभाषा विभाग के गठन के बाद से ही हिंदी के प्रचार-प्रसार का अध्याय शुरू हुआ, जिसके सार्थक परिणाम सामने आए हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक संसद में हिंदी में किसी मंत्री के उत्तर देने पर कुछ राज्यों के लोग विरोध करते थे, कई ऐसे अवसर भी आए हैं जब इस हिंदी विरोध की वजह से संसद की कार्रवाई तक बाधित हुई, लेकिन आज स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है और संसद में अब हिंदी विरोध के स्वर सुनाई देने बंद हो गए हैं। यहां तक तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और प. बंगाल के अनेकों सांसद समय-समय पर अपने विचार हिंदी में व्यक्त करते हैं। इन राज्यों के कई मंत्री तो हिंदी में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में ही देते हैं। यह सब संभव हुआ है राजभाषा विभाग के अस्तित्व में आने से।

देश में किसी भी कोने में चले जाइए, कोई भी रेलवे स्टेशन और उसके प्लेटफार्म हों उस स्टेशन का नाम हिंदी में जरूर लिखा होगा। यह उन लोगों के लिए सुविधाजनक है जो अंग्रेजी या उस क्षेत्र (राज्य) की भाषा नहीं जानते हैं। भारतीय डाक विभाग ने भी तमाम डाकघरों के नाम राष्ट्रभाषा

हिंदी में लिखना अनिवार्य किया है। भारत सरकार के सभी विभागों/मंत्रालयों से सम्बद्ध संस्थानों तथा सार्वजनिक उद्यमों के नाम भी हिंदी में लिखे जाने लगे हैं। भारत सरकार का कोई भी विभाग हो, वह देश के किसी भी कोने में हो लेकिन उसमें राजभाषा का अलग विभाग या इकाई होना अनिवार्य है। यह संवैधानिक दायित्व है जिसे पूरा करना संबंधित विभाग/संस्थान के प्रमुख के लिए अनिवार्य है। हर मंत्रालय में हिंदी सलाहकार समिति के गठन से हिंदी के कामकाज को तो बढ़ावा मिला ही है हिंदी को गैर-हिंदी भाषियों के बीच लोकप्रिय बनाने में भी यह सहायक सिद्ध हुआ है। संसद की राजभाषा संबंधी समिति का भी इसमें योगदान बना हुआ है।

हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थान मिला है। यह दुखद तो है, इसकी वजह से हिंदी को जो स्थान मिलना चाहिए वह पूरी तरह नहीं मिल सका है। इस वास्तविकता को अनदेखा तो नहीं किया जा सकता लेकिन यह भी सच्चाई है कि अगर राजभाषा विभाग न होता और वह गृह मंत्रालय के अंतर्गत न होता तब हिंदी के प्रचार-प्रसार की योजनाएँ महज कागजी ही बनी रह जाती। हर वर्ष हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी माह का आयोजन मात्र खानापूर्ति ही नहीं होती बल्कि संवैधानिक दायित्व का बोध भी होता है। इससे हिंदी विरोध के स्वरों की गूंज लगभग खो चुका है। अहिंदी भाषी कर्मचारियों को हिंदी में कामकाज के लिए प्रोत्साहित करने के साथ हिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करने से हिंदी को ही बढ़ावा मिल रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का विभिन्न स्तरों पर गठन होने से हिंदी में कामकाज को बढ़ावा निरंतर मिल रहा है।

देश में कम्प्यूटर युग आ चुका है। अब हिंदी टंकण का स्थान कम्प्यूटर ने ले लिया है। हिंदी कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम ने पिछले कुछ वर्षों में गति पकड़ी है। प्रारंभ में हिंदी में साफ्टवेयर का अभाव था लेकिन आज हिंदी में साफ्टवेयर का तेजी से विकास हुआ है। वेबसाइट का भी विस्तार हुआ है। केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से राजभाषा विभाग हिंदी आशुलिपि और हिंदी टाइप लेखन के अनेक अंशकालिक और पूर्णकालिक कार्यक्रम संचालित करता है। हिंदी परीक्षाओं के अनेक पाठ्यक्रमों का संचालन भी राजभाषा विभाग करता है। इन सभी कार्यक्रमों का एकमात्र उद्देश्य हिंदी को बढ़ावा देना है ताकि वह जन-जन की भाषा बन सके,

व्यवसाय की दृष्टि से भी हिंदी बहुत लाभदायक है। देश के किसी भी बड़े तीर्थस्थल, पर्यटक स्थल या व्यावसायिक केंद्र में चले जाए-चाहे वह किसी भी राज्य में हो, हिंदी

भाषा-भाषी लोगों को अब कोई भाषा संबंधी कठिनाई नहीं होती। दक्षिण भारत के तीर्थस्थल और पर्यटक स्थलों पर हिंदी बोलचाल की भाषा बन चुकी है। मुझे सुखद आश्चर्य हुआ जब दिल्ली से अमरीका यात्रा के दौरान मुझे ब्रिटिश एयरवेज में दिल्ली से हिथ्रो और वापसी यात्रा में अंग्रेजों के साथ हिंदी में भी उद्घोषणा सुनने को मिली। यहां तक कि एयरवेज के कर्मचारियों में हिंदी भाषी भी थे। जिससे यात्रियों को अपनी यात्रा में संवाद के संकट से नहीं जूझना पड़ा।

इम्फाल में जब एनजीओ चलाने वाले अपोलो और डायना से भेंट हुई तो उनकी हिंदी किसी भी हिंदी भाषी से कमजोर नहीं थी। अरुणाचल में प्राइमरी स्कूल के बच्चों ने जब हिंदी में बातचीत की तो मुझे लगा कि सारा भारत एक है और भारत की एकता की भाषा हिंदी है। अब इसे राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित करने का अवसर आ चुका है।

(पृष्ठ 5 का शेष)

या परिवर्धन कर सकते हैं। समय-समय पर उचित मार्गदर्शन मिलने से शब्दों के अस्तित्व एवं महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता रहेगा।

उपसंहार :

राजभाषा कार्यान्वयन समस्या के समाधान के लिए हर भारतवासी को सद्भावना के साथ आगे आना होगा। हमें अपने मौलिक विचारों को हिंदी में प्रकाशित करना है। विचार-विमर्श, चर्चा-अभिव्यक्ति सरकारी कार्यालयों में मुख्यतः हिंदी में होनी चाहिए, जिससे आपसी भाईचारा तथा पारस्परिक सहयोग का वातावरण तैयार होता है। एक भाषा माध्यम से आदमी में अपनेपन का एहसास होता है, परिचित बढ़ते हैं। मूल विषय अंग्रेजी से अनुवाद या अनुकरण करने से उनकी मौलिकता एवं भावना प्रभावित होने की आशंका रहती है। हममें यह आत्मविश्वास जागृत होना चाहिए जिससे हम हिंदी में अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रकाशित कर सकें। हिंदी किसी दूसरी भाषा से कमजोर नहीं है। केवल हमारी मानसिक कमजोरी को दूर करना है। यह भाषा मधुर पर बहुत ताकतवर है। राजकाज

चलाने के लिए हिंदी सदैव सक्षम है। हिंदी भारतीय हृदय की वाणी है तथा भारतीय आत्मा को मुखरित करती है। साथ ही साथ हमारी भावनात्मक एकता की आधार है।

हिंदी क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं वरन् देशव्यापी भाषा है। हिंदी प्रचारक, प्रसारक एवं पक्षधर केवल हिंदी भाषी ही नहीं वर्ना अहिंदी भाषा-भाषी भी रहे हैं, जैसे : पं. केशव चन्द्र सेन, वीर सावरकर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, रवीन्द्र नाथ टैगोर, सुचेता कृपालानी, डॉ. पट्टाभि सीतारमैया आदि अनेक सरल, सामान्य एवं परिचित शब्दों का प्रयोग करके हम हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठा दिला सकते हैं। राष्ट्रीय भावना, हिंदी प्रेम तथा निरन्तर प्रयास के माध्यम से हम राजभाषा कार्यान्वयन को सफल बना सकते हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि "जिस देश की भाषा जितनी समृद्ध होगी, वह देश उतना ही वैभवशाली होगा"। हमें यह विश्वास है कि, सूचना-प्रौद्योगिकी के बदलते परिवेश में हिंदी भाषा विश्व दरबार में अपनी योग्यता से प्रतिष्ठित होकर भारतवासी को गौरवान्वित करने में सफल होगी।

हिंदी के वर्चस्वी कवि त्रिलोचन

—डॉ. के. मंजुला*

सामाजिक चेतना से संपृक्त होकर युगीन माँग की पूर्ति के लिए साहित्यकार रचना-संसार में प्रवेश करता है। इन रचनाकारों में प्रतिबद्धता का होना अत्यंत जरूरी है अन्यथा, सामाजिक प्रगति एवं नवीन मूल्यों की प्रतिस्थापना नहीं हो सकती। मानवतावादी, समाजवादी और न्याय और स्वतंत्रता एवं सत्य के पक्षपाती बनकर कवि को समाज के स्वस्थ विकास के लिए अपनी सर्जनात्मक शक्ति का सदुपयोग करना पड़ता है।

प्रगतिशील साहित्य वही है जिसका ध्येय मात्र 'प्रगति' है, उसके लिए मार्ग अनेक है। प्रगतिशील साहित्य की व्याख्या नामवरसिंह जी यों दे रहे हैं — “प्रगतिशील साहित्य से मतलब उस साहित्य से है जो समाज को आगे बढ़ाता है, मनुष्य के विकास में सहायक होता है।” युगीन परिस्थितियों के अनुकूल प्रगतिशील कवियों के कथ्य एवं शिल्प में परिवर्तन आते ही रहते हैं।

त्रिलोचन की प्रगतिशील कविताओं की पृष्ठभूमि

कवि त्रिलोचन पर मार्क्सवाद का प्रभाव जरूर है। खासकर, उनकी प्रारंभिक रचनाओं पर मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। लेकिन पाँचवें दशक के बाद की कविताओं में, इस दर्शन का उतना प्राधान्य नहीं जितना उससे पहले था। फिर जनवादी विचारधारा पर उनका ध्यान आकर्षित हुआ। जनवादी साहित्यकारों की सृजनशीलता का विषय जनता एवं उनकी आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य है। जनवादी कवियों ने अपनी रचनाओं में जनपद, जनपदीय भाषा, लोक संस्कृति और लोक-पक्ष को भी उल्लेखनीय स्थान दिया है। राष्ट्रीयता की भावना को आगे बढ़ाने वाले देश प्रेम को जगाने में भी प्रगतिशीलधारा के कवि किसी के पीछे नहीं रहते।

त्रिलोचन की प्रगतिशील कविताओं की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

त्रिलोचन की प्रगतिशील कविताओं की विभिन्न प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं :

वर्ग वैषम्य

आजकल उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच जो भिन्नता है उसका फासला बढ़ता जा रहा है। प्रतिदिन बदलने वाले इस समाज में सरकार की आर्थिक नीति, उदारीकरण, भौगोलीकरण आदि तत्वों ने इसको धक्का देकर आगे बढ़ाया और इसकी नींव दृढ़ हो गई। त्रिलोचन की कविताओं में ऊपर बताए हुए दोनों वर्ग मौजूद हैं। मार्क्स के अनुसार साहित्य तभी महत्वपूर्ण होगा जब वह क्रांति पर आधारित हो और वर्गहीन के लिए प्रेरणास्त्रोत हो।

सर्वहारा वर्ग

त्रिलोचन की कविताओं में किसान, मजदूर, 'अनपढ़ लड़की चम्पा', 'नगई महरा', 'मोरई केवट', गरीब साहित्यकार और दलित-दमित लोग विद्यमान हैं। त्रिलोचन की सृजनात्मकता मानव की सामाजिक उत्थान के लिए प्रेरणादायक है। कवि जीवन-संघर्ष में उन्हीं के पक्षधर होते हैं जो जीवन के लिए संघर्षरत हैं —

“मैंने उनके लिए लिखा है जिन्हें जानता
हूँ जीवन के लिए लगाकर अपनी बाजी
जूझ रहे हैं, जो फेंके टुकड़ों पर राजी
कभी नहीं हो सकते हैं। मैं उन्हें मानता
हूँ आगामी मनुष्यताओं का निर्माता।”

कवि गाँव के मेहनतकश लोगों के जीवन की विडंबनाओं को उभारते हैं। सामाजिक-जीवन के यथार्थ

स्वरूप को अंकित करने के लिए साहित्यकार को उसके जीवन के साथ आत्मीयता स्थापित करनी है। ऐसा न करें तो उनकी रचना के द्वारा सामाजिक विकास में कोई योगदान नहीं मिलेगा। त्रिलोचन की कविताएँ आम जनता के जीवन की असलियत से संपृक्त सिद्ध हुई हैं। उनकी कविताओं में प्रयुक्त 'मैं' शब्द इसी आत्मीयता का सार्वनामिक रूप हैं -

“उस जनपद का कवि हूँ जो भूखा दूखा है,
नंगा है, अनजान है।”

शोषितों के प्रति सहानुभूति त्रिलोचन की कविताओं में परिलक्षित होती है। कवि का विश्वास है कि जब तक शोषित शोषण को पहचान न पाए, तब तक यह प्रक्रिया बराबर चलती रहेगी। सर्वहारा को जागृत करने के लिए उनकी कविताओं में आशा और आस्था का स्वर व्यक्त किया है। यह विश्वास उन्हें स्फूर्ति देने में सहायक होता है -

“मृत्यु की ओर नज़र से नज़र मिलाओ,
डर क्या है, जीवन में जो कुछ कल होना है
आज अभी हो जाए/तुम्हें यदि कुछ खोना है
तो अपने मन का भय/जडमूल से हिलाओं
इस दुर्बल तरु को, धक्के अनवरत खिलाओं”

त्रिलोचन जी का काव्य पात्र जनता के बीच से ही आता है। इस पर विचार करते हुए विष्णुचन्द्र शर्मा ने यों कहा है - “त्रिलोचनजी के काव्यनायक जनता के विभिन्न वर्गों से आते हैं और कलात्मक प्रतिबिम्बों के रूप में हमारी चेतना में समसामयिक परिवेश, सामाजिक अन्तर्विरोधों व मानसिक जटिलताओं को मुखर प्रश्न के रूप में हमारे सामने रख देते हैं।” उसका सुख-दुख, रीति-रिवाज, अज्ञान, बेबसी आदि खींचने का प्रयास कवि ने किया है। उनकी कविताएँ सर्वहारा की जीवन-व्यवस्था के अनेक पक्षों, उसकी मानसिकता, संघर्ष और भोलेपन-को अभिव्यंजित करती हैं। संवेदना एवं गहराई के साथ निम्नस्तरीय जीवन के कटु एवं यथार्थ का प्रतिफलन उनकी कविताओं में प्राप्य है।

उच्च वर्ग

सामाजिक उन्नयन के रास्ते में उच्च वर्ग साम्राज्यवादी, सामंतवादी और पूँजीवादी दुश्मन के रूप में मार्ग रोककर खड़े होते हैं। त्रिलोचन की रचनाओं में अमानवीय शोषकों के प्रति विद्रोहात्मक दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। द्वितीय महायुद्ध के दौरान साम्राज्यवादी देशों की दमननीति चरम सीमा पर पहुँच गई थी। इस दमननीति के खिलाफ साम्राज्यवाद

के विरोध में अनेक देशों की जनता जागरित हो गई। साम्राज्यवादी राष्ट्र के पास अपनी स्वार्थता पर आधारित राजनीति है। वे 'भूखे भेड़िए' के समान हैं। रक्त, मांस एवं विवशता की गंध उन्हें प्रियतर लगती है। त्रिलोचन जी ने इसका खुलकर विरोध किया। उन्हें जनता के बल पर पूर्ण भरोसा है -

“तो क्या है यदि आग आग है
इसी आग से खेल रहे हैं हिंदुस्तानी
इसी आग से खेल रहे हैं जावावाले
इसी आग में आज खड़े हैं बर्मावाले
इसी आग में मानव सोने-जैसा तपकर
दमक उठेगा।

नयी रोशनी छा जायेगी इस धरती पर”

साम्राज्यवाद में अपने अलग तरीके का गठबंधन होता है। अपने स्वार्थ के लिए, इस गठबंधन से फायदा उठाना ही, साम्राज्यवादियों की अभिलाषा है। ऐसे लोग कभी भी, सपने में भी, आम मानव का मित्र नहीं बन सकेंगे।

“मित्र !

शेर क्या कभी
गाय का मित्र
हुआ है ?
कभी मित्र था
तब तक
जब तक उसे
काम था”

कवि आशा करते हैं कि ये गुलाम अपने अनुभव से पाठ पढ़कर साम्राज्यवादी अंग्रेजियों से जरूर लड़ेंगे। देश की सारी संपत्ति लूटने वाले पूँजीपतियों-सामंतों के विरुद्ध कवि का आक्रोश 'अरघान' में संकलित ईश्वर की मृत्यु नामक कविता में प्रकट होता है। किसान-मजदूरों के पक्षधर कवि त्रिलोचन साम्राज्यवाद और पूँजीवाद के पतन देखना चाहते हैं, साथ-साथ तत्कालीन समाज में आमूल परिवर्तन का सपना भी देखते हैं।

“साम्राज्यवाद और पूँजीवादी
लिए हुए अपनी बरबादी
जोर आजमाई करते हैं
आज तोड़ने को उनका मन
उठित दलित समाज चला है।”

कवि के सामने क्रांति के अलावा इन्हें परास्त करने के लिए और कोई उपाय नहीं है।

क्रांति एवं परिवर्तन

यहाँ क्रांति का लक्ष्य यह है कि पुराने समाज की जगह नए समाज का निर्माण। कवि हमेशा सर्वहारा का साथ दे रहे हैं। जीवन-पथ में आनेवाले विध्वनों को हटाकर आगे बढ़ने में ही जीवन की सार्थकता है। हाथ जोड़कर बैठने से कुछ नहीं मिलनेवाला है। शोषकों को भस्म करके विकास के पथ पर, बढ़ने के लिए आह्वान देते हैं—

“अगर चाहते हो तुम जीना,
धक्के मारो इस भीड़ पर,
इससे डरना जीवन को विनष्ट करना है।

त्रिलोचन जी इस विद्धान्त पर विश्वास रखते हैं कि परिवर्तन चिरंतन सत्य है। पूँजीवादी व्यवस्था की जगह साम्यवादी व्यवस्था जरूर आएगी—

“दुनिया स्थिर नहीं; बदलती है
वह बदल रही है, क्षण-प्रतिक्षण”

परिवर्तनशीलता के अनेक उदाहरण उनकी कविताओं में द्रष्टव्य है।

साम्यवाद की स्थापना का समर्थन

प्रगतिवादी साहित्यकार का लक्ष्य ही साम्यवाद की स्थापना है। बिना कोई भेद-भाव के, बिना वर्ग-वैषम्य के, एक सुंदर समाज की सृष्टि ही उनकी अभिलाषा है। त्रिलोचन भी इसमें भागीदार बने। उन्होंने ऐसे सुंदर समाज की कल्पना की है जहाँ लोग अपमानित जीवन नहीं बिताते, अपनों के बीच विरोधी भाव नहीं, साथ-साथ जन-जन को ममता देकर जन-समाज आगे बढ़ता जाएगा—

साम्यवादी विचारधारा को प्यार करनेवाले चीन निवासी पर अपना आदर प्रकट करते हुए कवि ने यों कहा है—

“चीन महान चीन, मैं तुझको नमस्कार करता हूँ
पराधीन भारतवासी मैं नमस्कार करता हूँ
मेरा नमस्कार क्या तेरा गौरव अपना लेगा
चीन महान चीन, मैं तुझको नमस्कार करता हूँ”

त्रिलोचन का लक्ष्य सर्वहारा वर्ग की क्रांति के द्वारा सामाजिक परिवर्तन ही है।

सामाजिक बोध

सृजनशील कवि त्रिलोचन की कविताओं में कवि के सामाजिक बोध स्पष्ट रूप से द्रष्टव्य हैं। उनके पात्रों के चरित्र चित्रण पर प्रकाश डालते हुए गोविंदप्रसाद अपना अभिमत प्रकट करते हैं—“वस्तुतः ये मात्र चरित्र नहीं हैं बल्कि चरित्रों के माध्यम से समाज के बीच व्याप्त विसंगतियाँ और अभाव से रू-ब-रू होना है। समाज के एक विशिष्ट वर्ग के साथ संवाद स्थापित करता हुआ कवि इन चरित्रों के माध्यम से अपेक्षाकृत एक व्यापक सामाजिक सत्य को उद्घाटित करता है” अकाल, आपातकाल की घोषणा, शोषण प्रक्रिया, वर्ग वैषम्य, तत्कालीन राजनीतिक, सामायिक बातों की ओर व्यंग्य आदि समाज निरपेक्ष बातों की जानकारी उनकी कविताओं में उपलब्ध है। कवि का समाजबोध अपनी पूरी प्रौढ़ता के साथ निकलता है जब वह कहता है—

“धन की उतनी नहीं, मुझे जन की परवाह है
जितनी, जो मुझसे खुलकर मन से मिलता है
मैं उसका वशवर्ती हूँ। इससे खिलता मेरे प्राणों के
शतदल।”

प्रगतिशील साहित्य समाज-निरपेक्ष है। अकेला रहना कवि के लिए असहनीय है—

“आज मैं अकेला हूँ
अकेले रहा नहीं जाता।”

यही भाव को द्योतित करने वाली पंक्तियाँ ‘अमोला’ में भी दृष्टिगोचर होता है—

“जिअत न बनइ अकेल जे रहा अकेल
जइ दिन रहा जनात रहा अनमेल”

कोरी वैयक्तिकता को छोड़कर समाज निष्ठ प्राणी बनकर जीवन बिताना अभिलषणीय है।

सामयिक समस्याएँ

त्रिलोचन जैसे कवि समकालीन जीवन और युगबोध से अवगत हुए बिना कैसे रह सकते हैं? उन्होंने अपनी कविताओं में समसामयिक आर्थिक, सामयिक, राजनीतिक, साहित्यिक परिस्थितिजन्य विभिन्न पहलुओं का अंकन हृदयस्पर्शी रूप में किया है। बंगाल का अकाल, गुजरात के युवाओं का आंदोलन, आपातकाल आदि का संकेत उनकी कविताओं में है।

साहित्यकारों का प्रभाव

कबीर, तुलसी और निराला ने त्रिलोचन को बहुत प्रभावित किया है। कबीर, तुलसी और निराला में जो समानताएँ हैं, वह त्रिलोचन को उनसे जोड़ती हैं। तुलसी रामभक्त हैं। तुलसी के राम मानवतावाद का प्रतीक हैं, वह मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। जो दूसरों के लिए अपना जीवन समर्पित करता है, वह राम से भी ऊपर है। त्रिलोचन ने खुद लिखा है कि उनके और तुलसी के बीच ज्यादा अंतर नहीं है।

“तुलसी और त्रिलोचन में अंतर जो झलके वे कालांतर के कारण है। देश वही है, लेकिन तुलसी ने जब-जब जो बातें कही हैं, उसे समझना होगा संदर्भों के कल के।”

वास्तव में हिंदी साहित्य की जातीय परंपरा की शृंखला में कबीर, तुलसी, निराला और त्रिलोचन का अपना-अपना महत्वपूर्ण स्थान है। तुलसीदास की भाषा ने कवि को काफी प्रभावित किया है—

“तुलसीबाबा, भाषा मैंने तुम से सीखी मेरी सजग चेतना में तुम रमे हुए हो।”

समाज-सुधारक कबीर जाति-पाति के खिलाफ थे, हिंदू-मुसलमान एकता के वक्ता थे। त्रिलोचन भी मानवों के बीच किसी भी प्रकार के भेद-भाव मिटाने के पक्षपाती थे। त्रिलोचन ने सन् 2002 में लिखे ‘मेरा घर’ के आमुख में भी कबीर की याद की। निराला ने आर्थिक संकट में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बिताया है। त्रिलोचन ने भी अपनी आर्थिक विषमता के बारे में स्वयं कहा है—

“कभी त्रिलोचन के हाथों में पैसा धोला टिका नहीं। कैसे वह चाय-पानी का करता बन्दोबस्त।”

जब ‘दिगंत’ प्रकाशित हुआ तब निराला जीवित थे। निराला ने उन्हें बहुत गहराई से प्रभावित किया है—

“अपनी राह चला। आँखों में रहे निराला, मानदंड, मानव के तन के मन के तो भी पीस परिस्थितियों ने डाला। सोचा जो भी हो, आँखों की करुणा का वह शीतल पाला मन को हरा नहीं करता है। पहले खाना मिला करे तो कठिन नहीं है बात बनाना।”

नागार्जुन और शमशेर भी त्रिलोचन के प्रिय कवि रहे हैं। शमशेर जी के जन्मदिन पर उसके प्रति आदर व्यक्त करते हुए ‘कवि शमशेर से’ नामक एक कविता समर्पित की है। कवि ऐसे साहित्यकारों पर श्रद्धांजली अर्पित करते हैं जो जनता के साहित्यकार हैं। इन साहित्यकारों के प्रभाव के त्रिलोचन को जनता के अधिक निकट पहुँचाया।

मानवताबोध

त्रिलोचन ने अपने साहित्य के माध्यम से, जन-जीवन की विसंगतियों के बारे में शिक्षा देने का प्रयास किया। मानववादी दृष्टिकोण साहित्य को सामाजिक आत्मीयता की सर्जनात्मक प्रक्रिया मानता है। “त्रिलोचन व्यक्ति की निजता की लकीरें खींचकर उसे शाश्वत मानवता से मिलाते हैं। एक व्यक्ति विशेष के अनुभव के माध्यम से सार्वभौम सामान्य जीवन सत्य को स्वीकारते हैं।”

‘सब्जीवाली बुढ़िया’ में कवि का मानव-प्रेम झलकता है। ठंड के दिनों में, बची हुई पूरी सब्जी पचास पैसे में खरीदने के लिए वह बूढ़ी औरत ग्राहक से अनुरोध करती है। ग्राहक अनसुना करके चला जाता है। तब कवि ने उसकी बची हुई सब्जी खरीदी, यह सहज प्रेम है, जो दूसरों की चिंता का ध्यान देता है, अन्यो की परेशानी कम कर सकता है, ऐसा सहज प्रेम आजकल देखने को कम मिलता है।

“मैं पासवाले से
गोभी ले रहा था
बुढ़िया से मैंने कहा
अम्मा, सारी चीजें
इकट्ठे बाँधकर
मुझको दे दीजिए।”

आपस में बाँटने से दुख की तीव्रता कम हो जाती है। दूसरों के मन के दुख पहचानने वाले आदमी ही सच्चे अर्थों में मानव हैं। कवि ने लिखा—

“अगर हृदय में धड़कन है तो यह निश्चित है
कभी किसी की आहट पाकर धड़क उठेगा
अनायास ही।”

दूसरों के दुख पहचानकर उसका दुख बाँट लेना ही मानवता का लक्षण है। मानवतावाद के इस पुजारी कवि ने

गाँववालों की निष्कलंकता, पशु-पक्षियों तक फैलते प्रेम आदि का सूक्ष्म वर्णन किया है।

लोक संस्कृति

लोक-संस्कृति से नाता जोड़ना जनवादी कवि की पहचान है। लोक-संस्कृति, पुरानी रीति-रिवाज, आचार-विचार पर विश्वास रखनेवाले कवि त्रिलोचन महाकुंभ की अवहेलना नहीं करते। कवि की धारणा यह है कि अगर महाकुंभ से उनके मन को शांति मिलती है तो मिलने दो—

“आने दो, यदि महाकुंभ में जन आता है,
कुछ तो अपने मन का परिवर्तन पाता है।”

महाकुंभ के संदर्भ में उन्होंने 25 कविताएँ लिखीं। परंपरा से चले आ रहे रीति-रिवाजों आदि का विरोध कवि नहीं करते। बल्कि उसमें जो पाखंड है, विडंबना है उसका विरोध जरूर करते हैं। ‘अमोला’ संग्रह के लोकपक्ष पर विचार करते हुए विष्णुचंद्र शर्मा ने कहा है— “अमोला” की कविताएँ लोककंठ के अनुभव का ताल भी है, खजाना भी। कहीं लोकपक्ष के कवि त्रिलोचन ने अपनी निःशुद्ध अनुभूति की खोज की है। कहीं अमोला में लोकजीवन का व्यापक संसार रचा है।”⁵ कवि को अपनी गंवई संस्कृति बहुत पसंद है। ‘परदेशी के नाम पत्र’ में ‘मोरों की बहार’, ‘कोराती बछिया’, ‘व्याई भैंस’ को छोड़कर युवति ने अपने पति को कुछ लिखा नहीं है। थोड़े रूठे हुए स्वर में वह पूछती है—

“तुम्हें गाँव की क्या कभी याद नहीं आती है
आती तो आ जाते
मुझको विश्वास है।
थोड़ा लिखा समझना बहुत,
समझदार के लिए इशारा ही काफी है
ज्यादा शुभ”

अपने मन की चाह सीधे-सीधे अपने पति से कहने के लिए गंवई संस्कृति उसे इजाजत नहीं देती। ‘नगई मेहरा’ में एक गाँव की पूरी लोक संस्कृति और लोक मर्यादा बोलती है।

समाज से आत्मीयता रखनेवाले त्रिलोचन जी यह मानते हैं कि एक सुव्यवस्थित सामाजिक वातावरण में, मानवों के बीच समान श्रम, अर्थ एवं विकास अवश्यभावी है। कवि का दृढ़ विश्वास है कि एक वर्गबद्ध समाज में, क्रांति से ही परिवर्तन संभव है। वे दलित-पीड़ित और

श्रमिक लोगों के साथ हैं। इसलिए जीवन के अनेक पक्षों का हृदयस्पर्शी चित्रण, सजीव रूप में, त्रिलोचन की कविताओं में पाया जाता है।

त्रिलोचन ने प्रगतिशील विचारधारा को अपने सभी काव्यसंकलनों में सुरक्षित करने का प्रयास किया है। कवि का साध्य ‘प्रगति’ है। इस लक्ष्य-प्राप्ति के लिए उन्होंने साधन जुड़ाया है मार्क्सवाद से, गाँधी-दर्शन से और हमारी जातीय परंपरा से। शिवदान चौहान ने प्रगतिशील कविता के स्वरूप पर जो टिप्पणी दी है वह यहाँ उद्धृत करने योग्य है— “प्रगतिशील का जब प्रश्न उठता है तो उसके पीछे किसी विशेष दार्शनिकवाद की मान्यता का आग्रह नहीं किया जा सकता। एक प्रगतिशील कवि गाँधीवादी भी हो सकता है, मार्क्सवादी भी और द्वेत-अद्वेतवादी भी।” त्रिलोचन जी किसी वाद या सिद्धांत के पीछे नहीं भागा। उनकी रचनाएँ किसी भी सिद्धांत का घोषणापत्र नहीं है।

पिछले सात दशकों में फैले हुए त्रिलोचन के काव्य-सृजन की कलावधि में, हिंदी काव्यधारा कई प्रकार के परिवर्तन का पात्र बनी, उसमें असंख्य मोड़ आये, लेकिन इस बदलते परिवेश में भी त्रिलोचन जी की प्रगतिशील विचारधारा में कोई परिवर्तन संभव नहीं हुआ। यानी उन्होंने अपनी प्रगतिशील विचारधारा की उपेक्षा नहीं की। अन्य प्रगतिशील कवियों ने परंपरा के विरोध में विकास की सीढ़ियाँ देखीं, मगर त्रिलोचन ने कभी भी परंपरा का विरोध नहीं किया। वे परंपरा का अंधानुकरण तो नहीं करते बल्कि उसकी सच्चाई को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ते हैं। उनकी प्रगतिशीलता का आधार आम जनता और उनकी शक्ति है। जनपदीय चेतना और सामाजिक दायित्वबोध की गूँज उनकी कविताओं में प्रतिध्वनित रही। उनकी काव्यपत्रा के बहाव में प्रगतिशील धारा रूपी धागा, कहीं भी टूटा हुआ-सा दिखाई नहीं पड़ता।

संदर्भ ग्रंथ

1. नामवर सिंह, “आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ”, पृ. 81
2. विष्णुचंद्र शर्मा, ‘शब्द’ संग्रह के फ्लेप से
3. गोविन्द प्रसाद/सं/ “त्रिलोचन के बारे में”—भूमिका
4. डॉ. किरण सिंह, “प्रगतिवादी कवि त्रिलोचन और उनका सॉनेट”, ‘भाषा’ त्रैमासिकी-जनवरी-फरवरी 2000
5. विष्णुचंद्र शर्मा, त्रिलोचन का लोकपक्ष-वर्तमान साहित्य, अंक 11, 1992

साही का साहित्य

—डॉ. वी. कुमार*

विजयदेव नारायण साही हिंदी के ऐसे एक साहित्य चिंतक हैं जो साहित्य एवं समाज संबंधी अपनी अलग धारणा रखते हैं। वे मूलतः कवि हैं, साहित्यालोचक हैं, एक अच्छे समाज चिंतक भी। अतः काव्य संबंधी उनकी धारणाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनके काव्य संकलनों में इन धारणाओं का समर्थन भी हुआ है। 1959 के 'तीसरा सप्तक' में संकलित कुछ कविताओं के अलावा साही के कुछ काव्य-संग्रह अलग रूप से निकले हैं जो हिंदी काव्य-जगत एवं समीक्षा-क्षेत्र में अपनी अलग पहचान रखने वाले हैं। वे 'मछलीघर' (1966), साखी (1983), संवाद तुम से (1990) और आवाज़ हमारी जायेगी (1995) आदि हैं। इन में से 'तीसरा सप्तक', 'मछलीघर' की कविताएं नई कविता की काव्यगत एवं शिल्पगत विशेषताओं को लेकर चलने वाली हैं तो 'साखी' और 'संवाद तुम से' समकालीन कविता की मानसिकता बरतने वाले हैं। उनका सद्यःप्रकाशित काव्य संग्रह 'आवाज़ हमारी जायेगी' गीतों एवं गज़लों का संकलन है। गज़ल यद्यपि नया काव्य रूप तो नहीं है फिर भी साही के हाथों वे कुछ नवीनता लेकर समकालीन कविता तक व्यापी हुई हैं। तो इस विशाल काव्य भूमि में साही ने काव्य संबंधी अपनी विशेष मानसिकताओं को रूपायित किया है। यह सचमुच उनके काव्य-चिंतन संबंधी विकास को सूचित करने वाले भी हैं अवश्य।

'तीसरा सप्तक', जिसका संपादन अज्ञेय ने किया है, में साही की बीस कविताएं संकलित हैं। इसके प्रकाशन के साथ हिंदी काव्य-जगत में नई कविता प्रतिष्ठित हो गई है। नई कविता की सारी विशेषताएं विजयदेव नारायण साही की कविता में विद्यमान हैं। युग-यथार्थ को अभ्यांतरित करना, उसके साथ प्रतिक्रिया करना नई कविता की अलग पहचान रही है जो साही की कविता की मूल संवेदना है। मानव जीवन की जटिलता को उन्होंने काव्य का विषय बनाया है

जो पहले कबीर, निराला जैसे रचनाकारों ने भी किया था। क्योंकि जीवन की यह जटिलता ही आधुनिक साहित्य की वास्तविक असलियत है। अतः कविता में अभिव्यक्त सन्नास या उनमें विन्यक्त विह्वलना लाना कवि की वैयक्तिक-मानसिकता का परिणाम नहीं बल्कि विशाल जन-जीवन की समग्र पहचान का परिणाम है। इस विराट जगत में मनुष्य की लघुता तथा उसकी निःसहायता का एहसास इस गहरी पहचान का परिणाम है। यद्यपि निराला ने अपनी कुछेक कविताओं (भिक्षुक, तोड़ती पत्थर, जागो फिर एक बार) में समाज के लघुमानव के अंतरंग यथार्थ की ओर इशारा करने का उपक्रम तो किया था तथापि उसका वास्तविक विकास साही की कविताओं में हुआ है, यह कहना सही है। कवि की दृष्टि में यह मात्र आधुनिक जीवन की विडंबना नहीं अपितु मानव जीवन की ऐतिहासिक निस्सारना का परिणाम है। इसको दूर करने के लिए समग्र सामाजिक परिवर्तन अपेक्षित है नई कविता का और एक सशक्त हस्ताक्षर गिरिजा कुमार माधुर ने साही के काव्य-चिंतन के मर्म को उद्घाटित करते हुए कहा था — “इतिहास की प्रक्रिया के संदर्भ में आदमी की विडंबना की गहरी पकड़ विजयदेव नारायण साही की रचनाओं में मिलती है जो उन्हें नई कविता के समर्थ कवियों की पंक्ति में बिठाती है।” तो स्पष्ट है साही का काव्य-चिंतन सामाजिक यथार्थ को अनदेखा किए बगैर उसकी अनुगूँज से उभरा हुआ नहीं, बल्कि मानव-जीवन के ऐतिहासिक विकास परिणाम की गहरी पहचान से रूपायित एवं विकसित हुआ है जिस की तह में वामपंथी विचारधारा का ठोस धरातल है और है प्रगतिशील विचारधारा की अमिट छाप।

विसंगतिबोध :- हिंदी कविता में आधुनिक जीवन की विसंगति का चित्रण प्रयोगवाद से शुरू होता है। इसकी अभिव्यक्ति साही की कविताओं में काफी सशक्त है।

*रीडर एवं रिसर्च गाइड, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग और अनुसंधान केंद्र, सरकारी ब्रह्मन कॉलेज तलशशोरी-670016 कण्णूर जिला (केरल)

16 राजधानी भारती जुलाई-सितंबर 2011

“मेरे जाते ही
यहाँ जहाँ मैं खड़ा हूँ
तुम्हें एक खालीपन का एहसास होगा
जिसे तुम हाथ बढ़ाकर
छूने की कोशिश करोगे”

यह बात सही है कि एक खालीपन को हम सभी महसूसते हैं जिसमें अब अनेक प्रकार के खालीपन जुड़ते जा रहे हैं। उपरोक्त अपनी कविता में किसी एक घटना का नहीं पूरे घटनाक्रम का सूक्ष्म अनुभव किया है। क्योंकि सब कहें शून्यता को प्राप्त करने वाले व्यक्ति को जिंदगी अर्धहीनता के किनारे को छू लेती है। विसंगत परिवेश से उसको सूनेपन के अलावा और कुछ नहीं मिलता। आधुनिक मानव की इस निस्सहाय स्थिति से मुक्त होने में साही एक सहचर को तलाशते हैं और एक संगठित शक्ति को चाहते हैं। उनकी राय में यह किसी एक काल का यथार्थ नहीं बल्कि बहुतांश का है या यों कहिए कि वह बृहतर समाज का है। कवि की रचना में इस बृहतर यथार्थ की खुली अभिव्यक्ति हुई है। मात्र अभिव्यक्ति नहीं बल्कि उसके सामाजिक, नैतिक एवं धार्मिक हैसियत का भी चित्र प्रस्तुत करते हुए इसे अवमानवीय स्थिति से उबरने का परोक्ष आह्वान भी उनकी कविता देती है। इसलिए साही की कविता विकल्प की, आस्था की कविता बन जाती है, साथ-साथ एक स्वस्थ समाज की तथा संतुष्ट जीवन की कामना की कविता इसलिए बन जाती है। यों विसंगतिबोध नई कविता की मूल प्रवृत्ति रही पर साही ने इसे विशेष संदर्भ में स्वीकार किया यही उसकी खासियत है। इस प्रकार साही की कविता युग-यथार्थ के अनावरण के साथ ही साथ जन-मानस में आस्था की शीतलता प्रदान करने वाली कविता बन जाती है।

मुक्ति की कामना :- आस्थावादी तथा मुक्तकामी कवि साही सदा स्वतंत्र तथा मुक्त जीवन बिताने के पक्षधर हैं। इसीलिए वे अस्वतंत्र जीवन जीने की अपेक्षा मृत्यु का वरण श्रेष्ठ समझने वाले हैं। यहाँ स्वतंत्रता का व्यापक अर्थ होता है। उन्मुक्त जीवन का मतलब मनमाना जीवन नहीं, बल्कि अपनी परंपरा, इतिहास एवं संस्कृति से रूपायित मानसिकता के अनुरूप नैतिक जीवन बिताना है। हमारा समाज विसंगत तो अवश्य, गोया कि विसंगत परिवेश में वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन का कुण्ठित हो जाना भी

स्वाभाविक है। इससे संघर्ष करना और कुण्ठाग्रस्त स्थिति से उबरना ही मुक्ति की कामना से मेरा मकसद है। यह मुक्ति की कामना साही की कविता का मूल स्वर भी। समझौतावादी न होकर संघर्ष के रास्ते से चलने वाले के हेतु उनकी कविता में तनाव का वातावरण छाया हुआ है। वर्तमान परिस्थिति से असंतुष्ट एवं जीवन की विडम्बनाओं से त्रस्त होने के कारण जिस विवशता और छटपटाहट का माहौल उत्पन्न होता वही साही की कविता की मूल स्थिति है। मानव राग, हिमालय के आसूँ जैसे कविताएं उदाहरण हैं और इनका मूल स्वर मुक्ति की कामना है।

“हे नीड़ खोजती मुक्त कल्पना
मेरी आकाशी”

उपरोक्त पंक्तियों में कवि साही इस अभिशप्त स्थिति से मुक्त होने के लिए संगठित करने की माँग करते हैं। क्योंकि देश को अभिशप्ता से मुक्त करने या अपनी विसंगत स्थिति से छुटकारा पाने के लिए एक व्यक्ति की ताकत नहीं, उसके लिए कइयों की ताकत जरूरी है। अलक्ष्य होकर जिंदगी से गुजरने वाले व्यक्ति को अकेले जाते-जाते आखिर अवसाद एवं थकावट को स्वीकार करना पड़ता है; जीवन के हर क्षण में वह थका-हारा बनकर टूटता जा रहा है, ऐसी एक त्रासद अवस्था का अंकन उन्होंने अपनी कविता में किया है। खामोशी की यह स्थिति उनकी जिन्दगी के अथ से इति तक बनी रहती -

“क्षण भर को
कहीं एक
डूबा हुआ प्रश्न
उठता है तिरता है ओझल हो जाता है।”

इस विसंगत अवस्था का ज्यों का त्यों बना रहना हमारे लिए दुःखदायक है । मुक्ति की कामना यहाँ भी प्रासंगिक है ।

जीवनानुभव भी रचना प्रक्रिया में काफी महत्वपूर्ण है। उसकी भूमिका नज़रअंदाज़ की नहीं जा सकती। साही के काव्य में भी यही जीवनानुभव तो है लेकिन कुछ भिन्न प्रकार का। साही जीवनानुभव को कविता के साथ सीधा नहीं जोड़ना चाहते। उनका कहना है कि अनुभव विशेष संदर्भ में काव्य का रूप धर लेता है। रघुवीर सहाय के संदर्भ

में रामस्वरूप चतुर्वेदी ने जो टिप्पणी की थी वह साही के संदर्भ में भी सार्थक निकलती है। साही व्यक्ति और समष्टि दोनों को समान महत्व देते हैं। दोनों के विशेष संयोग से ही कवि की मनोभूमि तैयार हो जाती। नई कविता मानवीय चेतना की कविता है, वह व्यक्ति की सचेतनता की सक्रिय अभिव्यक्ति है। हर युग में कविता को प्रासंगिक बनाने वाला पहलू उसकी अपनी मानवीय चेतना है। तब प्रश्न उठता है कि क्या मानवीय चेतना का सिलसिला पूरे हिंदी काव्येतिहास में मौजूद है? तो नई कविता में स्पन्दित मानवीय चेतना की विशेषता क्या है? जवाब तो इतना देना पड़ता है कि नई कविता में मानवीय चेतना का एक गहरा क्षेत्र निवृत्त हुआ है जो आज के जीवन-संदर्भों को छूती है। विजयदेव नारायण साही की कविता में मानवीय चेतना का जो स्वर अनुगूँजित है वे ही उसे साहित्यिक सरहदों के परे जाने की क्षमता प्रदान करते हैं।

आधुनिक जीवन का तनाव :- कह चुका है कि नई कविता आदमी के निकट की कविता है, आम आदमी के। अतः उसमें उनके दुख, पीड़ा एवं अभावग्रस्त जीवन की विडंबनाओं का प्रस्तुतीकरण हुआ है। नई कविता हम जानते हैं, मनुष्य की लघुता को स्वीकारने के साथ ही साथ उनकी गरिमा पर काफी सचेत भी हैं। साही ने लघुमानव के लघु परिवेश की अभिव्यक्ति अपने काव्य में की है, लघु परिवेश का आधार सामयिकता है। व्यक्ति की नियति को अच्छी तरह पहचाना है साही ने। क्योंकि उन्हें मालूम है कि कविता का रिश्ता जिंदगी के उलझन से है, तनाव से है। इन से खाद-पानी स्वीकारते हुए आधुनिक कविता पल्लवित एवं पनपी है। अतः नई कविता में सर्वत्र नज़र आने वाली एक प्रवृत्ति है तनाव जो नई कविता में काफी तीव्र बन गया है। उनकी कविता की यह 'सिटुएशन' आधुनिकता की देन है।

आधुनिकता :- 'आधुनिकता' शब्द नए साहित्य के संदर्भ में बहुचर्चित है। आधुनिकता माने क्या है? यह प्रश्न अब भी अस्पष्ट है ऐसी कोई बात नहीं। आधुनिकता का मतलब उस बोध से है जो युगीन चेतना या सामयिकता से जुड़ा है। हर असल आधुनिकता एक मानसिकता है जिसको नई परिस्थिति ने रूपायित किया है, याने आधुनिक मानव के अंतरंग यथार्थ की सही पहचान एवं उसका अनावरण ही आधुनिकता से तात्पर्य है। उसका यथार्थ तो अनिश्चितता एवं अंतर्विरोधों से ग्रस्त मानव का यथार्थ है। और भी स्पष्ट करें तो आधुनिक जीवन-परिस्थितियों के विशेष संदर्भ में परंपरा का पुनर्मूल्यांकन करते हुए जीवनता का ग्रहण एवं जड़ता का निराकरण ही आधुनिकता है। वह कोई शाश्वत मूल्य नहीं। आज की जिंदगी विडंबनाओं एवं विसंगतियों से भरपूर होने के कारण मानवीय मूल्यों एवं संबंधों में एक प्रकार का विघटन आ गया है। इससे व्यक्ति अपने अस्तित्व पर सचेत हो उठता है, वह अपनी अस्मिता की खोज शुरू करता है और पता चलता है वह तनावों से भरा हुआ है। जीवन की जटिल समस्याओं से जूझकर वह क्षत-विक्षत हो जाता है, हो गया भी। आधुनिकता मानव की टकराहट जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से होती है। यहाँ मूल्य संबंधी साही की धारणा एवं मान्यता यह है कि मूल्य संबंधी उद्भावना भीतर से है, भीतर से निकलती है जो उनकी दृष्टि से शाश्वत है। इसलिए साहित्य मानव के श्रेष्ठ मूल्यों का संवाहक है उसमें समाज का अतीत, वर्तमान की चिन्ता एवं भविष्य की चिन्ता बनी रहती है। नए साहित्य में नए मानव की समस्याएँ हैं जिसके प्रति आधुनिक मनुष्य चिन्तित है।

संक्षेप में वि. ना. साही का काव्य चिन्तन अपने समय के साथ अभिन्नतः जुड़ा हुआ है। सामाजिक समस्याओं के सूक्ष्म विश्लेषण में, उसके संप्रेषण में साही का काव्य विशेष रूप से सफल रहा है। ■

हिंदुस्तान में हिंदी सामान्य भाषा और अंतर्प्रान्तीय भाषा है तथा राष्ट्रीय कार्यों के लिए जरूरी है। यह वह भाषा है जो भारत को इकट्ठा करके रखेगी और राष्ट्र को एक बनाएगी।

—जवाहरलाल नेहरू

वैश्वीकरण और भारतीय भाषाएँ

—गुलाबराव हाडे*

इक्कीसवीं सदी के इस आरंभिक दशक में यानी जब से हमें वैश्वीकरण के बेहद नए पर्व का साथ मिला है, तब से समुचि दुनिया की बनावट और बुनावट दोनों में अकल्पनीय-भयावह परिवर्तन घटित होने के प्रमाण मिलते ही रहे हैं। लेकिन इससे ज्यादा गौरतलब बात यह है कि भारतीय जन-मानस ने कभी अतीत में डेढ़ सौ साल की गुलामी के आंतरिक उपनिवेश के वातावरण में 'ज्ञानोदय' 'आधुनिकता' और 'स्वतंत्रता' के जिस त्रैत से हमारा पहली बार परिचय हुआ था और जिसे हमने महत् प्रयासों के बाद हासिल भी किया था। मगर आजादी के बाद इस त्रैत के व्यापक राष्ट्रीय बर्ताव में ऐसे बहुत सारे तत्व अवरोधक भी रहे थे, जिन्हें हम समय रहते निष्क्रिय नहीं कर सके। बेहद अफसोस की बात है। पर इतना तो जरूर ही कह सकते हैं कि भारतीय-परिवेश में इस त्रैत के बर्ताव की सामाजिक परियोजना अभी ठीक से जमीन पकड़ भी नहीं पाई थी कि 'भूमंडलीकरण' 'उदारवाद', 'बाजारवाद' और 'उत्तर आधुनिकता' के चौतरफा हमलों की सक्रियता से उपजी बदलाव की तेज आंधी इसकी जड़ों को आज बुरी तरह से झकझोर रही है। और हम सभी भौंचक् हो; इस स्थिति को पूरी शिदयत के साथ महसूस करने के लिए अभिशप्त हैं।

शिदयत महसूस की जा रही चिंता की एक और बात तो यह भी है कि इस नए पर्व ने समकालीन भारतीय समाज-जीवन की तमाम फौरी और आंदोलनी गतिविधियों को न सिर्फ लकवाग्रस्त हालात में पहुंचा दिया है, बल्कि कहना होगा-विकास के नाम पर देश की संसाधन-संपदाओं का भारी विनाश, स्थानीय जन-समूहों का बड़ी तादाद में विस्थापन, उनके प्रजातांत्रिक हकों के संकोचन की कुत्सित प्रवृत्ति, पर्यावरण का गंभीरतम रूप में हास एवं असंतुलन, छोटे-मझोले किसान-काशतकारों की आत्महत्याओं का प्रदेशव्यापी दिल दहला देने वाला तेज घटनाक्रम, और

पेय-जल की घोर किल्लत ! यहाँ तक की भारत की सरजमी जंगल, जमीन और तटवर्ती इलाके इन सभी पर आवारा वित्तीय-पूंजीवादी ताकतें न सिर्फ जबरन अपना कब्जा जमाती जा रही हैं, वरन् इससे धरती के मेहनतकशों के हक, जनतांत्रिक-प्रक्रिया और उनके संविधान प्रदत्त सार्वजनिक हित सब कुछ पर ही कुठाराघात करने का घिनौना मनोरथ सचेत हो कर काम कर रहा है।

जो हो, नई तकनीकी अग्रगति प्रौद्योगिकी की फलस्वरूप और विश्व व्यापार नीति के नए परिप्रेक्ष्य में वजूद में आ चुकी बदचलन ठेका पद्धति, अनौपचारिक उत्पादन, संस्था-संगठन या निकायों के अहाते से बाहर गैर सरकारी हलकों में काम कर करवा लेने वाली नव-विकसित कार्य-प्रणाली, जो विकसित नवविकासशील सभी देशों के लाखों कामगार कर्मियों को दिन-ब-दिन बेरोजगारी की खाई में झोंकती तो जा ही रही है; उस पर कहें यह कि नए उभरने वाले उद्योगों की संभावनाएं और उनमें रोजगार-क्षम अवसरों की संभावनाएं पूरी तरह से धूमिल तो हैं ही। मगर दृष्टव्य है कि प्रचलित उद्योग और उन पर निर्भर तमाम लघुउद्योग आज बुरी तरह लड़खड़ा रहें हैं। एक और औद्योगिक बस्तियों का निर्मनुष्य होते जाना और दूसरी तरफ विशेष आर्थिक क्षेत्र जैसे लोकलुभावन नारे के तहत बहुराष्ट्रीय कंपनियों की इजारेदारी, सत्ता संगठन की सांठ-गांठ से छोटे-बड़े किसानों की जर-जमीनें बजरिया या वैध-अवैध तरीके से हथियाने का क्रम अपनी चरम पर है। भारतीय समाज व्यवस्था में सदियों से कृषि, कृषक और कृषि-पूरक संस्थाएँ पुरानी संस्थाओं में से एक किन्तु सबसे महत्वपूर्ण और केन्द्रीय संस्था रही है। इसीलिए भारत को "कृषि प्रधान" देश का संबोधन प्राप्त है। मगर मुक्त अर्थ नीति एवं बाजारवाद के दौर में दोनों परस्पर संवादी, सहयोगी, और अनुपूरक होने के बजाए एक दूसरे के कटट्टर विरोधी होने के

* महेश निवास, पहली मंजिल, दीप प्युझिक के सामने, नूतन वसाहत, अंबर्ड, जिला-जालना (महाराष्ट्र) 431204

रुझान साफ-साफ झलकते हैं, जो किसानों की आत्महत्याओं के बहुविध कारकों में से एक अहम कारक के रूप में रूपायित होता जा रहा है।

एक और बात 'उत्तरआधुनिकता' में 'उत्तर' आधुनिकता एक 'विशेषण' मात्र तो है ही है। मगर 'विशेषण' अपने 'विशेष्य' की व्याप्ति को 'कमतर' तो अवश्य ही करता है — किन्तु कई बार उसे 'विकृत' भी करता है। इस 'विशेष्य-विकृति' का एक गंभीरतम नमूना है — संचार-संसाधनों के माध्यम से निर्मित 'स्त्री-प्रतिमा', जो उन्हें अवमानित करने पर आमादा तो हैं ही — मगर समूची स्त्री जाति का 'वस्तुकरण' भी करती जा रही है! अन्तर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीयस्तर पर एक तरफ 'स्त्री-सबलीकरण' और 'स्वाधीनता' पर उम्मीदों भरी बयानबाजी और इसके एकदम विपरीत समस्त स्त्री-जाति को क्षण-क्षण क्षरित करने के लिए कटिबद्ध व्यवस्था! यही नहीं वरन्, भारत के ग्रामीण इलाकों में चलने वाले परंपरागत कुटिरोद्योग, लघुद्योग, वस्त्रोद्योग, दुग्धोद्योग, मछली-विक्रय या मुर्गी-पालन जैसे उद्यमों-व्यवसायों पर नई अर्थ-नीति एवं बाजारवाद की मजबूत गिरफ्त की बदौलत समस्त स्त्री-जाति निष्प्रभ और निःसत्त्व होती जा रही है। जबकि बांग्ला देश समेत भारत के कुछेक प्रदेशों में 'महिला बचत गट' के मोहक आवरण तले महिला जगत् की वर्तमान स्थिति 'सब कुछ अलबेल' की मुद्रा में सामने लाई जा रही है। फन्दा कसता जा रहा है। कहना होगा कि 'उत्तर आधुनिकता' के नाम पर ऐसे कठमुल्ले आगे आ रहे हैं, जो अपनी मनमानी कल्पना बनाकर फैसले दे रहे हैं; कि उस कल्पना पर प्रश्न करने का किसी को अधिकार ही नहीं है। मगर हकीकत यही है कि दुनिया के हर विकासशील मुल्कों की तस्वीर लगभग एक-सी ही है। किसी भी मुल्क की कुशलक्षेम पक्की नहीं है।

यानी 'वैश्वीकरण' के इस पर्व में भूमंडलीकरण, 'उदारवाद', 'बाजारवाद' और 'उत्तरआधुनिकता' के चौतरफा हमलों की सक्रियता से उपजी बदलाव की नई तेज आंधी के बावजूद राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी ज्ञान के परिणाम के मुद्दों पर पूरी दुनिया कभी भी आवारगी की हद तक इतनी आजाद नहीं थी। और न ही कभी इतनी बर्बरता की हद तक अन्यायपूर्ण रही होगी! तात्पर्य आज की तारीख में गौरतलब है कि भारत जैसे विकासशील देश 'आजाद' और 'अन्यायपूर्ण' दोनों एक साथ ही हैं। ऐसे में दुनिया की समस्त विकासशील सामाजिकताएं इस अभूतपूर्व और विनाशकारी स्थिति से निपटने के लिए आत्मसंगठन के दौर

से गुजरने की प्रक्रिया में प्रवेश कर रही है। और आत्मसंगठन के लिए आत्मसंघर्ष भी कर रही है। लेकिन ऐसे बेरहम और दुश्वार समय में सबसे अहम् और चिंतनीय सवाल यह है कि फिल्बकत बहुभाषी भारत की सामाजिकताओं की दशा और मनोदशा कैसी है? राष्ट्रवादी परिधि तक अगर ये सवाल सीमित रहता तो अब तक कब के मार दिया जाता। पर आज भी जब-जब इन विमर्शों के 'एक्सक्लूसिव' होने की बात आती है तो हिन्दुत्ववादी ही नहीं, कई प्रगतिशील तक उन्हें राष्ट्र के लिए खतरनाक बताते हैं। कहने की जरूरत नहीं कि इस आलेख में सक्रिय विचार-दृष्टि वैश्वीकरण और भारतीय भाषाओं के संदर्भ से विनिर्मित है। और हमारी शक्ति एवं सीमा दोनों बेशक भाषा साहित्य ही है। और यह भी सच है कि किसी भी समाज के आत्मसंगठन एवं आत्मसंघर्ष में जो बहुत सारे तत्व सक्रिय सहायक होते हैं, उन तत्वों में से एक अहम् तत्व 'भाषा' और 'साहित्य' भी है।

आज के मौजूदा समय में भारतीय भाषाओं की स्थिति क्या है? भूमिका क्या है? और भारतीय समाज के आत्मसंगठन में और आत्मसंघर्ष की प्रक्रिया के दौरान क्या भूमिका हो सकती है? और तो और उस भूमिका के निर्वाह में सक्षम होने के लिए क्या करना जरूरी है? हमारी चिंता के केंद्र में अन्य विषयों के साथ यह भी एक विषय प्रमुख विमर्श तो होना ही चाहिए। रही 'वैश्वीकरण' और 'ग्लोबल' समाज की बात तो हर भाषा और साहित्य का समाज अपने स्वभाव से ही अनिवार्यतः ग्लोबल हुआ करता है। अपनी भौतिक उपलब्धियों के कई-कई ग्लोबों को हर भाषा का साहित्य अपने ग्लोबों में समेट और सहेज लेता है। मराठी भाषा के अद्य संत ज्ञानेश्वर का 'पसायदान' "आता इश्वात्मके देवो" इसका अन्यतम उदाहरण है। तात्पर्य — 'वसुधैव कुटुंबकम्' हर भाषा और साहित्य की निष्पत्तिमूलक आकांक्षा रही है। विश्व की किसी डूबती-उभरती महासत्ता की जनतांत्रिक भाषा की चासनी में घुली धमकी या दयाभरी गुजारिश नुमा चेतावनी तो हरगिज नहीं।

मगर अब इस विडंबना को ही ध्यान से देखा जाए कि जितनी तीव्रता से संचार माध्यमों के संजाल सघन होते जा रहे हैं उतनी ही तेजी से मनुष्य संवादहीनता की स्थिति में फंसा भी जा रहा है। इस संवादहीनता की एक वजह यह भी है कि किसी बात को 'वक्ता' के संदर्भ में समझने का चलन कम होता जा रहा है, जबकि 'श्रोता' के संदर्भ में समझने का चलन बढ़ रहा है। और इनका ताजातरीन

मगर उपलब्ध उद्गार या अवधारणाएं पूरी तरह से बेकार न भी हो, तब भी संदर्भों के सद्यः समुपस्थित परिप्रेक्ष्य में (वैश्वीकरण) परिलक्षित किए बिना उसे सिर्फ ढोया जा सकता है। उससे अनुप्राणित और अनुप्रेरित नहीं हुआ जा सकता। भाषावार प्रांत रचना के क्रमिक इतिहास को देखने से यह सहज ही परिलक्षित हो जाता है कि भाषावार प्रांत रचना के मसले पर प्रदेशों का जब विभाजन या गठन हुआ, तब भी और सीमा-निर्धारण या जल-संपदा के बंटवारे जैसे दीगर सवालोंने भी, भौगोलिक समाजिकताएं, जातिभिमान, धर्म, संस्कृति जैसे कथित अस्मिताओं के सवालोंने जटिलताएं न सिर्फ वृद्धिगत होती रही हैं, वरन खून-खराबे

21 जूलाई-सितंबर 2011 राजभाषा भारती

सामाजिकताओं का निर्वाह कर रोजगार की तलाश में भटकते मराठी, तमिल, तेलुगू, कन्नड, मलयालेम, गुजराती, सिंधी-पंजाबी या बांग्ला, ओरिया, असमिया युवाओं की भाषा या बोलियाँ कुछ भी हो सकती हैं। लेकिन 'वैश्वीकरण' की दहलीज पर कदम रखते ही उनकी भाषा अंग्रेजी हो जाती है। आज के जानलेवा प्रतिस्पर्धा के दौर में यही भाषा उनके लिए रोजगार की हलफिया गारण्टी, यानी जीने-मरने की भाषा साबित हो रही है। भारतीय समाज की यह तस्वीर अभी भी अपनी प्राथमिक और विकासशील अवस्था में क्यों न हो, लेकिन सदियों पूर्व की बहुभाषिक भारत की कोई भी प्रादेशिक भाषा, जो उस प्रदेश-विशेष की मातृभाषा भी है, अपनी प्रादेशिक ग्रामीण अस्मिता और ग्रामीण-सांस्कृतिक दुरभिसंधियों के तनाव में पड़ जाने से 'वैश्वीकरण' के इस तेज बहाव में क्या से क्या होती जा रही है, इसका उपरोक्त उदाहरण एक बहुत ही समीचीन रूप में आज हमारे सामने है।

यूँ भी, यह हम सब की देखी-भाली हकीकत है, कि बहुभाषिक भारत में अंग्रेजी शुरू से ही भारतीय भाषाओं के लिए सदैव से ही उलझनों का सबब रही है। यानी भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के रिश्ते सदैव से ही 'हेटरोग्लॉ-सिया' (Heteroglossia) के रहे हैं। 1934-35 में रूसी समीक्षक मिकाईल बक्तिन ने अपनी पुस्तक 'डिस्कोर्स इन द नॉवेल' में "डाइलॉजिज्म" शीर्षक सिद्धांत के तहत पहली बार इस शब्द का प्रयोग किया है, जो निःसंदेह आज के बहुप्रचलित और स्थापित शब्द 'डायसिया' या 'हायपरग्लॉसिया' 1959 में प्रकाशित चार्ल्स फर्ग्युसन की पुस्तक 'डायग्लॉसिया वर्ल्ड' की अपेक्षा, खास बात यह है, कि धारणा की दृष्टि से 'हेटरोग्लॉसिया' शब्द काफी सशक्त है। यानी अगर एक व्यक्ति दोनों भाषाएं बरतेगा, (प्रादेशिक भारतीय भाषा) तो अंग्रेजी को रोजगारयुक्त अवसरों के बावजूद सामाजिक और सांस्कृतिक लिहाज से ऊँची भाषा मानकर ही चलेगा और अपनी मातृभाषा या प्रादेशिक भाषा को एकदम नीचा।

आज के ग्लोबल उत्तर आधुनिक समय में यद्यपि हिंदी अपनी उठान पर है, और तमाम भारतीय भाषाएं अपने संकटग्रस्त या प्रश्नाकूलता के फलस्वरूप ढलान पर हैं मगर बावजूद इसके मराठी भाषा के 'अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलनों' के तकरीबन सौ सालों के पुराने गौरवशाली इतिहास या 'विश्व साहित्य सम्मेलनों' जैसे रोमहर्षक आयोजनों के भी भारतीय भाषाएं बेशक मरणासन्न अवस्था में ही हैं।

हम मानते हैं कि हिंदी ने संस्कृत से संघर्ष किया, अरबी-फारसी से भी और दक्षिण की अन्य भारतीय भाषाओं से भी किया और इस दौर में अंग्रेजी से उसकी अन्योन्या क्रिया की बारी है, जबकि ताजा हकीकत तो यही है कि हिंदी अपनी मुख्य प्रतिवद्धि उर्दू का तकरीबन सफाया करने में कामयाबी हासिल कर चुकी है। अपनी लगभग 17 बोलियों का खा चुकी है और इस देश में अब उसने उत्तर-औपनिवेशिक भाषाई महाशक्ति के रूप में अंग्रेजी की हैसियत के साथ एक तरह का तालमेल बैठा लिया है। वरन् यह कहना बेहतर होगा कि केवल हिंदी ने ही अंग्रेजी के साथ 'आशनायी' कर ली है। अंग्रेजी के 'हेटरोग्लॉसिया' शब्द की निष्पत्तिमूलक अवधारणा और उससे उत्पन्न अन्य अनुषंगिक सवालों के बावजूद वर्तमान परिप्रेक्ष्य को देखें तो अपनी 'मातृभाषा' को बहुभाषीय भारतीय आज किस 'स्तर' की भाषा मानता है? 'वैश्वीकरण' के दौर में वह अपनी 'मातृभाषा' को क्या अहमियत और स्तर दिला-दिलवा सकता है? जैसे बहुविध जायजा मुक्कमल और दुर्निवार प्रश्नों के ठीक-ठीक और वस्तुनिष्ठ उत्तर दिए बिना इस विमर्श को बौद्धिक गांभीर्य तो प्रदान किया जा सकता है, मगर समय के व्यापक सरोकार की संवेदना से इस विमर्श का संबंध जोड़ पाना और क्रम निर्धारित कर पाना एक दुर्निवार काम है। वर्ण, वर्ग, धर्म और प्रादेशिक-भाषिक कट्टर अस्मिताओं के विभेद से उत्पन्न विषमताओं से बनी, विभिन्न मारक स्थितियों से ग्रस्त और बाजारवादी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में इस एक ही सवाल का औचित्य एवं पैनापन और भी बढ़ जाता है। लेकिन इसे और इससे उत्पन्न अन्य अनुषंगिक सवालों को उठाना जितना जरूरी है, उससे भी अधिक जोखिम भरा भी है, क्योंकि भारत में वर्ण-वर्ग, धर्म और भाषायी, जातीय-चेतना के अलग-अलग और हिंसक स्वरूप अख्तियार करने वाले 'स्तर' कहीं अधिक उग्र हैं। कहीं कम है तो कहीं पर अपनी प्रखरता के साथ उपस्थित हैं। अतः वैश्वीकरण के इस पर्व में भारतीय भाषाओं से सम्बद्ध ऐसे तमाम संवालों को अगली पीढ़ी के लिए टाल देना और भी खतरनाक साबित हो सकता है। मगर इस आलेख में चर्चित सभी मुक्कमल सवालों के परिप्रेक्ष्य में ही 'विश्वभाषा', 'राष्ट्रभाषा' और मातृभाषा (प्रादेशिक भाषा) पर विमर्श के लिए 'विश्व' और 'मातृभाषा' पर पहले अलग-अलग फिर एक तीनों पर विचार करना ज्यादा उचित और बेहतर लगता है। वैसे भी रूपक के माध्यम से कहें तो 'विश्व', 'राष्ट्र' और मातृभाषा (प्रादेशिक भाषा) का संबंध वैसा ही है जैसा 'धान', 'अनाज' और 'रोटी' का होता है।

जो हो, नए विमर्शों की त्रैमासिक पत्रिका 'वाक्' के अंक दो अप्रैल-जून 2007 जो 'नई चाल की हिंदी' विषय पर हिंदी भाषा और साहित्य के तमाम प्रश्नों पर विमर्श की काफी गुंजाइशें रखता है और हमें सुखद अनुभूतियों से भी भर देता है। लेकिन बावजूद इसके ए. अरविन्दाक्षन (जो विख्यात आलोचक और कोच्चि वि. वि. में हिंदी के प्रोफेसर हैं) के शब्दों में "हिंदी को विश्वभाषा के रूप में विकसित होना और स्वीकृत होना, उत्तर के हिंदी भाषी लोगों की भी इच्छा है, लेकिन यह इच्छा इतनी व्यापक नहीं है इसका कारण यह है कि प्रत्येक राज्य अपनी-अपनी भाषा को लेकर अहंग्रस्त है। यह सही है कि प्रत्येक भाषा का अपना महत्व है। इसके बावजूद 'विश्वभाषा' की परिकल्पना के संदर्भ में भारत के किसी एक कोने में बोली जाने वाली भाषा को इसकी अहंता नहीं है। हिंदी को जो अहंता प्राप्त हुई है जो उसके भौगोलिक और ऐतिहासिक कारण है। जिसको नजरंदाज नहीं किया जा सकता। लेकिन यह भी सच है कि हिंदी को विश्वभाषा के रूप में परिकल्पित करने के स्वप्न में मग्न होने से कोई फायदा नहीं है। संयुक्तराष्ट्र में यह देखना अत्यंत आवश्यक है कि अन्य भाषाएं किस तरह से स्वीकृत हैं और अब तक हिंदी स्वीकृत क्यों नहीं है? स्वीकृति के मानक प्रतिमान कौन-कौन से हैं? सरकार को इस दिशा में कौन-सी कार्रवाईयां करनी हैं? अब तक हुई कार्रवाईयां क्या-क्या हैं? कोई भी बात पारदर्शी नहीं है। इसके संबंध में गृह मंत्रालय की तरफ से या अन्य संबंधित मंत्रालयों से कोई विवरण जारी नहीं किया गया है। हमारा सत्ता पक्ष और विपक्ष के सभी प्रमुख व्यक्ति अंग्रेजी को लेकर सुविधा का अनुभव कर रहे हैं। तब हिंदी को विश्वभाषा बनाने की इच्छा आधारहीन ही सिद्ध होगी।"

लेकिन यहां यह भी स्पष्ट कर देना हम आवश्यक मानते हैं कि इस तरह के उद्धरण देकर हिंदी और भारतीय भाषाओं के केवल नकारात्मक चित्र ही उकेरते हैं, कतई ऐसी बात नहीं है, इसका पाठ कुछ सकारात्मक गुंजाइशें भी पैदा करता है। और इसके जरिए हम वैश्वीकरण के युग में बहुभाषी भारत में प्रत्येक भाषा के केवल सुरक्षित ही नहीं बल्कि दीर्घायु समृद्ध और सम्पन्न ही नहीं वरन् 'मानक भाषा' बनाए जाने के क्षण पर एक बार नए कोण से निगाह डाल सकते हैं और शायद हमें इस सवाल का जवाब भी मिल सकता है कि वैश्वीकरण के दौर में भारतीय भाषाओं को आसन्न मृत्यु के हवाले करने वाले इस ताज्जातरीन

माहौल में अंग्रेजी के मुकाबले हिंदी भाषा का तो प्रश्न ही नहीं, भारतीय भाषाएं सचमुच खत्म होगी या उनके पैर और जमेगे? अनिरुद्ध देशपांडे (हिन्दुस्तानी इन इण्डिया-ईपीडब्ल्यू 8 अप्रैल 2000 पृ 1240-1242) की धारणा के मुताबिक हमें स्वीकारना होगा, "हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का भविष्य इस बात पर निर्भर है कि उसमें महान साहित्य का विकास होता है या नहीं? यह उनके पुनरुत्थान और क्रम-विकास की अनिवार्य शर्त है। क्या कभी टॉलस्टाय और चेखव का भारत की धरती पर जन्म होगा?" यह ज्यादा संगत होगा कि इस सवाल को परिप्रेक्ष्य में रखकर ही, वर्तमान समय में भारतीय भाषाओं की समस्याओं को और उनके भविष्य को समझा जा सकता है। लेकिन इस पूरे परिप्रेक्ष्य के बिना किया गया कोई भी विमर्श-विश्लेषण न सिर्फ अधूरा होगा बल्कि अवैध भी होगा। सुविधा के लिहाज से परिप्रेक्ष्य की यह तलाश पहले-परिप्रेक्ष्य रचने वाले विभिन्न कारकों के संदर्भ में अलग करने का प्रयास काफी सचेतता के साथ किया जाना चाहिए। फिर समग्र परिस्थिति का विवेचन एक साथ भी किया जाना चाहिए, क्योंकि आखिर यह किसी पाठ्यक्रम के अंतर्गत और उसकी चिंताओं से जुड़कर आरंभ हुआ विमर्श तो है नहीं। ध्यान रखना बेहतर होगा कि ऐसे विमर्शों के प्रारंभ का भी अपना एक समसामयिक सरोकार होता है, जिसका एक पक्ष उस सरोकार के समसामयिक प्रतिफलन को भी उद्भासित करता है। तात्पर्य यह कि जिस समसामयिक वातावरण और परिप्रेक्ष्य में ऐसा विमर्श प्रारंभ होता है — उस वातावरण और परिप्रेक्ष्य पर पकड़ ढीली पड़ते ही वह मात्र अकादमिक चिंताओं का विषय बनकर रह जाता है। समाजशास्त्रीय अध्ययन, भाषा और साहित्य की दृष्टि से भले ही ऐसा विमर्श मूल्यवान बन पड़े, लेकिन चिंताओं को केंद्र में रखकर समसामयिक राष्ट्रीय-संगोष्ठियां इसके प्रारंभ का जो सूत्रपात करती हैं — वे चिंताएं पीछे ढकला जाती हैं।

असल में, तथाकथित वैश्वीकरण एवं बाजारवाद की तेज आंधी के बीच अपनी आंतरिक संरचना और संघटन के विभिन्न पतों और प्रसंगों में आ रहे या अनुमानित बदलाव के संदेश और संकेत को समुचित रूप से पढ़ा जाना चाहिए। तभी राष्ट्रीयता, जातीयता और सामाजिकताओं के स्वरूप के साथ उसकी भाषा-साहित्य एवं संस्कृति की समस्याएं स्पष्ट हो पाएंगी। और अधिक कारगर समाधान के लिए सूझ हासिल करने में भी सहायता मिलेगी। ■

एक पेड़ की आत्मकथा

—एन. आर. मार्टोडकर*

सुबह-सवेरे जब मेरी नींद खुली तो कई पंछियों की सुरीली आवाजों ने मेरा मन मोह लिया । साथ-साथ मंद-मंद बहती बयार ने मेरी टहनियों को हिला-डुलाकर सब पत्तों में रोमांच भर दिया । मैं बड़ी खुशहाली से उन पंछियों की तरह-तरह की आवाजों का आनंद उठा रहा था । परंतु इन मधुर आवाजों के कलरव में काकराज की कर्कश आवाज ने जहर घोल दिया जिससे मेरा चित्त बिखर गया । मुझे उन आवाजों से घणा होने लगी ।

मैंने तेज हवा के बहाव का सहारा लेकर अपनी टहनियों को जोर से हिलाकर कागराज को भगाने की कोशिश की । मगर अफसोस वे उड़कर जाते और तुरंत लौटकर वापस मेरे ऊपर बैठ जाते हैं । आखिरकार मेरी सब कोशिश बेकार गई तब मेरा ध्यान उनकी बातों की ओर आकर्षित होने लगा । जब ध्यान लगाकर उनकी बातों को सुनने की कोशिश की तो मुझे ज्ञात हुआ कि वे सब मिलकर एक बुजुर्ग के खिलाफ अभियान छेड़ने का सलाह मशविरा कर रहे थे । वे कह रहे थे कि यह बुजुर्ग हमेशा हमें और इस पेड़ को सताता है । हमें देखते ही वह हमारे ऊपर कंकर-पत्थर की बरसात कर देता है - जब-जब यह पेड़ हमारे लिए मीठे-मीठे आम पैदा करता है तो यह बुजुर्ग आम को कच्चे ही तोड़कर आम के पेड़ को दुख पहुंचाता है और हमें पके आम खाने से वंचित रहना पड़ता है । कई बच्चे भी आम के दिनों में हम पर पत्थर फेंकने में इसका साथ देते हैं और हमें तंग करते हैं । आखिर सब कागराजों ने मिलकर यह निश्चय किया कि जब भी वह बुजुर्ग मेरी ठंडी छाया में बैठने आएगा तब हम सब मिलकर बारी-बारी से उस बुजुर्ग पर हमला कर देंगे और उसे वहां से भगा देंगे ।

यह बात सुनते ही मेरी नींद उड़ गई। मैं गुस्से में लाल-पीला हो गया और जोर से चीख पड़ा। मेरी उस चीख की हड़कंप से सब फौरन उड़ गए। लेकिन आदत से मजबूर फिर लौटकर मेरी टहनियों पर आसन जमाने लगे। मैं तुरंत बोल पड़ा, “हे कागराजों! दूर हो जाओ मुझसे, मेरी टहनियों पर बैठने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है
...। चलो हटो।” यह बात सुनकर वे सन्न रह गए और उनकी कर्कश आवाज शांति में परिवर्तित हो गई। उनमें से एक वृद्ध कागराज ने मुझसे इतने क्रोध की वजह जानने की कोशिश की और मैं बोल पड़ा।

“मेरा जन्म एक सड़क के किनारे हुआ था। जहाँ मेरे आस-पास कोई भी मेरे साथी दिखाई नहीं दे रहे थे। वहाँ की धरा इतनी कठोर थी कि मैं पानी की एक बूंद के लिए तरसता था। उस सड़क पर गाड़ियों की इतनी भीड़ रहती थी कि क्या बताऊँ। मुझे हमेशा गाड़ियों से निकलने वाला काला धुआँ भक्षण करने को मिलता था। मेरा जीवन बहुत त्रासदायी बनता जा रहा था। उस हालात में मैं बिल्कुल जी नहीं सकता था। मैं रोज-रोज की परेशानियों से बहुत तंग आ गया था। मेरी उम्र भी बहुत कम थी। मैं और मेरी जड़ें उस रास्ते की कठिनाइयों के कारण मुझे जरूरत के हिसाब से पानी नहीं मिलता था। मैं बारिश का जल प्राशन कर उन पलों को जीता था। मैं और क्या कहूँ बस अपने अंतिम पल गिन रहा था। एक दिन एक बुजुर्ग अपने नन्हें पोते के साथ उस सड़क के किनारे-किनारे जा रहा था। पोते को अपने दादा के साथ चहलकदमी का बड़ा आनंद आ रहा था। वे कभी अपने रास्ते को तो कभी आस-पास के क्षेत्र को देखते हुए जा रहे थे। चलते-चलते वहाँ से गुजरती गाड़ी का

*वरिष्ठ नाविक व कक, भारतीय मात्स्यकी सर्वेक्षण, मुरगांव बेस, गोवा

धुँआ उनकी नाकों में चला जाता था, वे अपनी नाक पकड़कर बंद कर लेते थे। वे भी मेरी तरह धुँआ पीने को मजबूर थे। वे दोनों धीरे-धीरे मेरे निकट आ रहे थे। उनके नजदीक आने से मेरे मन में डर भर गया। मेरा अंतिम समय नजदीक था। वह बच्चा चलते-चलते मेरे पास पहुँच चुका था। जैसे ही उसने मेरे ऊपर पांव रखने के लिए उठाया, मैं जोर से “बचाओ, बचाओ” चिल्लाया। आश्चर्य की बात है कि उसने मुझे रेंदने की बजाय अपना पांव बाजू में रखने की कोशिश में बच्चा गिरते-गिरते बचा। यह सब होने पर मेरी जान में जान आ गई। वह तुरंत मेरी बाजू में आकर बैठ गया और मेरे कोमल पत्तों को प्यार से सहलाया और मुझे उखाड़ने की कोशिश करने लगा तो उसके दादाजी ने उसे डांटते हुए कहा, ‘अरे बेवकूफ ! इस पौधे में क्या रखा है आगे चल तुझे चाहिए तो मैं बाजार से फूलों के पौधे लाकर दूंगा। लेकिन बच्चे ने दादाजी की डांट को सुना-अनसुना कर मुझे ही लेने की जिद पर अड़ गया। आखिरकार दादाजी ने हार मानते हुए बड़ी सावधानीपूर्वक निकाल कर अपने पोते को सौंप दिया। मुझे अपने हाथों में पाकर बच्चा खुशी से फूला न समाया। उसने अपने दादाजी की सहायता से मुझे बड़ी सावधानीपूर्वक अपने घर के पिछवाड़े खुले मैदान में लगाया।

इस दिन के बाद मुझे रोज पानी देना और मेरी खूब देखभाल करना और मेरी सुरक्षा के भी पूरे इंतजाम उसने कर दिए थे। देखते ही देखते मैं बढ़ने लगा और वह रोज मुझे देखकर प्रसन्न होता और मुझे भी उसकी खातिरदारी बहुत भा रही थी। हम दोनों एक दूसरे से बहुत प्रेम करने लगे। धीरे-धीरे मैं आसमान छूने लगा। दिन के बाद दिन और ऋतुओं के बाद ऋतुएं बदल गईं और फिर एक मौसम ऐसा भी आया कि मुझमें पहली बार फूलों की बहार आ गई। यह देखकर वह बच्चा बहुत प्रसन्न हुआ। उसके बाद उसने मेरी देखभाल बढ़ा दी। उसने मेरे फूलों और मेरी रक्षा के लिए नैसर्गिक कीटनाशक और खाद का इस्तेमाल किया। इससे मुझमें बहुत शक्ति आ गई और मेरे फूल फलों में

परिवर्तित होने लगे। जब भी वह मेरे फलों को देखता खुशी से झूम उठता था। अंततः मेरे ऊपर लगे आम एक-एक कर पकने लगे। उसने कुछ आम तोड़े और कुछ ऐसे ही छोड़ दिए क्योंकि वह जानता था कि आम पर सिर्फ मनुष्य का ही अधिकार नहीं है। वे तो जंगल के कई जीवों की मिठाई हैं। पर्यावरण के प्रति उसकी यह आस्था देखकर मैं स्तब्ध रह गया। मन ही मन सोचने लगा कि ऐसे पर्यावरण प्रेमी मनुष्य के इस धरा पर होते हुए पर्यावरण का संतुलन कभी भी नहीं बिगड़ सकता।

अब मेरा तना बहुत मोटा हो चुका है वह बच्चा भी अब बच्चा नहीं बल्कि बुजुर्ग दादाजी बन गया है। अब वह रोज अपने पोते के साथ टहलने निकलता है और मेरी विशाल छाया में आकर मेरे तने के पास विश्राम करता है और यह सब मुझे बहुत अच्छा लगता है। जिस दिन वह नहीं आता है, मैं बहुत उदास हो जाता हूँ। जिस दिन वह बुजुर्ग तने के पास नहीं बैठता मैं बहुत बैचन हो जाता हूँ क्योंकि वह मेरे तने के पास बैठकर अपने पोते को अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाता है। उन कहानियों को सुनकर मेरा भी ज्ञान बढ़ता है। आज मैं जानता हूँ कि मैंने इतना लंबा-चौड़ा शरीर पाया है और जिसकी छाया दूर-दूर तक फैल रही है यह सब बस इस बुजुर्ग की मेहरबानी है। अब कोई बच्चा मुझ पर पत्थर फेंककर कच्चे आम तोड़ता है तो मेरे तने को थोड़ी बहुत हानि होती है मगर इससे मेरे मन को बहुत शांति मिलती है। क्योंकि मैं उन बच्चों में उस बुजुर्ग की छवि दूँढता हूँ और यह देखकर मैं प्रसन्न हो जाता हूँ।

अब कहो कागराजों उस बुजुर्ग पर वार करने की उद्दता क्या उचित रहेगी ? ऐसे करने से कोई हल निकलेगा ? नहीं । बल्कि तुम कागराजों के प्रति उस बुजुर्ग के मन में घृणा पैदा हो जाएगी और क्या इस घृणा के साथ इस धरा पर कोई भी प्राणी सुख तथा चैन से जी पाएगा ? इसलिए मेरा एक की कहना है कि तुम भी मेरी टहनियों पर शांति से जियो और दूसरों को भी जीने दो। ■

हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुँचा जा सकता।

—डॉ. लूथर (जर्मनी)

भारतीय कृषि एवं जन-जीवन के अप्रतिम महाविज्ञानी : घाघ एवं भड्डरी

-डॉ. राजकिशोर *

भारतीय कृषि, ऋतुएं, ज्योतिष, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सामाजिक नीतियों एवं आचार-विचार तथा शकुन-अपशकुन विषयों के अद्भुत ज्ञाता के रूप में महाविज्ञानी घाघ एवं भड्डरी का नाम भारतीय लोक-साहित्य में अजर-अमर है। घाघ एवं भड्डरी ने अपने ज्ञान-सागर को आम-बोलचाल की भाषा में कहावतों एवं लोकोक्तियों के माध्यम से लोगों के सामने रखा। यद्यपि महाकवि घाघ एवं भड्डरी का कोई भी लिखित साहित्य उपलब्ध नहीं है फिर भी उनका ज्ञान रूपी साहित्य आम आदमी की जुबान पर इतना रच-बस गया है कि वह आम आदमी की भाषा में कुछ अपभ्रंशों के साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी होता हुआ आज भी अपने जीवंत रूप में मौजूद है। देश के सभी हिंदी भाषी प्रांतों यथा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार तथा पंजाब, हरियाणा एवं दिल्ली के हिंदी भाषी क्षेत्रों में इनकी कहावतें एवं लोकोक्तियां आज भी इतनी अधिक लोकप्रिय हैं कि लोग अपने दैनिक जीवन के कार्यों में उनका पालन करते हैं। घाघ एवं भड्डरी की कहावतें एवं लोकोक्तियां बिल्कुल ठेठ गंवई अंदाज में हैं जिनमें किसी संधे हुए कवि की भांति कविता के छंदों एवं नियमों का पालन ठीक ढंग से नहीं हुआ है। उनमें रस एवं अलंकार भी नहीं है फिर भी ये कहावतें एवं लोकोक्तियां जनमानस में इस प्रकार पग गई हैं कि उसका अनुमान लगाना कठिन है।

कवि एवं वैज्ञानिक घाघ के जन्म स्थान के विषय में अनेक मत हैं परंतु वस्तुतः ये कन्नौज के रहने वाले थे क्योंकि इनके पदों में इसी स्थान के आस-पास की भाषा

पायी जाती है। इनका जन्म सन् 1496 में कन्नौज के चौधरी सराय गांव में हुआ था और ये जाति के ब्राह्मण थे परंतु कुछ विद्वानों के अनुसार घाघ अहीर-जाति के थे, जिसके कारण विद्वान होने के बावजूद भी तत्कालीन जाति प्रथा के कारण इन्हें अपने गांव, क्षेत्र एवं समाज में जो सम्मान मिलना चाहिए था वह नहीं मिल पाया। संभवतः इसी कारण घाघ अपने क्षेत्र एवं समाज को तज कर मध्य प्रदेश स्थित तत्कालीन धारा नगरी राज्य में चले गए थे। घाघ जब धारा नगरी में आए तो उस समय वहां अकाल पड़ा हुआ था और पूरा राज्य सूखे के कारण त्राहि-त्राहि कर रहा था। धारा नगरी के सभी ज्योतिषियों ने लगातार तीन वर्ष तक वर्षा नहीं होने की घोषणा कर रखी थी और अनावृष्टि का एक वर्ष भी बीत चुका था। घाघ जब राज दरबार में पहुंचे तो राजा ने इनका परिचय जानने के बाद तत्काल उनसे यह प्रश्न किया कि यदि आपको ज्योतिष का कुछ ज्ञान है तो यह बताएं कि राज्य में वर्षा कब होगी? महाविज्ञानी घाघ ने अपनी ज्योतिषीय गणना की तो उन्हें यह ज्ञात हुआ कि पानी तो रात तक अवश्य बरसना चाहिए किन्तु उन्होंने यह बात राजा को न बताकर उत्तर देने के लिए राजा से कुछ समय की मोहलत मांग ली।

अपने ज्योतिषीय गणना को मौसम विषयक अपने व्यवहारिक ज्ञान के साथ मिलान करने के लिए घाघ राज दरबार से निकलकर जंगल में गए तो उन्होंने पाया कि पक्षी धूल में स्नान कर रहे हैं और चींटियां जमीन से अपने अंडे लेकर पेड़ों पर जा रही हैं। इन दोनों लक्षणों को देखकर उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि वर्षा शीघ्र ही होगी। अभी घाघ

* उद्यान विभाग डा. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद

जंगल से बाहर आने की सोच ही रहे थे कि उन्हें एक लड़की की आवाज सुनाई दी जो तेज आवाज में अपने पिता से कह रही थी कि नदी किनारे से अपना डेरा उठाकर भेड़ों को गांव हांक ले चलो क्योंकि टिटहरी नदी किनारे रेत से अपने अंडे उठाकर टीले पर रख रही है और आज रात बहुत तेज पानी बरसेगा और तब नदी पार करके भेड़ों को गांव ले चलना बहुत कठिन हो जाएगा। ये दोनों पिता-पुत्री गड़रिए थे जो अपनी भेड़ों को चराने के लिए जंगल में गए हुए थे। घाघ पानी बरसने संबंधी लड़की के व्यवहारिक ज्ञान को देखकर बहुत आश्चर्यचकित एवं प्रभावित हुए। नगर में लौटकर घाघ ने राजा को बताया कि आज रात मूसलाधार वर्षा होगी। और सचमुच। आधी रात के बाद धारा नगरी में इतनी मूसलाधार वर्षा हुई कि प्रातः होने तक धारा नगरी के सभी ताल-तलैया, कुएं एवं नदी आदि पानी से लबालब भर गए जिसके फलस्वरूप आगे चलकर धारा नगरी में अकाल की स्थिति समाप्त हो गई। इस घटना के बाद धारा नगरी में महाविज्ञानी घाघ की खूब जय-जयकार हुई तथा राजा ने उन्हें खूब मान-सम्मान एवं पुरस्कार दिया। जंगल वाली घटना से घाघ गड़रिए की लड़की से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने गड़रिए से मिलकर उसकी लड़की के साथ विवाह की इच्छा जाहिर की। गड़रिए की इस लड़की का नाम भड्डरी (अपभ्रंश-अड्डरी) था। थोड़ी सी ना-नुकुर के बाद गड़रिया इस विवाह के लिए राजी हो गया जिसके उपरान्त घाघ और भड्डरी दाम्पत्य सूत्र में बंध गए। परंतु तत्कालीन सामाजिक रीति-रिवाजों एवं कुरीतियों के कारण धारा नगरी के प्रतिष्ठित नागरिक इस अंतर्जातीय विवाह के कारण घाघ से नाराज हो गए जिसके फलस्वरूप उन्हें पहले समाज से तिरस्कृत किया गया फिर उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया गया। तदुपरान्त घाघ दम्पति को धारा नगरी से भी निकाल दिया गया।

घाघ की भांति भड्डरी को भी मौसम विज्ञान का व्यवहारिक ज्ञान होने के साथ-साथ वो एक कवियत्री भी थीं। भड्डरी ने भी लोकोक्तियों एवं कहावतों के द्वारा जीवन के विभिन्न पहलुओं पर समाज को अनेक जानकारियां प्रदान की हैं। घाघ की रचनाओं में भी “घाघ कहै सुनु भड्डरी” या “कहै घाघ सुनु भड्डरी” उक्ति का समावेश खूब दिखता है। इस प्रकार तत्कालीन विषम परिस्थितियों का

सामना करते हुए घाघ-भड्डरी दम्पति ने हिंदी जगत एवं हिंदी साहित्य को अपनी लोकोक्तियों एवं कहावतों की जो अमूल्य निधि प्रदान की वे जन-जन में आज भी लोकप्रिय एवं प्रासंगिक हैं। लोग आज भी उनकी लोकोक्तियों एवं कहावतों के सहारे मौसम का ज्ञान प्राप्त करते हैं, खेती-किसानी के निर्णय लेते हैं तथा सामाजिक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं। घाघ-भड्डरी की कहावतों एवं लोकोक्तियों में से कुछ निम्नवत हैं :

सामाजिक एवं नैतिक कहावतें

‘बिन बैलन के खेती करे, बिन भैय्यन के रार।

बिन मेहरारू घर करे, चौदह साख लवार ॥’

जों पुरुष बिना बैलों के खेती करता है, जिसके कोई भाई न हो और वह किसी से लड़ाई-झगड़ा करता हो, तथा जो बिना औरत के गृहस्थी बनाने की बातें करता हो, वह चौदहा पुशतों का झूठा है।

‘आठ कठौती मट्ठा पीवे, सोलह मकुनी खाय।

उसके मरे न रोइये, घर का दरिद्रा जाय ॥’

जो व्यक्ति नित्य आठ कठौती मट्ठा पी जाता हो और मकुनी की सोलह रोटियां खा जाता हो (अर्थात् अत्याधिक पेटू हो और कोई काम न करता हो) उसकी मृत्यु पर भी नहीं रोना चाहिए क्योंकि ऐसा व्यक्ति दरिद्रता का प्रतीक है।

‘जेहि घर साला सारथी, तिरिया की हो सीख।

सावन में बिन हल लवै, तीनो मांगे भीख ॥’

जिस घर का मालिक साला हो, जिस घर में स्त्री की राय प्रधान हो तथा जो किसान सावन माह में बिना हल का हो, ऐसे लोग भीख मांगते हैं अर्थात् कष्ट में रहते हैं।

‘कांटा बुरा कुरील का, औ बदरी का घाम।

सौत बुरी है चून की, औ साझे का काम ॥

कुरील पौधे का कांटा (जिसके चुभ जाने पर घाव नहीं भरता है), बरसात की धूप और सौतन चाहे वो चूने या मिट्टी की ही क्यों न हो तथा साझे में किया गया कोई काम या व्यापार ये सभी कष्ट देने वाले होते हैं।

‘झिलिया खटिया, बातल देह, तिरिया लम्पट हाटे गेह ।
बेगा बिगारि के मुदई मिलन्त, घाघ कहै ई विपत्ति के अंत ॥’

टूटी हुई खाट, वात (गैस) से फूली हुई देह, चरित्रहीन
स्त्री का साथ तथा भाई का लड़ाई करके शत्रु से मिल जाना,
ये सभी विपत्ति की हद हैं ।

‘साधू को दासी, चोरवै खांसी, प्रेम विनास हांसी ।
घरवा इनकी बुद्धि बिनासै, खाय जो रोटी बासी ॥’

जिस प्रकार साधू को चेली, चोर को खांसी और प्रेमी
को हंसी नष्ट कर देती है, उसी प्रकार जो बासी रोटी खाते
हैं उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है ।

‘खेती, पाती, बीनती औ घोड़े को तंग ।
अपने हाथ संवारिए, लाख लोग हो संग ॥’

खेती का कार्य, चिट्ठी लिखना, प्रार्थना करना और
घोड़े की जीन को कसने के काम लाखों लोगों के रहते हुए
भी अपने ही हाथ से करना चाहिए ।

‘अंतरे खोतरे डंडे करै ।
तालु न्हाय ओस मा परै ॥
दैव न मारै आपुइ मरे ॥’

जो पुरुष अनियमित रूप से व्यायाम करता है, ताल में
स्नान करता है और ओस में सोता है उसे दैव नहीं मारता है
अपितु वह अपने आप मरता है ।

‘विप्र टहलुआ छेरि धन, औ कन्या के बाढ़ि ।
यतनेहु पर धन न घटै, तो करे बड़न से रारि ॥’

ब्राह्मण को नौकर रखने से, बकरियों को पालने से
तथा संतान के रूप में ज्यादा लड़कियां पैदा हो जाने से
(अर्थात् दहेज के कारण) भी यदि धन न घटे तो अपने
से ज्यादा ताकतवर व्यक्ति से शत्रुता कर लेनी चाहिए ।
दूसरे शब्दों में सुखी रहने के लिए इस सभी से बचना
चाहिए ।

‘सूके सोमे बुद्धे वाम, यही स्वर लंका जीते राम ।
जो स्वर चले सोई पग दीजे, काहे को पंडित पत्रा लीजे ॥’

नासिका स्वर के चलने के आधार पर विचार कर
भड्डरी कहती हैं कि शुक्रवार, सोमवार एवं बुधवार को

वाम (बायां) स्वर चलने से विजय की प्राप्ति होती है । इसमें
पंडित से पूछने की कोई बात नहीं है क्योंकि इसी नासिका
स्वर में वन गमन से राम ने लंका पर विजय प्राप्त की थी ।

‘दुश्मन की किरपा बुरी, भली मित्र की त्रास ।
जाड़े कर गर्मी करै, जल बरसन की आस ॥’

भड्डरी कहती हैं कि शत्रु की कृपा की अपेक्षा मित्र
की डांट-डपट भली होती है । जब कड़ाके की गर्मी पड़ती
है और पसीना नहीं सूखता है तभी वर्षा होने की आशा बंधती
है ।

‘भेदिया सेवक, सुन्दर नारि ।
जीरन पट, कुराअ दुख चार ॥’

भेद जानने वाला नौकर, सुन्दर स्त्री, पहनने के लिए
फटे-पुरने वस्त्र और दुष्ट राजा, ये चारों कष्ट पहुंचाने वाले
कारक हैं इसलिए इन चारों से बच कर रहना चाहिए ।

‘लड़िका ठाकुर, बूढ़ दीवान ।
ममिला बिगरे, सांझ बिहान ॥’

यदि स्वामी बालक हो या राजा लड़का हो तथा दीवान
(मंत्री) बूढ़ा (अशक्त) हो अर्थात् अपनी जिम्मेदारी नहीं
संभाल पाता हो तो बहुत जल्द ही राज-पाट चौपट हो जाएगा ।

‘हरहट नारी, वास यक वाह, परूवा बरद सुहत हरवाह ।
रोगी होई एकलन्ता, कहै घाघ ई विपत्ति के अन्ता ॥’

घाघ कहते हैं घर में कर्कश स्त्री होना, एकान्तवास,
लावारिस बैल, सुस्त हरवाहा और रोगी होकर अकेले पड़े
रहना, ये सभी विपत्ति के कारक हैं ।

‘एक तो बसो सड़क पर गांव, दूजे होय बड़न में तांव ।
तीजे परे दरब से हीन, घग्घा हमको विपदा तीन ॥’

घाघ कहते हैं कि यदि सड़क के किनारे गांव (घर)
हो, जिससे एक-न-एक मेहमान प्रायः ही घर पहुंचे रहते हों,
दूसरे इलाके के बड़े-बड़े लोगों में गिनती होती हो और तीसरे
धन की बहुत तंगी रहती हो तो ये तीनों दशाएं विपत्ति को
बढ़ाने वाली होती हैं ।

‘चोर, जुआरी, गंठकटा, जार और नार छिनार ।
सौ सौगंधे खाए जो, घाघ न करू ऐतवार ॥’

घाघ कहते हैं कि चोर, जुआड़ी, गिरहकट, परस्त्रीगामी पुरुष और चरित्रहीन स्त्री सौ-सौ कसमें खाएं तो भी इनकी बात का विश्वास नहीं करना चाहिए ।

‘पूत न मानै आपन डांट, भाई लडै नित चहै बाट ।
तिरिया कलही करकस होय, नियरे बसल दुष्ट सब कोय ॥
मालिक नाहिन करै विचार, घाघ कहै ये विपत्ति अपार ॥’

अर्थात् पुत्र अपने कहने में न हों, भाई रोज झगड़ता हो और संपत्ति का बंटवारा चाहता हो, स्त्री झगड़ालू और कर्कशा हो, पास-पड़ोस में रहने वाले सब दुष्ट प्रवृत्ति के हों तथा मालिक न्याय का विचार न करता हो तो घाघ कहते हैं ये सभी अपार विपत्तियां हैं ।

स्वास्थ्य विषयक कहावतें

‘ज्यादा खाय जल्द मरि जाए ।
सुखी वही जो थोड़ा खाय ॥’

घाघ कहते हैं कि अधिक भोजन करने वाला जल्दी ही मर जाता है अर्थात् ज्यादा भोजन करने से पेट में अनेक विकार पैदा हो जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद होता है जबकि भूख से कम खाने से स्वास्थ्य सदैव उत्तम बना रहता है ।

‘रहे निरोगी जो कम खाय ।
बिगरे काम न जो गम खाय ॥’

जितना भूख हो उससे कम खाने वाला सदा निरोगी रहता है और धीरज रखने वाले का काम कभी नहीं बिगड़ता है ।

‘जाको मारा चाहिए, बिन मार बिन घाव ।
वाको यही बताइये, घुइयां पुरी खाय ॥’

यदि किसी को बिना चोट पहुंचाए मारना हो तो उसे घुइयां (अरवी) की सब्जी पूड़ी के साथ खाने की सलाह देनी चाहिए । अर्थात् घुइयां और पूड़ी गरिष्ठ होने के कारण बहुत देर में पचते हैं और इनके लगातार उपयोग से खूनी आंव पड़ने लगती है जिससे मनुष्य मरने के कगार पर पहुंच जाता है ।

‘पहिले जागै पहिले सोवै ।
जो वह सोंचे वह ही होवै ॥’

मनुष्य को जल्दी सोना चाहिए और प्रातः जल्दी ही उठ जाने से वह हर कार्य समय से करने में सफल रहता है ।

‘खाई के मुतै, सूतै बाऊ ।
काहे के वैद्य न आवै गाऊं ॥’

भोजन करने के बाद पेशाब अवश्य करना चाहिए और बाएं करवट सोना चाहिए । ऐसा करने से व्यक्ति निरोगी रहता है ।

‘प्रातः काल खटिया से उठिके, पिये तुरत ही पानी ।
वहिके घर मा वैद्य न आवै, बात घाघ के जानी ॥’

घाघ कहते हैं प्रातः काल सो कर उठते ही तुरन्त पानी पीना चाहिए । ऐसा करने से शौच साफ होता है और पाचन क्रिया ठीक रहती है जिससे शरीर निरोगी बना रहता है ।

‘घाघ रोके चारि जा, जिये थार दिन पूत ।
भूख प्यास के साथ में, मलशंका औ मूत ॥’

घाघ कहते हैं कि जो व्यक्ति भूख, प्यास तथा मूत्र और मल त्याग के आवेगों को रोके रहता है वह बहुत ही कम दिन जीता है अर्थात् इन शारीरिक आवेगों को कभी भी रोकना नहीं चाहिए ।

‘झूम भर निशिदिन खाए जो, दम भर काज कीन्ह ।
इन्द्री जेहि के रही, जगत जीति वश कीन्ह ॥’

परिश्रम के अनुपात में भोजन करने वाला, साहस के अनुपात में कार्य करने वाला और इंद्रियों को वश में रखने वाले जगत में सर्वोत्तम हैं ।

‘ध्यान हुवै जो तीन का तो फिर बढ़ै हियात ।
स्वच्छ हवा, जल स्वच्छ, भोजन स्वच्छ सुहात ॥’

घाघ कहते हैं कि यदि तीन बातों यथा, स्वच्छ हवा, स्वच्छ जल, स्वच्छ भोजन का ध्यान रखा जाए तो आयु लम्बी हो जाती है । स्वच्छ पर्यावरण की बातें तो हम आज बहुत करते हैं परंतु महाविज्ञानी घाघ को स्वच्छ पर्यावरण की महत्ता का ज्ञान आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व ही ज्ञात थी ।

कृषि एवं मौसम संबंधी कहावतें

‘खेती तो उनकी जो करे अन्हान-अन्हान ।
औ उनकी क्या जो देखें सांझ-बिहान ॥’

खेती तो उनकी ही सफल है जो स्वयं अपने हाथों से काम करते हैं, उसकी देख-रेख स्वयं करते हैं। परंतु जो लोग केवल सबरे-सांझ (अर्थात् कभी-कभी) खेती देखने जाते हैं उनकी खेती अच्छी नहीं होती है।

‘बीघा बायर होय, बांध जो होत बंधाए ।
भरा भुसैला होय, बबुर जो होय बोआए ॥
बढ़ई बसे समीप, बसुला बाढ़ धराए ।
पुरखिन होय सुजान, बिया बोउनिहा बनाए ॥
बरद बगौछा होय, बदरिया चतुर सराए ।
बेटवा होय सपूत, कहे बिन करे कराए ॥’

अर्थात् सफल खेती के लिए किसान के पास इतनी चीजें होनी आवश्यक हैं—खेत एक चक के रूप में हों अर्थात् सभी खेत इकट्ठे हों, खेत सींचने के लिए बांध बंधे हों, पालतू जानवरों के लिए भूसे की कोठरी भरी हो, बाग में बबूल के पेड़ हों (बेंट आदि के लिए), बढ़ई घर के पास रहता हो और औजार बढ़िया हों, घर मालकिन ऐसी गृहस्थिन हो कि बुआई के लिए समय पर बीज तैयार रखती हो, बैल बेगौंधे नस्ल के हों तथा बेटा ऐसा सपूत हो कि बिना कहे ही खेती के सभी काम करे और कराए।

‘जो गेहूँ बोवै पच्चीस सेर, मटर के बीघा तीसे सेर ।
बोवै चना पसेरी तीन, तीन सेर बीघा जोहरी कीन ॥
दो सेर मोथी अरहर मास, डेढ़ सेर बिगहा बीज कपास ।
पांच पसेरी बिगहा धान, तीन पसेरी जड़हन जान ॥
सवा सेर सांवा का मान, तिलली, सरसों, अंजुरी जान ।
बरें, कोदो सेर बुआवे, डेढ़ सेर की तीसी नावे ॥
डेढ़ सेर बजर-बजरी सांवा, कोदो, कोकू निरवे बोवा ।
यह विधि खेती करै किसान, दूना लाभ खेती जान ॥’

उपरोक्त पंक्तियों में बुआई के लिए प्रति बीघा (पक्का) किस फसल के लिए कितना बीज डालना चाहिए, यह घाघ द्वारा बताया गया है। तत्कालीन चलन के अनुसार गेहूँ प्रति बीघा पच्चीस सेर, जौ, मटर बीस सेर, चना पंद्रह सेर, मक्का तीन सेर, अरहर, मोथी और उड़द दो सेर, कपास डेढ़ सेर, तिल्ली और सरसों अंजुरी भर, बरें और कोदो एक-एक सेर प्रति बीघा की दर से बीजाई की जाती थी। कमोवेश वर्तमान में भी इन फसलों की बीजाई की दर यही है।

‘धान-पान उखेरा, तीनों पानी के चेरा ।
साक, आलू और खीरा, तीनों पानी के कीरा ॥’

घाघ कहते हैं कि धान, पान, ईख, शाक वर्गीय फसलों, खीरा और आलू इन सभी फसलों को पानी की अत्याधिक आवश्यकता होती है। अतः अच्छी पैदावार पाने के लिए इन फसलों की सिंचाई समय-समय पर करते रहना चाहिए।

‘कार्तिक सुद एकादशी, बादर बिजुरी होय ।
तो आषाढ़ में भड़डरी, बरसा चोखी होय ॥’

यदि कार्तिक माह अर्थात् अक्टूबर-नवम्बर में शुक्ल पक्ष की एकादशी को आकाश में बादल हों और बिजली चमके तो समझ लो आषाढ़ में अच्छी वर्षा होगी।

‘जेठ मास जो तपै निराशा । तो समझो बरखा कै आशा ॥’

यदि जेठ माह में तेज गर्मी पड़े तो समझ लो कि यह अच्छी वर्षा होने का लक्षण है।

बुआई एवं वर्षा विषयक कहावतें

‘सावन सांवा अगहन जवा ।

जितना बोवै उतना लवा ॥’

सावन में सांवा और अगहन में जौ जितना बोया जाएगा उतना ही काटा भी जाएगा अर्थात् इन महीनों में बुआई करने पर उपज बहुत कम हो जायेगी।

‘बुध बृहस्पति दो भले, शुक्र न भला बखान ।
रवि मंगल बौनी करे, द्वार न आवै धान ॥’

धान बोने के लिए बुधवार और बृहस्पतिवार का दिन शुभ तथा शुक्रवार का दिन खराब होता है और यदि रविवार तथा मंगलवार को बुआई कर दे तो धान की उपज ही नहीं होगी।

‘चना चित्तरा चौगुना, स्वाती गेहूँ होए ।’

चित्रा नक्षत्र में चना तथा स्वाती नक्षत्र में गेहूँ बोने से उपज बहुत अच्छी होती है।

‘कदम-कदम पर बाजरा, मेढक कुदौना ज्वार ।
ऐसे बोवै जौ कोई, भर-भर धरे कोठार ॥’

बाजरा को कदम-कदम की दूरी पर और ज्वार को मेढक कुदान की दूरी पर बोने से पैदावार बहुत अच्छी होती है।

‘ऊख सरोती, डेहुला धान ।

इन्हे छाड़ि, जन बोओ आन ॥’

सरोती ईख (एक किस्म की पतली ईख) और डेहुला धान को छोड़कर अन्य किसी किस्म का ईख एवं धान नहीं

31

जीव-जन्तुओं का अजीबो गरीब संसार

—कुलदीप कुमार*

- **विचित्र गिलहरी** : भारत, श्रीलंका, जापान तथा सोवियत रूस के घने जंगलों में एक विचित्र प्रकार की गिलहरी पायी जाती है जो उड़ती है। यह पक्षियों के समान तो नहीं उड़ पाती, किन्तु एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक लगभग तीस-चालीस मीटर की दूरी हवा में लहराती हुई पार कर लेती है।
- **समुद्री घोड़ा** : एक प्रकार की समुद्री मछली है। इसका सिर घोड़े के समान होता है। समुद्री घोड़ा सभी महासागरों में पाया जाता है तथा पानी में सीधा तैरता है।
- **याक** : तिब्बत के पहाड़ों में बैल जैसा जानवर 'याक' पाया जाता है उसकी पूंछ से चंवर बनती है जो मंदिरों-गुरुद्वारों में उपयोग में ली जाती है।
- **अल्बान्ट्रोस** : सबसे बड़ा समुद्री पक्षी है जिसे उड़ने के लिए तेज हवा की जरूरत पड़ती है तथा यह उड़ने से पहले काफी दूरी तक जमीन पर दौड़ता है। अल्बान्ट्रोस स्तनधारियों की तरह अपने बच्चों को दूध पिलाता है परंतु पक्षियों की तरह अंडे भी देता है।
- **बीवर** : पेड़ों को जल में गिराकर बांध बनाते हैं व वहां रहते हैं अतः इन्हें प्रकृति के सबसे कुशल इंजीनियर कहा जाता है। ये अपने तीखे दांतों से पेड़ों को आसानी से काट कर गिरा देते हैं।
- **बिल्ली** : अपनी जिन्दगी का आधा समय सोकर बिताती है।
- **घोंघा** : घोंघा लगातार 3-4 साल तक सोता रहता है।
- **तितली** : तितली के 12,000 आंखें होती हैं।
- **पेंग्विन** : अंटार्कटिका का प्रतिनिधि पक्षी पेंग्विन पानी में पनडुब्बी से भी अधिक तेज रफ्तार से तैर सकता है।
- **रैकून** : अमेरिका में पाया जाने वाला 'रैकून' नाम का जीवन यदि पानी उपलब्ध हो तो अपना भोजन धोकर खाता है।
- **मच्छर** : नर मच्छर कभी किसी को नहीं काटता, केवल मादा मच्छर ही काटती है। शिशु मच्छर पैदा होते ही पूरा मच्छर बन जाता है।
- **हाथी** : जंगली जानवरों में हाथी ही एकमात्र जीव है, जिसे सिर के बल खड़ा होना सिखाया जा सकता है।
- **ऊदबिलाव** : ऊदबिलाव ही ऐसा जंगली जानवर है जो अगर पानी में कूदे तो पानी की एक बूंद भी नहीं उछलती।
- **स्टार फिश** : 'स्टार फिश' नाम की मछली ही एक ऐसी मछली है, जिसकी प्रत्येक बांह पर एक-एक आंख होती है।
- **ब्लू व्हेल** : विश्व का सबसे बड़ा जीव है। यह स्तनपायी प्राणी है तथा गहरे सागर में पायी जाती है। इसका वजन 150 टन तथा लम्बाई तीस

- **मीटर तक होती है** : ब्लू व्हेल तैरते हुए सोती है तथा आवश्यकता पड़ने पर पैंतीस किलोमीटर प्रति घंटा की गति से भाग सकती है ।
 - **माता कस्तूरी** : माता कस्तूरी के न सींग होते हैं, न दांत ।
 - **जिराफ** : जिराफ गुंगा जानवर है ।
 - **तोता** : एकमात्र जम्हाई लेने वाला पक्षी है तथा 60 तरह के शब्द बोल सकता है ।
 - **बुल्क मकड़ी** : दक्षिण यूरोप में विशालकाय बुल्क मकड़ी पाई जाती है । यह इतनी जहरीली होती है कि इसके काटने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है ।
 - **लापर बर्ड** : आस्ट्रेलिया के निर्जन वनों में एक विचित्र पक्षी पाया जाता है जिसे लापर बर्ड कहते हैं । यह बहुत अच्छा नृत्य करता है तथा मनुष्य व अनेक पशु पक्षियों की बोली की हूबहू नकल करता है ।
 - **कोबरा सांप** : कोबरा सांप का जहर इतना खतरनाक होता है कि उसके 1 ग्राम से 150 व्यक्ति मर सकते हैं ।
 - **कुत्ता** : कुत्ते के सूंघने की शक्ति मनुष्य से 6000 से 33000 गुना अधिक होती है जो उसकी नस्ल पर निर्भर करती है ।
 - **मक्खी** : मक्खी की छलांग उसके शरीर की तुलना में 60 गुनी होती है, इस अनुपात से मनुष्य 120 मीटर कूदना चाहिए ।
 - **माट-माट** : मैक्सिकों का 'माट-माट' पक्षी श्रृंगार का बहुत शौकीन होता है इसकी चोंच के एक हिस्से की बनावट कंधी की तरह होती है । यह अपनी पूंछ को चोंच से संवारता व बार-बार पीछे घूमकर देखता रहता है जब तक कि संतुष्ट नहीं हो जाता ।
 - **हिमालय याक** : हिमालय 'याक' के दूध का रंग गुलाबी होता है ।
 - **शुतुरमुर्ग** : दुनिया का सार्वधिक विशालकाय पक्षी शुतुरमुर्ग पत्थर भी खाता है जो उसके पेट में पाचक गोलियों का काम करते हैं ।
 - **गिरगिट** : नीलगिरि के जंगलों में एक गिरगिट पाया जाता है उसकी जीभ उसके शरीर से भी लंबी होती है उस गिरगिट का शरीर 45 सेंटीमीटर लंबा होता है परन्तु उसकी जीभ 1.25 मीटर लंबी होती है ।
 - **केंडोर** : केंडोर पृथ्वी की सबसे बड़ी शिकारी चिड़िया है ।
 - **लामा** : लामा ऐसा जानवर है जो गुस्से में होने पर शत्रु के मुंह पर थूक देता है ।
 - **ओपोसम व कोआला** : कंगारू के अलावा 'ओपोसम व 'कोआला' जानवरों के भी पेट पर थैलियां होती हैं जिनमें वे बच्चे पालते हैं ।
 - **गिद्ध** : गिद्ध सबसे लम्बी आयु का पक्षी है ।
 - **जहरीला मेंढक** : पश्चिमी कोलंबिया में एक ऐसा जहरीला मेंढक पाया जाता है, जिसकी त्वचा से एक द्रव्य निकलता है जिसमें भयानक विष होता है । एक मेंढक की त्वचा में इतना विष होता है कि उससे दो हजार व्यक्तियों की मृत्यु हो सकती है । अमेरिका के रेडइण्डियन अपने तीरों की नोंक पर इसी मेंढक के विष का लेप करते थे ।
 - **प्लैटीपस** : प्लैटीपस एक स्तनधारी जीव है परन्तु यह सांप जैसा जहरीला होता है ।
 - **लैमिंग** : लैमिंग एक 'चूहे जैसा जीव है जो तारों में पाए जाते हैं । ये जीव सामूहिक आत्महत्या करने के लिए प्रसिद्ध हैं ।
 - **बीवर** : बीवर कुतरने वाले प्राणियों (कृतकों में) सबसे बड़ा जीव है । खतरे के समय यह अपनी पूंछ पानी में थपथपाकर उस आवाज से अपने साथियों को सावधान कर देता है ।

स्वास्थ्य बूटी “एलोवेरा”

—आर.एस. सेंगर एवं रेशू चौधरी*

स्वस्थ शरीर एवं आकर्षक व्यक्तित्व की ललक, अतीत काल से ही मानव मात्र की प्राथमिकता रही है जिसे साकार करने हेतु वनस्पतियों का मुख्य योगदान रहा है। इन बहुगुण वनस्पतियों में एक है घृतकुमारी, जो अत्यन्त लोकप्रिय, ख्याति प्राप्त, बहुवर्षीय शाकीय पौधा जो दिखने पर तो कैक्टस जैसा लगता है परन्तु यह कैक्टस नहीं है। लिलिएसी कुल से संबन्धित इस एलो पौधे की उत्पत्ति तो अफ्रीकी देशों में मानी जाती है जहां से इसे अन्य देशों में लाया गया एवं आज विश्व के बहुतायात देशों में इसे खेती के रूप में अपनाया जा चुका है। मनुष्य एवं अन्य प्राणी अपने शरीर की रक्षा के लिए नाना प्रकार के हर्बल द्रव्यों का आहार एवं औषधीय रूप में उपयोग करते हैं, जिसके द्वारा शरीर स्वस्थ रहता है। हर्बल औषधियों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है क्योंकि इनका ज्ञानपूर्वक प्रयोग अमृत के समान जीवनदायक है तो दूसरी तरफ इनका अज्ञानपूर्वक प्रयोग विष के समान प्राणहारी है। औषध द्रव्य का अज्ञानपूर्वक प्रयोग सामाजिक एवं नैतिक दृष्टिकोण से महान अपराध है। आज पूरे विश्व में बाबा रामदेव के जागरण के बाद व्यायाम और आयुर्वेद को नई दिशा मिली है। विश्व में आयुर्वेद को भारतीय चिकित्सा पद्धति या परम्परागत चिकित्सा पद्धति का कुल माना जाता है जिसके दो मौलिक उद्देश्य हैं। स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा और रोगी के विकार (बीमारी) का प्रगमन। ये दोनों ही उद्देश्य हर्बल औषधियों के समुचित प्रयोग से सिद्ध होते हैं।

प्राचीन मिस्र में एलोवेरा का उपयोग सिरदर्द, एलर्जी, त्वचा रोग, अल्सर और जलने में होता था। विश्वसुन्दरी क्लियोपेट्रा, एलोवेरा के रस का लेप अपने बदन पर करती थी ताकि उसकी अद्भुत अलौकिक सुंदरता बनी रहे। भारतीय प्राचीन ग्रंथों में भी एलोवेरा की महिमा का गुणगान किया गया है। ग्वारपाठा इंसान के बाहरी और भीतरी

सुंदरता, दोनों की रक्षा करता है और इन्हें बनाए रखता है। एलोवेरा अमेरिका एवं स्पेन का आदिवासी पौधा है। एलोवेरा एक मरुद्भिद पौधा है। यह संपूर्ण भारत वर्ष में प्राकृतिक रूप से मिलता है। भारत के अतिरिक्त यह यूरोप, उत्तरी अमेरिका, स्पेन, थाईलैण्ड, चीन, वैस्टइण्डीज आदि देशों में भी पाया जाता है। एलोवेरा शायद हमारी सभ्यता से ज्यादा पुराना है, दुनिया की हर प्राचीन सभ्यता में एलोवेरा का उल्लेख जरूर मिलता है। एलोवेरा रसोन कुल का सदस्य है। यह पौधा संपूर्ण विश्व भर में इण्डियन एलो के नाम से विख्यात है। यह शाकीय पौधा मांसल एवं बहुवर्षीय होता है। इसके पत्ते मांसल भालाकार 1.5 फीट तक लम्बे व 3-4 इंच चौड़े एवं सूक्ष्म कांटों से युक्त होते हैं, पौधे की आयु वृद्धि के साथ-साथ इनके मध्य भाग से पुष्प दण्ड निकलता है, जिस पर लाल एवं हल्के पीले रक्ताभपीत रंग के पुष्प या फलियां आती हैं, जिन्हें मंदल भी कहते हैं। इसके पत्ते किनारों से थोड़े मुड़े हुए होते हैं तथा पौधों पर पुष्प आने का समय प्रायः शीतकाल (जनवरी-फरवरी) रहता है। कई आदिवासी युवतियां एलोवेरा के रस के साथ जवाकुसुम के फूल और पत्तियों का रस मिलाकर बालों में मालिश करती हैं, कहते हैं ऐसा करने से बाल झड़ने कम हो जाते हैं। एलोवेरा के भीतरी सफेद हिस्से में नमक लगाकर 20-25 दिनों तक धूप में रखा जाता है, इन टुकड़ों को रात में खाना खाने के पश्चात् या सूर्योदय से पहले खाया जाता है। रात में खाने से पेट साफ हो जाता है जबकि सूर्योदय से पहले खाने से यकृत (लीवर) स्वस्थ रहता है। पेट दर्द में एलोवेरा के रस में अदरक का रस, और अजवायन का पाउडर मिलाकर देने से तुरन्त आराम मिलता है।

सामान्यतः यह पौधा दक्षिणी और पश्चिमी भारत के तटीय किनारों पर अधिकता से पाया जाता है। गर्म वातावरण

*टिशू कल्चर लैब, कृषि जैव प्रौद्योगिकी विभाग, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ

जो पाले आदि से मुक्त हो, अधिक उपयुक्त होता है। एलोवेरा पौधे में पत्तियां ही मुख्य होती हैं। जो जमीन की सतह से रोजेट फार्म में निकलती हैं। इनका पृष्ठ ऊपरी भाग गोलाईयुक्त एवं अन्दर की तरफ सपाट होता है। वर्तमान में एलोवेरा का सौंदर्य प्रसाधन में उपयोग तो सौंदर्य का एक पर्याय बन चुका है। आधुनिक युग में इस पौधे की पत्तियों से प्राप्त एलो जेल का उपयोग विशेषज्ञ रूप से सौंदर्य अपना अन्य औषधीय उद्योगों से संबन्धित उत्पादों में मांग की पूर्ति हेतु तथा उसके बीच रिक्तता दबाव को देखते हुए विगत वर्षों में इस अमूल्य पौधे को विधिवत् फसल के रूप में अपनाया जा चुका है। भारतवर्ष में एलो का प्रवेश अरब वासियों द्वारा माना जाता है। फसल के रूप में इसे प्रायः बरसात की समाप्ति के तुरन्त बाद नई पौधे द्वारा रोपित किया जाता है। पत्तियों की कटाई एक वर्ष के बाद प्रारम्भ की जा सकती है। जिसमें लगभग दो महीने के अन्तर से नीचे की 3 या 4 पत्तियों को पौधे से अलग कर लिया जाता है। इस प्रकार कई वर्षों तक पत्तियों की कटाई जारी रहती है। आवश्यकतानुसार पुरानी फसल को जड़ से निकालकर, भूमि को ठीक प्रकार से तैयार करके नए पौधों को पुनः रोपित किया जा सकता है। एलोवेरा की परिपक्व पत्तियां ही अपने में विभिन्न प्रकार के रासायनिक अवयव संजोए रहती हैं जिनका उपयोग खाद्य पदार्थों, पेय पदार्थों औषधियों एवं सौंदर्य प्रसाधनों आदि में अनेकों रूप से किया जाता है।

सौंदर्य का मूलभूत सिद्धान्त ही आयु में कमी लगने, त्वचा में नमी एवं लचीलापन लाने के आधार पर ही केंद्रित रहता है। सौंदर्य को अपने आप में “जीवन की पूर्ण परिभाषा” के रूप में विद्वानों द्वारा वर्णित किया गया है। एलोवेरा के उपयोग के बारे में पुराने अभिलेखों में ईसा से 1500 वर्ष पूर्व के उदाहरण मिलते हैं। कहा जाता है कि एलेक्जेंडर महान अपने सिपाहियों के घावों को भरने या उनके उपचार हेतु इस बहुउद्देशीय एलो पौधे का उपयोग करता था। आयुर्वेद में एलोवेरा के शीतल, चर्मरोग नाशक आदि गुणों का वर्णन है। आज भारत के पिछड़े इलाकों में रहने वाले आदिवासियों से लेकर अमेरिका के उन्नत शहरों में रहने वाले सम्पन्न लोग, सभी एलोवेरा का लोहा मानते हैं। अमेरिका में छोटी दुकानों से लेकर सुपर बाजारों में ऐसे

बीसियों उत्पाद मिलेंगे जैसे-लोशन, शैम्पू, पाउडर होंगे। अमेरिका में एलोवेरा का रस पीने का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। वहां पर एलोवेरा का दो तरह का रस बाजार में उपलब्ध है। पहला एलोवेरा के पूरे पत्ते का रस जिसमें 1.2-1.5 प्रतिशत ठोस तत्व होते हैं। इस रस को कई तरह से प्रोसेसिंग करना पड़ता है। ताकि अवांछित रसायनों और तत्वों को निकाला जा सके। दूसरी तरह का रस पत्तों के भीतरी सफेद गूदे से बना होता है जिसमें 0.5 प्रतिशत ठोस तत्व होते हैं, इसकी प्रोसेसिंग जल्दी होती है। बाजार में दोनों तरह के रस लोकप्रिय हैं। सौंदर्य प्रसाधन उद्योगों का प्रवेश मानव की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में उसके समकक्ष न होकर बाद में क्रियान्वयन में आया है।

त्वचा जितनी ही नम, लचीली होगी उतनी ही अच्छी सुरक्षा अन्दर के अन्य सुकुमार कोमल अंगों को प्राप्त होगी। अतः कोशिकाओं की सफाई, रंग आदि को हल्का करना, उसे प्रेरित, उत्तेजित, रक्षा एवं नमी प्रदान करना एक सफल त्वचीय कार्यक्रम है जो सौंदर्यता में चार चांद लगाने हेतु केवल एलोवेरा जैसे बहुगुण सम्पन्न पौधे से ही सम्भव है। मानव शरीर में साधारण सी दिखने वाली त्वचा एक बहुत ही जटिल अंग मानी जाती है, जो एक बहुत बड़े उत्सर्जक अंग का कार्य करती है। त्वचीय स्थिति देखकर जनमानस की आयु एवं स्वास्थ्य स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है। अतः शरीर में इस उपयोगी अंग की सुरक्षा एवं गुणवत्ता बनाए रखना अत्यन्तावश्यक माना जाता है। जैव-विषों और मृत ऊतकों आदि के निस्तारण हेतु यदि शरीर अपनी क्षमता से वंचित रहता है तो इसके परिणामस्वरूप उम्र ढलने की प्रक्रिया में तेजी आने लगती है। अतः इन अवांछित प्रभावों के निवारण तथा शरीर में तरुणता सुनिश्चित करने हेतु शाकीय उत्पादों का योगदान सक्षम माना जाता है। इन सब गुणों हेतु एलोवेरा एक ऐसा पौधा है जिसके द्वारा मानव शरीर की जीव रसायन में आवश्यक अवयवों की पुनरावृत्ति, एन्जाइमिक प्रक्रिया के कारण जो मृत कोशिकाओं के स्तर तक भेदन करके उन्हें घुलनशील बनाकर बाहर निकालने में सहायक होता है एवं त्वचीय रोम-छिद्रों को गंदगी आदि से मुक्त कराकर, ऑक्सीजन हेतु सक्षमता प्रदान करता है, जिससे कोशिकाओं का नवीनीकरण सम्भव हो पाता है। इन्हीं प्रक्रियाओं के दौरान, पोषक तत्व मांसपेशियों

विशेषकर त्वचीय मांसपेशियों को समर्थ बनाते हैं एवं लचीलापन प्रदान करते हैं। जिसके फलस्वरूप बिमल, स्वच्छ, लचीली, नम, झुर्रियों रहित, मुलायम त्वचा की प्राप्ति होती है। अतः एलोवेरा एक सौंदर्य बूटी ही नहीं स्वास्थ्यवर्धक भी है, अपनी कथनी एवं करनी को चरितार्थ करता है।

एलोवेरा द्वारा निर्मित सौंदर्य प्रसाधन उपयोगी उत्पादों को मुख्य रूप से निम्न भागों में विभक्त किया जा सकता है :-

- **केश हेतु :-** प्रतिदिन काम आने वाले शैम्पू रूसी निवारण केश धुलाई, बालों को ठीक रखने हेतु कण्डीशनर आदि।
- **त्वचा एवं शरीर हेतु :-** विभिन्न प्रकार के नमीकारक लोशन, शरीर की धुलाई हेतु शॉवर जेल, हाथों एवं शरीर के अन्य अंगों हेतु लोशन, हल्की खरोंच द्वारा उत्पन्न निशान, शरीर की सफाई एवं मालिश आदि हेतु लोशन का उपयोग।
- **चेहरे हेतु :-** विभिन्न प्रकार की फेस क्रीम्स, लिप थेरेपी बाम, चेहरे की सफाई, धुलाई, गहरे छिद्रों की सफाई, झुर्रियों को मिटाने वाली क्रीम आदि अनगिनत हैं।

एलो निर्मित कुछ अन्य सौंदर्योपयोगी उत्पाद जैसे-

एलोलिप जेल एवं बाम- इसके उपयोग से होंठों की नमी बनी रहती है तथा होंठ गुलाबी होते हैं।

एलोमॉइयश्चराइजर लोशन- यह लोशन ढलती हुई एवं शुष्क त्वचा हेतु उत्कृष्ट है एवं यौवनावस्था के रूप में बाह्य रूप को नवीनता प्रदान करने में सक्षम माना जाता है।

एलोफेशियल जेल- इसमें उपस्थित प्राकृतिक गुणों वाली लाभकारी जेल से चेहरे पर मृदलता आती है एवं मुखड़ा मुलायम रहता है।

एलोफेश वॉश- इसके उपयोग से चेहरे की मृत कोशिकाएं दूर होती हैं और चेहरे की सुन्दरता एवं ताजगी प्राप्त होती है।

एलोमल्टीपरपज ऑयल- यह बहुगुण सम्पन्न, बहुउद्देशीय उत्पाद है जो बिना किसी चिपचिपाहट के सूखी त्वचा, सूर्य किरणों की जलन, मुहासों एवं अन्य छोटे-मोटे दानों के निवारण में काम आता है।

एलोहेयर क्रीम- इसके उपयोग से बालों की सौंदर्यता में बढ़ावा होता है एवं रंगों में भी सुधार होता है।

एलोहेयर वॉश (शैम्पू)- बालों से रूसी को दूर करता है इसके उपयोग से बाल झड़ने की क्रिया में कमी आती है एवं बालों की वृद्धि को बढ़ावा मिलता है।

इस प्रकार उत्पादित सामग्रियों जैसे शैम्पू, कण्डीशनर, जेल आदि को अन्य जड़ी-बूटियों के साथ मिलाकर उन्हें और भी पौष्टिकतायुक्त बनाया जा सकता है जिससे बालों, चेहरे एवं शरीर के प्राकृतिक स्वास्थ्य एवं सुंदरता में कई गुना निखार आ जाता है तथा इस प्रकार से बने पदार्थों का उपयोग सभी आयु वर्ग द्वारा किया जा सकता है, बच्चे-बूढ़े जवान सभी भरपूर लाभ उठा सकते हैं।

एलोवेरा की कृषि तकनीक

1. **भूमि :-** यद्यपि इसकी खेती सिंचित तथा असिंचित दोनों तरह की जगह पर की जा सकती है परन्तु खेती सदैव असिंचित जमीन पर ही करें। इसके खेत में पानी नहीं भरना चाहिए।

2. **रोपण :-** इसकी बिजाई, इसके कंदों/ट्यूबर्स से की जाती है। इसका रोपण काल जुलाई/अगस्त है। वर्षा काल में ही इसके छोटे पौधों को खेत में लगा दिया जाता है। यदि इसका प्लांटिंग मटेरियल है।

3. **पौधों की संख्या प्रति एकड़ :-** एक मीटर में दो लाइन बनेंगी फिर एक मीटर छोड़ कर फिर दो लाइनें बनेंगी। इसी प्रकार एक एकड़ में लगभग 14000 से 16000 तक पौधे लगेंगे।

4. **खरपतवार नियंत्रण :-** प्रत्येक माह घृतकुमारी के अतिरिक्त अन्य पौधे निकालते रहना चाहिए।

5. **कटाई :-** पौधे रोपण के एक वर्ष बाद हर तीन माह में प्रत्येक पौधे की 3-4 पत्तियों को छोड़कर शेष सभी पत्तियों को तेज धारदार हंसिए से काट लेना चाहिए।

6. कुल उत्पादन :- इस प्रकार की कृषि प्रक्रिया से वर्ष भर में प्रति एकड़ घृतकुमारी के 20,000 किलो ताजा पत्ते प्राप्त होते हैं। ताजा पत्ती का वर्तमान बाजार भाव 2 से 5 रुपए प्रति किलो ग्राम है। इन पत्तों का गीला तथा इनका रस निकालकर दोनों ही तरीके से दवा कम्पनी या प्रक्रिया करण ईकाई को बेचा जा सकता है।

7. कठिनाई :- कटाई के कुछ घंटों के अन्दर ही पत्तों को दवा कम्पनी या प्रोसेसिंग यूनिट तक पहुंचना चाहिए। अतः उत्पादन से पूर्व विक्रय की व्यवस्था देख कर ही इस की खेती करें। एलोवेरा की खेती से संबंधित अतिरिक्त जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में एलोवेरा की बढ़ती मांग :- आज ज्यादातर अमेरिकी कंपनियों ने मैक्सिको, डेमिनिकल, वेनेजुएला और कोस्टा रीका में हजारों किसानों के साथ अनुबंधित खेती का समझौता कर रखा है। एलोवेरा का प्रोसेसिंग करने वाली कुछ खास अमेरिकी कंपनियों के नाम हैं—फोरएवर लीविंग प्रोडक्ट, एलोकॉप, ब्रूमफील्ड, इम्प्रूव यूएसए, कॉनसेन्ट्रेट एलो कॉरपोरेशन। अभी हाल ही में एफएलपी ने टेरी लेबोरेट्रीज को खरीद लिया जिससे एफएलपी की हिस्सेदारी काफी बढ़ गयी है। एलोवेरा के वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अमेरिका की हिस्सेदारी 60 प्रतिशत है, लेकिन अमेरिकी देशों की 20 प्रतिशत और भारत एवं चीन की 12 प्रतिशत हिस्सेदारी है। फोरएवर लीविंग प्रोडक्ट्स के अमेरिका के टेक्सास क्षेत्र में दो ईकाईयां हैं। इनमें से एक ईकाई प्रत्येक दिन 20 हजार लीटर कच्चा रस तैयार करती है जबकि दूसरी ईकाई करीब 35 हजार लीटर प्रोसेस एलोवेरा का रस तैयार करती है। एफएलपी को रेक्स मऊगन ने 1978 में शुरू किया था। एफएलपी का डोमिनिकल देश में 5050 एकड़ में और "रायोग्रांड" घाटी में 2050 एकड़ में एलोवेरा की खेती हो रही है। आज अन्तर्राष्ट्रीय बाजार पर एक पैनी नजर डालें तो हम पाएंगे कि एलोवेरा हर देश में सफल रहा है। बाजार में एलोवेरा से बने उत्पादों ने अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि एलोवेरा का व्यवसायीकरण सफल रहा है। एलोवेरा से बने उत्पादों की सफलता में सोची समझी विपणन की रणनीति का भी सार्थक योगदान है। अन्तर्राष्ट्रीय एलो विज्ञान परिषद् के अनुसार एलोवेरा के पत्तों का

सालाना व्यवसाय 9-10 करोड़ डॉलर यानि 400-450 करोड़ रुपए का है। एलोवेरा से बने उत्पादों का वर्तमान बाजार करीब 3500 करोड़ डॉलर यानि 1,58,000 करोड़ रुपए का है।

स्पेनिश कंपनियों को इस बात का एहसास हो गया है कि अमेरिका और चीन से टक्कर लेना उसके बूते से बाहर है, इसलिए उन्होंने नई रणनीति के अनुसार जैविक विधि से एलोवेरा की खेती करवानी शुरू की है ताकि अपनी एक अलग पहचान बना सके। अन्तर्राष्ट्रीय एलो विज्ञान परिषद् ने एलोवेरा आई ए एस सी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अधिकारों के लिए संघर्षरत है। आई ए एस सी के सख्त रवैये के कारण "एलोवेरा" से बने नकली उत्पादों की संख्या में कमी आयी है। एलोवेरा की तेजी से बढ़ती विश्वव्यापी मांग को देखते हुए चीन कमर कसकर इस क्षेत्र में कूद पड़ा है। चीन ने अमेरिकी कंपनियों को विशेष सुविधाएं देने की घोषणा की है। चीन के हेनान और यूनान क्षेत्रों में एलोवेरा की बड़ी पैमाने पर खेती करने की योजना है। इसी दिशा में वानलू बायोलॉजी कम्पनी की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है। चीन ने 2010 तक विश्व बाजार में अपनी हिस्सेदारी 50 प्रतिशत तक करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। यूरोप में सिर्फ स्पेन के दक्षिणी हिस्से में स्थित केनारी द्वीप समूह में एलोवेरा की खेती होती है। सिर्फ वहीं की जलवायु एलोवेरा की खेती के लिए उपयुक्त है। आज भी अमेरिकी बाजार में एलोवेरा के 40 प्रतिशत नकली उत्पाद उपलब्ध हैं।

आज अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में एलोवेरा का जेल जिसमें 0.5-1.3 प्रतिशत ठोस तत्व हैं वो 60-85 रुपए किलो बिकता है। पूरी पत्ती का रस जिसमें 0.05-0.20 प्रतिशत ठोस तत्व होते हैं 190-180 रुपए किलो में बिकता है। पाउडर 10225 से लेकर 13500 प्रति किलों की दर से बिकता है। एलोवेरा की एक प्रजाति एलो बारबाडेन्सीस को मिली इस जबरदस्त व्यवसायिक सफलता से प्रभावित होकर दक्षिण अफ्रीका ने एलोवेरा की वहां पायी जाने वाली एक स्थानीय प्रजाति एलोव फेरोक्स का तेजी से प्रचार करना शुरू किया है। दक्षिण अफ्रीका में एलोव फेरोक्स एक खरपतवार की तरह उगता है और बहुतायात में पाया जाता है। अगर

(शेष पृष्ठ 100 पर)

भारतीय सिक्कों में नागरी लिपि

—कैलाशनाथ गुप्त*

नागरी लिपि का किस प्रकार उद्भव एवं विकास हुआ, यह अपने आप में एक रोचक कहानी है। उसी प्रकार नागरी लिपि का किस प्रकार—भारतीय सिक्कों में प्रयोग शुरू हुआ और आज तक के रूप में वह विकसित हुई, इसकी भी अपनी एक कहानी है। इसके पूर्व कि हम इस बात पर विचार करें कि नागरी लिपि कैसे विकसित हुई तथा सिक्के किस प्रकार प्रचलन में आए, यहां यह जिक्र करना उचित होगा कि इतिहास के अनुसार मोहम्मद गज़नी द्वारा चलाए गए सिक्कों पर अरबी कलमा “अयातमेकम मोहम्मद अवतार” का संस्कृत अनुवाद साफ-साफ देवनागरी शब्दों में लिखा हुआ है। देवनागरी का विकसित रूप मुस्लिम शासकों के सिक्कों पर बराबर जारी रहा।

जैसे, अलाऊद्दीन और शेरशाह और इसी प्रकार अकबर ने भी अपने रामासिया सिक्कों पर देवनागरी का प्रयोग किया और तुलसीदास जी के समय की देवनागरी के रूप में सिक्कों पर रामासिया साफ-साफ तौर पर दिग्दर्शित की गई। वास्तव में ब्राह्मी की जो मूलभूत विशेषताएं व स्वरूप था, उसी से देवनागरी प्रभावित हुई एवं विकसित हुई।

यही देवनागरी भारत के विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों का मुख्य आधार बनी, जो हिमालय से नर्मदा (अर्थात् मध्य देश) भारतीय सभ्यता का केंद्र एवं पवित्र स्थान है, तक है, जहां हिंदी आपस में वार्तालाप एवं संचार की आम भाषा है। इस प्रकार देवनागरी ही वह प्रमुख लिपि है और इसका इतिहास ब्राह्मी एवं संस्कृत से जुड़ा हुआ है जो भारत को साहित्यिक विरासत की रीढ़ हैं।

देवनागरी ही एक ऐसी प्रमुख लिपि है जो भारत के विभिन्न भागों में प्रयोग में लाई जाती है। यह ऐसी भारतीय

लिपि है जो राजस्थान से बिहार तक व हिमालय क्षेत्रों से नीचे मध्य प्रदेश तक काफी जोरशोर से प्रयोग में लाई जाती है। वैसे तो लगभग सभी जगह देवनागरी लिपि का प्रयोग है, पर कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ देवनागरी लिपि का बाहुल्य से प्रयोग होता है तथा कुछ जगहों पर कम। भारतीय भाषा हिंदी देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है। मराठी भी देवनागरी लिपि का बलबोधा नाम से प्रयोग करती है और गुजरात में भी इसका प्रयोग होता है। संस्कृत शास्त्रों की ही निकली लिपि देवनागरी लिपि है।

यह सत्य है कि ब्राह्मी लिपि से ही देवनागरी लिपि अवतरित हुई जो लिपि भारत में विद्यमान थी। इसका ब्राह्मणों ने विकास किया जो अपने को ब्रह्म का अवतार मानते थे। शुरू में ब्राह्मी का प्रयोग संस्कृत भाषा के लिए हुआ तथा बाद में देवनागरी में। भारत की सबसे पुरानी लिपि ब्राह्मी ही है जो अशोक (तीसरी शती ई. पूर्व) के समय प्रयोग होती थी तथा उत्तर एवं दक्षिण की सभी भाषाओं की मूल लिपि ब्राह्मी ही है। अशोक काल के बाद ब्राह्मी लिपि में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए जो बाद में गुप्त काल लिपि के रूप में भी सामने आईं। धार्मिक ग्रंथों में भी इसका खुलकर प्रयोग हुआ। सिद्धम लिपि जापान के मंदिरों में भी पायी जाती है।

सातवीं शती तक नागरी लिपि अपने रूप में काफी उभर चुकी थी और आठवीं शती के आगे इसका पूर्ण रूप विकसित हुआ। आठवीं शती से दसवीं शती तक यह अपने निखरित रूप में सामने आई तथा विभिन्न राजाओं के काल में इसका पूरा प्रयोग हुआ। जहां उत्तर भारत के लिए इसका नाम देवनागरी है, दक्षिण के लिए इसको नन्दिनागरी के रूप से जाना जाता है।

*डी-1ए/115 जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

एक नवीनतम खोज "पदातातित कम" नाम के ड्रामा के अनुसार पाटली पुत्र नगर के नाम से मशहूर हुआ। उत्तर के शहर से संबंधित कोई भी तरीके की अभिव्यक्ति नागरी या नागरी अर्थात् उत्तरी लिपि के रूप में जानी-जाने लगी। यह देवनागरी लिपि ही थी जो पहले शारदा और नागरी, दोनों ही सिद्धमद्रका के साधारण नाम से प्रचलित रही।

देवनागरी लिपि का विभिन्न भारतीय सिक्कों में उपयोग मिलता है जैसे :-

1. देहती सुल्तान सिक्के—दिल्ली सल्तनत के सिक्के—अलाउद्दीन खिलजी—मोहम्मद गजनवी के सिक्के।
2. मध्यकालीन सिक्के—राजपूत सिक्के, कलचुरिय सिक्के, गड़वाल सिक्के।
3. विजय नगर साम्राज्य के सिक्के—सोलहवीं शती एवं उसके आगे।
4. भारतीय राज्य के सिक्के—गायकवाड़ राज्य, ग्वालियर राज्य, उदयपुर राज्य।
5. ईस्ट इंडिया कंपनी के सिक्के—एक पाई या दो पाई आदि।

1885 के बाद 1910 में देवनागरी एडवर्ड सात के सिक्के में मिलती है।

6. स्वतंत्र भारत के सिक्के—इन सभी में देवनागरी लिपि अंकित है।

यहां पर यह भी जान लेना आवश्यक होगा कि भारतीय सिक्कों का किस रूप में विकास हुआ और जो निखारित रूप आज हम पाते हैं, उसकी यहां तक की यात्रा कैसे हुई।

प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य के खाद्य पदार्थ अथवा वस्त्राभूषण आदि ही उसकी संपत्ति हुआ करते थे। पशुधन उनमें से एक था। संख्या में सीमित एवं उपयोगी होने के कारण पशु भी उस समय अधिक कीमती थे। साथ ही विनिमय का भी काम देते थे। भारत में वैदिक काल के लोग विनिमय के लिए गाय का उपयोग किया करते थे। सहज लेन-देन में गाय की उपयोगिता के प्रमाण कालांतर में पाणिनि के काल (लगभग 5वीं-6वीं शती ई. पू.) तक मिलते हैं। किंतु विनिमय के यह माध्यम अपनी शीघ्र नष्ट

होने वाली और विभिन्न इकाइयों में सरलता से विभक्त न हो सकने की प्रकृतिवश स्थाई विनिमय के रूप में सर्वथा अनुपयुक्त थे। धातु के छोटे-2 टुकड़ों ने इस अभाव की पूर्ति की, जो मुद्रा के साथ ही आर्थिक जीवन के क्षेत्र में भी मनुष्य की उल्लेखनीय प्रगति थी। शुरू में ये धातु खंड काफी खुरदरे और अनघड़ होते थे। मुद्रा विकास के अगले चरण में इन्हें कभी काट करके और कभी ऊपर से आहत (पंच) करके पहले से थोड़ा सुंदर और प्रारंभिक सिक्के जैसा रूप दिया गया।

भारतीय मुद्रा प्रणाली का प्रारंभ इन्हीं आहत अथवा पंचमार्क सिक्कों से माना जाता है। ये आकार में प्रायः चौकोर, चांदी के टुकड़े जैसे हैं, जिन पर वृक्षों, पशु पक्षियों तथा सूर्य आदि विभिन्न प्रकार के चिह्न अंकित मिलते हैं। किसी भी राजा अथवा राज-शक्ति के कोई संकेत नहीं मिलते। इन सिक्कों का प्रारंभ प्रायः ई. पू. की 6 वीं शती से माना जाता है। जिस समय से लेकर वे ईसा की प्रथम शती तक देनदित व्यवहार में आते रहे। अपने आकार एवं आकृति में ये सिक्के किसी भी विदेशी प्रति-छाया से मुक्त, मूल रूप में सर्वथा भारतीय हैं। पंच मार्क सिक्कों के अतिरिक्त मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तरी भारत के कतिपय छोटे-2 राज्यों में तांबे के सिक्के प्रकाश में आये, जिन पर पहली बार ब्राह्मी लिपि के लेखों का अंकन मिलता है।

ईसा पूर्व की तीसरी से पहली शती के बीच भारतीय सीमा में ग्रीक अथवा यवनों के आगमन के बाद यहां की मुद्रा प्रणाली में आद्यंत कई परिवर्तन हुए, जिसके फलस्वरूप सिक्कों पर राजा के उर्ध्व भाग तथा पृष्ठ भाग में किसी इष्ट देवी-देवता के स्तंभ अंकन की प्रक्रिया का प्रचलन हुआ। उर्ध्व भाग चिन्हित करने की यह प्रणाली, यत्र-तत्र कुछ अपवादों तथा सुधार संस्कारों के साथ इस समय से लेकर मुसलमानों के आक्रमण काल तक बराबर चलती रही। आर्थिक तथा धार्मिक महत्व के अतिरिक्त द्ववेलिपिक एवं द्ववभाषिक होने के कारण इण्डो-ग्रीक सिक्कों का महत्व भाषा एवं लिपि के क्षेत्र में और भी अधिक है। राजा के चित्रों के साथ-2 उनके नामों एवं उपाधियों के उल्लेख ऐतिहासिक दृष्टि से अन्यथा अप्राप्य सामग्री की पूर्ति करते हैं। इण्डो-ग्रीक सिक्के की विशिष्टता (उर्ध्व भाग चित्रण) का अनुसरण कुषाणों, पश्चिमी शक-क्षत्रपों, दक्षिण के आंध्र-सात वाहनों से लेकर गुप्त एवं उत्तर गुप्त काल तक के सभी शासकों

द्वारा प्रचुरता से हुआ है । कुषाण, (प्रथम एवं द्वितीय शती ई.) सिक्कों पर लीक, ईरानी, बौद्ध तथा ब्राह्मण, देवी देवताओं के अंकन उस समय की धार्मिक विविधता के साथ-साथ शासकों की धार्मिक सहिष्णुता के भी द्योतक हैं । भारतीय इतिहास में तिथि ज्ञान की दृष्टि से पश्चिमी क्षेत्रों के तिथि अंकित सिक्के कई समस्याओं का समाधान करते हैं । सात वाहनों की तीर धनुष आदि के अंकन जहां एक ओर उस युग के सांस्कृतिक उद्वेलन को व्यक्त करते हैं वहां जहाज के मस्तूल आदि चित्रण सामुद्री व्यापार एवं विनियम की ओर भी अंकित करते हैं ।

सिक्के सौर मंडलीय ग्रह नक्षत्रादि के नाम पर प्रचलित किए गए। इनकी विविधता एवं व्यापकता महत्वपूर्ण है। भारतीय क्षेत्र में योरोपीय शक्तियों द्वारा स्थापित अधिष्ठानों के व्यवहार के लिए प्रचलित किए गए सिक्कों में ब्रिटिश, फ्रेंच, डच तथा पोर्तुगीज सिक्के मुख्य हैं।

जुलाई-सितंबर 2011 राजभाषा भारती 41

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) कार्यक्रमों का आयोजन

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा दिनांक 23-10-2010 से 1-11-2010 तक दिल्ली, इम्फाल, कोहिमा, दीमापुर, शिलांग तथा गुवाहाटी स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया :-

दिनांक	स्थान	कार्यालय निरीक्षण
23-10-2010 (शनिवार)	दिल्ली	-स्थानीय लेखा अधिकारी (केंद्रीय वाहन भंडार) -राष्ट्रीय कैमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लि. -गुणता आश्वासन महानिदेशालय
25-10-2010 (रविवार)	इम्फाल	-उप महानिरीक्षक, सैक्टर मुख्यालय, सीमा सुरक्षा बल, -क्षेत्रीय कार्यालय, भारतीय खेल प्राधिकरण -सीपेट, विस्तार केंद्र
26-10-2010 (मंगलवार)	कोहिमा	-केंद्रीय विद्यालय, -उप महानिरीक्षक, (मुख्यालय) असम राइफल्स चीसवामा
27-10-2010 (बुधवार)	दीमापुर	-कुलपति नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा -स्थानीय लेखा परीक्षा अधिकारी (एस डी), दीमापुर -संरक्षण सहायक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण -प्रभारी अधिकारी, ओ.एन.जी.सी. शिवसागर
28-10-2010 (वीरवार)	शिलांग	-क्षेत्रीय लेखा अधिकारी, बाइवर रोड, शिलांग -क्षेत्रीय निदेशक, परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय
29-10-2010 (शुक्रवार)	शिलांग	-कुलपति, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, लोअर लाचूमेरे -महानिरीक्षक, फ्रंटियर मुख्यालय, सीमा सुरक्षा बल
30-10-2010 (शनिवार)	गुवाहाटी	-जिला प्रबंधक, बेमल लिमिटेड -अधीक्षक पुरातत्वविद्, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण -हिंदुस्तान पेट्रो. कार्पो. लि.
1-11-2010 (सोमवार)	दिल्ली	-निदेशक, राष्ट्रीय समाज रक्षा संस्थान -कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय -दिल्ली मंडल कार्यालय, इंडियन ऑयल कार्पो. लि., बाराखंभा रोड

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा दिनांक 29-12-2010 से 5-1-2011 तक दिल्ली, भुवनेश्वर, चेन्नै, मदुरै तथा मुंबई स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया :-

दिनांक	स्थान	कार्यालय निरीक्षण
29-12-2010 (बुधवार)	दिल्ली	-उप नियंत्रण रक्षा लेखा (प्रभारी लेखा) -हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लि. -लोनी एलपीजी संयंत्र, हिंदुस्तान पेट्रो. कार्पो. लि.
30-12-2010 (वीरवार)	भुवनेश्वर	-उद्यान शाखा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण -जवाहर नवोदय विद्यालय
31-12-2010 (शुक्रवार)	भुवनेश्वर चेन्नै	-पुलिस उपमहानिरीक्षक, के.रि.पु. बल -प्रशिक्षण केंद्र, भारतीय खेल प्राधिकरण कटक -दीपस्तंभ एवं दीपपोत निदेशालय -प्रोजेक्टस एंड डेवलपमेंट इंडिया लि. (पीडीआईएल)
1-1-2011 (शनिवार)	चेन्नै मदुरै	-गेल (इंडिया) लिमिटेड, आंचलिक कार्यालय -वरि. प्लांट प्रबंधक, मदुरै एलपीजी प्लांट, इंडियन ऑयल कार्पो. लि. -जिला कार्यालय, बेमल लिमिटेड
3-1-2011 (सोमवार)	मदुरै	-क्षेत्रीय प्रबंधक, दि फर्टिलाइजर्स एंड कैमिकल्स ट्रावनकोर लि. (एफएसीटी) -भारत पेट्रोलियम कार्पो. लि. मदुरै प्रादेशिक कार्यालय
4-1-2011 (मंगलवार)	मुंबई	-तारापुर परमाणु बिजलीघर -कम्पनी रजिस्ट्रार का कार्यालय -समुद्री प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी संस्थान (ओएनजीसी)
5-1-2011 (बुधवार)	दिल्ली	-राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद -आयुध निर्माणी, क्षेत्रीय विपणन केंद्र -महाप्रबंधक, इलैक्ट्रानिक्स कार्पो. ऑफ इंडिया लि.

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 26-10-2010 से 1-11-2011 तक दिल्ली, मुंबई, नासिक, अहमदाबाद तथा पुणे स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया :-

दिनांक	स्थान	कार्यालय निरीक्षण
26-10-2010 (मंगलवार)	दिल्ली	-निदेशक डाक (लेखा), सिविल लाइंस, नई दिल्ली -केंद्रीय मृदा एवं सामग्री अनुसंधानशाला, नई दिल्ली -जैवप्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली
27-10-2010 (बुधवार)	मुंबई	-सीएमएफआरआई का मुंबई अनुसंधान केंद्र, मुंबई -दूरदर्शन केंद्र, मुंबई -महाप्रबंधक, एमटीएनएल, नवी मुंबई
28-10-2010 (गुरुवार)	नासिक	-महाप्रबंधक दूरसंचार, भारत संचार निगम लि., नासिक -साफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया, नासिक -भारतीय रेल बिजली इंजीनियरिंग संस्थान, नासिक

दिनांक	स्थान	कार्यालय निरीक्षण
29-10-2010 (शुक्रवार)	अहमदनगर	—स्टेशन प्रबंधक, रेलवे स्टेशन, अहमदाबाद —अधीक्षक डाकघर, श्रीरामपुर मंडल, श्रीरामपुर (निरीक्षण अहमदनगर में) —भारतीय खाद्य निगम, मनमाड (निरीक्षण अहमदनगर में)
30-10-2010 (शनिवार)	पुणे	—केंद्रीय भंडारण निगम, पुणे —भारतीय मानक ब्यूरो, पुणे —भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, पुणे
1-11-2010 (सोमवार)	दिल्ली	—मौसम कार्यालय, सफदरजंग एयरपोर्ट, नई दिल्ली —राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम, नई दिल्ली —अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सतलुज जल विद्युत निगम लि., नई दिल्ली

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 23-10-2010 से 1-11-2010 तक दिल्ली, इम्फाल, कोहिमा, दीमापुर, शिलांग तथा गुवाहाटी स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया :-

दिनांक	स्थान	कार्यालय निरीक्षण
21-10-2010 (वीरवार)	दिल्ली	—कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण —यूनाइटेड इश्योरेंस कंपनी लि. क्षेत्रीय कार्यालय-II
22-10-2010 (शुक्रवार)	कोयम्बटूर	—भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, दक्षिणी सर्कल —भारत सरकार मुद्रणालय —दि न्यू इंडिया यूनाइटेड इश्योरेंस कंपनी लि., —क्षेत्रीय कार्यालय
23-10-2010 (शनिवार)	सेलम	—कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, उप क्षेत्रीय कार्यालय —इंडियन ओवरसीज बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय —सेलम इस्पात संयंत्र
25-10-2010 (सोमवार)	बेंगलूरु	—कुद्रेमुख आयरन और कंपनी लि. —मुख्य अभियंता, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (दक्षिण क्षेत्र-III) —प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (सिविल एवं वाणिज्यिक लेखा परीक्षा)
26-10-2010 (मंगलवार)	मुंबई	—सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज कारपोरेशन ऑफ इंडिया लि. —राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, मुख्यालय
27-10-2010 (बुधवार)	महेशाना	—स्टेट बैंक ऑफ इंडिया —बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय —दि ओरिएन्टल इश्योरेंस कंपनी लि., क्षेत्रीय कार्यालय
28-10-2010 (वीरवार)	अहमदाबाद	—मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय-1 —कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय —केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क-1
29-10-2010 (शुक्रवार)	दिल्ली	—संसदीय कार्य मंत्रालय —केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद —पंजाब नेशनल बैंक, प्रधान कार्यालय

दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार एवं विचार मंथन—विशाखापट्टणम

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन कार्यक्रम दिनांक 21 दिसंबर, 2010 को आंध्रा विश्वविद्यालय, प्लेटिनम जुबली गैस्ट हाउस सभागार, विशाखापट्टणम में संपन्न हुआ। माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन ने इस भव्य समारोह की अध्यक्षता की। इस समारोह की तीन विशिष्टताएं रहीं :

(क) यह प्रथम अवसर था कि क्षेत्रीय पुरस्कार वितरण समारोह के साथ विचार-मंथन का आयोजन किया गया। ऐसा माननीय गृह राज्य मंत्री द्वारा इस दिशा में दिए गए परामर्श और प्रेरणा के आधार पर किया गया। विचार-विमर्श का विषय था 'संघ की राजभाषा नीति'।

(ख) माननीय गृह मंत्री जी के मार्गदर्शन व निर्देश के अनुसार इस समारोह का आयोजन प्रथम बार विश्वविद्यालय के परिसर में किया गया। विश्वविद्यालय में समारोह के स्थल रखने के पीछे यह लक्ष्य है कि युवा वर्ग को संपर्क भाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति संवेदनशील किया जाए। यह समारोह आंध्रा विश्वविद्यालय के मुख्य आडिटोरियम में आयोजित हुआ जिसमें कुलपति, हिंदी प्राध्यापकों, हिंदी के छात्रों की सक्रिय सहभागिता रही।

(ग) माननीय गृह राज्य मंत्री की सहमति से यह निर्णय लिया गया इन क्षेत्रीय सम्मेलनों में स्थानीय अथवा निकटस्थ स्थानों के कलाकारों द्वारा हिंदी में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी एक अभिन्न अंग रहे। तदनुसार, आंध्रा विश्वविद्यालय के छात्रों एवं गीत व नाटक प्रभाग के सहयोग से आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम ने इस भव्य समारोह की गरिमा बढ़ाई।

माननीय गृह राज्य मंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी भाषा पर आयोजित किसी भी विचार-गोष्ठी में आवश्यक रूप से तीन पक्ष निहित रहते हैं तथा हिंदी भाषा का साहित्य, राजभाषा के रूप में प्रयोग व प्रसार, तथा राजभाषा विभाग तथा केंद्रीय कार्यपालिका के अन्य संगठनों में कर्मियों की उपलब्धता एवं उनकी न्यायोचित स्थापना संबंधी समस्याओं का निराकरण। विभिन्न संवर्गों के कर्मियों द्वारा उठाए गए मुद्दों की प्रक्रिया में उन्होंने

कहा कि छोटे वेतन आयोग की संस्तुतियों के आलोक में सहायक निदेशक के पद को श्रेणी 'क' में वर्गीकृत कर दिया गया है। केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग की कॉर्डर पुनर्संरचना पर शीर्षतम स्तर पर विचार किया जा रहा है।

हिंदी देश की संपर्क भाषा के रूप में एक पृथक पहचान है। यह अत्यंत हर्ष और संतोष का विषय है कि विभिन्न सकारात्मक परिवर्तनों से अभिप्रेरित होकर हिंदी का देश के दक्षिणी पूर्वी भागों में व्यापक प्रसार व प्रचलन बढ़ा है। परिणामस्वरूप जनसाधारण द्वारा इसे स्वेच्छा और तत्परता से अपनाया जा रहा है। माननीय गृह राज्य मंत्री जी ने संविधान के अनुच्छेद 351, जो हिंदी भाषा को विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से समृद्ध करने विषयक है, के संदर्भ में कहा कि हिंदी के साथ-साथ राष्ट्र की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को सुदृढ़ करने की भी परम आवश्यकता है। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि जनसाधारण के हित में यह अत्यंत उपयोगी होगा कि विभिन्न राज्यों के उच्च न्यायालयों में अधिवक्ताओं को हिंदी अथवा राज्य की शासकीय प्रयोजनार्थ अधिसूचित भाषा/भाषाओं में कार्यवाही तथा बहस करने का विकल्प प्राप्त हो। संप्रति उच्च न्यायालय में आदेशों, निर्णयों और डिक्रीज के अंग्रेजी भाषा के संस्करणों को ही अधिकृत संस्करण मानने के वर्तमान में व्याप्त संवैधानिक व वैधानिक प्रावधानों को अक्षुण्ण रखते हुए, उक्त सुझाव पर परीक्षण करना वांछनीय होगा।

माननीय गृह राज्य मंत्री जी ने सार्वजनिक उपक्रमों यथा राष्ट्रीय इस्पात निगम व पोर्ट ट्रस्ट ऑफ इंडिया, जो विशाखापट्टणम में स्थित हैं व जिनके क्रमशः अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक व वरिष्ठ अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित थे, से विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी विभागों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा किए जा रहे वित्त-पोषण के समर्थन स्वरूप 'हिंदी चेयर्स' हेतु वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का आह्वान किया।

सुश्री वीणा उपाध्याय, सचिव (भाषा) विभाग ने अपने स्वागत भाषण में केंद्रीय सरकार की राजभाषा नीति की विशिष्टताओं का विस्तृत निरूपण किया। उन्होंने कहा कि केंद्रीय सरकार की राजभाषा नीति का स्वरूप संविधान

में संघीय राज्य की परिकल्पना के अनुरूप है। राजभाषा नीति संघीय, लोकतांत्रिक, सहिष्णुता-संपन्न, भाषा-निरपेक्षता युक्त तथा समावेशीय स्वरूप लिए है। देश में क्षेत्रीय भाषाओं की मंजूषा है और हिंदी उनमें मध्य-मणि है। आवश्यकता हिंदी भाषा के शब्द भंडार को संपुष्ट करने की है। संविधान के अनुच्छेद 351 में भारत सरकार को यह कार्य सौंपा गया है कि वह हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करें ताकि हिंदी भारत की वैविध्य युक्त संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

कई विशिष्ट एवं गणमान्य व्यक्तियों ने इस गरिमामय समारोह में भाग लिया, जिनमें आंध्रा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. सत्यानारायणा, राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री पी.के. विशनोई, आंध्रा प्रदेश हिंदी अकादमी के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. वाई. लक्ष्मीप्रसाद, आंध्रा विश्वविद्यालय की प्रो. के. सीतालक्ष्मी, श्री एम. काशीनाथ, अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्रीय कार्यालय) विशाखापट्टणम, श्री ए.पी. सिंह, अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), चेन्नई तथा आंध्रा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रो. आदेश्वर राव शामिल हैं। इन विशिष्ट एवं गणमान्य व्यक्तियों के उद्बोधन में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु उभर कर सामने आए, जो नीचे दिए गए हैं :

(क) यह आवश्यक है कि हिंदी को मैट्रिक स्तर तक अनिवार्य रूप से मुख्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए। विश्व के अनेक देशों में अपनी भाषा को अनिवार्य रूप से निश्चित स्तर तक पढ़ाया जाता है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विश्वविद्यालय में हिंदी विभागों के लिए निरंतर वित्त-पोषण आश्वस्त रूप से मिलना चाहिए। वर्तमान में एक बार में पांच वर्ष के लिए ग्राण्ट दी जाती है।

(प्रो. बी. सत्यानारायणा, कुलपति, आंध्रा विश्वविद्यालय, विशाखापट्टणम)

(ख) देश की शिक्षा नीति में सामान्य रूप से भारतीय भाषाओं की उपेक्षा हो रही है। इस संबंध में चीन का उदाहरण दिया गया। हिंदी भाषा को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त

अधिक से अधिक शोध पत्रों को हिंदी में लिखा जाना भी आवश्यक है।

(श्री पी.के. विशनोई, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, भारतीय इस्पात निगम, विशाखापट्टणम)

(ग) आंध्र विश्वविद्यालय देश में एकमात्र विश्वविद्यालय है जहां राजभाषा हिंदी की नीति पर एक वर्ष का डिप्लोमा कोर्स चलाया जा रहा है। यह आवश्यक है कि हिंदी साहित्य में दक्षिण भारतीय लेखकों व विचारकों के योगदान का भी स्पष्ट उल्लेख हो। हिंदी प्राध्यापकों की दशा में सुधार तथा भाषा की गरिमा की पुनर्स्थापना अपेक्षित है।

(प्रो. सीतालक्ष्मी, हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टणम)

(घ) हिंदी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की एक अधिकारिक भाषा बनवाने का प्रयास जारी रखना होगा। हिंदी भाषा का विषय वर्तमान में तीन विभिन्न मंत्रालयों यथा विदेश कार्य, मानव संसाधन और गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा देखा जा रहा है। यह श्रेयस्कर होगा कि हिंदी भाषा के सम्बन्ध मुद्दों का कार्य राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को सौंपा जाए। शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी के लिए अधिक वित्त-पोषण की आवश्यकता है। दक्षिण भारत के 15 विश्वविद्यालयों में अभी भी हिंदी विभाग नहीं हैं।

(डॉ. वाई. लक्ष्मीप्रसाद, भूतपूर्व उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति तथा भूतपूर्व सांसद वर्तमान में अध्यक्ष, राष्ट्रीय हिंदी अकादमी, आंध्र प्रदेश)

(ङ) सभी भर्तियों में एक निश्चित स्तर तक का हिंदी ज्ञान निर्धारित हो। विद्यालयों में प्रारंभिक दशा में हिंदी की प्रधानता न होने के कारण हिंदी में व्यवहार करने में कठिनाई होती है। हिंदी में प्रवीणता के लिए प्राज्ञ स्तर तक की परीक्षा के पश्चात् प्राज्ञोत्तर का पाठ्यक्रम भी आरंभ करना चाहिए। इस पाठ्यक्रम में विभिन्न विभागों की शासकीय भाषा के शब्दकोष का प्रभावी समावेश होना चाहिए। केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान में मानव संसाधन का सबलीकरण होना चाहिए।

(श्री एम. काशीनाथ, डिवीजनल रेलवे मैनेजर एवं अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय), विशाखापट्टणम)

(च) हिंदी और अंग्रेजी का साथ-साथ संतुलन बनाना आवश्यक है। वित्तीय समावेशन लक्ष्य की प्राप्ति हेतु विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रमों को राज्यों की भाषाओं तथा सरल हिंदी में लोगों तक पहुंचाना जरूरी है।

(श्री ए.पी. सिंह, महाप्रबंधक, इंडियन ओवरसीज बैंक, चैन्नई, और अध्यक्ष नराकास बैंक (चैन्नई))

(छ) हिंदी देश की राजभाषा और संपर्क भाषा है। राजनीति के कारण दक्षिण में हिंदी का विरोध हुआ, लोकप्रियता की कमी नहीं है; भारत की संस्कृति को अक्षुण्ण रखने की क्षमता हिंदी में है।

(प्रो. आदेश्वर राव, भूतपूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय)

इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों के उप निदेशक श्री अजय श्रीवास्तव तथा डॉ. वी. बालाकृष्णन ने अपने-अपने क्षेत्रों की विशिष्ट उपलब्धियों, कार्यान्वयन के संबंध में विस्तृत समीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत की।

संघ की राजभाषा नीति पर विचार मंथन में श्री अशोक पिल्लौरै, आई.एस.आर.ओ., हासन, डॉ. राजनारायण अवस्थी, रक्षा लेखा नियंत्रक का कार्यालय, हैदराबाद, डॉ. वासुदेवन, महालेखाकार का कार्यालय, चैन्नई, श्री सोमशेखरन आई.एस.आर.ओ., तिरुवनन्तपुरम, श्री दिनेश कुमार, उप महाप्रबंधक, ओ.एन.जी.सी., चैन्नई तथा डॉ. कृष्णाबाबू, विशाखापट्टणम स्टील प्लांट ने भाग लिया। विचार मंथन में भाग लिए गए सहभागियों ने निम्नलिखित बिंदुओं को सामने रखा :—

(क) केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी के पद कम हैं और आधारभूत सुविधा भी पर्याप्त नहीं है।

(ख) मात्र प्रेरणा और प्रोत्साहन के आधार पर हिंदी के प्रयोग और प्रसार की नीति से प्रगति कम है।

(ग) राजभाषा नियमों में कर्मियों के कार्यसाधक ज्ञान के संबंध में स्व प्रमाण-पत्र के आधार पर ज्ञान की उपलब्धता मान लेने की नीति से व्यावहारिक रूप में हिंदी का प्रयोग संभव नहीं हो पा रहा है।

(घ) कार्यालय के सभी अनुभागों में जाकर हिंदी संबंधी निरीक्षण किया जाना चाहिए।

(ङ) तिमाही रिपोर्ट में टिप्पणी की संख्या की गणना करने में व्यावहारिक कठिनाई होती है अतः तिमाही रिपोर्ट के प्रोफार्मा में यह कॉलम नहीं होना चाहिए।

(च) कई अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी संवर्ग नहीं है। हिंदी में सुचारु कार्य के लिए सी.एस.ओ.एल.एस. से संवर्ग से हिंदी कर्मियों की ही तैनाती होनी चाहिए।

(छ) हिंदी में 'ग' क्षेत्र के लिए हिंदी पत्राचार के लक्ष्य बहुत अधिक हैं, 15-20 प्रतिशत तक ही रखना चाहिए।

(ज) सी.ए.जी. चैन्नई में हिंदी के अनेक पद खाली हैं और छठे वेतनमान भी अभी तक नहीं दिए गए हैं।

(झ) ओ.एन.जी.सी. में हिंदी प्रभाग में कर्मियों की संख्या अत्यंत नगण्य है।

माननीय गृह मंत्री जी ने इस अवसर पर संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए केंद्रीय सरकारी संगठनों, बैंकों, उपक्रमों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को वर्ष 2009-2010 के लिए पुरस्कार प्रदान किए। पुरस्कार प्राप्त कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के ब्यौरे अनुबंध में दिए गए हैं।

इस अवसर पर आंध्रा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों तथा गीत एवं नाटक प्रभाग द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की सभी ने सराहना की। मध्याह्न भोजन के बाद संचालित तकनीकी सत्र का विस्तृत ब्यौरा नीचे दिया गया है :—

अपराह्न में आयोजित सूचना प्रौद्योगिकी व तकनीकी सत्र

तकनीकी सत्र की अध्यक्षता सुश्री वीणा उपाध्याय, सचिव, राजभाषा विभाग द्वारा की गई। सत्र का प्रारंभ करते हुए सचिव महोदया ने कार्यालयों में हिंदी प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ सुनिश्चित कराने की आवश्यकता पर जोर देते हुए निम्नलिखित बिंदुओं पर बल दिया :—

(क) कार्यालयों में कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए पर्याप्त आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए।

(ख) हिंदी प्रयोगकर्ताओं को सूचना के आदान-प्रदान एवं अन्य कार्यों के लिए अधिक से अधिक उपयुक्त ऑन-लाइन MIS प्रणाली का प्रयोग करना चाहिए तथा हिंदी प्रयोगकर्ता को हिंदी में ई-मेल तथा हिंदी इंटरनेट की सुविधा का भरपूर प्रयोग करना चाहिए ।

(ग) आवश्यक तकनीकी जागरूकता लाने के लिए हिंदी प्रयोगकर्ता को आवश्यक प्रशिक्षण दिलाया जाये ।

(घ) हिंदी प्रयोगकर्ताओं को कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य के लिए राजभाषा विभाग द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक, पुणे के माध्यम से अंग्रेजी एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं के माध्यम से ऑन-लाइन हिंदी सीखने के लिए 'लीला' सॉफ्टवेयर, हिंदी डिक्शनरी को कंप्यूटर द्वारा टेक्स्ट के रूप में परिवर्तित करके देने के लिए 'श्रुतलेखन' सॉफ्टवेयर एवं अंग्रेजी दस्तावेजों के हिंदी अनुवाद के लिए 'मंत्र' सॉफ्टवेयर का विकास कराया है।

(ङ) मंत्र सॉफ्टवेयर द्वारा दिए जा रहे अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद की गुणवत्ता में सुधार के लिए राजभाषा विभाग द्वारा 5 मंत्रालयों/विभागों की पहचान की गई है । इन मंत्रालयों/विभागों से राजभाषा विभाग द्वारा यह अनुरोध किया जा रहा है कि वे हिंदी अनुवाद से जुड़े अपने कुछ अधिकारियों को चैंपियन के तौर पर नामित करें जो सी-डैक, पुणे के भाषाविदों एवं तकनीकी अधिकारियों के साथ मिलकर मंत्र सॉफ्टवेयर के 'कारपस' में वृद्धि करते हुए मंत्र द्वारा दिए जा रहे अनुवाद की गुणवत्ता के स्तर में सुधार लाने में सहयोग देंगे ।

(च) हिंदी को सूचना प्रौद्योगिकी में तेजी से हो रहे विकास का लाभ देना सुनिश्चित करने के लिए हिंदी प्रयोग के लिए विकसित किए जा रहे सॉफ्टवेयरों को इस प्रगति के साथ रखने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के साथ शीघ्र ही राजभाषा विभाग द्वारा सचिव स्तर पर बैठक की जाएगी ।

(छ) राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयत्नशील है कि हिंदी प्रयोगकर्ता को सॉफ्टवेयर विकासकर्ताओं से जोड़ा जाए ताकि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी प्रयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं की निरंतर पूर्ति होती रहे ।

तकनीकी सत्र में कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी तकनीकी जानकारी देने के क्रम में पहली प्रस्तुति श्री केवल

कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र द्वारा दी गई जिसमें उन्होंने निम्नलिखित बातों पर बले दिया :-

(क) हिंदी सामग्री/फाइलों के एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर पर आदान-प्रदान एवं फॉट इनकंपैटिबिलिटी संबंधी सभी समस्याओं को पूर्ण रूप से दूर करने के लिए कंप्यूटर पर यूनिकोड एनकोडिंग का ही प्रयोग किया जाए ।

(ख) कंप्यूटर पर यूनिकोड प्रयोग, सुविधानुसार विभिन्न की-बोर्ड ले-आउट प्रयोग करें । नान-यूनिकोड फाइल को यूनिकोड फाइल में परिवर्तित करने, हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण देने, आदि के लिए आवश्यक सॉफ्टवेयर सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की साइट <http://ildc.in> एवं www.bhashaindia.com वेबसाइट पर निःशुल्क उपलब्ध कराए गए हैं । ये निःशुल्क सॉफ्टवेयर कार्यक्षमता की दृष्टि से किसी भी तरह उन सॉफ्टवेयरों से कम नहीं हैं जो कीमत देकर कार्यालयों द्वारा खरीदे जाते हैं । अतः उनके अनुसार कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग की सभी सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध हैं । इन सुविधाओं की जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर 'ई-टूल्स' हाइपर लिंक के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई हैं ।

(ग) कंप्यूटर विंडो 2000 आपरेटिंग सिस्टम और एम.एस. ऑफिस 2000 एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर के बाद के संस्करण उपयोग कर रहा है तो कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग में किसी भी कार्य के लिए कोई समस्या नहीं आएगी ।

(घ) यूनिकोड वेबसाइट तैयार करने या कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग संबंधी किसी भी समस्या के समाधान के लिए हिंदी प्रयोगकर्ता उनसे या राजभाषा विभाग के तकनीकी कक्ष से फोन/ई-मेल द्वारा संपर्क कर सकते हैं ।

एक प्रतिभागी द्वारा सुझाव दिया गया कि राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित किए जा रहे कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में यूनिकोड वेबसाइट तैयार करने का प्रशिक्षण भी शामिल किया जाए ।

तकनीकी सत्र की अगली प्रस्तुति में आर्यन ई-सॉफ्ट प्रा.लि. के श्री गगन शर्मा द्वारा उनकी कंपनी द्वारा कंप्यूटर पर हिंदी में यूनिकोड में विभिन्न कार्य करने के

लिए उनके द्वारा विकसित किए गए 'सारांश' सॉफ्टवेयर की कार्यप्रणाली की संक्षिप्त जानकारी दी गई। उन्होंने अपनी कंपनी के अन्य उत्पाद 'हिंदी प्राध्यापक' तथा ई-पुस्तक 'गौरवशाली भारत' का भी प्रदर्शन किया जिसके द्वारा हिंदी सीखने, हिंदी शब्दकोष एवं भारत देश के बारे में विभिन्न विषयों पर हिंदी में जानकारी लेने की सुविधा दी गई है।

सी-डैक, पुणे के श्री करीमुल्लाह शेख ने अपनी प्रस्तुति में सी-डैक द्वारा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के लिए विकसित किए गए सॉफ्टवेयरों की जानकारी दी।

दक्षिण क्षेत्र के लिए वर्ष 2009-2010 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

क्र. सं.	संगठन का नाम	स्थान
कार्यालय		
1.	रक्षा लेखा नियंत्रक (अनु एवं वि का)	प्रथम हैदराबाद
2.	केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण, दक्षिण क्षेत्रीय विद्युत समिति, बेंगलूर	द्वितीय
3.	मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन इंसेट	तृतीय
उपक्रम		
1.	पावरग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लि., सिकंदराबाद	प्रथम
2.	एन.टी.पी.सी., सिकंदराबाद	द्वितीय
3.	महाप्रबंधक दूरसंचार, मैसूर	तृतीय
बैंक		
1.	यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, स्टाफ महा विद्यालय, बेंगलूर	प्रथम
2.	यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद	द्वितीय
3.	आंध्रा बैंक, उदुपी, तृतीय विजयवाड़ा	तृतीय
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		
1.	बेंगलूर (का.)	प्रथम
2.	हैदराबाद (बैंक)	द्वितीय
3.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हासन	तृतीय

जिन सॉफ्टवेयरों की जानकारी दी गई उनमें हिंदी शिक्षण के लिए 'लीला', अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद के लिए 'मंत्र', हिंदी डिक्शनरी के लिए 'श्रुतलेखन' प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त सी-डैक द्वारा जिन प्रमुख सॉफ्टवेयरों का विकास किया जा रहा है वे हैं : कंप्यूटर पर उपलब्ध हिंदी टेक्स्ट को पढ़कर सुनाने वाला 'प्रवाचक', अंग्रेजी डिक्शनरी को हिंदी टेक्स्ट में परिवर्तन करने के लिए 'वाचांतर' तथा ऑनलाइन बृहत शब्दकोश 'ई-महाशब्दकोश'।

कार्यक्रम के समापन में श्री डी.के. पाण्डेय, संयुक्त सचिव (राजभाषा) ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के लिए वर्ष 2009-2010 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

क्र. सं.	संगठन का नाम	स्थान
कार्यालय		
1.	विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, तिरुवनंतपुरम	प्रथम
2.	मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, कोचिन	द्वितीय
3.	भारतीय तटरक्षक जिला मुख्यालय, कोचिन	तृतीय
उपक्रम		
1.	भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, कोचिन	प्रथम
2.	भारतीय कपास निगम लि., कोयंबतूर	द्वितीय
3.	कोच्चि रिफाइनरी, अंबलमुगल	तृतीय
बैंक		
1.	स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर, अंचल कार्यालय, कोषिकोड	प्रथम
2.	यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, एरणाकुलम	द्वितीय
3.	सिंडीकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि	तृतीय
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		
1.	तिरुवनंतपुरम (बैंक)	प्रथम
2.	चेन्नै (बैंक)	द्वितीय
3.	कोयंबतूर (बैंक)	तृतीय

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 35वीं बैठक

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की, सुश्री वीणा उपाध्याय, सचिव, राजभाषा विभाग की अध्यक्षता में दिनांक 29 एवं 30-12-2010 में, 35वीं बैठक इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, 40, मैक्स मूलर मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित की गई।

2. सचिव, राजभाषा विभाग ने बैठक में सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि आज सवा वर्ष से अधिक की अवधि पश्चात् केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक हो रही है। इस समिति की समीक्षा बैठक के आयोजन में और अधिक विलंब न हो, इस उद्देश्य से इस बैठक का आयोजन वर्ष 2010 में ही करने का भरसक प्रयास किया गया है। इस बैठक के आयोजन की प्रतिक्रिया स्वरूप सहभागी मंत्रालयों और विभागों से प्राप्त सकारात्मक रूख के लिए राजभाषा विभाग आभारी है। राजभाषा नीति का प्रभावी कार्यान्वयन कार्यपालिका के समस्त संगठनों और प्रतिष्ठानों के संवैधानिक दायित्वों के निष्पादन के लिए अनिवार्य है। प्रथम बार यह समीक्षा बैठक अधिक सार्थक संवाद और ठोस कार्यबिंदुओं के अभिज्ञान के लक्ष्य प्राप्ति हेतु दो दिन की अवधि में की जा रही है। 29 दिसंबर, 2010 एवं 30 दिसंबर, 2010 को क्रमशः 40 एवं 37 मंत्रालयों/विभागों को बैठक हेतु आमंत्रित किया गया है।

2.1 सचिव (राजभाषा) ने समस्त प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए निम्नांकित पक्षों की ओर ध्यान दिलाया :

- (i) संघ की राजभाषा नीति का स्वरूप उदार है। यह लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित है। यह सहिष्णुता-संपन्न, भाषा-निरपेक्ष तथा समावेशीय स्वरूपयुक्त नीति है। यह विभिन्न भाषाओं में सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल देती है। हिंदी राष्ट्र की अंतर्प्रान्तीय संपर्क भाषा है। राष्ट्र के ग्रामीण और नगरीय विभिन्न क्षेत्रों के सामाजिक व आर्थिक उत्थान में इसका सर्वोपरि महत्व है। यह आवश्यक है कि राष्ट्र स्तर पर कार्यपालिका में हिंदी को अब तक जितना स्थान दिया गया है, उससे अधिक स्थान दिया

जाए। इस दिशा में हम छोटी-छोटी बातों से पहल करें जैसे सरल, सहज तथा भले ही अंग्रेजी व अन्य भाषाओं के शब्दों से मिश्रित हिंदी का प्रयोग करें; फाइलों पर ऐसी भाषा में टिप्पणियां लिखें; प्रत्याशित अर्थात् 'एक्सपेक्टेड' प्रकृति के पत्राचार के उत्तरालेखों का मानकीकरण यथा 'स्टेन्डर्डडाइजेशन' करते हुए उनकी हिंदी के आलेख वेबसाइट पर डाल दें ताकि सुविधानुसार स्टाफ उन्हें डाउनलोड कर इस्तेमाल कर सकें; हस्ताक्षर हिंदी में करें तथा विभिन्न समीक्षा बैठकों के शुरू में कम से कम 10-15 मिनट सरल हिंदी में विचार-विमर्श करें ताकि हिंदी के पक्ष में अधिक मैत्रीपूर्ण माहौल बन सके।

- (ii) उक्त स्थिति के परिप्रेक्ष्य में सचिव ने कहा कि राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार यह प्रशासनिक प्रधानों का दायित्व है कि वह राजभाषा नीति का कार्यान्वयन सुनिश्चित करवाएं। उच्च अधिकारी हिंदी के कार्य में उदाहरण पेश करें ताकि अधीनस्थ कार्मिक प्रेरित हों।

- (iii) आज हो रही बैठक में एजेंडा के स्वरूप को उल्लेखनीय ढंग से संवर्धित और व्यापक किया गया है। इसमें समय-समय पर संसदीय राजभाषा समिति की संस्तुतियों के आधार पर महामहिम राष्ट्रपति के आदेशों के अनुपालन की समीक्षा, विभिन्न संगठनों द्वारा की गई, उल्लेखनीय पहलों और अभिनव प्रयोगों की जानकारी, तथा हिंदी भाषा, टंकण व अनुवाद में पंचवर्षीय प्रशिक्षण योजना पर विचार-विमर्श सम्मिलित हैं।

- (iv) अप्रैल, 2011 में विभाग की माननीय प्रधान मंत्री जी की अध्यक्षता में गठित केंद्रीय हिंदी समिति की बैठक का आयोजन प्रस्तावित है जिसमें लिखित प्रस्तर में इंगित मदों पर भी विचार किया जाएगा। अतः समस्त विभागों से इन बिंदुओं पर गंभीरतापूर्वक विचार एवं ठोस कार्रवाई निवेदित और अपेक्षित है।

(v) समस्त मंत्रालयों और विभागों से यह अनुरोध है कि वे उनके मंत्रालयों में कार्यरत हिंदी सलाहकार समितियों की बैठकों के लिए एक समग्र स्वरूप की 'चेक लिस्ट' बनाएं जिसमें विभाग तथा विभाग के अधीनस्थ व संबद्ध कार्यालयों और प्रतिष्ठानों में राजभाषा के प्रयोग तथा उससे जुड़े समस्त संगत पक्षों की समीक्षा हो।

(vi) वर्तमान में देश भर में 274 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां (नराकास) गठित हैं। दक्षिण भारत में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां अच्छा कार्य कर रही हैं। इनका व्यापीकरण, विस्तारीकरण करना है और इन्हें प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है। समस्त मंत्रालयों और विभागों से यह अनुरोध है कि वे अपने अधीनस्थ और संबद्ध संगठनों के मुख्य कार्यपालक अधिकारियों से उनके अधीनस्थ कार्यालयों को नराकास का सदस्य बनने, तथा कार्यालयों के मुखिया को नराकास की बैठकों में भाग लेने व अनुसरणात्मक कार्रवाई करने के निर्देश जारी करने हेतु पत्र भेजें।

(vii) कार्यपालिका का कर्तव्य है कि वह उसे संविधान और विधान द्वारा सौंपे गए दायित्वों से जनसाधारण को परिचित कराने के लक्ष्य से उनका प्रभावी और व्यापक प्रसार करे। राजभाषा विभाग भी इस दिशा में अपने प्रयासों को द्रुतगति प्रदान करने जा रहा है। सचिव ने उपस्थित मंत्रालयों और विभागों के प्रतिनिधियों से इलेक्ट्रॉनिक और प्रिन्ट मीडिया के माध्यम से हिंदी के प्रयोगार्थ विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं, आई. टी. टूल्स, शब्द भंडार तथा हिंदी भाषा पर महापुरुषों के उद्गारों का समुचित प्रसार करवाने का अनुरोध किया। इस संबंध में एलईडी बोर्ड, टीवी पर टिकर्स तथा एफ एम रेडियो इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है।

(viii) राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक के सहयोग से विकसित आई. टी. टूल्स का परिचय कराते हुए सचिव ने कहा कि बदलते परिवेश के मुताबिक हमें इनका अधिक से अधिक प्रयोग करना है। यूनिकोड के प्रयोग से हिंदी टंकण अत्यंत सहज और सरल हो जाता है।

(ख) राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए पहलात्मक कदम

अंतर्विभागीय समन्वय का सुदृढीकरण

(क) सचिव, राजभाषा विभाग ने 16 क्षेत्रीय कार्यालयों के प्रमुखों को तारीख 30-11-2010 को एक अर्धशासकीय पत्र भेजा जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का नेटवर्क फैलाने, और हिंदी भाषा, टंकण और अनुवाद कौशल में प्रशिक्षण की गति तीव्र करने के निर्धारित उद्देश्यों सहित एक दूसरे के साथ घनिष्ठ समन्वय और सामंजस्य बनाने के लिए विस्तृत अनुदेश दिए गए हैं। उन्हें प्रत्येक माह की दूसरी तारीख को बैठक करने और उक्त सूचीबद्ध तीनों क्षेत्रों में संभावित प्रशिक्षार्थियों के संबंध में विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त डेटा बेस की स्थिति (स्टैट्स) पर चर्चा को कार्य सूची में स्थायी रूप से शामिल करने के निर्देश दिए गए

हैं। वे प्रशिक्षण प्रयोजनों के लिए स्रोत व्यक्तियों, स्थान और आई. टी. टूल्स सहित उपकरणों से संबंधित मुद्दों पर भी चर्चा करेंगे।

प्रत्येक कार्यालय प्रमुख को अपनी उपलब्धियों और अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में किए अभिनव प्रयोगों तथा बेहतरीन पद्धतियों के संबंध में सचिव (राजभाषा विभाग) को अर्धशासकीय पत्र के माध्यम से प्रत्येक माह की 6 तारीख तक संप्रेषित करने के निर्देश भी दिए गए हैं।

इस उद्देश्यार्थ निम्नांकित कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं :

(i) प्रत्येक माह की 2 तारीख में, तीनों क्षेत्रीय कार्यालयों के एक ही नगर में स्थित होने की दशा में, तीनों

कार्यालयों के वरिष्ठतम अधिकारियों की समन्वित बैठक की जाएगी जो चक्रानुक्रम में बारी-बारी से तीनों कार्यालयों में आयोजित होगी। इस बैठक के स्टैंडिंग एजेंडा (नियमित व सामान्य कार्य सूची) में प्रशिक्षार्थियों के नामांकन, डेटाबेस की उपलब्धता, पूर्णकालिक और अंशकालिक कार्यस्थलों की पर्याप्तता, तथा हिंदी भाषा, अनुवाद, टंकण एवं आशुलिपि के प्रशिक्षकों की पर्याप्तता एवं गुणात्मकता जैसी मदें रहेंगी।

(ii) क्षेत्रीय कार्यालयों से मासिक अनुश्रवणार्थ सूचना प्राप्ति हेतु अब पुनर्संचित निर्धारित प्रपत्रों में समन्वय की दिशा में किए गए प्रयासों और उनके परिणामों की भी नियमित समीक्षा की जाएगी।

(iii) समन्वय की शृंखला को शीर्षतम स्तर तक बनाए रखने के लिए संयुक्त सचिव के स्तर पर द्वितीय एवं चतुर्थ त्रैमास्यों में त्रैमासिक समन्वय समीक्षा बैठकें आयोजित होंगी जिसमें समस्त क्षेत्रीय स्तर अधिकारी अथवा कार्यान्वयन, सीएचटीआई और सीटीबी भाग लेंगे। इन्हीं पक्षों पर माह अप्रैल एवं दिसंबर के तृतीय सप्ताह में सचिव राजभाषा की अध्यक्षता में समन्वय बैठकें की जाएंगी।

(ख) क्षेत्र में आयोजित विभिन्न नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) में तीनों क्षेत्रीय कार्यालयों के इंचार्ज अधिकारी भाग लेंगे। इसी कारणवश अन्य शासकीय व्यवस्तता के कारण भाग न ले पाने की स्थिति में अपने से कनिष्ठ अधिकारी, जो सहायक निदेशक स्तर से नीचे का न हो, को इन बैठकों में उपस्थित रहने के लिए नामित किया जाएगा।

(ग) संसदीय राजभाषा समिति द्वारा अब तक उनके प्रतिवेदन के आठ खंडों के आलोक में महामहिम राष्ट्रपति ने समय-समय पर राजभाषा के प्रगामी प्रयोग और प्रचलनार्थ आदेश पारित किए हैं। इन आदेशों के अनुपालन की नराकास की बैठकों में,

कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के निरीक्षणों, तथा तिमाही प्रगति आख्या के प्रपत्रों में वांछित संशोधन कर नियमित व निरंतर समीक्षा की जाए। यह क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों को सौंपा गया मुख्य दायित्व है।

(घ) यह आवश्यक है कि निरीक्षण, तिमाही प्रगति आख्याओं तथा विभागीय/संगठनीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में लिए गए निर्णयों और आप द्वारा नियमान्तर्गत दिए गए निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। इस दिशा में और ध्यान दिया जाए एवं अब निर्धारित प्रपत्र में भी इस संबंध में प्राप्त सफलता का स्पष्ट उल्लेख किया जाए।

(ङ) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय उनके द्वारा प्रश्नगत माहों में निष्पादित गतिविधियों का विवरण संशोधित एवं इस पत्र के साथ संलग्न प्रपत्रों में राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव (श्री डी. के. पाण्डेय) अथवा निदेशक (श्री रमेश बाबू अणयेरी) को प्रति माह की 5 तारीख तक उपलब्ध करवाएंगे।

(च) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के इंचार्ज प्रति माह की 6 तारीख तक अधोहस्ताक्षरी 1 या 2 पृष्ठ का अर्धशासकीय पत्र लिखकर माह की महत्वपूर्ण उपलब्धियों/सफलताओं/अनुकरणीय व्यवस्थाओं/अभिनव प्रयोगों से अवगत करवाएंगे। ऐसा करते हुए वे अपने क्षेत्राधिकार में स्थित समस्त केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों में की गई उत्कृष्ट पहलों को सम्मिलित करते हुए अवगत कराएंगे।

4. समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के इंचार्ज अधिकारियों से यह अपेक्षा है कि प्रस्तर 3 में उल्लिखित निर्देशों का पूरी गंभीरता और सजगता से अनुपालन करेंगे ताकि विभाग और उसके कार्यालय सम्मिलित रूप से उन्हें संविधान और अधिनियम द्वारा सौंपे गए दायित्वों का अपेक्षित अनुपालन कर सकें।

(ग) केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की उपलब्धियां

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की अक्टूबर-दिसंबर, 2010 की तिमाही के दौरान अनुवाद एवं प्रशिक्षण संबंधी महत्वपूर्ण गतिविधियों का विवरण

I. अनुवाद संबंधी गतिविधियां

उक्त अवधि में नियमित स्थापना के अधीन 7,504 मानक पृष्ठ और क्षमता विस्तार योजना के अधीन 1,852 मानक पृष्ठों का अनुवाद किया गया। इस प्रकार कुल मिलाकर 9,356 मानक पृष्ठों का अनुवाद किया गया।

II. प्रशिक्षण संबंधी गतिविधियां

1. त्रैमासिक अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

त्रैमासिक अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (अक्टूबर-दिसंबर, 2010 का 148वां सत्र दिनांक 31-12-2010 को विधिवत संपन्न हुआ। इस अवसर पर ब्यूरो की पूर्व निदेशक, श्रीमती कुसुमवीर ने प्रमाण पत्र वितरित किए और परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए सभी प्रशिक्षार्थियों को बधाई दी और अपने कार्यालयों में जाकर सरल-सहज और बोधगम्य अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया। इस सत्र में यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून के श्री प्रशांत ध्यानी, हिंदी सहायक ने "स्वर्ण पदक" तथा केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, मेरठ के श्री कमल कुमार, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने "रजत पदक" प्राप्त किया। इस सत्र में प्रशिक्षार्थियों को एक दिन की संसद कार्यवाही दिखाने के लिए संसद परिसर ले जाया गया तथा केंद्रीय "हिंदी" संस्थान, आगरा में अध्ययन दौरे पर भी ले जाया गया। इस सत्र में 16 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया।

इसी प्रकार मुंबई केंद्र में 104वां, बेंगलूर केंद्र में 101वां तथा कोलकाता केंद्र में 93वां सत्र संपन्न हुआ जिसमें क्रमशः 06, 05 और 12 प्रशिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

2. 21 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

महानदी कोलफील्ड लिमिटेड, सम्बलपुर, उड़ीसा में दिनांक 8-11-2010 से दिनांक 2-12-2010 तक की अवधि के दौरान 21 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कुल 15 प्रशिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

3. संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

दिनांक 18-10-2010 से 22-10-2010 तक एक कार्यक्रम नेशनल एयरोस्पेस लेबोरेट्री, बेंगलूर में आयोजित किया गया। इसमें 27 प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षित किया गया।

दिनांक 22-11-2010 से 26-11-2010 तक विशाखापट्टणम पोर्ट ट्रस्ट, विशाखापट्टणम, आंध्र प्रदेश में संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 26 प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षित किया गया।

दिनांक 6-12-2010 से 10-12-2010 तक नराकास, भारतीय कपास निगम लिमिटेड, नवी मुंबई में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 29 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया।

4. उच्चस्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

दिनांक 25-10-2010 से 29-10-2010 तक नई दिल्ली में एक उच्चस्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कार्यालयों के 26 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन पर मुख्य अतिथि श्री रजत शर्मा, अध्यक्ष, इंडिया टी. वी. ग्रुप ने अनुवाद कार्य को महत्वपूर्ण बताते हुए अनुवादकों को सहज, सरल अनुवाद के लिए प्रेरित किया और प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

5. पुनश्चर्या अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

दिनांक 6-12-2010 से 10-12-2010 तक नई दिल्ली स्थित ब्यूरो मुख्यालय में पुनश्चर्या अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कार्यालयों के 13 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन पर केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की निदेशक, श्रीमती मोहिनी हिंगोरानी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने प्रशिक्षार्थियों को यह प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने पर बधाई देते हुए सटीक और उत्कृष्ट अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया और अभ्यास पर बल देते हुए उन्हें निरंतर अभ्यास करते रहने की सलाह दी।

(घ) विभिन्न कार्यालयों की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

‘ग’ क्षेत्र

एन एच पी सी लि. कार्यालय कार्यपालक निदेशक (क्षेत्र-III), क्षेत्रीय कार्यालय, ब्लॉक-डी पी, प्लॉट नं. 3, सैक्टर-5, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता-91

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2010-2011 की पहली तिमाही बैठक दिनांक 18-06-2010 को श्री दिग्विजय नाथ, कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस बैठक में श्री डी.के. रे., महाप्रबंधक, लोकताक पावर स्टेशन, मणिपुर, समिति के सदस्यगण एवं सहायक प्रबंधक, व उससे ऊपर के अधिकारियों ने भाग लिया।

इस बैठक के प्रारंभ में श्री दिग्विजय नाथ, कार्यपालक निदेशक व अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने उपस्थित सदस्यों एवं अधिकारियों का स्वागत किया। उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी को राजभाषा बनाए जाने का निर्णय बहुत सोच-समझकर लिया गया है। हमें उसकी महत्ता एवं उपयोगिता को समझने की जरूरत है। जैसे-जैसे वह समझ में आती जाएगी हिंदी उनके दिल में अपना घर बना लेगी और उनमें हिंदी के प्रति रूचि बढ़ने लगेगी। हमारा यह मानना है कि जब तक दिल से हिंदी को नहीं अपनाया जाएगा तब तक हिंदी के प्रयोग व विकास में अपेक्षित गति बाधित होती रहेगी। प्रयोगकर्ता के दिल में हिंदी को बैठाने के लिए हिंदी से संबंधित कार्यक्रम का आयोजन बहुत जरूरी है। हमें चाहिए कि हिंदी के प्रयोग व विकास के लिए कार्य करें और हमारा यह योगदान देश को समर्पित होगा। उसके बाद सदस्य सचिव श्री अजय कुमार बक्सी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने समिति को बैठक की कार्यसूची की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस समिति की चौथी तिमाही बैठक दिनांक 05-03-2010 को आयोजित हुई थी और उस बैठक का कार्यवृत्त सभी सदस्यों को उनकी सूचना एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु दिनांक 17-03-2010

को भिजवा दी गई थी जबकि उस कार्यवृत्त पर किसी विभाग-से कोई सुझाव/विचार प्राप्त नहीं हुए हैं। इसे देखते हुए उस कार्यवृत्त की पुष्टि की गई। तत्पश्चात् पिछली बैठक में ली गई निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई एवं उसकी प्रगति समिति के समक्ष रखी गई। समिति को यह सूचित किया गया कि इस कार्यालय में हिंदी प्रशिक्षण का कार्य पूरा हो गया है। सदस्य सचिव ने बतलाया कि निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार वित्तीय वर्ष 2009-2010 में इस कार्यालय में द्विमासिक हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और 04 प्रतियोगिताओं का परिणाम घोषित किया जा चुका है। इन प्रतियोगिता के विजेताओं को उचित अवसर पर पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। दिनांक 31-12-2010 को समाप्त तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा के दौरान कार्यपालक निदेशक महोदय ने विभागों से प्राप्त तिमाही रिपोर्ट को देखा और उसकी समीक्षा करते हुए संबंधित विभागाध्यक्ष को आवश्यक निर्देश दिए।

**कार्यालय, महाप्रबंधक दूर संचार जिला,
(बी. एस. एन. एल.) दूर संचार भवन,
लिंक रोड, कटक-753012**

दिनांक 12-08-2010 को कार्यालय महाप्रबंधक दूर संचार जिला कटक की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2010-2011 के अन्तर्गत द्वितीय बैठक का आयोजन कटक स्थित दूर संचार भवन के प्रथम तल पर बने सम्मेलन कक्ष में किया गया।

बैठक की अध्यक्षता महाप्रबंधक श्री उदय शंकर पंडा ने की तथा संचालन सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन एवं मानव संसाधन) श्री नीलमणि पाणि ने की। बैठक में गत तिमाही के दौरान कार्यालय में हुई राजभाषा विषयक प्रगति पर मदवार चर्चा हुई और उस पर आगे और ठोस काम करने तथा लक्ष्य सिद्धि के लिए सघन प्रयास किए जाने पर बल देने के साथ तिमाही प्रगति रिपोर्ट पारित कर दी गई।

स्वागत करते हुए कहा कि कुछ ही महीनों में इस समिति को तीस वर्ष पूरे हो जाएंगे और हमें इस बात का गर्व है कि आप सभी के सहयोग से राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमने बहुत प्रयास किए हैं। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारी हिंदी भाषा विश्व में 65 करोड़ से अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली तीसरी बड़ी भाषा है। हिंदी भारतीयता का पर्याय है एवं केंद्रीय कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों एवं अधिकारियों से राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए मजबूत इच्छा शक्ति के साथ कार्य करने पर बल दिया।

डॉ. बी. एन. पाण्डेय ने अपने उद्बोधन का प्रारम्भ करते हुए कहा कि अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया महाद्वीपों में स्थित सभी देशों की कुल जनसंख्या से भी अधिक हम हिंदी भाषी हैं लेकिन कमजोर इच्छाशक्ति के कारण ही राजकाज में हिंदी के प्रयोग में कमी नजर आती है। उन्होंने कहा कि धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी होने वाले दस्तावेजों को द्विभाषी जारी करना चाहिए एवं इसके लिए राजभाषा विभाग द्वारा जारी होने वाले निदेशों की सभी को अनुपालना करनी चाहिए। कुछ सदस्य कार्यालयों द्वारा इस पर यह कहा गया कि जयपुर शहर 'क' क्षेत्र में है। इसलिए धारा 3 (3) में जारी होने वाले दस्तावेजों के लिए द्विभाषी होने के साथ केवल हिंदी में भी जारी करने का प्रावधान किया जाना चाहिए। श्री पाण्डेय ने इस पर कहा कि यदि नराकांस इस संबंध में प्रस्ताव पारित करती है तो वे अपने विभाग को इस संबंध में लिखेंगे। तत्काल ही सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा अपने हाथ उठाकर यह प्रस्ताव पारित किया गया कि 'क' क्षेत्र स्थित केंद्रीय कार्यालयों द्वारा धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी दस्तावेजों के लिए द्विभाषी या केवल हिंदी में जारी किए जाने का प्रावधान किया जाना चाहिए।

कार्यालय, आयुक्त केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, होशंगाबाद रोड, भोपाल

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्त, भोपाल की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 30-06-2010 को समाप्त तिमाही की बैठक आयुक्त महोदय अरविन्द सिंह की अध्यक्षता में दिनांक 5-7-2010 को अपराह्न में 5.00 बजे आयुक्तालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई।

अध्यक्ष महोदय एवं समिति के सदस्यों के समक्ष पिछली तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का कार्यवृत्त पुष्टि हेतु प्रस्तुत किया गया, समिति के सदस्यों द्वारा जिसकी पुष्टि की गयी।

सभी शाखा प्रभारियों द्वारा 1-4-2010 से 30-6-2010 तक की अवधि की राजभाषा हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिस पर अध्यक्ष महोदय संतोष व्यक्त करते हुए शाखा प्रभारियों को निर्देश दिए वे अपनी-अपनी शाखाओं में शतप्रतिशत कार्य राजभाषा हिंदी का लक्ष्य बनाए रखें।

शाखा प्रभारियों द्वारा हिंदी में पत्राचार बढ़ाने हेतु वर्ष 2010-2011 हेतु में अपनी-अपनी शाखा में किए जा रहे प्रयासों व उनकी सफलता पर महोदय से अध्यक्ष चर्चा की जिस पर अध्यक्ष महोदय द्वारा संतोष व्यक्त किया गया।

आयुक्तालय में शतप्रतिशत कार्य राजभाषा हिंदी में करने हेतु अधिकारियों व कर्मचारियों से सुझाव आमंत्रित किए गए जिससे आयुक्तालय में सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के शतप्रतिशत वार्षिक लक्ष्य को सहजता से समय पर पूरा किया जा सके।

अध्यक्ष महोदय द्वारा वर्ष 2011 के लिये आयुक्तालय की राजभाषा पत्रिका प्रयास के प्रकाशन हेतु हिंदी शाखा को कार्यवाही करने के निर्देश प्रदान किए गए।

**भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय
जीवन प्रकाश, पो. बा. नं. 1155, बी,
12/120, गौरीगंज, भेलूपुर, वाराणसी**

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष के जून 2010-11 के जून 2010 को समाप्त होने वाली प्रथम तिमाही की बैठक वरिष्ठ मण्डल प्रबंधक की अध्यक्षता में दिनांक 25-06-2010 को अपराह्न 4.00 बजे आयोजित की गई।

मण्डल कार्यालय में बने जांच बिंदु के आँकड़ों की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए भाषा सहायक ने बताया कि दिनांक 31-03-2010 को समाप्त तिमाही में मण्डल एवं शाखाओं हिंदी में पत्राचार शतप्रतिशत रहा। इस पर वरिष्ठ मण्डल प्रबंधक महोदय ने शतप्रतिशत पत्राचार करने वाले शाखाओं

एवं विभागों के विभागाध्यक्षों को बधाई दी और भविष्य में भी शतप्रतिशत पत्राचार के लिए प्रोत्साहित किया।

तत्पश्चात् राजभाषा सहायक ने उच्च कार्यालयों से प्राप्त विभिन्न पत्रों एवं परिपत्रों के बारे में बताया। इस तारतम्य में भाषा सहायक ने भारत सरकार द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2010-2011 के लिए निर्धारित लक्ष्यों में से निगम के कार्यालयों में लागू कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्यों के बारे में राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार प्रत्येक कार्यालय में प्रशासनिक प्रधान के उत्तरदायित्व के बारे में बताया। उनका यह दायित्व है कि वे अपने विभागों/कार्यालयों द्वारा अब तक की गई राजभाषा हिंदी के

प्रयोग की गतिशीलता बनाए रखें। विपणन प्रबंधक महोदय द्वारा जारी दिनांक 01-06-2010 के परिपत्र का वितरण किया गया। परिपत्र में उल्लिखित सातों जाँच बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा हुई एवं इसके अक्षरशः अनुपालन पर जोर दिया गया। इसके अतिरिक्त भाषा सहायक ने राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की जानकारी हेतु सभी विभागाध्यक्षों द्वारा शाखा के दौरे पर जाने वाली प्रश्नावली को भरकर न देने के संबंध में बात की जिस पर वरिष्ठ मंडल प्रबंधक महोदय ने उपस्थित सदस्यों से इस विषय में स्पष्टीकरण जानना चाहा तो उपस्थित सदस्यों ने कहा कि अब इसे किया जायेगा।

(ड) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

‘ग’ क्षेत्र

हिन्दुस्तान पेपर कारपोरेशन लि. काछाड़ पेपर
मिल, पो. पंचग्राम,
(हेलकांडी-जिला) असम-788802

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलचर के अध्यक्ष एवं हिन्दुस्तान पेपर कारपोरेशन लि., काछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम के मुख्य अधिशासी श्री मोहन झा ने दिनांक 06 जुलाई 2010 को आयोजित समिति की 41वीं बैठक के अवसर पर कहा कि “इस समिति ने शिलचर शहर में राजभाषा के कार्यान्वयन के संबंध में अनेक कदम उठाए हैं और राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सफलता पाई है। मैं महसूस करता हूँ कि कई महत्वपूर्ण काम रह गए हैं। मगर इसके लिए तो आप सभी को भी प्रयास करना होगा। इस दिशा में आप कुछ छोटे-छोटे प्रयासों में निरंतरता ला ही सकते हैं। जैसे संस्थानों के नाम के बोर्ड, पदाधिकारियों के नेमप्लेट, पत्र-(लेटर हेड), संस्थान के मुहर, राष्ट्रीय स्तर के मनाए जाने वाले त्योहार आदि के बैनर हिंदी में अथवा द्विभाषी रूप में बनवा सकते हैं और यह स्थायी किस्म के होते हैं। राजभाषा विभाग की राजभाषा नीति प्रेरणा और प्रोत्साहन की है। और इसलिए राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए कहीं भी दबाव की बात नहीं रखी जाती। राजभाषा हिंदी संपर्क की भाषा बन चुकी है। और इसलिए हम इसे अपनाकर विशाल समाज से जुड़ते हैं।”

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राजभाषा विभाग, गुवाहाटी के उप निदेशक श्री अजय कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि “भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु यह जरूरी है कि कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक नियमित रूप से की जाए। तिमाही प्रगति रिपोर्ट समय पर तैयार कर सभी संबंधितों अर्थात् राजभाषा विभाग गुवाहाटी तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय और अपने मुख्यालय को भेजी जाए। इसके साथ ही कंप्यूटर का मानकीकरण कर तथा उसमें एकरूपता लाने के उद्देश्य से सॉफ्टवेयर “यूनीकोड” को सभी सरकारी कार्यालयों में व्यवहार में लाने की सलाह दी गई है। रहा सवाल शिलचर में हिंदी शिक्षण हेतु प्रशिक्षण केन्द्र खुलवाने की, तो इसके लिए सरकारी कार्यालयों को हिंदी सीखने के इच्छुक प्रतिभागियों की संख्या सुनिश्चित कर बतानी होगी।”

सिंडीकेट बैंक राजभाषा प्रभाग, प्रधान
कार्यालय, मणिपाल-576104

बैंक, बैंगलूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का संयोजक बैंक हैं। उक्त समिति की 50वीं बैठक अर्थात् स्वर्ण जयंती बैठक दिनांक 28-07-2010 को संपन्न हुई जिसमें सिंडिकेट बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री बसंत सेठ ने मुख्य अतिथि के रूप में सभा को संबोधित किया। सम्मानित अतिथि के रूप में श्री ए. के. भट्टाचार्य, महा प्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, बेंगलूर को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर वर्ष पर्यंत चलने वाली हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सिंडिकेट बैंक के महा प्रबंधक श्रीयुत श्रीधर जास ने की। साथ ही, नराकास: बेंगलूर की छमाही हिंदी पत्रिका 'प्रयास' के नवीनतम अंक का विमोचन भी किया गया।

**स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया, लि., रॉ
मेटेरियल्स, डिवीजन, इण्डस्ट्री हाउस, 10
कैमेक स्ट्रीट, कोलकाता-700017**

सेल, आर.एम.डी. कोलकाता कार्यालय के समन्वय में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक दिनांक 24 अगस्त, 2010 को "केंद्रीय कॉच व सिरामिक अनुसंधान.संस्थान" कोलकाता के "मेघनाद साहा प्रेक्षागृह" में संपन्न हुई। सेल, आर.एम.डी. के कार्यपालक निदेशक एवं नराकास (उपक्रम) कोलकाता के अध्यक्ष श्री प्रकाश चन्द्र टिकड़ेवाल ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री टिकड़ेवाल ने कहा कि मेरी ऐसी मान्यता है कि सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए आम बोचचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। हिंदी में काम-काज करने वाले कर्मचारी और अधिकारी कार्यालीन भाषा में सरल शब्दों का प्रयोग करके उसे सुगम बनाएँ। सरल भाषा तभी होगी जब कर्मचारी मौलिक रूप में हिंदी में सोच कर ही मसौदा तैयार करें। सेल, आर.एम.डी. वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) समिति के सदस्य सचिव श्री कैलाश नाथ यादव ने बैठक में उपस्थित सभी अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं समिति की गतिविधियों के बारे में रिपोर्ट पेश की।

इस बैठक में "मुख्य अतिथि" के रूप में उपस्थित कोल इण्डिया लि. के निदेशक (तकनीकी) श्री एन. सी. झा तथा संमार्ग प्रा. लि. के प्रधान संपादक श्री विवेक गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कोल इण्डिया लि. की ओर से स्वागत संबोधन श्री ए. के. वर्मा, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.) ने प्रस्तुत किया।

इसमें कोलकाता महानगर में स्थित भारत सरकार, राजभाषा विभाग के सभी कार्यालयों के अधिकारियों तथा सार्वजनिक उपक्रमों के विभिन्न कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों एवं हिंदी कक्ष के अधिकारियों को मिला कर कुल 210 प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक में विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री राकेश कुमार ने की तथा राजभाषा कार्यान्वयन को और प्रभावी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय किए गए। बैठक के दौरान समिति की ओर से वर्ष 2009-2010 के लिए "राजभाषा शील्ड" पुरस्कार भी वितरित किए गए।

'ख' क्षेत्र

**मंडल रेल प्रबंधक, पश्चिम रेलवे, मंडल
कार्यालय, कोठी कंपाउंड, राजकोट-360001**

जून 2010 को समाप्त छ:माही राजभाषा कार्य की समीक्षा हेतु राजकोट नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन दिनांक 11-08-2010 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में किया गया। बैठक की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री वेदपाल द्वारा की गई। 53 सदस्य वाली इस नराकास की बैठक में अधिकांश प्रमुख कार्यालयों के कार्यालय प्रधान उपस्थित हुए जबकि कई कार्यालयों के प्रतिनिधि राजभाषा अधिकारी/प्रभारी आदि उपस्थित हुए।

राजभाषा कार्य की समीक्षा करते हुए अध्यक्ष जी ने कहा कि भारत सरकार द्वारा राजभाषा कार्य हेतु जो लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं उन्हें हमें आपसी तालमेल बनाए रखते हुए प्राप्त करना है। बैठक में उपस्थित लगभग एक तिहाई सदस्य कार्यालयों द्वारा यह लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है जबकि इतने ही कार्यालय लक्ष्य के काफी निकट हैं जो आशा है अगली छ:माही तक पूरा कर लेंगे। शेष कार्यालयों को उन्होंने एक कार्य योजना बनाने का सुझाव दिया और स्पष्ट किया कि लक्ष्य प्राप्ति ही मात्र एक लक्ष्य होना चाहिए। आपने उन कार्यालयों को जिनके द्वारा पत्रिका या सहायक सामग्री प्रकाशित की जाती है, से भी अनुरोध किया कि वे इन्हें दूसरे कार्यालयों को भी दें जिससे आपके अनुभवों का लाभ अन्य कार्यालयों को भी प्राप्त हो सके।

चित्र समाचार

विशाखापट्टणम में दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन के दौरान राजभाषा विभाग द्वारा लगाई गई पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन जी ।



नई दिल्ली में आयोजित केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 35वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए सुश्री वीणा उपाध्याय, सचिव, राजभाषा विभाग ।

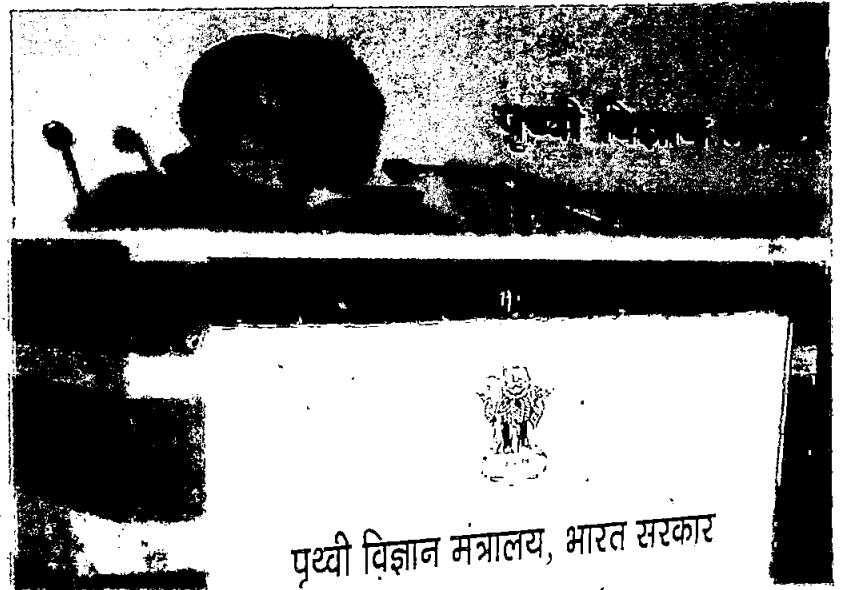
विशाखापट्टणम में दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं विचार मंथन के दौरान राजभाषा विभाग द्वारा लगाई गई पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए सुश्री वीणा उपाध्याय सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ।





पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, नई दिल्ली में आयोजित 19वीं हिंदी संगोष्ठी में “जलवायु परिवर्तन और समाज” नामक पुस्तक का लोकार्पण करते हुए सुश्री वीणा उपाध्याय, सचिव, राजभाषा विभाग, डॉ. शैलेश नायक, श्री प्रवीर कुमार बासु ।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, नई दिल्ली
में आयोजित "हिंदी संगोष्ठी" में
आशीर्वचन देते हुए सुश्री वीणा
उपाध्याय, सचिव, राजभाषा
विभाग ।



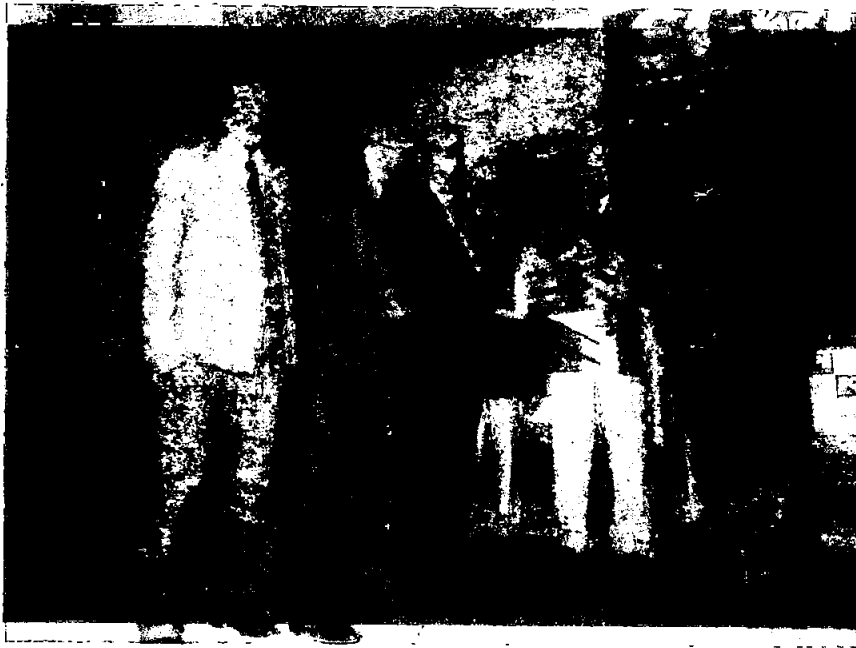
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार



नराकास दिल्ली (उपक्रम) की
32वीं बैठक एवं पुरस्कार वितरण
समारोह में सुश्री वीणा उपाध्याय,
सचिव, राजभाषा विभाग, भाषण
देते हुए ।

नराकास दिल्ली (उपक्रम) की
32वीं बैठक एवं पुरस्कार वितरण
समारोह में सुश्री पूर्णिमा चतुर्वेदी
कार्यपालक राष्ट्रीय तापीय ऊर्जा
निगम (एन टी पी सी) को
सुश्री वीणा उपाध्याय, सचिव,
राजभाषा पुरस्कार प्रदान करते
हुए ।





नराकास दिल्ली (उपक्रम) की 32वीं बैठक एवं वितरण समारोह में भा. इस्पा. प्राधि. लि. (सेल) के निदेशक (कार्मिक) को प्रथम पुरस्कार प्रदान करते हुए सुश्री वीणा उपाध्याय, सचिव, राजभाषा विभाग तथा अन्य अधिकारीगण।

नराकास दिल्ली (उपक्रम) की 32वीं बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में व्यंग्य चित्रों की पुस्तिका का विमोचन करते हुए सुश्री वीणा उपाध्याय सचिव, राजभाषा विभाग तथा अन्य अधिकारीगण।



भारत संचार निगम लि., चेन्नई टेलीफोन द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह में वार्षिक हिंदी पत्रिका "चेन्नई वाणी" के 14वें अंक का विमोचन करते हुए (दाएं से) मुख्य महाप्रबंधक श्री ए. सुब्रमण्यन तथा अन्य अधिकारीगण।

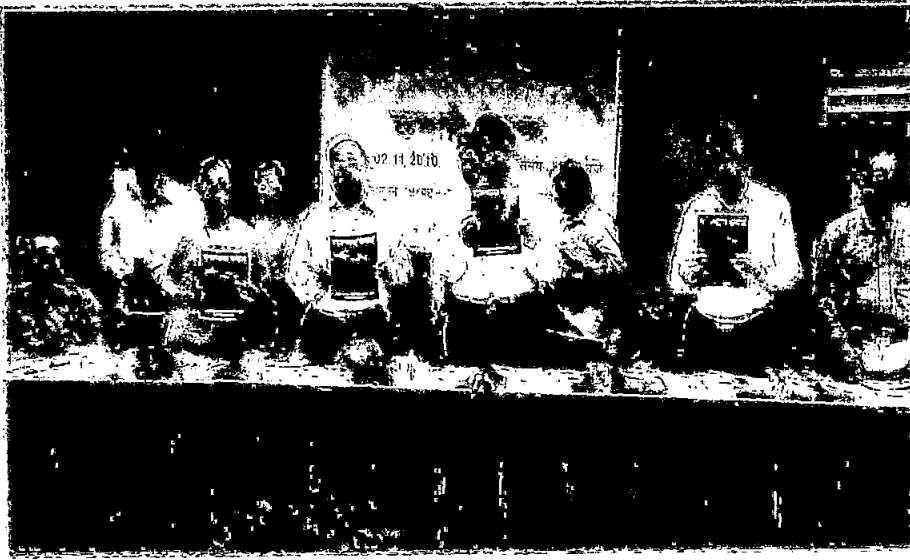
पूर्व मध्य रेल मुख्यालय हांजीपुर द्वारा आयोजित राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह में श्री जी. एस. तिवारी प्रमुई/अपर महाप्रबंधक (दाएं) का स्वागत करते हुए श्री जे. एस. पी. सिंह मुराधि ।



पश्चिम रेलवे राजकोट मंडल द्वारा आयोजित मुंशी प्रेम चंद जयंती के अवसर पर साहित्यिक संगोष्ठी में कुमारी अमी मकवाणा कविता पाठ करते हुए ।

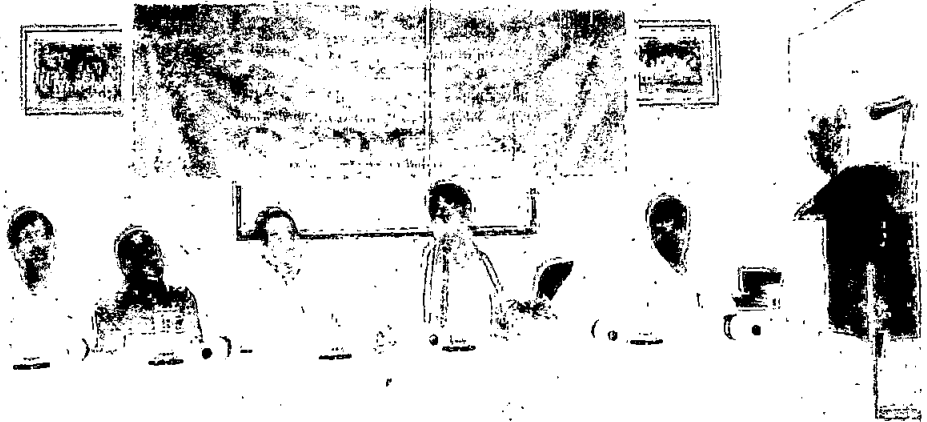
नराकासं बालाघाट की छःमाही बैठक में पत्रिका का विमोचन करते हुए अधिकारीगण ।





नराकास मुंबई की बैठक में 'राजभाषा प्रवाह' पत्रिका का विमोचन करते हुए अधिकारीगण ।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान पटना में हिंदी दिवस समारोह में श्री शत्रुघन प्रसाद, विभागाध्यक्ष (से.नि.) हिंदी विभाग, नालंदा विश्वविद्यालय संबोधित करते हुए मंच पर बीच श्री बीरेन्द्र कुमार यादव, हिंदी सलाहकार समिति तथा अन्य अधिकारीगण ।



नराकास (उपक्रम) मुंबई की बैठक का एक दृश्य ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण जयपुर हवाई अड्डा हिन्दी कार्यशाला

जयपुर हवाई अड्डा में हिंदी कार्यशाला के अवसर पर श्रीमती प्रीती रानी, सहायक प्रबंधक, राजभाषा ।



बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली अंचल में नराकास (बैंक) के तत्वावधान में 'आशु भाषण प्रतियोगिता' आयोजन के अवसर पर श्री अर्जुन पां. धुगल, महाप्रबंधक संबोधित करते हुए ।

आकाशवाणी चेन्नई द्वारा आयोजित "हिंदी पखवाड़ा" का एक दृश्य ।





भारत-तिब्बत सीमा पुलिस
महानिदेशालय द्वारा आयोजित
'हिंदी दिवस' के अवसर पर मुख्य
अतिथि श्री आर. के. भाटिया,
भा.पु.से. महानिदेशक संबोधित
करते हुए ।

उप रेशम कीट प्रजनन केंद्र

केन्द्रीय रेशम बोर्ड भारत सरकार

कोयंबटूर, महाराष्ट्र 431 001

उप रेशम कीट प्रजनन केंद्र, कुन्नूर
में हिंदी कार्यशाला में स्वागत करते
हुए केंद्र के प्रभारी अधिकारी
श्रीमती ई. राजलक्ष्मी, वैज्ञानिक
सी ।



दावोलिम हवाई अड्डा गोवा में
हिंदी कार्यशाला का एक दृश्य ।

उत्तर मध्य रेलवे, इलाहाबाद में
मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति
की बैठक का एक दृश्य ।



कर्मचारी राज्य बीमा निगम
भुवनेश्वर में राजभाषा समारोह का
एक दृश्य ।

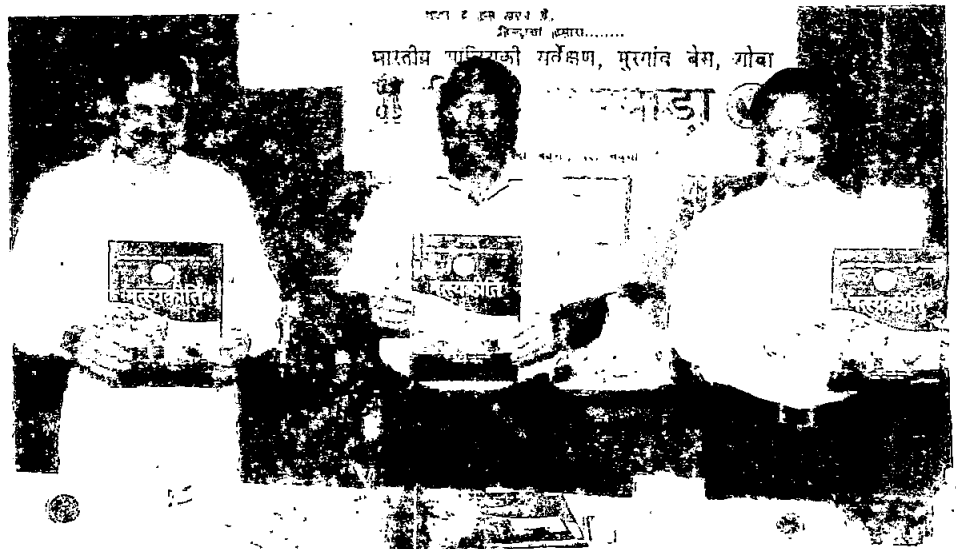
आकाशवाणी एवं दूरदर्शन मुंबई
में हिंदी दिवस समारोह में 'वाणी
दर्शन' पत्रिका का विमोचन करते
हुए अधिकारीगण ।





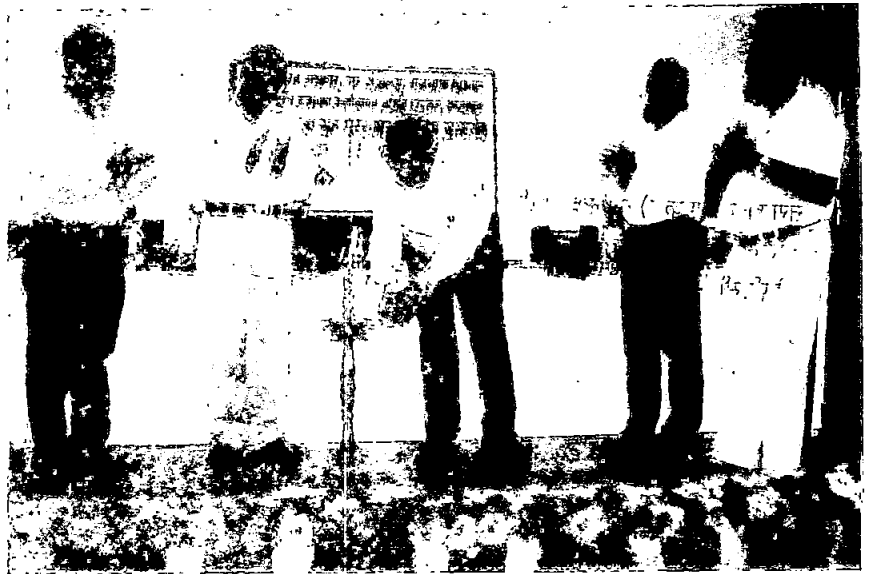
आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पटना द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर गृह-पत्रिका 'प्रसारण' के सातवें अंक का विमोचन करते हुए अधिकारीगण ।

भारतीय मात्स्यकी सर्वेक्षण, मुरगांव बेस गोवा में हिंदी पखवाड़ा के समापन अवसर पर संस्थान की गृह-पत्रिका 'मात्स्यकीर्ति' का विमोचन करते हुए अतिथिगण ।



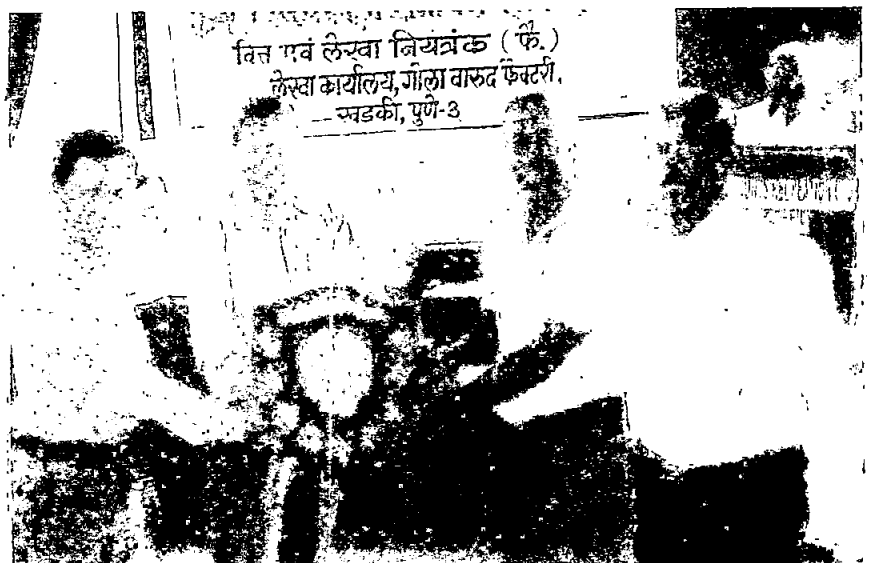
लायन्स इंटरनेशनल भंडारा द्वारा स्मृति चिन्ह ग्रहण करते हुए डॉ. एस. के. माथुर, वैज्ञानिक-डी ।

नराकास (उपक्रम) कोलकाता की छःमाही बैठक का उद्घाटन करते हुए कार्यपालक निदेशक आर. एम. डी. श्री पी. सी टिबडेवाल ।



करर बोर्ड कोची में हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन करते हुए श्री पी.सी. अन्तोनेल वाज़, संयुक्त निदेशक ।

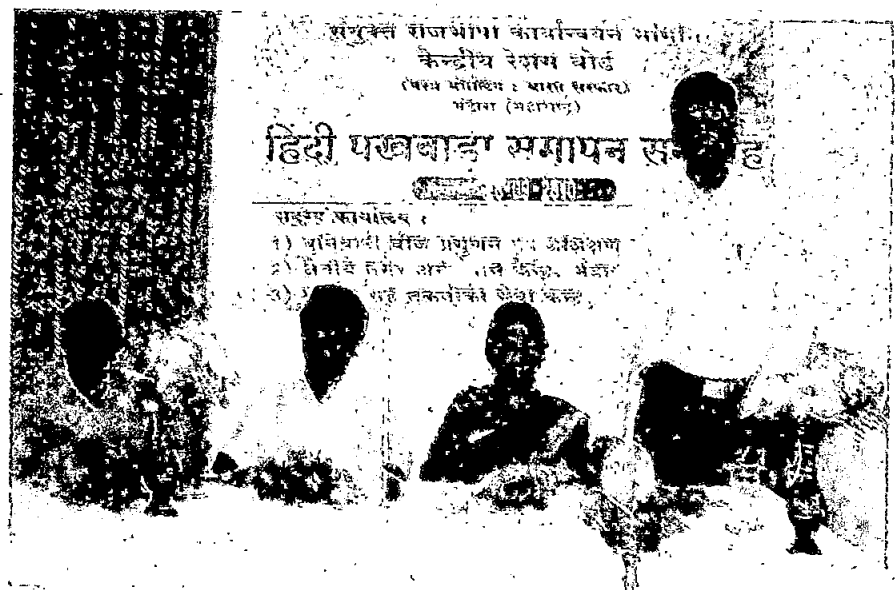
वर्ष 2009-10 के दौरान सर्वाधिक हिंदी पत्राचार करने पर गोला बारूद फैक्टरी खडकी पुणे के श्रम-1, अनुभाग को शील्ड प्रदान करते हुए श्री दिनेश चंद्र सिंह नेगी, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.) ।





बैंक आफ इंडिया, हजारीबाग अंचल, हिंदी दिवस समारोह में संबोधित करते हुए श्री अजय कुमार प्रसाद, प्रबंधक (राजभाषा)।

केंद्रीय रेशम बोर्ड, भंडारा के हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर विचार व्यक्त करते हुए डॉ. एस. के. माथुर, वैज्ञानिक-डी।



भारतीय तेल निगम लिमिटेड (आई ओ सी एल) बोंगाइगांव में आयोजित हिंदी दिवस समारोह का एक दृश्य।

**पश्चिम रेलवे प्रधान कार्यालय, कमरा नं. 170;
पहली मंजिल स्टेशन भवन, चर्चगेट,
मुंबई-400020**

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्रीय सरकारी कार्यालय), मुंबई की दूसरी अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 02-11-2010 को पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय, चर्चगेट, मुंबई के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष नराकास श्री आर. एन. वर्मा, ने की। इस बैठक में मुंबई स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों के लगभग 60 कार्यपालक उपस्थित थे। बैठक में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के संबंध में विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया। अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि कार्यपालक अपने-अपने विभागों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्यों के अनुसार हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करें। अध्यक्ष जी ने कार्यालयीन कार्यों में सरल हिंदी के प्रयोग पर जोर दिया। कंप्यूटर पर हिंदी कार्य को बढ़ाने की आवश्यकता पर सदस्यों का ध्यान भी आकर्षित किया गया। युनिकोड आधारित फॉन्ट में कार्य करने के लिए प्रशिक्षण देने की व्यवस्था करने के लिए कहा गया। अनुवाद कार्य करते समय सरलीकरण पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा गया। पश्चिम रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य यांत्रिक इंजीनियर श्री के. के. अटल ने कहा कि अपने-अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाना हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी बन जाती है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ. मोतीलाल गुप्ता ने छ:माही विवरण की विस्तृत समीक्षा की। लगभग सभी कार्यपालकों ने अपने-अपने विभागों में हो रहे राजभाषा प्रयोग की संक्षिप्त जानकारी अध्यक्ष महोदय को दी। कुछेक ने अपनी कठिनाईयाँ भी समिति के सामने रखीं। बैठक में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गृह पत्रिका 'राजभाषा प्रवाह' के तृतीय अंक का विमोचन किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से प्रारंभ की गई 'शील्ड योजना' के अंतर्गत राजभाषा में अत्कृष्ट कार्य करने वाले एक बड़े कार्यालय (मुख्य अभियंता (प.क्ष.)), आकाशवाणी एवं दूरदर्शन तथा एक छोटे कार्यालय (भारतीय मात्स्की सर्वेक्षण, मुंबई) को 'राजभाषा दक्षता शील्ड' प्रदान

की गई। साथ ही सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए नराकास के तत्वावधान में आयोजित 'राजभाषा प्रश्न मंच' के विजेता कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सात्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

**हिंदुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लि., राजभाषा
अनुभाग, पेट्रोलियम हाउस, 17, जमशेदजी
टाटा रोड, मुंबई-400020**

मुंबई उपक्रम टॉलिक की 45वीं बैठक टॉलिक अध्यक्ष तथा हिंदुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरूण बालकृष्णन की अध्यक्षता में हिंदुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड, पेट्रोलियम हाउस, 17, जमशेदजी टाटा रोड, मुंबई में आयोजित हुई।

श्री अरूण बालकृष्णन ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पुरस्कृत उपक्रमों को बधाई देते हुए कहा कि टॉलिक एक ऐसा मंच है जहाँ परस्पर विचारों का विनिमय होता है। उन्होंने यह भी बोध कराया कि राजभाषा नीति का पालन हमारा संवैधानिक दायित्व तो है ही, साथ ही आपसी संवाद और जनता के साथ व्यवहार में इसको अपनाया जाना राष्ट्रीय हित में नितांत आवश्यक है।

अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्य संगठनों से आपसी सहयोग से संसाधनों के आदान प्रदान को स्वस्थ परंपरा मानते हुए टॉलिक को सार्थक मंच के रूप में रेखांकित किया।

टॉलिक अध्यक्ष के निरंतर मार्गदर्शन की कृतज्ञतास्वरूप सभी सदस्य संगठनों द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।

नई प्रहल की दिशा की ओर अग्रसर होते हुए मुंबई उपक्रम टॉलिक ने अपनी-9 जुलाई, 2010 की 45वीं बैठक में सम्प्रेषण के क्षेत्र में नया आयाम जोड़ा है। उक्त बैठक में अध्यक्ष महोदय द्वारा मुंबई उपक्रम की टॉलिक वेबसाइट का लोकार्पण किया गया, जिसका पता <http://mumbai.tolic.org/> है। 80 सदस्य उपक्रमों के साथ सम्प्रेषण के लिए एक मंच इससे उपलब्ध होगा। टॉलिक की वेबसाइट से न केवल टॉलिक संबंधी अद्यतन जानकारी

मिलेगी, अपितु सदस्य उपक्रमों की राजभाषा संबंधी गतिविधियों की जानकारी भी प्राप्त होगी। साथ ही, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार सदस्य संगठनों की समीक्षा के लिए राजभाषा संबंधित रिपोर्ट प्राप्त करना सुलभ होगा।

उप निदेशक-कार्यान्वयन डॉ. मोतीलाल गुप्ता ने राजभाषा गतिविधियों व कार्यक्रमों के लिए समिति की सराहना की, उन्होंने यह भी आग्रह किया कि इन बैठकों में वरिष्ठतम स्तर के अधिकारियों का प्रतिनिधित्व हो, रिपोर्ट भेजने से पहले स्थिति का अवलोकन करें, होर्डिंग विज्ञापनों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित हो, हिंदी ई-मेल का प्रयोग बढ़े और सॉफ्टवेयरों में हिंदी भाषा की सुविधा सुलभ कराई जाए।

सदस्यों को सूचित किया गया कि बैठकों में लिए निर्णयों पर की गई कार्रवाई की जानकारी समिति सचिवालय को भेजी जाए।

हिंदी शिक्षण योजना के उप निदेशक श्री राजेन्द्र सिंह ने भाषा टंकण व आशुलिपि प्रशिक्षण की महत्ता पर जोर दिया। बैठक में वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम वर्ष 2010-2011 की विभिन्न मंदां व लक्ष्यों पर भी चर्चा हुई और अनुरोध किया गया कि कार्यालयों की तिमाही राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में इन लक्ष्यों की तुलना में उपलब्धि की समीक्षा हो।

मुख्य आयकर आयुक्त, आयकर भवन, ऋषि नगर, लुधियाना

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना की 58वीं बैठक दिनांक 25-08-2010 को सांय 4.00 बजे पंजाब नेशनल बैंक के आंचलिक प्रशिक्षण केन्द्र, नजदीक मंजू सिनेमा, जी. टी. रोड, लुधियाना के सभागार में आयोजित की गई।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व कर रहे श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, अनुसंधान अधिकारी ने सदस्य कार्यालयों को राजभाषा नियम 10(4) के अधीन अधिसूचित किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने नियम 8(4) के अधीन व्यक्तिशः आदेश जारी करना नितांत आवश्यक बतलाया। उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों को अपनी तिमाही रिपोर्ट्स राजभाषा विभाग,

गृह मंत्रालय को भेजी जानी सुनिश्चित करने का आह्वान किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री कुलदीप सिंह, आयकर आयुक्त-II ने कहा राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग अब वर्तमान समय की मांग है। सभी विदेशी कंपनियों और विदेशी चैनलों ने भी यह अनुभव किया है कि यदि उन्हें आम जनता तक पहुँचना है तो हिंदी को अपनाना ही उचित है। अब समय आ रहा है कि हिंदी हमारी रोजी-रोटी के साथ भी जुड़ने लगेगी। हमें संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठकर हिंदी को भारत की संपर्क भाषा के तौर पर स्वीकारना होगा। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हमें एक-जुट होकर कार्य करना होगा तभी हिंदी राजभाषा के तौर पर अपना गौरवमयी स्थान प्राप्त करेगी।

‘क’ क्षेत्र

कार्यालय, मुख्य आयकर आयुक्त, आयकर भवन, 38ए महात्मा गांधी मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद-211001

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इलाहाबाद की वर्ष 2010-2011 की प्रथम बैठक दिनांक 26-08-2010 को अपराह्न 3.30 बजे माननीय आयकर आयुक्त, श्री गिरीश नारायण पाण्डे की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री शैलेश कुमार सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि राजभाषा हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक है तथा हमारी संस्कृति की परिचायक है। बैठक में विभागाध्यक्षों/प्रशासनिक प्रधानों की उपस्थिति की अनिवार्यता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि कार्यालय प्रमुख रुचि लें तो राजभाषा के कार्य को अपेक्षित गति मिलती है तथा अधीनस्थ कर्मचारियों को भी राजभाषा में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। 75% से अधिक पत्राचार वाले कार्यालयों की सराहना की और शत प्रतिशत के लक्ष्य को प्राप्त करने वाले कार्यालयों को बधाई दी। चर्चा के दौरान सदस्य कार्यालय द्वारा प्रश्न उठाया गया कि कई कार्यालयों में हिंदी के पद नहीं हैं इस कारण उनके यहां राजभाषा संबंधी कार्य पिछड़ा है। इसके प्रत्युत्तर में श्री सिंह ने समिति को इस बात से

अवगत कराया कि 'क' क्षेत्र के कार्यालयों में 80% से अधिक कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान है। अतः इन कार्यालयों में राजभाषा नियम-8(4) के तहत व्यक्तिशः आदेश जारी किए जाने चाहिए।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में माननीय आयकर आयुक्त, श्री गिरीश नारायण पान्डे ने कहा कि जिस उत्साह, लगन और पवित्र भावना के साथ आप सब यहां एकत्र होते हैं वह अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता, यही हमारी गंगा-जमनी तहजीब की पहचान है, आज भी नराकास की गंगा अविरल बह रही है इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि राजभाषा का प्रचार-प्रसार हम वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सहजता से संभव है यदि इस कार्य में हम थोड़ी भी रुचि दिखाएंगे तो हमारे अधीनस्थ कर्मचारी स्वयमेव इसकी ओर प्रेरित होंगे तथा राजभाषा के कार्य को आगे बढ़ाएंगे।

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा ज-324002

मंडल रेल प्रबंधक श्री मधुकर मेश्राम जी की अध्यक्षता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कोटा की 30 जून 2010 को समाप्त अवधि की छःमाही बैठक दिनांक 05-10-2010 को 11.00 बजे मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई। इस बैठक में कोटा नगर स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय, राष्ट्रीयकृत बैंक एवं निगम/उपक्रमों के कुल 58 सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों ने भाग लिया। बैठक के दौरान सभी सदस्य कार्यालयों से प्राप्त 30-06-2010 को समाप्त अवधि की छःमाही प्रगति की समीक्षा की गई। समीक्षा के दौरान जिन कार्यालयों में निर्धारित मर्दों में लक्ष्यानुसार प्रगति कर ली गई है उनके कार्य की सराहना करते हुए अन्य कार्यालय जो अभी लक्ष्य से पीछे हैं, उन्हें भी लक्ष्यानुसार प्रगति करने के निर्देश अध्यक्ष महोदय द्वारा दिए गए। इस अवसर पर सदस्य कार्यालय नेशनल इश्योरेन्स कं. लि. कोटा के सौजन्य से हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सातवना स्थान प्राप्त करने वाले एवं हिंदी में सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों को नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र तथा उत्कृष्ट कार्य

करने वाले कार्यालयों को राजभाषा दक्षता शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया।

बैठक के दौरान 58 सदस्य कार्यालयों से प्राप्त छःमाही प्रगति रपट की समीक्षा एवं संचालन सदस्य सचिव एवं राजभाषा अधिकारी श्री महेश चन्द्र ने किया।

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास-455001

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 45वीं बैठक दिनांक 28-07-2010 को अपराह्न 3.00 बजे बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के सभाकक्ष में बैंक नोट मुद्रणालय, के उपमहाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष श्री एन.सी. बैलप्पा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री बैलप्पा जी ने कहा—“नराकास देवास की पैतालीसवीं और इस साल की पहली बैठक में आप सभी का हार्दिक स्वागत है। चूंकि यह हमारी इस साल की पहली बैठक है, इसलिए इसमें हम 2010 के वार्षिक कार्यक्रम पर चर्चा करेंगे। इस बार भी राजभाषा विभाग ने वही लक्ष्य रखे हैं जो कि पिछले साल थे। वार्षिक कार्यक्रम की एक-एक प्रतियां आप सभी को प्रदान की गई हैं, कृपया उसे अपने-अपने कार्यालयों में परिचालित कर कर्मचारियों को लक्ष्य के अनुरूप कार्य का अनुरोध करें। वैसे हमारी समिति का कार्य हमेशा से ही अच्छा रहा है। यही कारण है कि मध्य क्षेत्र की 55 से अधिक समितियों में जिनमें कई बड़ी समितियां भी शामिल हैं उनसे प्रतिस्पर्धा लेते हुए हमारी समिति को हर साल पुरस्कार प्राप्त होते आए हैं। इस बार भी हमें मध्य क्षेत्र का दूसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्यों से राजभाषा नीति के गंभीरता पूर्वक अनुपालन हेतु अनुरोध किया तथा वार्षिक कार्यक्रम की प्रति सभी सदस्यों को उपलब्ध कराते हुए पुनः इस तथ्य पर जोर दिया गया कि कार्यालय के प्रभारी अधिकारी अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों की बैठक में राजभाषा प्रगति को कार्यसूची की स्थायी मद बनाकर उस पर सतत चर्चा करते रहें, इससे कार्यालयों में राजभाषा के प्रति सार्थक जागरूकता विकसित करने में मदद मिलेगी। विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के बैठक संबंधी सूचना नराकास तथा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल को भी दी जानी चाहिए।

पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र भवन, द्वितीय तल, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110008

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 32वीं छमाही बैठक श्री विनय कुमार खन्ना, अध्यक्ष, दिल्ली बैंक नराकास एवं फील्ड महाप्रबंधक (दिल्ली), पंजाब नेशनल बैंक, की अध्यक्षता में दिनांक 20-07-2010 को पंजाब नेशनल बैंक के केंद्रीय स्टाफ कालेज, सिविल लाइन्स, दिल्ली के सभाकक्ष में आयोजित की गई। काम करने में संकोच न करें। उन्होंने कई देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि इन देशों में सभी कार्य उनकी राजभाषा में होता है, अतः हमें भी चाहिए कि हम भी अपने सभी कार्य अपनी राजभाषा में करें।

श्री विनय कुमार खन्ना ने अध्यक्षीय संबोधन दिया। अपने संबोधन में उन्होंने सभी से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने का आह्वान किया। श्री खन्ना ने कहा कि हिंदी को जो स्थान प्राप्त होना चाहिए, यह अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है, इसलिये हम सभी को सम्मिलित प्रयास करने हैं ताकि हम अपने देश की राजभाषा को अपेक्षित स्थान दिला सकें। उन्होंने आंकड़ों के रख-रखाव, इसकी सत्यता पर बल दिया। उन्होंने बल देकर कहा कि हम अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें, इसे अपने प्रत्येक कार्य से जोड़ें, हिंदी में बात करने, हिंदी में ही सोचें हिंदी में काम करें।

मुख्य अतिथि, श्री श्री डी. के. पांडे, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने संबोधन में कहा कि भारत सरकार की नीति के अनुसार राजभाषा का कार्य सद्भावना, प्रोत्साहन एवं प्रेरणा से किया जाना अपेक्षित है। उन्होंने कहा कि बैठक से पूर्व पीएनबी के केंद्रीय स्टाफ कॉलेज के प्रधानाचार्य ने उन्हें अपने संस्थान में हिंदी के प्रयोग के बारे में जो जानकारी दी है उससे वे अत्यन्त प्रभावित हुए हैं। उन्होंने अपने संबोधन में आगे कहा कि हमारे देश में हिंदी संपर्क भाषा/राजभाषा के रूप में विकसित हुई और आज इसने अपना अच्छा स्थान बना लिया है। बैंको एवं अन्य वित्तीय संस्थाओं को अपना व्यवसाय बढ़ाने के लिए अपने ग्राहकों के साथ हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने सदस्यों का

आह्वान किया कि वे कंप्यूटर पर किए जाने वाले समस्त कार्यों को हिंदी में करें। उन्होंने बताया कि कंप्यूटर पर हिंदी में सभी प्रकार के कार्य किए जा सकते हैं। श्री पांडे ने सदस्य कार्यालयों की प्रगति रिपोर्टों के बारे में कहा कि सभी कार्यालयों ने काफी अच्छा कार्य किया है। उन्होंने आगे कहा कि सदस्य कार्यालयों ने कई मर्दों में शत-प्रतिशत उपलब्धि प्राप्त कर ली है। जो अच्छा संकेत है। उन्होंने इस उपलब्धि को बनाए रखने को कहा। श्री पांडे ने मुख्य धारा के स्टाफ सदस्यों को हिंदी कार्यशालाओं/सेमीनारों/गोष्ठियों आदि के माध्यम से हिंदी से जोड़ने को कहा। उन्होंने हिंदी में काम करते समय सरल, सुगम एवं प्रचलित हिंदी शब्दों के प्रयोग पर बल दिया।

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र, धर्मपुरा-1, जगदलपुर-494005

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जगदलपुर का वर्ष 2010-2011 की प्रथम बैठक दिनांक 16-07-2010 को केंद्रीय विद्यालय, हाटकचोरा, जगदलपुर, बस्तर, छत्तीसगढ़ के तत्वाधान में श्रीमती ग्लोरिया मिंज, प्राचार्य के मुख्य आतिथ्य में, डॉ. आर. पण्डा, अध्यक्ष, न. रा. का. स. की अध्यक्षता में एवं सचिव, श्री ए. के. श्रीवास्तव, की उपस्थिति में सभा कक्ष, केंद्रीय विद्यालय, जगदलपुर में सम्पन्न हुई।

उपरोक्त बैठक में न. रा. का. स., जगदलपुर के अध्यक्ष, डॉ. आर. पण्डा, के साथ 18 कार्यालय प्रमुख एवं प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस समिति के अन्तर्गत जगदलपुर के सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों, बैंकों, जीवन बीमा निगमों एवं रेलवे आदि के 43 कार्यालय आते हैं।

प्राचार्या महोदया ने बैठक में उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुख/प्रतिनिधि सदस्यों का आत्मीय स्वागत किया है और साथ ही साथ केंद्रीय विद्यालय को बैठक कि मेजबानी मिलने पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन करने का अवसर मिलने से केंद्रीय विद्यालय के लिए गौरव बढ़ाने वाली बात है।

अध्यक्ष, डॉ. आर. पण्डा द्वारा बैठक का संचालन करते हुए उन्होंने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि 16-07-2010

की बैठक न. रा. का. स., जगदलपुर की 28वीं बैठक है और विगत 10 वर्षों से इसका संचालन कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय ने तिमाही प्रगति रिपोर्ट भेजने वाले कार्यालयों द्वारा शत-प्रतिशत राजभाषा हिंदी में कार्य करने पर बधाई देते हुए उन कार्यालयों के नाम का उल्लेख करते हुए उत्साहवर्धन किया। भारत संचार निगम, जगदलपुर द्वारा "बस्तर हिलोर" नामक पत्रिका के प्रकाशन पर बधाई दी और इसे हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना। आगे चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में कम्प्यूटर के प्रचलन से हिंदी के प्रयोगों में आसानी हुई और साथ ही साथ प्रगति भी हुई है पर आशा के अनुरूप नहीं। हमें इस दिशा में और कार्य करना पड़ेगा और हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करना होगा।

एन. एच. पी. सी. लि., कार्यालय कार्यपालक निदेशक क्षेत्र-II, बनीखेत, जिला-चम्बा (हि.प्र.)

उलहौजी की प्रथम छःमाही बैठक श्री एस. के. अग्रवाल, कार्यपालक निदेशक, की अध्यक्षता में दिनांक 29-06-2010 को एन. एच. पी. सी. क्षेत्र-II कार्यालय, बनीखेत में आयोजित की गई।

अध्यक्षीय संबोधन में अध्यक्ष, नराकास एवं कार्यपालक निदेशक, एन. एच. पी. सी. क्षेत्र-II श्री एस. के. अग्रवाल, ने कहा नराकास की बैठक वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है। इसके अंतर्गत केंद्र सरकार के कार्यालय आते हैं। उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के दिशा-निर्देशों का अनुपालन करते हुए हमें इस दिशा में प्रेरणा मिलती है कि हम आगे बढ़ें और राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के बारे में अग्रसर होते रहें। उन्होंने आगे कहा कि अधिक से अधिक कार्यालय इस बैठक में आएँ। जो सदस्य कार्यालय इस बैठक में नहीं आ पाए, वे अगली छःमाही बैठक में जरूर आएँ। उन्होंने यह भी कहा कि इसी छःमाही में हिंदी पखवाड़ा शुरू होगा। यह सभी कार्यालयों में मनाया जाता है। अतः आप लोग अपने-अपने यहां अधिकाधिक कार्यक्रम करें।

दिल्ली (उपक्रम)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) दिल्ली की 32वीं बैठक व पुरस्कार वितरण समारोह 28-12-2010 को स्कोप ऑडिटोरियम, लोधी रोड, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस समारोह में श्रीमती बीणा उपाध्याय, सचिव (राजभाषा), भारत सरकार, मुख्य अतिथि के रूप में पधारीं। बैठक की अध्यक्षता एनटीपीसी लिमिटेड के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री अरूप राय चौधरी ने की। बैठक में एनटीपीसी लिमिटेड के निदेशक (मानव संसाधन) श्री एस.पी. सिंह, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री एस. जयशंकर एवं अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री अमर नाथ वर्मा, राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री वी. के. शर्मा तथा सहायक निदेशक श्री सत्यदेव पांडेय उपस्थित थे।

बैठक के आरंभ में नराकास की सदस्य सचिव श्रीमती मधु नौटियाल ने सभी अतिथियों तथा पुरस्कार विजेताओं का अभिनंदन किया। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि नराकास के सभी सदस्य उपक्रम राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों को जाने की दिशा में निरंतर अग्रसर हैं। अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री अमर नाथ वर्मा ने सभी अतिथिगण एवं पुरस्कार विजेताओं का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हमें राजभाषा विभाग के मार्गदर्शन में हिंदी के प्रचार-प्रसार को मौलिक कार्यों से बढ़ावा देने का अवसर मिला है। नराकास मंच से हमारे सदस्य उपक्रम हर वर्ष अंतर निगम हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हैं। इन आयोजनों से भी राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अनुकूल माहौल बना है। हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन से भी सदस्य उपक्रम हिंदी को रचनात्मकता से बढ़ावा दे रहे हैं।

एनटीपीसी के निदेशक (मानव संसाधन) श्री एस.पी. सिंह ने विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि सभी सदस्यों के सहयोग से हम सब राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए पूरी निष्ठा से काम कर रहे हैं। हिंदी को स्वाभिमान से जोड़कर ही हम हिंदी को सही मायनों में प्रतिष्ठित कर सकते हैं। राजभाषा कार्यान्वयन को समुचित महत्व देने के

लिए हमें निरंतर सजग रहना होगा, जिससे कि हम अपने दायित्वों को पूरी निष्ठा से निभा सकें। उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा स्वयं हिंदी में काम करके सभी को हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा देने तथा हिंदी में मूल नोटिंग-ड्राफ्टिंग को बढ़ावा देने हेतु आवश्यक कार्रवाई करने का कहा।

राजभाषा विभाग के उप निदेशक श्री वी. के. शर्मा ने छमाही रिपोर्टों के आधार पर राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा करते हुए कहा कि हिंदी की प्रगति के लिए आवश्यक है कि कार्यालय प्रभारी नराकास बैठकों में अवश्य भाग लें व छमाही प्रगति रिपोर्ट के जो आंकड़े प्रस्तुत किए जाएं वे तथ्यपरक हों। उन्होंने राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करने तथा मूल हिंदी पत्राचार के लक्ष्य को पाने के लिए विशेष प्रयास करने को कहा।

समारोह के अध्यक्ष, एनटीपीसी के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री अरूप रॉय चौधरी ने कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी प्रतियोगिताओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसके माध्यम से कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा उभरती है और कार्यालय में हिंदी का वातावरण भी बनता है। नराकास एक सांझा मंच है जिसमें हम आपस में मिल-जुलकर राजभाषा नीति की अपेक्षाओं को गंभीरता से पूरा करने के लिए प्रभावी नीति तैयार कर सकते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी सदस्य उपक्रम मिलकर कार्यालय के काम-काज में इसी तरह हिंदी को बढ़ावा देते रहेंगे। उन्होंने सभी उपक्रमों से ईआरपी और सैप में हिंदी प्रयोग की दिशा में समुचित कार्रवाई सुनिश्चित करने का अनुरोध किया। सभी विजेताओं को बधाई देते हुए उन्होंने आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी सभी उपक्रम हिंदी को बढ़ावा देने के लिए इसी तरह नई पहल करते रहेंगे।

समारोह की मुख्य अतिथि, राजभाषा विभाग की सचिव श्रीमती वीणा उपाध्याय ने कहा कि दिल्ली स्थित विभिन्न उपक्रमों की यह समिति राजभाषा प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में पूरी सक्रियता से कार्य कर रही है। इन बैठकों में अनेक रचनात्मक कार्यों से भी हिंदी को बढ़ावा देने की

पहल की गई है जिसकी झलक नराकास पत्रिका 'विद्युत् स्वर' में स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने कहा कि ईआरपी कंप्यूटरीकृत सिस्टम में हिंदी प्रयोग की संभावनाओं को साकार करने हेतु पूरी निष्ठा से कार्य करें। सभी उपक्रमों की यह जिम्मेदारी है कि कोई भी नई कंप्यूटरीकृत व्यवस्था हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में साथ-साथ लागू की जाए।

उन्होंने नराकास मंच की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि आज देश में 274 नराकास विद्यमान हैं इनका विस्तार करते हुए इन्हें व्यापक स्वरूप देने की आवश्यकता है। हिंदी हमारी संपर्क भाषा है यह हमें एक सूत्र में जोड़ने वाली कड़ी है। भारतीय संस्कृति के विशिष्ट पक्ष हैं-लोकतांत्रिक मूल्य, अभिव्यक्ति की स्वच्छंदता, विभिन्न वर्गों में समानता, सहिष्णुता, उदारता, करुणा। हिंदी भाषा इसी भारतीय संस्कृति का अलंकार है। हिंदी और इसकी भगिनी भाषाएं नगर और ग्राम को सेतु की तरह जोड़ती हैं। देश में सामाजिक-आर्थिक उत्थान तभी संभव है जब हम हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं को साथ लेकर चलें। हमारे पास क्षेत्रीय भाषाओं का खूबसूरत खजाना है वहीं दूसरी ओर हिंदी का विपुल भंडार है। हमें सौहार्दपूर्ण सहअस्तित्व बनाकर हिंदी को और संपन्न करना है।

उन्होंने एनटीपीसी की सराहना करते हुए कहा कि एनटीपीसी लिमिटेड द्वारा 2004 से नराकास बैठकों का आयोजन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। अब यह कार्य किसी अन्य उपक्रम को स्वेच्छा से अपनाकर राजभाषा के प्रति सम्मान व्यक्त करना चाहिए। बैठक में हिंदी में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक) श्री बंश बहादुर सिंह ने नराकास (उपक्रम) दिल्ली की बैठकों के आयोजन का कार्य करने के लिए उत्साह से अपने उपक्रम का नाम दिया। सचिव महोदय ने उनके प्रस्ताव का स्वागत करते हुए इसके लिए उन्हें बधाई दी तथा अन्य उपक्रमों ने तालियों से इसका स्वागत किया।

बैठक में हिंदी के प्रचार हेतु उत्कृष्ट कार्य निष्पादन, अंतर निगम हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा सफलतापूर्वक आयोजन के लिए आयोजक उपक्रमों को सचिव महोदय द्वारा नराकास शील्ड से सम्मानित किया गया।

(च) कार्यशालाएं

‘ग’ क्षेत्र

दूरदर्शन केंद्र-हैदराबाद

दूरदर्शन केंद्र, हैदराबाद में दिनांक 2 सितम्बर 2010 तथा 3 सितम्बर 2010 को मध्याह्न 3.00 बजे से शाम 5.00 बजे तक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए किया गया। कार्यशाला में 22 कर्मचारियों ने भाग लिया। दिनांक 2 सितम्बर 2010 को मध्याह्न 3.00 बजे कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। इसके वक्ता श्री कमालोद्दिन, प्राध्यापक हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद थे। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दों के प्रयोग के बारे में बताया और उनका लिपियान्तरण भी करवाया।

दिनांक 3 सितम्बर 2010 के वक्ता श्री वेंकटेश्वरलु, प्राध्यापक हिंदी शिक्षण योजना, थे। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को पत्राचार एवं सेवा-पंजियों में प्रविष्टियों के बारे में बताया और कुछ अभ्यास भी करवाया। शाम 5.30 बजे स्वागत भाषण एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन किया गया।

आकाशवाणी, कोलकाता

आकाशवाणी, कोलकाता केंद्र द्वारा दिनांक 17-08-2010 को दोपहर 2.15 से 3.15 तक तथा 3.15 से 4.15 तक दो सत्र में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन केंद्र निदेशक महोदय ने किया। उन्होंने कहा कि हिंदी सहज भाषा है। इसका प्रयोग काम-काज में किया जाना चाहिए। उन्होंने राजभाषा हिंदी का महत्व भी प्रतिपादित किया।

केंद्र के हिंदी अधिकारी श्री उत्तम चन्द साह ने राजभाषा नियम, अधिनियम, हिंदी का महत्व विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी का प्रयोग जरूरी है। उन्होंने नियम 5, राजभाषा अधिनियम 1963 की

धारा 3(3) का अनुपालन, हिंदी कार्यशाला, हिंदी पखवाड़ा का आयोजन आदि विषय पर व्याख्यान दिया और नेमी टिप्पणियों पर चर्चा की।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में तकनीकी शब्दावली, आवेदन-पत्र आदि विषय पर हिंदी अनुवादक श्रीमती शिखा भट्टाचार्य ने जानकारी दी। उन्होंने कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले तकनीकी शब्दों के बारे में बताया। उन्होंने स्थानांतरण तथा छुट्टी रद्द करवाने संबंधी आवेदन-पत्रों पर बताया तथा प्रशिक्षणार्थियों से अभ्यास भी करवाया।

उप रेशम कीट प्रजनन केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, कुनूर

दिनांक 23-07-2010 को केंद्रीय रेशम बोर्ड, कुनूर में एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षक के रूप में श्री लुईस एम खाखा, हिंदी अधिकारी ने कार्यालयीन हिंदी शब्दों और वाक्यांश का अनुवाद, वाक्य विन्यास आदि पर गहन व्याख्यान दिया तथा हिंदी वर्तनी में मुख्य रूप से होने वाली अशुद्धियों पर चर्चा करके उनके शुद्ध रूप के नियम बताए। श्री ए.पी. भट्ट, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने सामान्य हिंदी व्याकरण की विस्तृत जानकारी दी। डॉ. बालकृष्णन, उप निदेशक ने राजभाषा नीति पर चर्चा की।

डॉ. शिवानी वर्मन तथा डॉ. प्रणव भूधन, चिकित्सा अधिकारी ने उक्त कार्यशाला की प्रशंसा की। कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्रीमती ई. राज लक्ष्मी, वैज्ञानिक-सी ने सभी को धन्यवाद देते हुए हिंदी में काम करने का अनुरोध किया।

महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, दावणगेरे-577006

महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय, दावणगेरे में दिनांक 22-07-2010 से 24-07-2010 तक तीन दिवसीय सामान्य हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में इस कार्यालय और दावणगेरे में स्थित अधीनस्थ कार्यालयों के कुल 13 कर्मचारियों ने भाग लिया था। कार्यशाला में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा नियत पाठ्य-विवरण के अनुसार व्याख्यान दिया गया। जिसमें राजभाषा हिंदी के बारे में संवैधानिक व्यवस्थाएं, राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा नियम, 1976, वार्षिक कार्यक्रम, मानक हिंदी वर्णमाला सहित हिंदी व्याकरण के संबंध में व्याख्यान इस कार्यालय के कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री सी.एन. शेखर जी ने दिए। हिंदी में टिप्पण लेखन और आलेखन के बारे में कार्यालय के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रमेश वी. कामत ने व्याख्यान दिए।

कार्यशाला के अंतिम दिन कर्मचारियों के साथ दैनिक कामकाज में हिंदी के प्रयोग करने में पाई जाने वाली समस्याओं को दूर करने के बारे में चर्चा भी की गई। साथ ही उनको अपने दैनिक कामकाज में राजभाषा हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया गया।

कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए श्री एन.एच. कुलकर्णी, सहायक निदेशक (राजभाषा), महाप्रबंधक दूरसंचार का कार्यालय व्याख्यान में हिंदी को ही राजभाषा क्यों बनाई गई? इसके बारे में पूरी जानकारी देकर अधिकारियों के मन में हो रही दुविधा दूर की और राजभाषा हिंदी के प्रति सांविधानिक व्यवस्थाएं, राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा नियम, 1976, वार्षिक कार्यक्रम के बारे में संक्षिप्त रूप में बताया। उसमें खासकर धारा 3(3) के महत्व पर जोर डाला।

अपराह्न के सत्र में मानक हिंदी वर्णमाला सहित हिंदी व्याकरण के संबंध में व्याख्यान दिए। अधिकारियों के साथ वार्तालाप भी किए और उन्हें अपने कामकाज में हिंदी का ही ज्यादातर प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, कोलकाता

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, कोलकाता के पदाधिकारियों के लिए दिनांक 9-09-2010 को पूर्वाह्न 10:30 बजे से अपराह्न 1:30 बजे तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता क्षेत्रीय कार्यालय के प्रभारी अधिकारी श्री रणजीत भट्टाचार्य, संयुक्त

सचिव (तक.) ने की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हिंदी एक सरल और सहज भाषा है, जिसे सहजतापूर्वक सीखा व समझा जा सकता है। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य पदाधारियों में हिंदी के प्रति व्याप्त झिझक को दूर करना है। इसके अलावा उन्होंने यह भी अपील की कि सभी पदाधिकारीगण इस कार्यशाला का लाभ उठाएँ तथा पखवाड़े के दौरान तथा बाद में अपने अपने कार्यक्षेत्र में अधिकाधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करें। इस कार्यशाला में कुल 6 अधिकारी व 9 कर्मचारी प्रशिक्षित किए गए।

कार्यशाला में व्याख्याता के रूप में भाग लेते हुए हिंदी शिक्षण योजना, कोलकाता की सहायक निदेशक श्रीमती केशरजहाँ ने हिंदी के वाक्यों में स्त्रीलिंग व पुल्लिंग शब्दों के प्रयोग पर विस्तृत रूप से चर्चा की। कार्यशाला में उन्होंने बंगला भाषियों को आने वाली समस्याओं व समाधानों को सविस्तार शब्दार्थ सहित समझाया। उन्होंने यह भी कहा कि हम सरकारी कर्मचारी हैं और संवैधानिक अपेक्षाओं की पूर्ति करने के लिए ज्यादा से ज्यादा कार्य हिंदी में करना हमारा नैतिक दायित्व है। हमें गलतियों की चिंता किए बगैर हिंदी में कार्य करने की कोशिश करनी चाहिए। हिंदी व्याकरण में गलती से न डरते हुए कार्य में बोलचाल की भाषा का प्रयोग करें।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर

प्रधान महालेखाकार लेखा एवं हकदारी, ओडिशा, भुवनेश्वर कार्यालय में दिनांक 9-8-2010 से 12-8-2010 तक एक चार दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में इस कार्यालय के 4 अधिकारी एवं 16 कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला में प्रशिक्षण हेतु आए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए प्रधान महालेखाकार ने कहा कि ऐसी कार्यशाला के आयोजन से हिंदी के प्रसार प्रचार बढ़ाने में बहुत लाभ होता है। कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य प्रयोगात्मक होता है। उन्होंने और भी कहा कि कर्मचारी जो ज्ञान पाठ्य पुस्तक द्वारा अर्जन किए हैं, उसे प्रयोग में लाने के लिए कार्यशालाएं माध्यम बनती हैं। साथ में हिंदी में काम करने की झिझक दूर होती है।

दिनांक 9-8-2010 से 12-8-2010 तक चलाए गये कार्यशाला में व्याख्यान हेतु अनुभवी एवं इस कार्यालय के पूर्व हिंदी अधिकारी श्री शंकर नायक एवं वर्तमान हिंदी अधिकारी श्री नूर अहमद ने प्रतिभागियों को संघ की राजभाषा नीति, सांविधानिक प्रावधान, टिप्पण व प्रारूप लेखन, पत्राचार के प्रकार तथा अनुवाद जैसे मुख्य विषयों पर विस्तार से समझाया गया।

दिनांक 12-8-2010 को कार्यशाला का समापन समारोह अपराह्न 4.00 बजे प्रधान महालेखाकार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उनके संक्षिप्त अभिभाषण में प्रधान महालेखाकार ने आग्रह किया कि आगे भी इसी तरह की कार्यशालाएँ आयोजन करने से एक दिन पूरे कार्यालय में हिंदी का वातावरण बन जाएगा। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि कार्यशाला में जो भी प्रशिक्षण प्राप्त किया है उसे अपने कार्यालयीन कामकाज में प्रयोग करें।

आकाशवाणी-कडपा (आ.प्र.)

आकाशवाणी, कडपा केंद्र में दिनांक 26-08-2010 को आयोजित हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारी अधिक संख्या में उपस्थित हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय श्री बी. वी. रमण राव ने कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए यह बताया कि हिंदी राजभाषा की श्रीवृद्धि करने के लिए केंद्र सरकार ने अनेक प्रकार की योजनाएँ आरंभ की हैं। कार्यालय में ज्यादा से ज्यादा काम करने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए अनेक प्रोत्साहन योजनाएँ भी मौजूद हैं। हिंदी पखवाड़ा में आयोजित प्रतियोगिताओं के लिए यह कार्यशाला बहुत उपयोगी होगी।

आमंत्रित अतिथि वक्ता, एस. महबूब बाशा, हिंदी अनुवादक, सहायक भविष्य निधि कार्यालय, कडपा ने हिंदी में पत्राचार के बारे में सरल भाषा का प्रयोग करते हुए अच्छे विश्लेषण किए हैं।

इस कार्यशाला में भाग ले रहे कर्मचारियों ने यह बताया कि इस प्रकार कार्यशाला का आयोजन करने से हिंदी भाषा सीखना और कार्यालय में टिप्पण और पत्राचार लिखने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

बाद में, हिंदी अनुवादक श्री एस. सुब्बशेखर ने सभी उपस्थित सभी उम्मीदवारों को धन्यवाद प्रस्ताव किया।

जवाहर लाल स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, धन्वन्तरि नगर, पुदुच्चेरी-6

4 मार्च, 2010, को पुदुच्चेरी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में नराकास के सदस्य कार्यालयों के सदस्यों के लिए इसके संयोजक कार्यालय जिपमेर द्वारा जिपमेर के प्रेक्षागृह में एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के विभिन्न सदस्य कार्यालयों से 39 अधिकारियों/कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया।

कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. अशोक कुमार दास, कार्यकारी निदेशक व चिकित्सा अधीक्षक, जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। अपने उद्घाटन भाषण में संबोधित करते हुए उन्होंने इस राजभाषा कार्यान्वयन की संवैधानिक दायित्व की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा कि इन कार्यशालाओं का आयोजन विशेष महत्व रखता है और इससे राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति आती है। उन्होंने इसके सफल आयोजन की शुभ कामनाओं के साथ यह आशा व्यक्त की कि सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधि इससे अवश्य लाभान्वित होंगे और कार्यान्वयन के लिए प्रेरित होंगे। डॉ. मनोहर कांत श्रीवास्तव, मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं सचिव नराकास ने स्वागत भाषण के साथ कार्यशाला की रूप रेखा का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया।

कार्यशाला के प्रथम सत्र का संचालन डॉ. वी. बालकृष्णन, उप-निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण-पश्चिम), कोचीन ने किया, उन्होंने राजभाषा नीति के नियम, अधिनियम व कार्यान्वयन के संबंध में विस्तारपूर्वक चर्चा के साथ अर्ध वार्षिक रिपोर्ट प्रपत्र के संबंध में भी प्रशिक्षण दिया। अपराह्न में द्वितीय सत्र के प्रथम चरण में श्री हरिनारायण त्रिवेदी, हिंदी शिक्षण योजना, शिलांग के सहायक निदेशक (भाषा) ने कार्यशाला का संचालन करते हुए भाषा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस सत्र के द्वितीय चरण में कंप्यूटर

में यूनिकोड के जरिए हिंदी के प्रयोग के संबंध में श्री इजाज बाशा, प्रोजेक्ट हेड, मोन्टेज कम्प्यूनिक्स, बेंगलूर ने विस्तार-पूर्वक जानकारी दी।

इसके समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मदन मोहन त्रकू सर्वकार्यभारी अधिकारी शिक्षण योजना, व विभागाध्यक्ष शरीर क्रिया विज्ञान विभाग जिपमेर ने संबोधित करते हुए हिंदी शिक्षण और प्रशिक्षण के समय-समय पर इन कार्यशालाओं के आयोजन पर बल दिया। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अजीत सहाय, संकाय प्रशासन जिपमेर ने भी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए आगे भी समय-समय पर इन कार्यशालाओं के आयोजन करने तथा राजभाषा कार्यन्वयन के प्रति कटिबद्ध रहने का आग्रह किया।

भारी पानी संयंत्र, तालचेर, डा. विक्रमपुर जिला-अनगुल (उड़ीसा)-759106

राजभाषा नियमों का अनुपालन करते हुए भारी पानी संयंत्र, तालचेर में दिनांक 22 सितंबर, 2010 को 21वीं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला में प्रशासन तथा लेखा अनुभाग के 17 अधिकारियों/कार्मिकों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला में श्री अनिर्वाण भट्टाचार्य, सहायक कार्मिक अधिकारी (कल्याण) द्वारा “परमाणु ऊर्जा विभाग की गतिविधियाँ” तथा श्री धनेश परमार, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा “संघ की राजभाषा नीति” पर विद्वातापूर्ण व्याख्यान दिए गए। कार्यशाला में सभी प्रतिभागियों को लिखने का अभ्यास भी कराया गया।

समापन समारोह में इस कार्यशाला के प्रतिभागियों को श्री एस.बी. बोस, प्रशासन अधिकारी ने संबोधित करते हुए कहा कि कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान को अपने दैनंदिन कार्यालयीन कार्यों में प्रयोग करें तथा अपने सहकर्मियों को भी हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करें।

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में दिनांक 22-23 सितंबर, 2010 को दो द्वितीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन भारी पानी संयंत्र के विशेष कार्याधिकारी एवं नरामाकास, तूतीकोरिन के अध्यक्ष

श्री एस. परमसिद्धम ने किया। इस अवसर पर भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन के अध्यक्ष श्री आई. सेनगुप्ता, प्रशासन अधिकारी श्री एस. एम. सिसोमणि भी उपस्थित थे। उद्घाटन के अवसर पर श्री एस. परमसिद्धम जी ने कहा कि हिंदी का प्रयोग हमें नियमित रूप से करना चाहिए एवं हमें अपने रोजमर्रा के कार्यालयीन कार्यों में भी इसका प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार राजभाषा को अपना स्थान दिलाने हेतु अथक प्रयास कर रही है, इसके लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है। अतः केंद्रीय सरकार के कर्मचारी होने के नाते यह हमारा कर्तव्य बनता है कि हम खुद हिंदी का प्रयोग करें और अपने सहकर्मियों को भी उत्साहित करें। इस अवसर पर राभाकास अध्यक्ष एवं तकनीकी सेवाएँ प्रबंधक श्री सेनगुप्ता जी ने कहा कि सरकार हिंदी को आगे बढ़ाने हेतु बहुत सालों से कोशिश कर रही है और हमारे कार्यालय में भी हिंदी में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। फिर भी हिंदी की स्थिति वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी सीखने की इच्छा हरेक के अंदर से आनी चाहिए। हमें किसी प्रकार के प्रोत्साहन का इन्तजार किए बना अपना काम हिंदी में करना चाहिए। तब ही हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यशाला में कुल 22 प्रतिभागी थे। कार्यशाला में हिंदी व्याकरण, पत्र लेखन, कार्यालय में प्रयुक्त शब्दों की जानकारी, अनुवाद अभ्यास के साथ-साथ कुछ प्रशासनिक विषय जैसे सर्विस मैटर्स, सूचना का अधिकार एवं सुरक्षा जागरूकता विषय पर भी व्याख्यान दिए गए।

‘ख’ क्षेत्र

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

दाबोलिम हवाई अड्डा, गोवा

श्री एम.एन.एन.राव, प्रभारी विमानपत्तन निदेशक/संयुक्त महाप्रबंधक (इंजी-सिविल) द्वारा 5 अगस्त, 2010 को प्रातः 10.00 बजे दीप प्रज्वलन के साथ दो दिवसीय (05-06 अगस्त, 2010) हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन व शुभारंभ किया गया। इसके बाद भा. वि. प्रा. का कॉरपोरेट गीत गाया गया। इस अवसर पर श्री वाजिद अली खान, महाप्रबंधक/कार्यालय प्रमुख, ओ एन जी सी, बेतुल, गोवा मुख्य अतिथि थे।

मुख्य अतिथि महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। उन्होंने कहा कि कार्यालय में हमें सरल हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। श्री एम.एन.एन.राव, प्रभारी विमानपत्तन निदेशक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रकट किया गया। उन्होंने भा.वि.प्रा., गोवा में हिंदी के अच्छे वातावरण पर प्रकाश डालते हुए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील की कि राजभाषा हिंदी में अपनी रुचि इसी प्रकार बनाए रखें उन्होंने सभी प्रतिभागियों को सलाह दी कि वे व्याख्याताओं के व्याख्यान से लाभ उठाएं एवं कार्यालयीन कामकाज में इसका प्रयोग करें। इसके साथ ही उन्होंने सबके प्रति धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। इस प्रकार उद्घाटन समारोह के समापन के बाद व्याख्यान प्रारंभ किया गया। दो दिनों में विभिन्न विषयों पर कुल 08 व्याख्यान दिए गए।

कार्यशाला का समापन समारोह 06 अगस्त, 2010 को शाम 16.00 बजे से आरंभ हुआ। अंतिम व्याख्याता के रूप में प्रो. बी. के. शर्मा उर्फ डॉ. रोहिताश्व शर्मा, विभागाध्यक्ष (हिंदी), गोवा विश्वविद्यालय ने अपने व्याख्यान में भारत की संस्कृति एवं दर्शन में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय : नाशिक रोड

कर्मचारियों में हिंदी कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए मुद्रणालय में 28 और 29 सितम्बर, 2010 को 67 वीं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कुल सोलह (16) कर्मचारी-प्रतिभागियों ने भाग लिया। सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री एस व्ही मुर्हकर ने कार्यशाला का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि कर्मचारियों को जनभाषा में अर्थात् हिंदी में कार्य करने की आदत डालनी चाहिए जिससे वे अपने कार्य अधिक प्रभावी ढंग से कर पाएंगे। उन्होंने कहा कि इस वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में सभी आवश्यक भाषाओं का ज्ञान रखना समय की आवश्यकता है। अब अनेक बड़े देश भारत के साथ व्यापार करने के लिए हिंदी सीख रहे हैं। उन्होंने हिंदी को अधिक व्यावहारिक और सरल बनाने के लिए सभी कर्मचारियों से हिंदी सीखने और उसका उपयोग अपने सरकारी कार्य में करने की अपील की। उन्होंने कहा कि इसका अच्छा प्रभाव आने वाले स्टाफ पर पड़ेगा तथा आगे आने वाला स्टाफ भी

आसानी से हिंदी में कार्य कर सकेगा। कार्यशाला के पहले दिन के पहले सत्र में श्री ए.एल.आचार्य, राजभाषा अधिकारी, युनियन बैंक ने राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन के बारे में जानकारी दी। राजभाषा अधिनियम तथा सरकार का उद्देश्य आदि की जानकारी दी। दूसरे सत्र में श्री हरिहर नाथ त्रिपाठी, उप प्रबंधक (मा.सं.) इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लि. ने वार्षिक कार्यक्रम और प्रोत्साहन योजनाएं इस विषय पर व्याख्यान दिया। राजभाषा के माध्यम से देश की सेवा के साथ-साथ सरकार की अनेक प्रोत्साहन योजनाओं द्वारा होने वाले आर्थिक लाभ के बारे में उन्होंने जानकारी दी।

कार्यशाला के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में श्री सुबोध मिश्र, प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा) को आमंत्रित किया गया था। श्री सुबोध मिश्रजी ने भाषा सम्प्रेषण अर्थात् भाषा का महत्व, भाषा का प्रभाव, अंकों का मानकीकरण आदि की अच्छी जानकारी दी। दूसरे सत्र में श्री अनिकेत बोरकर, मानव संसाधन (रोवाएं प्रबंधन) अधिकारी, एच.ए.एल. ने सामान्य प्रशासनिक शब्द एवं पत्राचार के बारे में बताया। कार्यालयीन हिंदी की सहजता और सरलता के बारे में जानकारी दी। हिंदी में कार्य करने की झिझक को दूर कर हिंदी में ही कार्य करने की इच्छा रखने की सलाह दी। हिंदी शब्दलेखन और हिंदी पत्राचार तथा हिंदी में कार्य आरंभ कैसे करें? इत्यादि विषयों के बारे में विस्तार से बताया।

कर्मचारी प्रतिभागियों ने भी कार्यशाला के आयोजन और प्राप्त हिंदी ज्ञान के प्रति संतोष और प्रसन्नता व्यक्त की और सफल आयोजन के लिए श्री शेखर वि. मुर्हकर, सहायक निदेशक (राजभाषा) और हिंदी स्टाफ को धन्यवाद दिया।

**कार्यालय, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.),
लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी,
खड़की, पुणे-411003**

लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने, सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक को दूर करने हेतु तथा टिप्पणी, प्रारूप/मसौदा लेखन, पत्र-लेखन एवं अधिक से अधिक कार्यालयीन कामकाज कंप्यूटर पर

करने के उद्देश्य से दिनांक 16-8-2010 से 20-08-2010 के दौरान पांचवी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन श्री दिनेश चंद्र सिंह नेगी, भार.ले.से. वित्त एवं लेखा नियंत्रक(फै.), खड़की निर्माणी समूह के द्वारा किया गया। उद्घाटन भाषण में उन्होंने हिंदी कार्यशाला आयोजन के उद्देश्य पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए कहा कि कार्यालय में सरकारी कामकाज को हिंदी में करने में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों को दूर करने का प्रयास कार्यशाला के दौरान किया जाएगा, ताकि भविष्य में प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में कर सकें। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अपील की कि वे इस कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएं। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी कार्यशाला का आयोजन तभी सफल माना जाएगा जब कर्मचारी अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करेंगे। हिंदी के प्रचार प्रसार में बॉलीवुड तथा महाराष्ट्र के योगदान के संबंध में एवं देवनागरी लिपि और त्रिभाषा सूत्र के बारे में भी उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यशाला में 15 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु पुणे स्थित केंद्र सरकार के अन्य कार्यालयों से भी व्याख्याताओं को आमंत्रित किया गया था। इस दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें से मुख्य हैं :-संघ की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम/नियम, संकल्प, साधारण टिप्पणियाँ/मसौदे लिखना, राजभाषा से संबंधित महत्वपूर्ण आदेश, अनुशासनिक मामले, बिलों के भुगतान तथा लेखा आपत्तियाँ, कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य, पत्राचार के विविध रूप, हिंदी-अंग्रेजी, अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद, पेशगियों से संबंधित मामले, यात्रा संबंधी मामले, बैठकें आयोजित करना एवं लेखा कार्यालय के विभिन्न अनुभागों में किए जाने वाले विभिन्न कार्यों को हिंदी में किए जाने संबंधी अन्य व्याख्यान। कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला की उपयोगिता एवं इसके उद्देश्य प्राप्ति पर लिखित प्रतिक्रिया ली गई। अधिकांश प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएं उत्साहवर्धक थी, जिनमें यह उल्लेख था कि इस प्रकार की कार्यशालाएं और अधिक समय के लिए आयोजित की जाएं। कार्यशाला के समापन पर श्री बी.एस. कोरे, सचिव राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सभी प्रतियोगियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

‘क’ क्षेत्र

न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लि., कैगा बिजली उत्पादन केन्द्र, कैगा

कैगा बिजली उत्पादन केंद्र 1 से 4 संयंत्र स्थल में दिनांक 17 व 18 अगस्त, 2010 को दो एक दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। दिनांक 17-8-2010 को अधिकारियों के लिए तथा 18-8-2010 को कर्मचारियों के लिए कार्यशालाएं आयोजित की गई थीं।

दोनों कार्यशालाओं में श्री सूर्यकांत, प्रबंधक(राजभाषा) ने सभी का हार्दिक स्वागत कर उन्हें कार्यशाला का उद्देश्य बताया कि इन कार्यशालाओं के माध्यम से अधिकारियों व कर्मचारियों में अभ्यास के अभाव में होने वाली झिझक, कठिनाईयों, शंकाओं को दूर कर आत्मविश्वास जगाना ताकि वे हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित हो सकें। आरंभ में भले ही आप मिलिजुली भाषा में शुरूआत कर सकते हैं फिर धीरे-धीरे गति बढ़ने के बाद मूल रूप से काम करना भी आ जाएगा।

मद्रास परमाणु बिजलीघर से संकाय सहायता हेतु आमंत्रित हिंदी अधिकारी श्री द. दा. मेश्राम ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि ये कार्यशालाएं राजभाषा विभाग के आदेशानुसार और मुख्यालय के निर्देशानुसार एक वर्ष में दो बार आयोजित की जाती हैं और साथ ही साथ इकाई के कुछ अनुभागों में राजभाषा का निरीक्षण भी किया जाता है ताकि कमियों को दूर कर प्रगति पथ पर बढ़ सके। कैगा में तो अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी के प्रति बहुत रूचि है। सकारात्मक माहौल है। लगभग सभी हिंदी में बात करते हैं, समझ सकते हैं। कुछ लोग तो अच्छा खासा लिख भी लेते हैं पर उच्चारण और वर्तनी को लेकर कुछ कठिनाई या समस्या हो तो उसे दूर करना ही इन कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य होता है।

वरिष्ठ प्रबंधक(मा.सं.-कर्म.सं.) श्री चंद्र प्रकाश सिंह ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि कैगा में वैसे तो सभी लोग आम बोलचाल में और अनौपचारिक रूप से बढ़िया ढंग से हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। पर उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती या कठिनाई तब आती है जब लिखने और व्यावहारिकता की बात आती है। आमतौर पर यह दृष्टिकोण होता है कि हिंदी में सरकारी काम करना कठिन है इस भ्रम को समाप्त कर कैसे सरकारी कामकाज

गांव-गांव जाकर मैं भूदान, ग्राम दान और कांतिपूर्ण संदेश जनता तक न पहुंचा सकता। यदि मैं मराठी का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर और कहीं काम न बनता। इसी तरह अंग्रेजी भाषा लेकर चलता तो कुछ प्रांतों में चलता, परंतु गांव-गांव में जाकर क्रांति की बात अंग्रेजी द्वारा नहीं हो सकती थी। इसलिए मैं कहता हूं कि हिंदी भाषा का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है, इसने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है।” को उद्धृत किया गया। इस अवसर पर विशेष अतिथि द्वय श्री चन्द्राकर एवं पटेल द्वारा हिंदी के प्रयोग पर विशेष ध्यान देने का आह्वान करते हुए कहा गया कि हम ऐसे संस्थान से जुड़े हैं, जिसकी उत्पादकता, ग्रामीण अंचलों से आए श्रमिकों पर टिकी हुई है, जैसा कि विदित ही है कि भारत ग्रामीणों का देश है, जहां के अधिसंख्य लोग हिंदी जानते हैं। अतः हमारे लिए हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग अति आवश्यक है। इसी प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए डॉ. बी.एन. पाण्डेय एवं श्री एस. के. गजभिये, हिंदी व्याख्याता, केंद्रीय विद्यालय, भरवेली द्वारा हिंदी कार्यशाला के दौरान हिंदी की उत्पत्ति से लेकर वर्तमान हिंदी लिपि का विस्तार से व्याख्यान दिया गया तथा सदस्यों को हिंदी व्याकरण में होने वाली छोटी-छोटी त्रुटियों के सुधार पर ध्यान दिलाया गया। इस अवसर पर उनके द्वारा राजभाषा के प्रयोग में होने वाली शंका पर सदस्यों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए।

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र
(स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय)
धरमपुरा-1, जगदलपुर-494 005 (बस्तर) छ.ग.

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र, शाखा कार्यालय, धरमपुरा-1, जगदलपुर में दिनांक 20-09-2010 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ डॉ. आर. पण्डा, सहायक संचालक/प्रभारी अधिकारी एवं अध्यक्ष, न.रा.का. स. के अध्यक्षता में सभा कक्ष, राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र, शाखा कार्यालय, धरमपुरा-1, जगदलपुर में हिंदी कार्यशाला में संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य के बारे में विस्तृत जानकारी के साथ कर्मचारियों को लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहकर अधिक से अधिक कार्य सरल हिंदी में करने हेतु संकल्प लेने एवं निम्नलिखित 17 बिन्दुओं को अमल में लाने पर जोर दिया।

(1) देवनागरी लिपि में हिंदी आपकी राजभाषा है।

जुलाई-सितंबर 2011 राजभाषा भारती 71

- (2) राजभाषा का प्रयोग स्वाभिमान एवं गौरव का विषय है।
- (3) आप अपना काम-काज हिंदी में बेरोक-टोक करें।
- (4) कठिन हिंदी की बजाय सरल हिंदी का उपयोग करें।
- (5) हिंदी में लिखे या हस्ताक्षर किए गए, पत्रों, आवेदनों आदि का उत्तर देने के लिए हिंदी का प्रयोग करें।
- (6) हिंदी भाषी राज्यों में स्थित कार्यालयों और व्यक्तियों को अपनी ओर से लिखे पत्रों के लिए हिंदी का प्रयोग करें।
- (7) हिंदी-तर भाषी राज्यों को पत्र आदि द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) रूप में भेजें।
- (8) केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ पत्रादि में हिंदी का प्रयोग करें।
- (9) सभी कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश, परिपत्र तथा विज्ञापन आदि द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) रूप में जारी करें।
- (10) सभी सरकारी समारोह के निमंत्रण पत्र व बैनर हिंदी तथा अंग्रेजी में बनाएं।
- (11) रबर की मोहरें, लेखन सामग्री, रजिस्ट्रों के शीर्ष, कार्यालय ~~सूचना~~ बोर्ड तथा नाम पट्टिकाएं ~~द्विभाषी~~ हों।
- (12) अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद करते समय सरल से सरल शब्दों का प्रयोग करें।
- (13) प्रति तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एक बैठक करें।
- (14) प्रति तिमाही में एक कार्यशाला का आयोजन करें।
- (15) प्रति तिमाही में तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रेषित करें।
- (16) प्रति छमाही में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में कार्यालय प्रमुख उपस्थित रहें।
- (17) वार्षिक कार्यक्रम में दिए गये लक्ष्यों को पूरा करने हेतु वार्षिक कार्य योजना तैयार करके अमल करें।

एमएसएमई-विकास संस्थान, करनाल

एमएसएमई-विकास संस्थान, भारत सरकार (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय), करनाल द्वारा दिनांक 7 सितंबर, 2010 को नराकास स्तर पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के निदेशक एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डा. ओ.पी.मेहता ने किया।

डा. ओ.पी.मेहता, निदेशक एवं नराकास अध्यक्ष ने अन्य गणमान्य अधिकारियों के साथ दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हिंदी को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है और सरकारी नौकरी में होने के नाते यह हम सबका दायित्व बन जाता है कि हम अपना कार्य हिंदी में ही करें। उन्होंने संविधान की धारा 343, 351 की व्याख्या करते हुए सभी से अपील की, कि वे अपना कार्य हिंदी में ही करें और फाइलों पर नोटिंग व टिप्पणी हिंदी में ही लिखें। उन्होंने कहा कि हमारा देश विभिन्न भाषाओं का देश है और हिंदी राष्ट्रीयता का प्रतीक है। ~~हिंदी में की गई~~ अभिव्यक्ति सशक्त होती है। जब हम ~~अपनी भाषा~~ बात करते हैं तो उसमें आने वाली आवाज हिंदी का ही स्फूर्तिपूर्ण है : जैसे इन, एन, । हम संयुक्त राष्ट्र में ~~स्वयं को~~ अपने जा रहे हैं। अतः हमें अपनी भाषा सुदृढ़ करनी होगी।

~~संस्थान के सहायक निदेशक एवं सचिव, नराकास,~~ श्री बृजेश धादव ने राजभाषा की उपयोगिता पर बोलते हुए कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कार्मिकों को हिंदी लिखने में आ रही कठिनाइयों का निवारण करना और उनका मनोबल बढ़ाना है। अब समय आ गया है कि हम अपनी भाषा के कार्य क्षेत्र को ~~निरूपित~~ हम निश्चय शक्ति बन सकते हैं।

कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि वक्ता पधारे डा. एम.एल. लाम्बा, प्रोफेसर राजकीय महिला महाविद्यालय, करनाल ने हिंदी की वैज्ञानिकता पर जोर देकर कहा कि आज सभी भाषा विद्वानों ने मान लिया है कि हिंदी वैज्ञानिक भाषा है क्योंकि इसमें जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। हर स्वर व व्यंजन का अपना सही स्थान है और कंप्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा मानी गई है। उन्होंने बताया कि ताजा आंकड़ों के अनुसार हिंदी पूरे विश्व में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। आज बड़े-बड़े देश भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था को देखते हुए व्यापार करना चाहते हैं और इसके लिए वे हिंदी सीख रहे हैं।

अंत में कार्यक्रम में सभी का आभार संस्थान के सहायक निदेशक (आईएमटी) श्री त्रिलोक गुप्ता ने व्यक्त किया। श्रीमती उषा कत्याल ने दीप प्रज्ज्वलन एवं अन्य व्यवस्था में सहयोग किया। श्री बलराज सिंह, आशुलिपिक व श्री राजेश सिंह, अवर श्रेणी लिपिक ने अतिथि वक्ता से राजभाषा संबंधी प्रश्न किए और उनका समाधान कराया।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान 5, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, हौजखास, नई दिल्ली-110 016

10 सितम्बर 2010 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला संस्थान में 01 से 14 सितम्बर 2010 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े की एक गतिविधि के रूप में आयोजित की गई।

इस कार्यशाला का उद्देश्य संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा नियमों की जानकारी देना और सरकारी कामकाज हिंदी में करने में उनके सामने आने वाली कठिनाइयों को दूर करना था।

इस कार्यशाला में संस्थान के कुल 13 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला का उद्घाटन डा. दिनेश पॉल, निदेशक ने किया। उन्होंने उपस्थित सभी सहभागियों का स्वागत करते हुए उल्लेख किया कि हमारे संस्थान में अधिकाधिक कार्य हिंदी में हो रहा है और यह कार्यशाला इसे और बढ़ावा देने में सहायक होगी। श्री एस. के. श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक (सामान्य सेवा) भी इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यशाला सहभागियों के लिए उपयोगी रहेगी और हिंदी में कार्य करने में उनके सामने आने वाली कठिनाइयों का समाधान होगा।

कार्यशाला के विषय को भाषण एवं अभ्यास पद्धति द्वारा प्रतिपादित किया गया। श्रीमती रेखा जुनेजा, हिंदी अधिकारी ने सहभागियों को राजभाषा के मुख्य नियमों की जानकारी दी और हिंदी भाषा के शब्दों और टिप्पणियों पर विचार-विमर्श करते हुए सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। सहभागियों को राजभाषा नियमों से संबंधित सामग्री भी दी गई।

सहभागियों ने कार्यशाला की अवधि तथा प्रशिक्षण पद्धति को उपयुक्त माना और उल्लेख किया कि कार्यशाला

से प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल वे अपने कामकाज में व्यावहारिक रूप से करेंगे।

दूरदर्शन केंद्र राजकोट

दूरदर्शन केंद्र राजकोट में गुरुवार, दिनांक 29-07-2010 को कार्यालय के स्टाफ के लिए हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें 25-30 अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यशाला में मुख्य वक्ता आमंत्रित विद्वान डा. एस. पी. शर्मा, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट ने "हमें कार्यालय-कार्य हिंदी में करना कठिन और अंग्रेजी में आसान क्यों लगता?" के भ्रम का निराकरण बहुत सुन्दर व स्पष्ट ढंग से किया। सरकारी नौकरी में प्रवेश के प्रथम दिन से ही कार्यालय में कार्य पद्धति के नियम, नमूने, मसौदे, प्रपत्र इत्यादि सारी साज-सामग्री हमें अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध हुई जो अंग्रेजी सत्ता से विरासत में मिलने पर हमने अपनाया है। इसीलिए अंग्रेजी में कार्य करने की आदत पड़ने पर हमें आसान लगता है। झिझक और शर्म के कारण हिंदी में कार्य शुरू ही नहीं किया तो आसान कैसे लगेगा। जैसे जब तक कोई चीज आप खाएंगे नहीं तो उसका स्वाद कैसे बताया जा सकता है। वैसे ही हिंदी में काम आरंभ न कर हिंदी को कठिन मान लिया। बिना आदत व अभ्यास के आसान कार्य भी कठिन ही प्रतीत होता है जबकि आदत पक्की होने पर हरकुछ आसान और संभव बन जाता है। वर्षों से निरंतर अंग्रेजी के अभ्यास से आदत पक्की हो गई है, इसीलिए आसान प्रतीत होती है। दूसरी ओर, बड़ी गलती हमने यह की कि हिंदी को मौलिक रूप में प्रयोग में न लाकर अनुवाद की भाषा बनाकर प्रयोग किया। हम अंग्रेजी की प्रकृति में हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं अर्थात् हम अपने मौलिक विचार सीधे हिंदी में प्रकट न करके, पहले अंग्रेजी में लिखकर बाद में उसका हिंदी अनुवाद करते हैं जो बड़ी भूल है। आज से ही हिंदी में कार्य शुरू कर दें, संकोच न करें और अपनी बात अपने ढंग से शुरू करें, केवल अनुवाद का सहारा न लें। कुछ समय बाद हिंदी में कार्य करने के लिए आप स्वयं दक्ष एवं विश्वस्त हो जाएंगे।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

जयपुर हवाई अड्डा

जयपुर विमानपत्तन पर दिनांक 19-07-2010 से 21-07-2010 तक तीन अर्द्धदिवसीय दूरदर्शन कार्यशाला आयोजित की गई।

इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री आर के सिंह, निदेशक विमानपत्तन जयपुर द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कार्यशाला का महत्व बताते हुए कहा कि कार्यशाला से कार्मिकों के कार्यों में उत्कृष्टता आती है।

उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि जयपुर विमानपत्तन पर हिंदी कार्य का प्रतिशत 98.75% तक पहुंच गया है। उन्होंने यह भी बताया कि यद्यपि भारत सरकार के नियमानुसार हमारा 100% का लक्ष्य है किन्तु 98.75% तक पहुंचना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है जिसे बनाए रखना है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार प्रत्येक बच्चे की प्रतिभा समान नहीं होती किंतु शिक्षा के माध्यम से उनकी प्रतिभा को एक रूप देकर सामने लाया जाता है ठीक उसी प्रकार इस तरह की कार्यशाला के आयोजन से हमारा तात्पर्य ये होना चाहिए कि आप सब में हिंदी में कार्य करने के प्रति जो झिझक है या जो कठिनाई है उन्हें एक कक्षा में विद्यार्थी एवं शिक्षक की तरह कम्युनिकेशन के माध्यम से उनको अपने देश की राष्ट्रभाषा के प्रति दायित्व बोध कराते हुये न केवल हिंदी में काम करवाया जाए बल्कि यदि लेखन आदि की प्रतिभा है तो वो भी उभर कर सामने आए। साथ ही अपनी भाषा के प्रति सम्मान प्रकट करना न केवल हमारा कर्तव्य है बल्कि ये एक नैतिक जिम्मेदारी भी है।

प्रथम दिन के प्रथम सत्र में “राजभाषा नीति एवं प्रोत्साहन योजनाओं” पर श्री एच.एस. पारीक वरि. प्रबंधक; राजभाषा द्वारा व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर उन्होंने प्रशिक्षार्थियों को “राजभाषा नीति एवं विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं” की विस्तार से जानकारी दी। दूसरे सत्र में श्री हरीश मखीजा, अनुदेशक हिंदी शिक्षण योजना, महालेखाकार कार्यालय, जयपुर ने हिंदी शिक्षण, प्रशिक्षण प्रोत्साहन एवं हिंदी पत्राचार संबंधी विषय पर व्याख्यान दिया।

कार्यशाला के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में श्री आर. के. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) आयकर कार्यालय, जयपुर ने “प्रशासनिक पत्राचार में हिंदी का प्रयोग एवं हिंदी वर्तनी” विषय पर प्रतिभागियों को व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में श्री फणीश्वर, आयकर अधिकारी, आयकर कार्यालय, जयपुर ने “हिंदी में वित्तीय पत्राचार/करारोपण आदि में हिंदी का प्रयोग” विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

कार्यशाला के तीसरे एवं अंतिम दिन श्री संजय अग्रवाल, प्रबंधक (संचार) ने “सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में

नवीनतम हिंदी सॉफ्टवेयरों के उपयोग के साथ-साथ यूनिकोड सॉफ्टवेयर में हिंदी का कार्य” विषय पर अपना व्याख्यान दिया। दूसरे चरण में श्री कमलेश कुमार, प्रबंधक (संचार) ने “तकनीकी एवं प्रचालनात्मक कार्यों में हिंदी का प्रयोग एवं लॉग बुक आदि में हिंदी में प्रविष्टियाँ” विषय पर व्याख्यान दिया।

कार्यशाला में कुल 18 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नागड़ी, राँची-835 303

दिनांक 21-07-2010 को केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नागड़ी, राँची में प्रशासनिक एवं तकनीकी संवर्ग के कर्मचारियों के लिए एक-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कुल 51 कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक, डॉ.बी.सी.प्रसाद ने कहा कि अन्य कार्यों की भाँति हिंदी कार्यान्वयन भी हमारे कामकाज का महत्वपूर्ण अंग है। हमें संकल्पबद्ध होकर हिंदी में कार्य निष्पादित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी के कार्यान्वयन में मुख्य बाधा लोगों में व्याप्त झिझक है परंतु राजभाषा में दिए गए प्रावधानों के अनुसार हमें लोकप्रिय अँगरेजी एवं अन्य शब्दों का प्रयोग करने से नहीं हिचकना चाहिए। उन्होंने उपस्थित कर्मचारियों से यह अनुरोध किया कि हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में हमारा निष्पादन शत-प्रतिशत होना चाहिए।

इस अवसर पर संस्थान के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने हेतु राँची विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, डॉ. बालेन्दु शंखर तिवारी अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित थे। डॉ. तिवारी ने हिंदी शब्दों की व्युत्पत्ति एवं राजभाषा में व्याकरण के महत्व पर व्याख्यान दिया। उन्होंने तकनीकी शब्दावली एवं प्रशासनिक शब्दावली पर भी प्रशिक्षणार्थियों को जानकारी दी। डॉ. तिवारी ने उपस्थित कर्मचारियों का आह्वान करते हुए यह कहा कि वे अपनी हिचकिचाहट को हटाकर फाइलों के अलावा तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी का प्रयोग करें। संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री सुरेंद्र कुमार उपाध्याय ने कार्यशाला में प्रशिक्षणार्थियों को राजभाषा नियम, अधिनियम पर जानकारी उपलब्ध कराई।

(च) हिंदी दिवस

‘ग’ क्षेत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखा परीक्षा) तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, लेखा परीक्षा भवन 361, अण्णा सालै, तेनामपेट,
चेन्नई-600018

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई-18 और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (वा.एवं प्रा.लेप) तमिलनाडु, चेन्नई 18 के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के योगदान और प्रतिभागिता सहित लेखापरीक्षा भवन पर दिनांक 14-09-2010 को अपराह्न 3.30 बजे हिंदी दिवस समारोह मनाया गया।

दिनांक 30-08-2010 से 14-09-2010 तक के हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे टिप्पण आलेखन और अनुवाद, चित्रों के आधार पर कथा लेखन, स्मृति परीक्षण, प्रश्न मंच, शब्द परीक्षण, संकेत विस्तारण प्रतियोगिताएं, आयोजित की गईं। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश श्रीमती वी. चित्रा, हिंदी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार(वा. एवं प्रा.लेप) द्वारा पढ़ा गया। प्रधान महालेखाकार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में यह जोर दिया कि राष्ट्र का विकास उसकी राजभाषा के विकास पर आधारित है और सभी कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे अपने कार्यालयीन कार्य में जहां तक संभव हो हिंदी का प्रयोग करें। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार(सिविल लेखापरीक्षा), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी की हिंदी गृह पत्रिका “सुमन” के सत्रहवें संस्करण एवं कार्यालय महालेखाकार(वा.एवं प्रा. लेप) तमिलनाडु, की हिंदी गृह पत्रिका “कुरिंजी” के ग्यारहवें संस्करण का विमोचन किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री टी.एस.के. कण्णन, हिंदी लेखक ने बताया कि हिंदी ही राष्ट्र के लोगों की संपर्क भाषा है और यह हमारा राष्ट्र का गौरव भी है।

मुख्य महाप्रबंधक का कार्यालय, चेन्नई
टेलीफोन, राजभाषा अनुभाग, 10, मिल्लर्स
रोड, चेन्नई-600010

भारत संचार निगम लिमिटेड के चेन्नई टेलीफोन एकक द्वारा दिनांक 22-06-2010 को राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। श्री एस.आर.चंद्रशेखरन, उप महाप्रबंधक (एचआर/प्र.) ने स्वागत भाषण दिया। तत्पश्चात् श्रीमती जया सूर्या चेल्लम, राजभाषा अधिकारी ने वार्षिक रिपोर्ट 2008-09 को प्रस्तुत किया। मुख्य महाप्रबंधक श्री ए. सुब्रह्मण्यन, ने टेबलटॉप फाइल टिप्पणी कार्ड का विमोचन किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग की कामना की। मुख्य अतिथि डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा, उप निदेशक(भाषा), केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने हिंदी व क्षेत्रीय भाषा को समतुल्य दर्जा दिया। हिंदी भाषा के प्रति रुझान, देश के प्रति निष्ठा सुनिश्चित करता है। उपस्थित महानुभावों ने राजभाषा हिंदी क्षेत्र में श्रेष्ठ निष्पादकों का सम्मान किया। उपस्थित सम्मेलन में कुल 63 अधिकारीगण व कर्मचारीगण उपस्थित थे।

सम्मेलन का प्रथम सत्र डॉ. एस. विजया, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक द्वारा “राजभाषा नीति व वार्षिक कार्यक्रम” पर प्रस्तुत व्याख्यान के लिए अर्पित था। पश्चात् श्री एस.रामकुमार वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा), कैनरा बैंक ने “राजभाषा हिंदी की भूमिका तथा व्यावहारिक पहलुएं” पर प्रवचन दिया।

आकाशवाणी, चेन्नई-4

आकाशवाणी, चेन्नई में दिनांक 01-09-2010 से 14-09-2010 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। केंद्र निदेशक श्री के. श्रीनिवासराघवन की अध्यक्षता में केंद्र के वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में दिनांक 01-09-2010 को हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन हुआ।

केंद्र निदेशक ने हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित

विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में कर्मचारीगण ने अधिक संख्या में भाग लिया ।

श्री जे.जयकुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नामों की घोषणा की । उन्होंने विजेताओं को बधाई देते हुए भाग लिए अन्य प्रतिभागियों को भी प्रोत्साहित किया ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में केंद्र निदेशक ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में सुरुचि भाग लेने वाले कर्मचारियों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि इसी रूचि के साथ वे दैनंदिन के अपने कामकाज में भी राजभाषा का प्रयोग करें । साथ ही उन्होंने हिंदी अनुभाग द्वारा इस सिलसिले में उठाए जाने वाले प्रयास की काफी प्रशंसा की ।

अपने विशेष वक्तव्य में अधीक्षण अभियंता श्री आर. वरंदराजन ने हिंदी दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला । साथ ही, पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी । आगे कहा कि हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने से ही हिंदी में काम करने की झिझक दूर होगी ।

मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में कहा कि आकाशवाणी के द्वारा प्रसारित हिंदी गीतों को सुन कर कई लोगों ने अपने हिंदी ज्ञान की वृद्धि की । राजभाषा के सिलसिले में कर्मचारी गण सरल और सहज भाषा में अपने विचारों को व्यक्त करें तो वही राजभाषा की सही सफलता है । किसी भी भाषा के सरलीकरण से उसका प्रयोग बढ़ता है । हिंदी के लिए भी यह लागू है । प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि ने नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए । इस अवसर पर हिंदी में अपना मूल काम करने वाले पांच कर्मचारियों को प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत पुरस्कार प्रदान किए गए ।

जनगणना कार्य निदेशालय, सी.जी.ओ.

कांफ्लेक्स, पूंकुलम, तिरुवनंतपुरम-695 522

दिनांक 20-9-2010 से 1-10-10 तक हिंदी पक्ष का आयोजन किया गया ।

समापन समारोह तारीख 01-10-2010 को संपन्न हुआ । डॉ. वी एम गोपाला मेनोन, निदेशक महोदय ने

अध्यक्षता की । अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि हिंदी टंकण में कठिनाई के बावजूद राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में जनगणना कार्य निदेशालय, केरल महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ पा रहा है । संसदीय राजभाषा समिति की पहली उपसमिति के माननीय संयोजक एवं महारजिस्ट्रार महोदय से प्राप्त अभिनन्दन पर ध्यान दिलाया । राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में जनगणना कार्य निदेशालय, केरल को जो महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है उसके लिए हिंदी अनुभाग विशेष कर श्री एन.मुरलीधरन नायर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक के सर्वोच्च योगदान, निर्व्याज प्रयत्न और निष्ठावत् सेवा की उन्होंने सराहना की ।

श्रीमती पी.गिरीजा, संयुक्त निदेशक ने अपने भाषण में पूर्ववर्ती कुछ मामलों की याद करते हुए आशा प्रकट की कि निदेशक के चतुर दिशानिर्देश और हिंदी अनुभाग के ईमानदार प्रयत्न से जनगणना कार्य निदेशालय, केरल अधिकाधिक उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकेंगे ।

श्री फ्रांसिस के मेनुवल, उप निदेशक ने टिप्पण, आलेखन और हिंदी पत्राचार बढ़ाने के विभिन्न तरीकों पर प्रकाश डाला । उन्होंने सूचित किया कि केवल जनगणना कार्य निदेशालय, केरल पिछले 15 वर्षों से बिना चूक हिंदी पक्ष के समापन समारोह में हिंदी पत्रिका 'केरल श्री' का विमोचन कर रहा है ।

ऐसी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए उन्होंने हिंदी कर्मियों की प्रशंसा की ।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी छात्र-छात्राओं को निदेशक महोदय ने नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए । अधिक अंक प्राप्त करने वाली संस्था सरकारी महिला कॉलेज को ट्रॉफी दी गई । कर्मचारियों ने भी निदेशक जी से पुरस्कार स्वीकार किए । हिंदी प्रोत्साहन योजना के अधीन दिए जा रहे पुरस्कार भी दिये गए । राजभाषा जानकारी कक्षा में भाग लिए अधिकारियों के लिए भी प्रमाणपत्र प्रदान किए गए ।

श्री जेजी माथ्यू, कनिष्ठ अनुवादक ने स्वागत किया । इस वर्ष के हिंदी पक्ष की महत्वपूर्ण सफलता पर सभी को हार्दिक धन्यवाद अदा करते हुए श्री एन. मुरलीधरन नायर

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने राजभाषा नीति के समुचित कार्यान्वयन के लिए निदेशक महोदय से प्राप्त निरूपण व निसीम प्रोत्साहन के लिए अपना आभार व्यक्त किया।

ज्वार अनुसंधान निदेशालय, राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030

ज्वार अनुसंधान निदेशालय में 14 सितंबर 2010 को निदेशालय के प्रभारी निदेशक, डॉ. एस वी राव के द्वारा हिंदी सप्ताह समारोह का उद्घाटन किया गया। इस सप्ताह के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी में हस्ताक्षर करके कार्यक्रम को सफल बनाया। इस समारोह के दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे—छोटे शब्दों एवं पदों का हिंदी में अनुवाद, प्रश्न-मंच, श्रुत-लेखन (शुद्ध लेखन), स्मरण शक्ति परीक्षण, आशु-भाषण, हिंदी पाठ का वाचन तथा निदेशालय में संचालित अनुसंधान आधारित विषयों पर हिंदी में पोस्टर प्रस्तुतीकरण का आयोजन किया गया, जिसमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया।

निदेशालय के ज्वार सभागार में 21 सितंबर 2010 को उक्त समारोह के समापन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. जे वी पाटील, निदेशक, ज्वार अनुसंधान निदेशालय ने मुख्य अतिथि के रूप में पदार्पण, प्रो. एम वेंकटेश्वर, अध्यक्ष, हिंदी एवं भारत अध्ययन विभाग, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। तत्पश्चात् डॉ. जे एस मिश्र ने संस्थान में हिंदी कार्यान्वयन संबंधी प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा हिंदी कार्यान्वयन में सहयोग देने के लिए निदेशालय में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। डॉ. महेश कुमार ने हिंदी दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला तथा हिंदी सप्ताह समारोह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

प्रो. एम वेंकटेश्वर ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए तथा डॉ. जे वी पाटील ने प्रतियोगिता के अन्य सहभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए। तत्पश्चात् प्रो. एम वेंकटेश्वर ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा

ही नहीं है अपितु वह हमारे देश में संपर्क भाषा का दायित्व भी निभा रही है और संपर्क भाषा वही बन सकती है जो देश के जन-सामान्य में अत्यधिक प्रचलित हो। अतः हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम राजभाषा हिंदी में कार्य करें, और इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा का माध्यम हिंदी किया जाए। उन्होंने यह भी बताया कि अंग्रेजी के हौवे के कारण ही आज भारतीय भाषाएं जूझ रही हैं। अतः हमें इस विदेशी पोशाक को उतार कर हिंदी में कार्य करना होगा। तत्पश्चात् डॉ. जे वी पाटील ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक दायित्व है, अतः हमें उसमें कार्य करने में झिझक महसूस नहीं करनी चाहिए। मैं भी लघु टिप्पणियों हेतु हिंदी का ही प्रयोग कर रहा हूँ तथा आपके द्वारा भी अपने नेमी कार्यों में हिंदी का प्रयोग करना अत्यावश्यक है ताकि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। निदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से निदेशक महोदय ने कुछ नकद पुरस्कार प्रदान किए जाने की भी घोषणा की है। अंत में इस पूरे कार्यक्रम का संचालन कर रहे डॉ. महेश कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन तथा सामूहिक रूप से राष्ट्रगान के पश्चात् समारोह का समापन हुआ।

आकाशवाणी-हैदराबाद

आकाशवाणी, हैदराबाद में दि. 14-09-2010 को हिंदी दिवस और दि. 14-09-2010 से 30-09-2010 तक हिंदी पखवाड़ा बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

दिनांक 14-09-2010 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

पखवाड़े के दौरान 15 और 16-09-2010 को अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दो-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के स्थानीय हिंदी शिक्षण योजना से दि. 15-09-2010 को श्रीमती सुरभी, सहायक निदेशक तथा दि. 16-09-2010 को श्री मोहम्मद कमालुद्दीन वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापक वक्ताओं ने भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियम एवं नियमों आदि पर जानकारी दी तथा हिंदी में टिप्पण एवं मसौदा-लेखन, प्रशासनिक शब्दावली, हिंदी वर्तनी आदि पर व्याख्यान दिए तथा अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा व्यावहारिक अभ्यास कराया गया। कार्यशाला में

आकाशवाणी, हैदराबाद के साथ-साथ कार्यालय के भवन में स्थित आकाशवाणी के अन्य कार्यालय जैसे विज्ञापन प्रसारण सेवा, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान (कार्यक्रम), विपणन प्रभाग कार्यालयों के कुल मिला कर 26 अधिकारियों/कर्मचारियों ने सक्रिय भाग लिया।

अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरुचि जागृत करने तथा उन्हें प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आकाशवाणी महानिदेशालय के निदेशानुसार पखवाड़े के दौरान कुल सात हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं।

दिनांक 30-09-2010 को प्रातः 11.30 बजे हिन्दी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। श्री के.पी. श्रीनिवासन, केंद्र निदेशक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी और हर्ष व्यक्त किया कि सभी कर्मचारियों ने प्रतियोगिताओं में दिलचस्पी से भाग लिया तथा यह आशा व्यक्त की कि भविष्य में और अधिक संख्या में कर्मचारी प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे। श्री एस.सुब्बा रेड्डी, अधीक्षण अभियंता ने हिन्दी प्रतियोगिताओं में विजयी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि हम सबको मिल कर कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु भरसक प्रयास करना चाहिए। इसके बाद केंद्र निदेशक ने हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को तथा हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा आयोजित "टंकण परीक्षा" में उत्तीर्ण कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती यू. गायत्री देवी, हिन्दी अधिकारी ने श्री डी.के.एस. रेड्डी, हिन्दी अनुवादक के सहयोग से किया।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, द्वितीय तल, पदमानाभा बिल्डिंग्स, 14-20-27, गांधी नगर, विजयवाड़ा-520 003

दिनांक 1-09-2010 से 14-09-2010 तक हिन्दी पखवाड़ा/हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया। इस दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के संबंध में परिपत्र जारी कर उप क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा और अधीनस्थ कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों

को प्रतियोगिताओं में भाग लेने के साथ इस दौरान ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी में करने का अनुरोध किया गया।

कार्यालय के द्वितीय और चतुर्थ तलों पर हिन्दी पखवाड़े से संबंधित बैनर लगवाए गए। दिनांक 02-09-10 को हिन्दी निबंध, दिनांक 06-09-10 को हिन्दी वाक्, दिनांक 07-09-10 को हिन्दी टिप्पण-आलेखन एवं दिनांक 08-09-10 को हिन्दी अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इन प्रतियोगिताओं में अधिकारियों और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री आर. एस. राव, निदेशक ने कहा कि हम कार्यालय में हिन्दी के विकास के लिए लगातार अग्रसर हैं। कर्मचारियों को रोस्टरबद्ध तरीके से प्रशिक्षण प्रदान करवाकर, सभी कंप्यूटरों में हिन्दी फॉन्टों विशेषकर यूनिकोड का प्रयोग कर, धारा 3(3) के अधीन सभी प्रलेखों को द्विभाषी रूप में जारी कर हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि वार्षिक कार्यक्रम 2010-11 में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से विशेषकर उनसे जो हिन्दी में प्रशिक्षित हैं या प्रशिक्षणाधीन हैं, अनुरोध किया कि वे ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी में करें ताकि उनको प्रदान कराए जाने वाले प्रशिक्षण का उद्देश्य सफल हो सके।

तदुपरान्त पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि, महोदय और अन्य मंचासीन अधिकारियों द्वारा नकद पुरस्कार भेंट किए गए। साथ ही उन अधिकारियों और कर्मचारियों को जिन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया मगर कोई पुरस्कार प्राप्त नहीं कर सके, उन्हें प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में हिन्दी पुस्तकें भेंट की गईं।

मुख्य अतिथि महोदय ने अपने भाषण में कहा कि हिन्दी विश्व में चीनी भाषा के बाद सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा है और इसका प्रचार-प्रसार बढ़ता ही जा रहा है। आज किसी भी क्षेत्र में हिन्दी की उपयोगिता और महत्ता से इंकार नहीं किया जा सकता और इसलिए संयुक्त राष्ट्र संघ की शासकीय भाषा के रूप में मान्यता दिलवाकर हिन्दी को एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

दक्षिण मध्य रेलवे, प्रधान कार्यालय, सिकंदराबाद

दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्यालय में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 13-09-2010 से 17-09-2010 तक राजभाषा सप्ताह मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

राजभाषा सप्ताह का मुख्य समारोह 'हिंदी दिवस' के अवसर पर दिनांक 14-09-2009 को भव्य रूप से मनाया गया। मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री महेश चंद्र ने अपने संबोधन में 14 सितंबर 'हिंदी दिवस' के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि इसी दिन हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को केंद्र सरकार की राजभाषा के रूप में चुना था और यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि हम सबको अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अधिकाधिक बढ़ाना है। इसके बाद मुख्य अतिथि तथा महाप्रबंधक श्री एम.एस. जयन्त द्वारा राजभाषा संगठन की गृह पत्रिका 'रेल सुधा' का विमोचन किया गया। जिसमें छपी रचनाओं से रेलवे अधिकारियों और कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा उजागर होती है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि 'ग' क्षेत्र होने के बाद बावजूद इस रेलवे पर राजभाषा का कार्यान्वयन काफी अच्छा हो रहा है। हिंदी नाटकों का मंचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, हिंदी में संगोष्ठियां, कार्यशालाएं आदि के जरिए यहां पर हिंदी का अनुकूल वातावरण बना है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इन कार्यक्रमों से प्रेरित होकर हमारे अधिकारी व कर्मचारी अपना अधिकाधिक काम हिंदी में करेंगे। उन्होंने अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील की कि वे अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें। अपर महाप्रबंधक ने पुरस्कार विजेताओं तथा कार्यक्रम के सुंदर आयोजन के लिए राजभाषा संगठन को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि आगे भी राजभाषा के कार्यान्वयन में यह रेलवे हमेशा आगे रहेगी।

**क्षेत्रीय कार्यालय (केरल) कर्मचारी राज्य बीमा
निगम, पंचदीप भवन, उत्तरी राउंड, तृशूर-20**

कर्मचारी राज्य बीमा निगम तृशूर में दिनांक 01-09-2010 से 14-09-2010 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान कार्यालय में कुल चार

प्रतियोगिताएं क्रमशः- 1. हिंदी निबंध प्रतियोगिता, 2. हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, 3. हिंदी वाक् प्रतियोगिता और 4. हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पखवाड़े का समापन हिंदी दिवस समारोह के साथ दिनांक 17-09-2010 को संपन्न हुआ। स्वागत प्रस्तावोंपरांत मुख्य अतिथि महोदय द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ समारोह का उद्घाटन किया गया। अध्यक्ष महोदय समेत मंचासीन सभी अधिकारियों ने भी दीप प्रज्ज्वलन में साथ दिया।

मुख्य अतिथि महोदय श्रीमती सी. मेदिनी, सहायक राजभाषा अधिकारी बी.एस.एन.एल. ने अपने संदेश में कहा कि सरल एवं संपन्न भाषा होने के कारण ही हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकृति मिली। यह सरल है इसीलिए संपर्क भाषा भी है। सरकार की राजभाषा नीति व नियम अधिनियम को भी जानना जरूरी है ताकि इसका अनुपालन सही रूप में हो सके। अंग्रेजी अपनी भाषा न होकर भी हम उसे सहजता के साथ स्वीकार करते हैं जबकि हिंदी अपनी भाषा होकर भी इसे अपनाने में हमें हिचकिचाहट होती है। इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि तैराकी अभ्यास के द्वारा ही पदक पाता है उसी प्रकार हम भी अभ्यास एवं प्रयोग से हिंदी को हासिल कर सकते हैं।

अपर आयुक्त व क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिंदी सरल, सहज एवं जनमानस की भाषा है इसलिए गांधीजी ने भी हिंदी को अपनाया और इसे ही जनमानस तक पहुंचने का माध्यम बनाया। उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग में अभी बहुत सुधार लाने की आवश्यकता है। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत हम कार्य कर रहे हैं और इसमें कर्मचारी राज्य बीमा निगम किसी भी तरह से पीछे नहीं है फिर भी आगे बढ़ने के लिए सबका सहयोग की आवश्यकता है। उन्होंने सभी से हिंदी में नाम लिखने व हस्ताक्षर करने का आग्रह भी किया।

**कयर बोर्ड, कयर हाउस, एम. जी. रोड,
कोच्ची -682016**

कयर बोर्ड, काच्ची में सितंबर 01-9-2010 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह समुचित रूप से मनाया गया।

दि. 01 सितंबर, 2010 को बोर्ड के संयुक्त सचिव श्री पी सी आन्टनल वाज ने समारोह का उद्घाटन किया। इस दौरान हिंदी हस्ताक्षर, सुलेख प्रशासनिक शब्दावली तथा शब्दशक्ति, टिप्पण व आलेखन, अनुवाद, समाचार वाचन, वार्तालाप, हिंदी गीत, प्रश्नोत्तरी और पॉवरपॉइंट प्रस्तुतीकरण आदि विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

22 सितंबर, 2010 को सीसीआरआई, एनसीटी व डीसी, हिंदुस्तान कयर, सीएमएस और शोरूम तिरुवनंतपुरम के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला भी आयोजित की। उसी दिन शाम को हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक, आर डी टी ई द्वारा नकद पुरस्कार वितरित किए गए।

**मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, प्रथम तल,
आयकर भवन, क्रिश्चियन बस्ती, जी. एस.
रोड, गुवाहाटी - 781005**

मुख्य आयकर आयुक्त (संवर्ग नियंत्रण प्राधिकारी) कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र गुवाहाटी में 14-09-2010 को संयुक्त रूप से हिंदी दिवस समारोह मनाया गया जिसका उद्घाटन श्री टी. एम. दास, भा. रा. से., आयकर निदेशक (अन्वेषण), पूर्वोत्तर क्षेत्र, गुवाहाटी के कर कमलों से पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलित कर के संपन्न हुआ।

अधिकारियों तथा कर्मचारियों के बीच मूल रूप से हिंदी में काम करने की भावना विकसित करने तथा उन्हें प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 14 सितंबर से 17 सितंबर, 2010 तक कविता पाठ, सुलेख, हिंदी निबंध, टिप्पणी एवं मसौदा लेखन, अनुवाद एवं कार्यालयीन हिंदी तथा आशुभाषण प्रतियोगिताओं सहित कुल 6 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और विशेष पुरस्कार स्वरूप नगद पुरस्कार प्रदान किया।

पुरस्कार वितरण के अंत में अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री पी. के. राय, भा. रा. से., मुख्य आयकर आयुक्त, पूर्वोत्तर क्षेत्र, गुवाहाटी ने राजभाषा हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम अपने कार्यालय के फाइलों और जारी किए जाने वाले पत्र आदि में हिंदी में छोटे-छोटे टिप्पणी लिखकर या हिंदी में हस्ताक्षर करके हिंदी प्रयोग के साथ-साथ

पत्राचार को भी बढ़ा सकते हैं। उन्होंने आयकर अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपने अपने कार्यालय के प्रशासन से संबंधित कार्य यथासंभव हिंदी में करने का आग्रह करते हुए कहा कि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2010-11 में निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु आयकर विभाग के अधिकारीगण यथोचित कदम उठाएं ताकि राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाई जा सके।

**एन. टी. पी. सी. लि., कनिहा,
जिला : अंगुल-759147**

एनटीपीसी लिमिटेड की द्वितीय विशालतम विद्युत परियोजना कनिहा (ओडिशा) में 14 सितंबर, 2010 को 'हिंदी दिवस समारोह' का आयोजन किया गया। परियोजना प्रभारी एवं कार्यकारी निदेशक श्री आर. वेंकटेश्वरन महोदय ने समारोह की अध्यक्षता की।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री आर. वेंकटेश्वरन महोदय ने कर्मचारियों तथा इनके परिजनों को संबोधित करते हुए कहा कि सामान्य वार्तालाप में हम हर पल हिंदी का प्रयोग करते हैं और संप्रेषण सेतु के रूप में हिंदी अहम भूमिका निभा रही है। कार्यालयीन गतिविधियों में हिंदी के प्रयोग को गति प्रदान करने के लिए हमें मिलजुलकर कार्य करना है।

आकाशवाणी - इम्फाल

गत वर्षों के भाँति इस वर्ष भी 14 से 29 सितंबर 2010 तक इस केंद्र में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया है। इस पखवाड़ा के प्रारम्भ होने से पूर्व केंद्राध्यक्ष अधीक्षण अभियंता मु. खमरूद्दीन ने कर्मचारियों को अपील करते हुए कहा कि हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि हिंदी के प्रति सेवा तथा सम्मान प्रदान कर राष्ट्र प्रेम की भावना को सुदृढ़ करना है।

इस पखवाड़ा में चार प्रतियोगिताएँ रखी गयी हैं। ये प्रतियोगिताएँ पखवाड़े के अलग-अलग दिनों में आयोजित किया गया। इसी पखवाड़ा के दौरान एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

23 सितंबर, 2010 को इस कार्यालय में एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। "राजभाषा अधिनियम

-कार्यालयी कार्यों में इस का प्रयोग" विषय पर हिंदी प्रध्यापक श्री राजकुमार बाल्मीकि द्वारा कार्यालय के कर्मचारियों को अच्छी तरह से समझाया। इसमें कार्यालय के अधिकांश कर्मचारियों ने लाभ उठाये थे।

पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विभिन्न विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस साल आकाशवाणी के सभी केंद्रों में समान रूप से पुरस्कार राशि प्रदान किया गया।

कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम - 788802

हिंदुस्तान पेपर कॉर्पोरेशन लिमिटेड की अनुषंगी कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम में पूरे सितंबर माह को "हिंदी माह समारोह" के रूप में मनाया गया। 01 सितंबर, 2010 को मिल के निगम मुख्यालय कोलकाता के प्रभारी अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री शुभेन्द्र नाथ भट्टाचार्य का राजभाषा से संबंधित संदेश का वितरण किया गया। तत्पश्चात् विभिन्न दिवसों में मिल के कर्मचारियों के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। केंद्रीय विद्यालय के बच्चों तथा केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के कार्मिकों के लिए भी विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

14 सितंबर को "हिंदी दिवस-सह-पुरस्कार वितरण समारोह" का आयोजन प्रशासनिक भवन स्थित प्रशिक्षण केंद्र में किया गया। मिल के महाप्रबंधक प्रचालन और अनुरक्षण श्री टी आर गौड़ा ने उद्घाटन भाषण में शुभकामनाएं व्यक्त की।

**पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इण्डिया लि.
उत्तरी क्षेत्र पारेषण प्रणाली - ओ.बी-26,
ग्रिड भवन, रेल हैड कम्प्लेक्स, जम्मू-180012**

क्षेत्रीय मुख्यालय जम्मू तथा इसके अधीनस्थ विभिन्न स्थल कार्यालयों एवं उप केंद्रों में दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2010 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय मुख्यालय, जम्मू में हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन श्री जगमोहन शर्मा, महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) एवं श्री सुदेश कुमार शर्मा, महाप्रबंधक (परियोजना) एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया गया।

अपने संक्षिप्त भाषण में इस अवसर पर सभी वक्ताओं ने पावरग्रिड में हिंदी में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह क्षेत्रीय मुख्यालय, हिंदीतर भाषी क्षेत्र में होते हुए भी यहां पर हिंदी का प्रचार एवं प्रसार किया जा रहा है। हिंदी पत्राचार को बढ़ाने के लिए सभी कंप्यूटरों में हिंदी में काम करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है और लगभग सभी विभागों के कर्मचारियों को कंप्यूटरों संबंधी आवश्यक प्रशिक्षण दिलाया गया है एवं सभी कर्मचारी अधिक से अधिक हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किए जा रहे हैं।

क्षेत्रीय मुख्यालय, जम्मू में हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कर्मचारियों, उनके बच्चों एवं उनके परिवारजनों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। दिनांक 28 सितंबर, 2010 को हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर श्री जगमोहन शर्मा, महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण), श्री अश्वनी कुमार श्रीवास्तव, अपर महाप्रबंधक (अभियांत्रिकी), श्री स्टैनली मैथ्यूज, मुख्य प्रबंधक (मानव संसाधन) एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा लगभग 53 विजेता प्रतिभागियों को आकर्षक पुरस्कार दिए गए एवं 5 निर्णायक मण्डल के सदस्यों को भी स्मृति चिन्ह भेंट किए गए।

मुख्य अभियंता का कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र) आकाशवाणी और दूरदर्शन आकाशवाणी भवन, कोलकाता-700001

मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता के कार्यालय में दिनांक 01.09.2010 से 15.09.2010 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया।

अध्यक्ष महोदय श्री एस. आर. एम. शास्त्री, मुख्य अभियंता (परियोजना) ने अपना भाषण प्रदान किया। उन्होंने कहा कि "कार्यालय में पखवाड़ा उत्साहपूर्वक मनाया गया, यह खुशी की बात है। सारे वर्ष के दौरान भी हिंदी में कामकाजों को उत्साह सहित करना चाहिए ताकि हिंदी के प्रचार-प्रसार को अग्रगति मिल सके।" इसके बाद श्री वेद प्रकाश, निदेशक अभियांत्रिकी एवं कार्यालय अध्यक्ष ने कहा कि "हिंदी पखवाड़ा सफलतापूर्वक मनाने के बाद में यह आशा करूंगा कि पूरे वर्ष में सभी कर्मचारी हिंदी के कार्यों को रूचिपूर्वक करेंगे और अगली बार ज्यादा से ज्यादा

कर्मचारी इस पखवाड़ा में हिस्सा लेंगे तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाएंगे।" इसके बाद श्री पी. के. सिंह, उप निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग, कोलकाता ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना अभिभाषण प्रदान किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने हिंदी दिवस के महत्व पर आलोकपात करते हुए कहा कि "हिंदी दिलों को जोड़ने वाली भाषा है। यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान है। हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु सिर्फ हिंदी अनुभाग ही नहीं बल्कि सभी कर्मचारियों का यह परम कर्तव्य है कि वे इसके प्रचार-प्रसार हेतु डटकर कार्य करें तथा कंप्यूटर का भी प्रयोग अधिकता से करें क्योंकि इससे सहज और सरल भाषा हो ही नहीं सकती। अतः हिंदी का प्रयोग कार्यालय के मामलों में बहुतायत से होना चाहिए।"

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम प्लॉट नं. एच आई जी-3, गंगाधर मेहर नगर जयदेव विहार, भुवनेश्वर-13

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, भुवनेश्वर में दिनांक 01 से 14 सितंबर, 2010 तक राजभाषा पखवाड़ा तथा 14 सितंबर 2010 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. पी. के. सिन्हा, राज्य चिकित्सा आयुक्त ने उपस्थित श्रोताओं का उद्बोधन करते हुए कहा कि "हिंदी हमारी अपनी भाषा है। उसके प्रसार के लिए श्रद्धा और प्रेम की आवश्यकता है हिंदी भाषा को बोलिए, इसको बढ़ावा दीजिए, इसका प्रयोग करिए।"

श्री ए. एस. मीरान, क्षेत्रीय निदेशक ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी तथा अपने अध्यक्षीय मंतव्य में कहा कि "यदि हम हिंदी में काम नहीं करते हैं तो हर पखवाड़े के दौरान हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित करना तथा वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। कार्यालय में टिप्पण एवं आलेखन में हिंदी का अधिक प्रयोग किया जाए। हिंदी की मूलपत्राचार की प्रतिशतता को बढ़ाने का हर संभव प्रयास करने के लिए उन्होंने सभी से अपील की।"

कार्यक्रम के संचालक, श्री जे. प्रसाद, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने समारोह की रूपरेखा एवं राजभाषा हिंदी का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा कि "हिंदी का

भविष्य उज्ज्वल है और यह भूमंडलीकरण के इस दौर में अपनी बदली हुई भूमिका के निर्वहन में पूरी तरह सक्षम है। अब यह केवल भारतवर्ष तक ही सीमित नहीं है अपितु पूरे विश्व में अपना परचम लहरा रही है।"

हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि महोदय ने विजेताओं को नकद पुरस्कार, प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

आकाशवाणी, कोलकाता

केंद्र निदेशक का कार्यालय, आकाशवाणी, कोलकाता, उप महानिदेशक (पूर्वी क्षेत्र) का कार्यालय तथा विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी कोलकाता केंद्र के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 01-09-2010 से 14-09-2010 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 01-09-2010 को केंद्र के युवावाणी हॉल में इसका विधिवत् उद्घाटन किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध, तात्कालिक भाषण, हिंदी श्रुतिलेखन, हिंदी कविता पाठ तथा टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इसके अतिरिक्त वित्त वर्ष 2009-10 के दौरान सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए पात्र कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र दिए गए। समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री चन्द्र गोपाल शर्मा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पूर्व रेलवे, कोलकाता ने हिंदी का महत्व प्रतिपादित किया। उप महानिदेशक (प्रभारी) तथा केंद्र निदेशक श्री प्रदीप कुमार मित्र ने सरल हिंदी के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी सरल भाषा है, हमें हिंदी में काम करके राष्ट्रभाषा का गौरव बढ़ाना चाहिए। उप महानिदेशक (पूर्वी क्षेत्र), कार्यालय के श्री श्रीकुमार चक्रवर्ती, सहायक केंद्र निदेशक ने कहा कि हिंदी हम सबकी भाषा है। हमें कार्यालय के काम काज में हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। विज्ञापन प्रसारण सेवा आकाशवाणी, कोलकाता केंद्र के सहायक केंद्र निदेशक श्री अमल कुमार मण्डल ने कहा कि हिंदी संघ की राजभाषा है। इसके प्रगामी प्रयोग के निमित्त हमें प्रत्यनशील रहना चाहिए।

**क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
पंचदीप भवन, 5/1, ग्रांट लेन,
कोलकाता - 700012**

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कोलकाता में राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह सह हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। सर्वप्रथम दिनांक 01 सितंबर, 2010 से 14 सितंबर, 2010 को राजभाषा पखवाड़ा के रूप में मनाया गया।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पखवाड़ा के दौरान चार हिंदी प्रतियोगिता क्रमशः हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाक् प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता एवं हिंदी अन्ताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन सभा प्रतियोगिताओं में क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मचारियों के अतिरिक्त क्षेत्रीय कार्यालय के नियंत्रणाधीन विभिन्न शाखा कार्यालय के कर्मचारियों ने भी बहुत ही उत्साह के साथ भाग लिया।

दिनांक 14-09-2009 को क्षेत्रीय कार्यालय के भू-तल पर राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह सह हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री जी. सी. जेना, अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक ने कहा कि हमें चाहिए कि हम योजना के प्रचार-प्रसार एवं लाभार्थियों से संवाद आदि प्रमुखता से हिंदी में करें। उन्होंने कहा कि उनकी मातृभाषा भी उड़िया होने के बावजूद भी उन्होंने हमेशा हिंदी में काम करने का प्रयास करते रहें हैं। यही कारण है कि आज वे भले ही पूर्ण रूप से न सही लेकिन काफी हद तक हिंदी में काम आसानी से कर लेते हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी में काम करना हम सबका न सिर्फ नैतिक दायित्व बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है।

मुख्य अतिथि श्री हरि राम पांडेय, ने अपने संबोधन में बताया कि हिंदी को बहुत ही सहज सरल एवं बोधगम्य बताया। उन्होंने कहा कि आज हिंदी न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व के कई देशों में प्रमुखता से बोली जाती है। श्री पांडेय ने कहा कि हमारा पड़ोसी देश बंगलादेश में सारा काम-काज बंगला में होता है तो फिर हमारे देश में हिंदी में सारा काम-काज क्यों नहीं हो सकता है? उन्होंने सभी से हिंदी में काम करना शुरू करने की अपील की। श्री पांडेय ने कहा कि हिंदी भाषा की सरलता एवं सुंदरता का आभास

तभी होगा जब आप सभी एक बार हिंदी भाषा में काम करने के लिए समर्पित हो जाएंगे।

आकाशवाणी - गान्तोक

आकाशवाणी गान्तोक में हिंदी पखवाड़ा धूमधाम से मनाया गया। पहली सितंबर से चौदह सितंबर यानी हिंदी दिवस तक आयोजित पखवाड़े के दौरान हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं में कार्यालय प्रमुख सहित प्रायः सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। आशु कविता पाठ, नारा लेखन आशु-भाषण टिप्पणी लेखन, अनुवाद और अन्ताक्षरी प्रतियोगिताओं में हिंदीतर और हिंदी वर्ग के कर्मचारियों की भागीदारी उत्साहजनक थी।

14 सितंबर, हिंदी दिवस के अवसर पर पखवाड़े का समापन, पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। समारोह के आरंभ में कार्यालय प्रमुख श्री जीतेन कुमार राय ने उपस्थित लोगों का स्वागत करने के साथ ही हिंदी दिवस के अवसर पर आकाशवाणी की महानिदेशक सुश्री नोरीन नक्वी का संदेश पढ़कर सुनाया। इसके बाद विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार श्रीमती सन्तोष निराश ने पुरस्कार वितरित किया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले सहभागियों के अतिरिक्त उन कर्मचारियों जिन्होंने जोश और उत्साह के साथ प्रतियोगिता में भाग लिया को भी सान्त्वना पुरस्कार दिया गया।

**बोंगाइगांव रिफाइनरी, डा. धालीगांव-783385
जिला-चिराग (असम)**

आईओसीएल, बोंगाइगाँव रिफाइनरी में दिनांक 20 सितंबर, 2010 को राजभाषा पखवाड़े का मुख्य समारोह बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में श्री एच सी विश्वकर्मा, कार्यवाहक कार्यकारी निदेशक, बोंगाइगाँव रिफाइनरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष श्री एच सी विश्वकर्मा, कार्यवाहक कार्यकारी निदेशक, बोंगाइगाँव रिफाइनरी ने अपने भाषण में सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि 14 सितंबर, 1949 को देश की राजभाषा के रूप में हिंदी को देश के संविधान में प्रतिष्ठित किया गया। इसके पीछे ऐसे बहुत से कारण हैं, जिन पर चिंतन करना आज के वातावरण में बहुत आवश्यक हो गया है। सबसे बड़ा कारण तो यह रहा है कि देश को देश की भाषा में अपने बल-बूते

पर विकसित किया जाए। राष्ट्र के विकास के लिए देश के प्रत्येक नागरिक के योगदान को सुनिश्चित किया जाए। देश के हर कोने में दबी प्रखर बुद्धि को उभारा जाए और देश का नव-निर्माण किया जाए। ताकि सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाने वाला देश पुनः अपने नाम को हासिल कर सके। उन्होंने कर्मचारियों द्वारा आयोजित सभी कार्यक्रमों में बड़े उत्साह से भाग लेने और अच्छा प्रदर्शन करने पर खुशी जाहिर की तथा आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतियोगियों को बहुत-बहुत बधाई दी। श्री विश्वकर्मा ने वर्ष 2009-10 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले रिफाइनरी के "फायर एण्ड सेफ्टी" और "मेन्टेनेन्स" विभागों को प्रथम व द्वितीय चल-शील्ड से पुरस्कृत किया तथा वर्ष के दौरान हिंदी परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले अपने कर्मचारियों को भी बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि वे रिफाइनरी के कार्यों को राजभाषा में करने में अपना योगदान देंगे।

‘ख’ क्षेत्र

आकाशवाणी-नागपुर

14 सितंबर, 2010 को हिंदी दिवस मनाया गया तथा 15 से 30 सितंबर, 2010 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितंबर को कार्यालय प्रमुख श्री संजय एम. बोदले ने अपने अभिभाषण में कहा कि, राजभाषा हिंदी के प्रति सोच बदलने की जरूरत है क्योंकि हिंदी एक सरल भाषा है जिसे हम आसानी से बोल व लिख सकते हैं। हिंदी में कार्य करने वालों के प्रति नजरिया बदलने की जरूरत है क्योंकि ज्यादातर लोग यह समझते हैं कि जिन्हें अंग्रेजी नहीं आती वे ही हिंदी में कार्यालयीन कार्य करते हैं और उन्होंने कहा कि, हिंदी पखवाड़े के दौरान ही ज्यादा काम-काज हिंदी में किया जाता है लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए, हमें पूरे साल भर हिंदी में कार्यालयीन कार्य करना है।

मुख्य अभियंता (पक्षे) का कार्यालय

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन मुंबई-400020

मुख्य अभियंता (पक्षे) का कार्यालय, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, मुंबई में दिनांक 14-09-2010 से 29-09-10 तक "हिंदी पखवाड़ा" मनाया गया। इस संदर्भ में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन, टिप्पण

एवं आलेखन, आशुभाषण, शुद्धलेखन, टंकण, शब्दावली, कविता पाठ, वाचन, प्रश्न मंच, मल्टी टास्क कर्मचारियों के लिए सापान्य ज्ञान आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 05-10-10 को आयोजित किया गया था। इस समापन समारोह के लिए दूरदर्शन केंद्र, मुंबई के निदेशक श्री लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था और उनके कर कमलों से विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

श्री जयप्रकाश बाबू, निदेशक (अभि.) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "हम सभी को देश की एक भाषा को अपनाना चाहिए और वह भाषा है हिंदी। हिंदी में यदि हम मन लगाकर कार्य करते हैं तो उसमें आनंद आता है। अतः आप सभी दिल से हिंदी में कार्य करें।" श्री सी. के. ओमप्रकाश, निदेशक (अभि./प्रशा.) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "इस पखवाड़े के दौरान कार्यालय में बहुत सारी गतिविधियाँ हुई हैं। विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पखवाड़े की गतिविधियाँ यही संकेत देती हैं कि राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए हम कितने उत्सुक हैं। किंतु यह उत्सुकता इस पखवाड़े तक ही सीमित न रखकर आगे भी बढ़ानी चाहिए। हर पखवाड़े में हमें यह सोचना चाहिए कि उस अवधि में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए हमने क्या किया और उपलब्धि क्या है? तभी राजभाषा हिंदी को बढ़ावा मिल सकता है।"

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा, निदेशक, दूरदर्शन केंद्र, मुंबई ने कहा कि सबसे पहले बात यह है कि हिंदी के विकास में, प्रगति में सबसे ज्यादा अहिंदी भाषियों का योगदान महत्वपूर्ण है। मैं यह मानकर चलता हूँ प्रत्येक भाषा बहुत महत्वपूर्ण है और किसी भी देश को जानने के लिए, संस्कृति को जानने के लिए वह एक खिड़की की तरह काम करती है और अहिंदी भाषी विशेष रूप से भाग्यशाली होते हैं उन्हें मातृभाषा के अतिरिक्त एक दूसरी भाषा भी प्राप्त होती है। जहाँ तक राजभाषा हिंदी का सवाल है, हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा मिला है। हमारे देश में एक राष्ट्रीय ध्वज है, एक राष्ट्रीय गीत है, एक राष्ट्रीय पक्षी है और एक राष्ट्रीय पशु भी है। ये सभी राष्ट्रीय अस्मिता के साथ जुड़े हुए कुछ चिह्न होते हैं जो हमेशा काम आते हैं। हिंदी का हमारे समाज में, हमारे देश में महत्वपूर्ण स्थान है।

कार्यालय, वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.)
लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी,
खड्की, पुणे-411003

लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे में दिनांक 01-09-2010 से 14-09-2010 के दौरान हिंदी पखवाड़ा बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। राजभाषा के प्रसार के उद्देश्य से इस दौरान (i) हिंदी निबंध प्रतियोगिता (ii) हिंदी टिप्पण/प्रारूप लेखन तथा अनुवाद प्रतियोगिता और (iii) हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता, इन 03 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

दिनांक 14-9-2010 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का शुभारंभ श्री दिनेश चंद्र सिंह नेगी, भा.र.ले.से., वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.) केजीएफ के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करते हुए किया गया। इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल 26 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

नियंत्रक महोदय ने अपने भाषण में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने की तथा राजभाषा अधिनियम/नियमों के अनुपालन हेतु अपील की। उन्होंने कहा कि कार्यालय के सभी कंप्यूटरों पर द्विभाषी सुविधा उपलब्ध कराई गई है और संबंधित अनुभाग के कंप्यूटर में हिंदी में अनुदित प्रोफार्म लोड किए हैं। हिंदी पत्राचार तथा अन्य अधिकांश मदों के बारे में वार्षिक कार्यक्रम में उल्लिखित लक्ष्य प्राप्त करते हुए सराहनीय कार्य इस कार्यालय द्वारा किया जा रहा है। प्रधान कार्यालय कोलकाता द्वारा भी राजभाषा से संबंधित कार्यों के लिए सराहना की जाती रही है। इसे बनाएं रखें।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
दाबोलिम हवाई अड्डा, गोवा

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा द्वारा 14 से 30 सितंबर, 2010 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान भाषण, निबंध, टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन, टंकण, अनुवाद एवं श्रुतलेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें भा वि प्रा, गोवा के अधिकांश अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

14 सितंबर, 2010 को प्रातः 10.00 बजे हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। उसी दिन हिंदी

दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम, श्री इन्ताज अली, पर्यवक्षक (राजभाषा) द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। समारोह में भा वि प्रा एवं सी आई एस एफ के अधिकांश अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। मंच पर विराजमान गणमान्य अतिथियों/अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर समारोह का औपचारिक उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर श्री पंकज गुप्ता, मुख्य आयकर आयुक्त, गोवा मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी भारत के कोने-कोने में बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है। विदेशों में भी हिंदी काफी प्रगति कर रही है। श्री डी. पॉल माणिकम, विमानपत्तन निदेशक, गोवा ने अपने संबोधन में कहा कि पिछले कुछ वर्षों से हमारे कार्यालय में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। यही कारण है कि इस कार्यालय को भारत सरकार, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के क्षेत्रीय एवं निगमित मुख्यालय से कई शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्राप्त हुए हैं। उन्होंने सभी कर्मियों से अपील की कि वे पखवाड़े के दौरान विभागीय कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें और इसे पखवाड़े के बाद भी कायम रखें। उद्घाटन समारोह के तुरंत बाद मुख्य अतिथि, विमानपत्तन निदेशक एवं भा वि प्रा एवं सी आई एस एफ के अधिकांश अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में हिंदी भाषण प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। इसमें कुल 08 कर्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

30 सितंबर, 2010 को सायं 16.00 बजे विमानपत्तन निदेशक, गोवा की अध्यक्षता में समापन/पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक रोड

दिनांक 14 सितंबर 2010 से 28 सितंबर, 2010 तक हिंदी पखवाड़ा बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इसमें सभी अनुभागों के कामगारों, कर्मचारियों और अधिकारियों ने भाग लिया।

दिनांक 6-10-2010 को हिंदी पखवाड़ा समापन और पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एस.एन. लाहिडी, महा प्रबंधक ने की।

महा प्रबंधक के कर कमलों से प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। महा प्रबंधक ने अपने संबोधन में हिंदी कार्यान्वयन

के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में प्रशंसा करते हुए और अधिक प्रगति के लिए कार्य करने को कहा। उन्होंने अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी पत्राचार और दैनिक कार्य हिंदी में करने की सलाह दी।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे-411024

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, खड़कवासला, पुणे (भारत सरकार, जल संसाधन मंत्रालय) में 14 सितंबर 2010 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र के बिक्री कर उपायुक्त श्री माणिक मुंडे जी, मुख्य अतिथि द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "जलवाणी" के सत्रहवें अंक का विमोचन किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी निबंध, वाद-विवाद, वार्तालाप, प्रश्नमंच, प्रस्तुतीकरण, टंकण, तकनीकी शब्दों का हिंदी अनुवाद, तकनीकी लेख और हिंदी में मूल रूप से टिप्पण आलेखन योजना में पुरस्कार प्राप्त कर्मचारियों को मुख्य अतिथि द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। उन्होंने कहा कि हिंदी एक समृद्ध भाषा है तथापि उसे कार्यालयीन कामकाज में प्रयोग करने में हमें केवल पर्यायवाची शब्दों का उपयोग न करके हिंदी के मूल शब्दों की निर्मिति करनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी इतनी सक्षम भाषा है कि वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपना एक विशेष स्थान बना सकती है।

केंद्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, ई.डी.सी. प्लाट नं. 23, पाटो, पणजी गोवा

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम गोवा में दिनांक 14 सितंबर 2010 से 28 सितंबर 2010 तक की अवधि में राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया।

दिनांक 28-9-2010 को कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह का सादगीपूर्ण एवं उत्साहजनक ढंग से आयोजन किया गया।

श्री एस.एम. मोहिदीन, क्षेत्रीय निदेशक जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि कार्यालय के कर्मचारियों में हिंदी में काम करने के प्रति बहुत उत्साह है। इनका उत्साह देख कर मैंने भी अपना काम हिंदी में करने का प्रयत्न

किया। चूंकि, उनका स्थानांतरण होने के कारण कार्यालय में यह उनका आखिरी दिन था अतः उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें बहुत खुशी है कि हिंदी दिवस समारोह में उन्हें भाग लेने का मौका मिला। मुझे उम्मीद है कि सभी कर्मचारी इसी प्रकार हिंदी में काम करते रहेंगे। मुख्य अतिथि ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं में बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। इसका सार्थक मतलब तभी है जब हम अपना दैनिक कार्य हिंदी में करें और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में अपना बहुमूल्य योगदान दें। कर्मचारियों में जिस प्रकार की उमंग दिखाई दे रही है वैसी ही उमंग और हौसला पूरे वर्ष हिंदी में काम करने में होना चाहिए। हिंदी में काम करना आसान है। यह भ्रांति बिल्कुल न रखें कि हिंदी लिखने में गलतियां होती हैं। वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए आरम्भ में छोटी-छोटी टिप्पणीयां लिखें। अपना कार्यालयी काम हिंदी में ही करें।

दूरदर्शन केंद्र - मुंबई 30

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दूरदर्शन केंद्र, मुंबई में दिनांक : 01-09-2010 से 30-09-2010 तक हिंदी माह का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालय अध्यक्ष द्वारा कर्मचारी सदस्यों को अपील, हिंदी में कार्य करने के लिए आदेश/अनुदेश, भारत सरकार की राजभाषा नीतियों, नियमों एवं विनियमों से कर्मचारी सदस्यों को अवगत कराना इत्यादि कार्य किये गये। इसके अतिरिक्त कर्मचारियों में हिंदी के प्रति अभिरूचि जागृत करने तथा उनके उत्साहवर्द्धन के लिए हिंदी की विभिन्न प्रतियोगितायें यथा - हिंदी निबंध, राजभाषा प्रश्नोत्तरी, टिप्पण एवं आलेखन, हिंदी में मौलिक कविता लेखन, दूरदर्शन से जुड़ी यादें इत्यादि प्रतियोगितायें आयोजित की गईं। प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार जीतने वाले कर्मचारी सदस्यों एवं पूरे वर्ष हिंदी में सराहनीय कार्य करने वाले कर्मचारी सदस्यों को पुरस्कार प्रदान करने के लिए दिनांक : 29-09-2010 को अपराह्न 3.00 बजे दूरदर्शन के सभागार में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता केंद्र निदेशक श्री लक्ष्मेश चोपड़ा ने की।

मुख्य अतिथि श्री अशोक कुमार गुप्ता ने कहा कि हिंदी में अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का उदारता से प्रयोग करना चाहिए और अंग्रेजी में भी जो शब्द जन प्रचलित

हैं उनका सहजता से हिंदी में प्रयोग किया जाना चाहिए। जितना सम्भव हो भाषा मौलिक और सरल होनी चाहिए। अध्यक्ष पद से अपने विचार व्यक्त करते हुये केंद्र के वरिष्ठ निदेशक श्री लक्ष्मण चोपड़ा जी ने कहा कि हिंदी जनभाषा है, जो राष्ट्र को जोड़ने का काम करती है। हिंदी अपरिहार्य है और अब इसके बगैर काम नहीं चल सकता।

दूरदर्शन केंद्र - नागपुर

दूरदर्शन केंद्र, नागपुर में दि. 1-9-2010 से 15-9-2010 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दि. 1-9-2010 को केंद्र अभियंता श्री अधीर गडपाले द्वारा पारंपरिक ढंग से दीप प्रज्वलित कर हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन किया गया। उपस्थित स्टाफ को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी राष्ट्र की एकता की कड़ी है और राजभाषा की इस महत्ता को समझते हुए हमें इसकी उत्तरोत्तर प्रगति में निष्ठापूर्वक योगदान देना चाहिए।

हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में स्टूडियो में हिंदी पर एक परिचर्चा की रिकॉर्डिंग कर उसका प्रसारण किया गया। परिचर्चा का विषय था, "स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका"। इस परिचर्चा में दैनिक भास्कर, नागपुर के संपादक श्री प्रकाश दुबे दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. वंदना खुशालानी तथा नागपुर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि डॉ. सागर खादीवाला ने भाग लिया। हिंदी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण समारोह 17 सितंबर, 2010 को आयोजित किया गया जिसमें केंद्र अभियंता महोदय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

कार्यालय : मुख्य आयकर आयुक्त, आयकर भवन, मकबूल रोड, अमृतसर-143001

मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर क्षेत्र श्री जी. आर. सूफी के मार्गदर्शन में आयकर कार्यालय अमृतसर के कॉन्फ्रेंस हाल में राजभाषा समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री एच. एस. सोही, आयकर आयुक्त-2 ने की। समारोह में आयकर आयुक्त (अपील) श्री एस. जे. सिंह सहित सभी अपर आयकर

आयुक्तों तथा अन्य उच्च अधिकारियों/मुख्यालयों पर तैनात अधिकारियों ने भाग लिया। आयकर विभाग द्वारा हिंदी सप्ताह के उपलक्ष्य में आयोजित हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिताओं तथा हिंदी सुलेख प्रतियोगिताओं में बरीयता प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा समारोह के दौरान पुरस्कृत किया गया।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, मुरगांव जोनल बेस मुरगांव, गोवा -403803

14 से 28 सितंबर 2010 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े का विधिवत् शुभारंभ दिनांक 14 सितंबर 2010 को हिंदी दिवस के अवसर पर केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2, वास्को के प्राचार्य डॉ. वी पी मिश्रा ने पारंपरिक दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. एम ई जॉन ने की।

मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में हिंदी दिवस एवं हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को प्रदत्त संवैधानिक महत्व को स्पष्ट किया। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि कार्यालय में समस्त कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान अर्थात् बोलने एवं उसे समझने का ज्ञान प्राप्त है। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. जॉन ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य निर्धारित लक्ष्यानुसार हिंदी में करने का आह्वान किया। साथ ही उन्होंने संस्थान की विगत समय में हुई प्रगति का ब्यौरा भी दिया।

रेलवे स्टाप कालेज, लाल बाग, बडोदरा-390004

रेलवे स्टाप कालेज, बडोदरा में दिनांक 13-09-2010 से 30-09-2010 तक राजभाषा पखवाड़ा आयोजित किया गया। इस पखवाड़े के दौरान संकाय सदस्यों / प्रशिक्षणार्थी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए अनेक प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अधिकारियों एवं कर्मचारियों में कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु कंप्यूटर पर हिंदी कुंजीयन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साहित्यिक एवं राजभाषा विषयक सामान्य जानकारी में वृद्धि करने के

उद्देश्य से राजभाषा प्रश्न-मंच तथा हिंदी भाषा के सामान्य-ज्ञान में वृद्धि करने के उद्देश्य से हिंदी शब्द-ज्ञान वर्ग पहली प्रतियोगिता के साथ-साथ हिंदी में प्रभावशाली अभिव्यक्ति करने के उद्देश्य से अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए चित्र देख कर भावाभिव्यक्ति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अलावा कालेज के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में डिक्शन लेने के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से हिंदी डिक्शन प्रतियोगिता तथा संकाय सदस्यों/मेहमान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को समसामयिक एवं तकनीकी विषयों पर हिंदी में अपने विचार व्यक्त करने हेतु इन्टरनेट का विवेकपूर्ण उपयोग, कंप्यूटर और भारतीय भाषाएं तथा भारतीय रेल-बढ़ाए भेल तीन विषयों पर हिंदी में विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा सार्थक प्रस्तुती की गई।

ग्रेफ केंद्र, दिधी कैप, पुणे -15

ग्रेफ केंद्र एवं अभिलेख में दिनांक 01 सितंबर 2010 से 14 सितंबर 2010 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया तथा 14 सितंबर 2010 को हिंदी दिवस मनाया गया। हिंदी पखवाड़े/हिंदी दिवस के दौरान हिंदी सम्बंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा नकद पुरस्कार वितरण किया गया।

दिनांक 14 सितंबर 2010 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह अयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता कर्नल ए के दास, कमांडेंट ग्रेफ केंद्र एवं प्रभारी अधिकारी अभिलेख ने की।

अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में कहा कि मुझे खुशी है कि हमारे ग्रेफ केंद्र एवं अभिलेख कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने व प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इस प्रकार के समारोह न केवल कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे दायित्वों की याद दिलाते हैं। हमारा समारोह मनाना तभी सार्थक होगा जब हम स्वेच्छा से इसे अपनाएं और रोजमर्रा के कामों में अधिक से अधिक प्रयोग कर दूसरों को भी इसके प्रयोग के लिए प्रेरित करें। हमारा देश प्रजातांत्रिक देश है और किसी देश में प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उस देश का

राजकाज उसकी राष्ट्र भाषा में हो ताकि उसकी राष्ट्रीयता का प्रकटीकरण समूचे भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में हो। हमारे विशाल भारत में कई भाषाएं बोली जाती हैं, उनमें हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे देश के आम लोग बोलते एवं समझते हैं। इसके साथ हमारी धार्मिक सांस्कृतिक और राजनैतिक परम्पराएं जुड़ी हैं, इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम राष्ट्रभाषा हिंदी को राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग में लाएं।

कार्यक्रम के अंत में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले कर्मिकों को कमांडेंट महोदय द्वारा नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सैक्टर -19 ए, चण्डीगढ़-160019

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़ में 1 सितंबर 2010 से 14 सितंबर 2010 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14-09-2010 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस वर्ष हिंदी दिवस समारोह का आयोजन कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल चण्डीगढ़ तथा क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ द्वारा सामूहिक रूप से किया गया।

सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रमेश लाल वर्मा ने कहा कि हिंदी दिवस मनाए जाने का उद्देश्य इस बात को स्मरण करना है कि हम एक स्वतन्त्र देश हैं, एक प्रभुता संपन्न राष्ट्र हैं, प्रजातन्त्र हैं और आम जनता की भाषा हमारे लिए सर्वोपरि है। श्री वर्मा ने कहा कि 1949 को आज ही के दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा और संसद के कार्य-व्यवहार की भाषा स्वीकार किया था क्योंकि यह सिद्ध हो चुका था कि हिंदी ही पूरे देश की संपर्क भाषा हो सकती है और यही भाषा देश के विभिन्न भाषा-भाषियों को एक मंच पर ला सकती है। श्री वर्मा ने कहा कि हिंदी को समृद्ध बनाने और राजभाषा के रूप में इसे लागू करने की जिम्मेदारी संविधान ने संघ सरकार को सौंपी है जिसका निर्वहन करने के लिए प्रधान मंत्री जी की

अध्यक्षता में केंद्रीय हिंदी समिति राजभाषा नीति निर्धारित करती है, गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग कार्यक्रम बनाता है और लागू करता है और संसदीय राजभाषा समिति राजभाषा के प्रयोग पर निगरानी रखते हुए महामहिम राष्ट्रपति जी को स्थिति से अवगत कराती है।

‘क’ क्षेत्र

दूरदर्शन केंद्र-नई दिल्ली

दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली में दिनांक 14 सितंबर 2010 से 28 सितंबर 2010 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन राजभाषा पर्व के रूप में किया गया।

14 सितंबर 2010 की संध्या को ‘राजभाषा हिंदी : संभावनाएं एवं चुनौतियां’ विषय पर दूरदर्शन के संदर्भ में एक विशेष कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया इस कार्यक्रम में राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय एवं राजभाषा विभाग के अधिकारियों के उद्गार भी प्रसारित किए गए साथ ही दूरदर्शन केंद्र, दिल्ली द्वारा, निर्मित राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार संबंधी लघु फिल्म भी इस सीधे प्रसारण में सम्मिलित किया गया।

28 सितंबर 2010 को राजभाषा पर्व के समापन समारोह में प्रसिद्ध साहित्यकार एवं दूरदर्शन, महानिदेशालय में उप महानिदेशक के रूप में कार्यरत श्री लीलाधर मंडलोई मुख्य अतिथि ने हिंदी साहित्य एवं राजभाषा हिंदी से संबंधित कई रोचक संस्मरणों का उल्लेख किया। उन्होंने हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया।

निदेशक श्री बी. एम. बख्शी ने अधिकाधिक काम हिंदी में कर राजभाषा नीति का अनुपालन करने के लिए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरित किया। उन्होंने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होने हेतु श्री मंडलोई जी को आभार व्यक्त किया साथ ही उन्होंने हिंदी पखवाड़ा आयोजन संबंधी संपूर्ण प्रक्रिया में सहयोग देने के लिए सभी को धन्यवाद दिया।

पूर्व मध्य रेलवे, महाप्रबंधक (राजभाषा)

कार्यालय हाजीपुर

पूर्व मध्य रेलवे मुख्यालय/हाजीपुर में दि. 14 सितंबर, 2010 से 24 सितंबर, 2010 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस पखवाड़ा के दौरान राजभाषा से संबंधित अनेक

कार्यक्रम आयोजित किए गए जैसे - विचार गोष्ठी, हिंदी निबंध (अहिंदी भाषियों के लिए), हिंदी वाक् प्रतियोगिता (अहिंदी भाषियों के लिए), हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, हिंदी कार्यशाला, राजभाषा, क्विज (कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए), कंप्यूटर कार्यशाला, कवि गोष्ठी, क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, राजभाषा प्रदर्शनी, गीत-संगीत व नृत्य का सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण। पखवाड़ा के दौरान विभिन्न अवसरों पर आयोजित कार्यक्रमों में मुख्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया और आयोजित कार्यक्रमों को प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में व्यापक कवरेज प्राप्त हुआ।

मुख्यालय के अलावा अधीनस्थ पाँचों मंडलों- सोनपुर, समस्तीपुर, दानापुर, धनबाद एवं मुगलसराय तथा यांत्रिक कारखाना/समस्तीपुर और पीडी/मुगलसराय में भी राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताएं व कार्यक्रम आयोजित किए गए।

भारतीय डाक विभाग

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, हरियाणा सर्किल,

अम्बाला-133001

दिनांक 14-9-2010 को पूर्वाह्न 11.30 बजे हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन सुश्री इन्दु गुप्ता मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, हरियाणा सर्किल, अंबाला ने किया।

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, हरियाणा सर्किल, अंबाला ने अपने उद्घाटन भाषण में हिंदी में कामकाज करने के महत्व पर प्रकाश डाला और वर्तमान में, कार्यालय में हिंदी में कामकाज पर संतुष्टि प्रकट करते हुए सभी अधिकारियों एवं पदधारियों से अपना सम्पूर्ण कामकाज हिंदी में करने का आह्वान किया। सहायक निदेशक (रा.भा.), हरियाणा सर्किल ने भी हिंदी को राजभाषा के रूप में गौरव प्राप्त करने से संबंधित इतिहास पर प्रकाश डालते हुए सभी से हिंदी में कामकाज करने का आह्वान किया और हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों का ब्यौरा सभी उपस्थित जनों को दिया। सभी अधिकारियों एवं पदधारियों से इन कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। 29-9-2010 को पुरस्कार वितरण एवं हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

**परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान
निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र
ए.एम.डी. काम्प्लेक्स, प्रताप नगर सेक्टर V
विस्तार, बंबाला सांगानेर, जयपुर**

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर में दिनांक 14-9-2009 से 22-09-2010 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

हिंदी सप्ताह में आयोजित सभी प्रतियोगिताएं हिंदी भाषी व हिंदीतर भाषी वर्गों में आयोजित की गई जिसमें दोनों ही वर्गों में कार्मिकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

हिंदी सप्ताह का समापन दिनांक 21-9-2010 को किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अशोक कुमार नगावत ने राजभाषा के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए जिसमें उन्होंने कहा कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र ही नहीं है बल्कि ज्ञान-विज्ञान की कुंजी है जिसकी सहायता से व्यक्ति विकास के मार्ग पर अग्रसर होता है। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल से ही भारत में विज्ञान का अध्ययन होता रहा है और हिंदी ही इन अनुसंधानों को आगे आने वाली पीढ़ी तक लाने का माध्यम बनी है। अपने व्याख्यान में प्रो. नगावत ने पखनि/प.क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग पर अपनी प्रसन्नता की।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि प्रो. नगावत ने क्षेत्रीय निदेशक श्री ललित कुमार नंदा, उपक्षेत्रीय निदेशक श्री ओ.पी.यादव तथा डा. पी.एन. बांगरू के साथ हिंदी सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी रहे प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया।

**क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
सेक्टर -16, फरीदाबाद**

दिनांक 1-9-2010 से 14-9-2010 तक "राजभाषा पखवाड़ा" का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतियोगियों को मुख्य अतिथि श्री बी.के. साहू, अपर आयुक्त (हितलाभ), वरिष्ठ राज्य चिकित्सा आयुक्त तथा क्षेत्रीय निदेशक महोदय द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके साथ ही मूल हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता वर्ष 2009-2010 के दौरान अपने द्वारा किए गए हिंदी कार्य का रिकॉर्ड प्रस्तुत करने वाले 7 कर्मचारियों को भी प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्षभर में सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने के उपलक्ष्य में क्षेत्रीय कार्यालय की प्रशासन शाखा को वर्ष, 2009-2010 के लिए अंतरशाखा राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। मुख्य अतिथि महोदय ने यह शील्ड प्रशासन शाखा के शाखाधिकारी श्री रवीन्द्र सिंह, उप निदेशक व शाखा के अन्य सभी कर्मियों को प्रदान की।

क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिंदी हमारे देश के बहुत बड़े भू-भाग में प्रयोग में लाई जाती है। इसकी अनेक बोलियां हैं जो अपने प्रभाव से हमारे समाज को एक करती है। क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि इनसे प्रेरणा लेकर अन्य कर्मचारी भी आगे से अधिक से अधिक संख्या में प्रतियोगिताओं में भाग लेकर और बेहतर कार्य करने का प्रयास करेंगे।

**पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो,
ब्लाक सं-11, सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स,
लोदी रोड, नई दिल्ली**

पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो (गृह मंत्रालय) में दिनांक 1 सितंबर 2010 से 15 सितंबर 2010 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें हिंदी कार्यशाला के साथ-साथ कई प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। इसमें ब्यूरो के अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिताओं ब्यूरो के अधिकारियों/ कर्मचारियों को नकद राशि व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस पखवाड़े का समापन समारोह 20 सितंबर 2010 को ब्यूरो में आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता ब्यूरो के निदेशक (प्रशा.) द्वारा की गई। इस अवसर पर

गृह मंत्री जी द्वारा जारी अपील को भी पढ़ा गया। निदेशक महोदय ने इस अवसर पर सभी को शुभ कामनाएं देते हुए यह अपेक्षा की कि जिस प्रकार सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया है उसी प्रकार वे भारत सरकार की राजभाषा नीति का सही रूप में अनुपालन करें ताकि इन उद्देश्यों व लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

**क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, विनोद
विला, वेस्ट एण्ड पार्क, हेहल,
रांची-834005**

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, हेहल, रांची में हिंदी दिवस सह पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14-9-2010 से 29-9-2010 तक किया गया। दिनांक 14-9-2010 को हिंदी दिवस सह पखवाड़े का उद्घाटन किया गया तथा साथ ही हिंदी दिवस भी मनाया गया। पखवाड़े का उद्घाटन द्वीप प्रज्वलित करके मुख्य अतिथि डॉ. ए. के. सिन्हा, संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त), केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची एवं केंद्र के वैज्ञानिक - डी डॉ. पी.एन. मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी एक समृद्ध भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली एवं समझी जाती है। उन्होंने हिंदी पखवाड़ा मनाये जाने के परिपेक्ष्य में विशेष तौर पर प्रकाश डाला तथा कर्मचारियों का उत्साहवर्धन करते हुये शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में करने पर बल दिया। केंद्र के प्रभारी डॉ. पी. एन. मिश्रा, वैज्ञानिक - डी के द्वारा केंद्रीय रेशम बोर्ड के माननीय अध्यक्ष एवं सदस्य सचिव का संदेश भी पढ़ा गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रभारी ने केंद्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा लगातार शत-प्रतिशत हिंदी में किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा भविष्य में भी राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करते रहने का आह्वान किया। केंद्र के वैज्ञानिक - सी डॉ. ए. एच. नकवी ने हिंदी दिवस सह पखवाड़ा पर विशेष तौर पर प्रकाश डालते हुए राजभाषा के विकास पर बल दिया। उन्होंने तकनीकी कार्यों में हिंदी में शत-प्रतिशत कार्य करने एवं लक्ष्य पाने को प्रेरित किया।

हिंदी दिवस सह पखवाड़े के दौरान केंद्र में दिनांक 23-9-2010 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. कमल बोस, विभागाध्यक्ष (हिंदी), संत जेवियर कॉलेज, राँची ने तकनीकी कार्य को हिंदी में कैसे किया/लिखा जाए इसके संबंध में विस्तृत रूप से बताया। उन्होंने बताया कि हिंदी कार्यान्वयन में सरल हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने हिंदी में कार्य करने तथा वर्तनी के प्रयोग के संबंध में जानकारी प्रदान की। पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया जिसमें केंद्र के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक - डी ने इस केंद्र के कर्मचारियों के द्वारा किए गए हिंदी में कार्यों की जानकारी एवं प्राप्त प्रशस्ति पत्रों के बारे में मुख्य अतिथि को अवगत कराया।

**क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड,
342-347 (दूसरा तल) ए-विंग,
अगस्त क्रांति भवन, भीकाजी कामा प्लेस,
नई दिल्ली-110 066**

13 से 19 सितम्बर 2010 को हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया।

हिंदी सप्ताह का शुभारंभ सुबह 11.00 बजे कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में किया गया। शुभारंभ का श्रीगणेश डा. रिपु दमन सिंह, उप सचिव (तक) ने क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली के सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में किया इस अवसर पर डा. रिपु दमन सिंह, उप सचिव (तक) ने सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बताया कि 2008-09 के लिए के.रे.बो., राजभाषा चलशील्ड योजना के तहत राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में हिंदी कर्मचारी वाले बोर्ड कार्यालयों में क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली को द्वितीय पुरस्कार दिया गया है एवं केंद्रीय रेशम बोर्ड को 2008-2009 के इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार 'ग' क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार के लिए चुना गया है तथा 14 सितंबर 2010 को यह पुरस्कार श्रीमती एम. सत्यवती भा.प्र. से., सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड द्वारा भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति डा. हामिद अंसारी के कर कमलों से ग्रहण किया जाएगा। उप सचिव (तक) ने

हिंदी की महत्ता का वर्णन करते हुए हिंदी सप्ताह के कार्यक्रम पर प्रकाश डाला।

**महानिदेशालय, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस
बल गृह मंत्रालय/भारत सरकार खण्ड-2,
केंद्रीय कार्यालय परिसर लोदी रोड,
नई दिल्ली-110003**

महानिदेशालय, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस में 01-09-2010 तक "हिंदी पखवाड़ा" आयोजित किया गया था। इसके दौरान 01 सितंबर को "हिंदी पखवाड़े" के शुभारंभ के अवसर पर महानिदेशक की ओर से एक अपील जारी की गई। तत्पश्चात पखवाड़े के दौरान हिंदी संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। 'हिंदी दिवस' अर्थात् 14 सितंबर को "पुरस्कार वितरण समारोह" आयोजित किया गया जिसमें माननीय गृह मंत्रीजी के संदेश को पढ़ा गया और हिंदी में मूल काम के लिए प्रोत्साहन योजना एवं हिंदी में डिक्टेशन की प्रोत्साहन योजना के विजेताओं को प्रमाणपत्र भेंट किए गए। इसके साथ ही "हिंदी पखवाड़ा" के दौरान आयोजित राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र और "विभागीय राजभाषा चलशील्ड" के विजेता अनुभागों को चलशील्ड एवं प्रमाणपत्र भेंट किए गए।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री आर. के. भाटिया, महानिदेशक ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में हिंदीतर भाषी कर्मिकों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति हमारी टीम भावना से कार्य करने एवं सकारात्मक सोच का परिणाम है। इसके परिणामस्वरूप ही, हम गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड योजना में कई बार "प्रथम" स्थान प्राप्त कर सके हैं। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में अन्य विभाग भी प्रयासरत हैं और हमें उनसे चुनौती मिल रही है। अतः हमें अपने कार्यों में पहले की अपेक्षा और अधिक प्रयास करने होंगे। उन्होंने अपने संबोधन से पूर्व प्रस्तुत कविता-पाठ से उदाहरण देते हुए अधिकारियों से 'अप्रूव्ड' के स्थान पर हिंदी में 'अनुमोदित' लिखने का आग्रह किया जिससे अधीनस्थ अधिकारी एवं कर्मचारी प्रेरित होकर अपना समस्त काम हिंदी में करें। उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी और आशा

व्यक्त की कि राजभाषा के क्षेत्र में सभी निष्ठा, लगन एवं ईमानदारी के साथ कार्य करते हुए भा.ति.सी. पुलिस बल का यश बढ़ाएंगे।

**कार्यालय मुख्य आयुक्त आयुक्त,
आयुक्त भवन होशंगाबाद रोड,
भोपाल**

मुख्य आयुक्त आयुक्त (स.नि.प्रा.), भोपाल कार्यालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन 7 से 21 सितंबर, 2010 तक किया गया। माननीय मुख्य आयुक्त आयुक्त श्री कमलेश अर्गल ने 'हिंदी दिवस' के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की नैतिक एवं संवैधानिक जिम्मेदारियों की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने विभाग के सभी कर्मियों से आग्रह किया कि वे राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति अपने दायित्व को समझें ताकि लक्ष्य प्राप्त हो सके। इस महत्वपूर्ण अवसर पर आयुक्त विभाग, भोपाल की गृहपत्रिका 'आयुक्त दर्पण' के प्रवेशांक का भी विमोचन मुख्य आयुक्त आयुक्त के कर कमलों से हुआ।

हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 28 सितंबर, 2010 को संपन्न हुआ। पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

मुख्य आयुक्त आयुक्त श्री कमलेश अर्गल ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभी विजयी प्रतियोगियों को बधाई देते हुए राजभाषा संबंधी गतिविधियों में कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों से लेकर कर्मचारियों तक सभी सदस्यों द्वारा सक्रिय रूप से एवं उत्साहपूर्वक भाग लेने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी समूचे भारत की एकमात्र प्रचलित एवं स्वीकृत भाषा है। अतः हिंदी को जानना तथा हिंदी में कार्य करना सभी का परम कर्तव्य है। उन्होंने भारतेन्दु बाबू हरीशचंद्र की इन पंक्तियों "निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल।" को दोहराकर इसमें निहित चेतावनी की तरफ इशारा करते हुए कहा कि अपनी भाषा की उन्नति के बिना हम उन्नति के शिखर पर आरूढ़ नहीं हो सकते हैं।

और न ही हम अपने हृदय से अपनी भाषा के प्रति अज्ञानता के काटे को निकाल सकते हैं। स्पष्ट है कि स्वभाषा के ज्ञान के बिना न तो हम स्वदेश में न ही विश्व परिदृश्य में अपना स्थान बना सकते हैं।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र,

पो. बा. 11, भंडारा - 441904

भंडारा नगर राष्ट्रभाषा गौरव समिति द्वारा लॉयन्स क्लब भंडारा, लॉयन्स क्लब भंडारा सैटल, लॉयन्स क्लब ब्राससिटी भंडारा एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भंडारा के संयुक्त तत्वाधान में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 2-10-2010 को जे.एम.पटेल कॉलेज, भंडारा के सभागृह में किया गया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान भंडारा राष्ट्र भाषा गौरव समिति द्वारा जिला स्तर पर विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजेताओं को अतिथियों द्वारा प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस अवसर पर डॉ. एस. के. माथुर, वैज्ञानिक - डी (संयुक्त निदेशक) केन्द्रीय रेशम बोर्ड, भंडारा को राजभाषा के उत्तम कार्यान्वयन, हिंदी प्रचार-प्रसार एवं समन्वय स्थापित करने के लिए भंडारा राष्ट्र भाषा गौरव समिति एवं लॉयन्स क्लब भंडारा लॉयन्स क्लब भंडारा की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण,

हवाई अड्डा, जयपुर

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, जयपुर विमानक्षेत्र पर हिंदी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 14 सितंबर 2010 से 28 सितंबर 2010 तक किया गया।

हिंदी पखवाड़े के समापन पर प्रोफेसर हनुमान प्रसाद शुक्ल, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने अपने संबोधन में कहा कि भाषा का विकास केवल हिंदी के विकास से संभव नहीं है, अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी का संबंध जुड़ा है। संविधान की धारा में आने वाले मूल कर्तव्यों

में हिंदी को विशेष स्थान प्राप्त है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कई राष्ट्रीय संगठनों/संस्थानों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर हिंदी का गौरव बढ़ाया है। इंग्लैण्ड के एक छोटे से गांव में अंग्रेजी को उठाने में सैंकड़ों वर्ष लगे थे वहीं मेरठ से शुरू हुई हिंदी ने कुछ ही दशकों के समय में अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में अपना स्थान बना लिया है।

इससे पूर्व श्री एच.एस.पारीक, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने जयपुर विमानक्षेत्र पर हिंदी की प्रगति की जानकारी देते हुए पखवाड़े के दौरान अधिकाधिक कर्मिकों द्वारा प्रतियोगिताओं में भाग लेने पर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने आगे बताया कि जयपुर विमानक्षेत्र पर इस दौरान 07 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी जिसमें विभाग के 121 कर्मिकों ने भाग लिया।

इस अवसर पर जयपुर विमानक्षेत्र के निदेशक श्री आर. के. सिंह जी ने हिंदी दिवस के अवसर पर सभी कर्मिकों को बधाई देते हुए जयपुर में सर्वाधिक कार्य हिंदी में किए जाने पर कर्मिकों की लगन एवं मेहनत की प्रशंसा की। उन्होंने आश्वासन दिया कि हिंदी के शत-प्रतिशत प्रयोग के लिए उनसे जो भी सहायता/मदद की आवश्यकता हो, देने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

दूसरे देशों में जो लोग रहते हैं वे वहां भी अपनी भाषा को अपनाते हैं वैसे ही हम भी अपने बच्चों सहित संकल्प लेते हैं कि हम भी अपनी मातृभाषा को अपनाएंगे।

दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र, अकोला

केंद्र में दि. 14 सितंबर से दि. 29 सितंबर, 2010 के दौरान हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया था। हिंदी दिवस/पखवाड़ा 2010 का उद्घाटन तथा मुख्य कार्यक्रम दि. 14-9-2010 को संपन्न हुआ। हिंदी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय के कर्मचारियों के लिये हिंदी निबंध, हिंदी अनुवाद, पत्र लेखन तथा टिप्पणी लेखन आदि का आयोजन किया गया था। हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र, अकोला तथा अधीनस्थ अकोला, अमरावती, वाशिम जिलों में स्थित लघुप्रक्षेपण केंद्रों में कार्यरत अधिकारी तथा कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया।

हिंदी पखवाड़ा में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला के लिए सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, अकोला के राजभाषा अधिकारी श्री अभय कुलकर्णी ने राजभाषा नीति बाबत विस्तार से जानकारी दी तथा राष्ट्र विकास में राजभाषा का महत्व विषय दिया। कार्यशाला में विशेष तौर पर कंप्यूटरों में युनीकोड फॉन्ट ऑपरेशन सिस्टम के बारे में विस्तार से प्रत्यक्ष दिया गया तथा सभी कार्यालयों में हिंदी फॉन्ट्स अक्षरों में एकरूपता लाने में युनीकोड की उपयोगिता विषय की।

हिंदी पखवाड़ा समारोह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री अभय कुलकर्णी, राजभाषा अधिकारी, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अकोला के करकमलों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद एवं प्रमाणपत्र द्वारा पुरस्कृत किया गया।

कोयला खान भविष्य निधि कार्यालय, रांची

हिंदी दिवस 2010 के पावन अवसर पर राजभाषा पखवाड़ा समारोह कोयला खान भविष्य निधि के रांची स्थित तीनों क्षेत्रीय कार्यालयों में संयुक्त रूप से 1 से 14 सितंबर, 2010 तक पर्व के रूप में मनाया गया एवं राजभाषा "पखवाड़ा" का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 20 सितंबर, 2010 को आयोजित किया गया। इस दौरान कार्यालय के अधिकतर कार्य राजभाषा हिंदी में ही सम्पन्न किए गए तथा समारोह में तीनों कार्यालय के सभी अधिकारी और कर्मचारियों के द्वारा अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पखवाड़ा के दौरान सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने की शपथ ली एवं हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए तथा कर्मचारियों के प्रोत्साहन के उद्देश्य से संयुक्त रूप से तीनों कार्यालयों के सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों के बीच छः प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

"2010 की हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण" दिनांक 20, सितंबर, 2010 को संयुक्त रूप से रांची -2 कार्यालय परिसर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

मुख्य अतिथि श्री पी. के. झा ने अपने भावपूर्ण भाषण में संबोधित करते हुए कहा कि दक्षिण भारत में भी हिंदी धीरे-धीरे बढ़ रही है क्योंकि नगरीकरण, औद्योगिकरण के युग में लोगों की एक शहर से दूसरे शहर में नौकरी, व्यापार, पर्यटन एवं साधनों की सुलभता में आवाजाही बढ़ रही है। उन्होंने कहा की सरकारी कार्यालयों में भी कर्मचारियों के स्थानांतरण राष्ट्रीय स्तर पर होते हैं तो उनके साथ-साथ भाषा भी चलती है एवं उसका विकास हो रहा है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री ए. के. सिन्हा, क्षेत्रीय आयुक्त ने कहा कि सभी भाषाओं में हिंदी का अपना विशिष्ट स्थान है क्योंकि हिंदी देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। यह पूरे देश में बोली और समझी जाती है। उन्होंने यह भी विश्वास दिलाया कि कार्यालय में हिंदी में अधिक-से-अधिक काम करने के लिए कृतसंकल्प है।

श्री पी.एल. के. रेड्डी क्षेत्रीय आयुक्त ने अपने उद्बोधन में उपस्थित कर्मचारियों को इस पावन अवसर पर कहा हिंदी भारत के हर नागरिक को हर प्रांत वालों को एक साथ रखने की चेष्टा करती है जिससे भिन्नता में एकता संपन्न हो सकती है। उन्होंने कहा कि अपने सरकारी कामकाज में यथासंभव हिंदी का प्रयोग करने का तथा राजभाषा हिंदी को उनका यथोचित स्थान दिलाने में अपना योगदान देने का आह्वान किया।

एन.एच.पी.सी. लि. कार्यालय कार्यापालक निदेशक क्षेत्र II, बनीखेत, जिला-चम्पा (हि.प्र.)

एनएचपीसी क्षेत्र-II कार्यालय, बनीखेत में दिनांक 1-14 सितंबर, 2010 तक हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। अधिकारियों, कर्मचारियों एनएचपीसी गृहणियों एवं स्कूली बच्चों के बीच श्रुतलेखन एवं सुलेख, निबंध, ड्राइंग, भाषण व नोटिंग ड्राफ्टिंग जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम के अंतर्गत 'नारी सशक्तिकरण' नामक विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

**कार्यालय कमाण्डेंट 88 (म) बटा.,
केरिपुबल, सै-8, द्वारका, नई दिल्ली**

बटालियन में दिनांक 1-9-2010 से 14-9-2010 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया तथा दिनांक 14-9-2010 को हिंदी दिवस के रूप में मनाया गया, हिंदी पखवाड़े की अवधि में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु एक बोर्ड का गठन किया गया था।

बोर्ड द्वारा प्रस्तुत परिणाम के अनुसार विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

**आंचलिक प्रबंधक, बैंक ऑफ इंडिया,
राजभाषा विभाग, आंचलिक कार्यालय,
हजारीबाग**

दिनांक 14-9-2010 को बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, हजारीबाग में हिंदी दिवस समारोह के उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री कपिल गुप्ता, मुख्य प्रबंधक, हजारीबाग अंचल द्वारा की गयी समारोह का आयोजन बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय परिसर, जुलु पार्क, हजारीबाग में किया गया।

स्वागत भाषण देते हुए, अंचल के राजभाषा प्रबंधक, श्री अजय कुमार प्रसाद ने सभा में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों तथा विशेष आमंत्रित सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया।

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में मुख्य प्रबंधक द्वारा सभा में उपस्थित सभी स्टाफ सदस्यों को शपथ ग्रहण कराया गया तथा मुख्य प्रबंधक ने इस बात पर जोर दिया कि हिंदी केवल राजभाषा नहीं बल्कि आम जन की जन भाषा बन चुकी है। उन्होंने हिंदी के विकास में अन्य भारतीय भाषाओं के योगदान संबंधी बातें बताई तथा समारोह में उपस्थित स्टाफ सदस्यों से अपने कार्य का निष्पादन केवल हिंदी में करने की अपील की तथा सहज एवं सरल हिंदी के प्रयोग पर जोर दिया। हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री, माननीय वित्त मंत्री तथा बैंक के अध्यक्ष व प्रबंध

क निदेशक का संदेश सभा के बीच सुनाया गया तथा इसके अमल पर जोर दिया गया।

**श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, खान सुरक्षा
महानिदेशालय, ग्वालियर क्षेत्र, ग्वालियर**

ग्वालियर क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 1-9-2010 से 15-9-2010 तक हिंदी पखवाड़ा पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया। पखवाड़े के दौरान सभी कार्य हिंदी में करने की अपील जारी की गई तथा हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाइयों पर विचार किया गया। वैसे तो ग्वालियर क्षेत्रीय कार्यालय में अधिकांश कार्य हिंदी में किए जाते हैं फिर भी इस पखवाड़े के दौरान सभी टिप्पणी, प्रारूपण, फाईलों पर नाम, विषय, प्राप्त पत्रों का उत्तर तथा अन्य लेखन कार्य हिंदी में किए गए। ऐसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी पत्र जिनका हिंदी रूपांतरण तत्क्षण सम्भव नहीं है उसका अग्रसण पत्र हिंदी में भेजा गया तथा भविष्य में भी सभी कार्य हिंदी में करने का संकल्प लिया गया।

हिंदी पखवाड़े में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

**श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, खान सुरक्षा
महानिदेशालय, उत्तर-पश्चिमी अंचल,
झामरकोटड़ा, मेन रोड, सेक्टर-6, हिरणमगरी,
उदयपुर-313002 (राजस्थान)**

उदयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 1-9-2010 से 15-9-2010 तक हिंदी पखवाड़ा पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया। पखवाड़े के दौरान सभी कार्य हिंदी में करने की अपील जारी की गई तथा हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाइयों पर विचार किया गया। वैसे तो उदयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में अधिकांश कार्य हिंदी में किए जाते हैं फिर भी इस पखवाड़े के दौरान सभी टिप्पणी, प्रारूपण, फाईलों पर नाम, विषय, प्राप्त पत्रों का उत्तर तथा अन्य लेखन कार्य हिंदी में किए गए। ऐसे वैज्ञानिक एवं तकनीकी पत्र जिनका हिंदी रूपांतरण तत्क्षण सम्भव नहीं है उसका

अग्रसण पत्र हिंदी में भेजा गया तथा भविष्य में भी सभी कार्य हिंदी में करने का संकल्प लिया गया ।

हिंदी पखवाड़े में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया । प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड, समाज कल्याण भवन, बी-12, कुतुब इस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110003

केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड में दिनांक 1-15 सितंबर, 2010 को हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस बार का हिंदी पखवाड़ा कई मायनों में अपनी तरह का एक अनूठा आयोजन रहा । खासकर हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह इतना जीवंत और रोचक था कि केंद्रीय बोर्ड हर्षोल्लास से झूम उठा । 15 सितंबर, 2010 को समापन समारोह में केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की कार्यकारी निदेशक डॉ. किरन चड्ढा की गरिमामयी उपस्थिति बोर्ड के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रेरणा-स्रोत रही ।

कार्यकारी निदेशक ने समस्त स्टाफ को संबोधित करते हुए प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी । उन्होंने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि केंद्रीय बोर्ड में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जा रहा है । उन्होंने कहा कि महिला एवं बाल विकास मंत्रालय में जब भी हिंदी के प्रयोग पर चर्चा होती है तो उसमें सबसे पहले केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड का नाम लिया जाता है । इससे पहले संयुक्त निदेशक (रा.भा.) श्री के.जे. काकनवार ने हिंदी के विकास पर विचार रखते हुए कहा कि केंद्रीय बोर्ड का हर अनुभाग अपने काम-काज में हिंदी भाषा का प्रयोग कर रहा है और यह हमारे लिए गौरव की बात है । उन्होंने हिंदी पत्राचार को और अधिक बढ़ाने पर जोर दिया । कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी श्री नन्देश निगम ने किया और इस कार्यक्रम में पूरी गर्मजोशी से भाग लेने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया ।

हिंदी पखवाड़े के दौरान बोर्ड के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरुचि बढ़ाने के उद्देश्य से चार प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं - प्रश्नोत्तरी, निबंध, टिप्पण एवं प्रारूपण और वाद-विवाद । प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए सम्मिलित रूप से किया गया, जबकि बाकी प्रतियोगिताएं हिंदी और हिंदीतर भाषी वर्गों के लिए अलग-अलग आयोजित की गईं ।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, पाटलीपुत्र औद्योगिक प्रांगण, पटना-800013

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, पटना के कार्यालय में सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से दिनांक 1-9-2010 से 15-9-2010 तक हिंदी पखवाड़ा एवं अवधि के अन्तर्गत दिनांक 8-9-2010 एवं 9-9-2010 को हिंदी कार्यशाला तथा दिनांक 14-9-2010 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत कार्यालय कार्य जैसे पत्राचार, संचिकाओं पर टिप्पणी, पंजियों में प्रविष्टियां आदि शत प्रतिशत हिंदी में करने का आह्वान किया गया और कार्यशाला के अन्तर्गत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में पत्राचार के पत्र एवं टिप्पणियों एवं अन्य प्रलेखों को लिखने का अभ्यास कराया गया । हिंदी में काम करने में आने वाली समस्याओं का निदान भी हिंदी कार्यशाला के अन्तर्गत किया गया ।

दिनांक 14 सितंबर, 2010 को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में गति लाने एवं कार्यालय में राजभाषा हिंदी में अपना दैनिक कार्यालय-कार्य हिंदी में करने की झिझक को समाप्त करने के उद्देश्य से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, पटना के सभागार में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. शत्रुघन प्रसाद, विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त), हिंदी विभाग, नालंदा विश्वविद्यालय, पटना द्वारा किया गया । डॉ. प्रसाद ने अपने उद्घाटन अभिभाषण में साहित्य एवं राजभाषा के क्षेत्र में हिंदी भाषा के महत्व, उसकी उपादेयता एवं स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इस भाषा की उपयोगिता, विदेशों में हिंदी की स्थिति आदि के बारे विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया ।

इससे पूर्व संस्थान के निदेशक महोदय ने स्वागत अभिभाषण प्रस्तुत किया। सभा में उपस्थित मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, शीर्ष अधिकारी, अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों का उन्होंने स्वागत किया। उन्होंने अपने संबोधन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को टिप्पणी और मूल पत्राचार हिंदी में करने, हिंदी पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में करने संबंधी संकल्प लेने का आह्वान करते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा नीति का अनुपालन करने का निदेश दिया।

पूर्ति प्रभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, नई दिल्ली

पूर्ति प्रभाग, वाणिज्य विभाग में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 14-09-2010 से 28-09-2010 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन उल्लासपूर्वक किया गया। दिनांक 28-09-2010 को हिंदी पखवाड़े के कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्ति प्रभाग की निदेशक श्रीमती कल्पना नारायण ने की। उपनिदेशक (रा.भा.) श्री टेक चंद मंगला ने अपने स्वागत भाषण में अन्य बातों के साथ-साथ राजभाषा हिंदी की पृष्ठभूमि तथा सांविधिक अपेक्षाओं की चर्चा की। उन्होंने प्रभाग में आयोजित विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं - सरकारी कामकाज मूलरूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना, हिंदी में डिक्टेशन देने की प्रोत्साहन योजना तथा पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा हिंदी वर्तनी प्रतियोगिता, हिंदी में टिप्पण तथा प्रारूप लेखन प्रतियोगिता की संक्षिप्त जानकारी भी दी। तदुपरांत, श्रीमती कल्पना नारायण, निदेशक (पूर्ति) ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए और अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार स्वरूप दी गई राशि बहुत कम है और इच्छा व्यक्त की कि अगले वर्ष इन राशियों में यथोचित वृद्धि की जाए ताकि और अधिक कार्मिक इन प्रतियोगिताओं के प्रति आकर्षित हो सकें। अध्यक्षीय भाषण में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि “हिंदी हमारी राजभाषा है यानी सरकारी कामकाज की भाषा है। हिंदी के प्रयोग में हमारा राष्ट्र प्रेम भी झलकता है। हम सबको अपना सरकारी कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करना चाहिए। मैं, खासतौर पर अधिकारियों से आग्रह करूंगी कि वे फाइलों पर छोटी-मोटी टिप्पणियां हिंदी में लिखकर अपने सहकर्मियों के सामने एक अच्छा उदाहरण

प्रस्तुत करें ताकि वे अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा प्राप्त कर सकें। इस अवसर पर मैं यह भी अनुरोध करना चाहूंगी कि हिंदी दिवस या हिंदी पखवाड़े को मात्र रस्म अदायगी तक सीमित न रखें बल्कि इसे अपने दैनिक कार्यों में प्रयोग करके कर्तव्य पालन का परिचय दें”।

आकाशवाणी, पटना

आकाशवाणी, पटना में इस वर्ष दिनांक 1-09-2010 से 14-09-2010 तक की अवधि को हिंदी पखवाड़ा के रूप में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान राजभाषा हिंदी में कार्य करने की मानसिकता और वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से कतिपय प्रतिस्पर्धात्मक प्रतियोगिताएं यथा हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (3-09-2010), हिंदी निबंध प्रतियोगिता (6-09-2010), कंप्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता (7-09-2010), हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता (8-09-2010), हिंदी निबंध प्रतियोगिता (मल्टी टास्कफोर्स कर्मचारियों हेतु) (पूर्व समूह 'घ' कर्मचारी (9-09-2010), आशु. भाषण प्रतियोगिता (9-09-2010), हिंदी प्रश्न-उत्तर प्रतियोगिता (10-09-2010) आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारी और कर्मचारीगण ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर, 2010 को कार्यालय के क्लब भवन में हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि नालंदा खुला विश्वविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता विभाग के मुख्य समन्वयक प्रो. (डॉ.) अर्जुन तिवारी के कर-कमलों से सभी सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कार्यालयीन कार्यों में इसके अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया तथा राजभाषा के विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी को राजभाषा स्वीकार करने के पीछे इसके भौगोलिक और ऐतिहासिक कारणों का बल निहित था। रोजगारोन्मुख भाषा के रूप में हिंदी की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने आगे कहा कि विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में तथा प्रबंधन कोर्सों में इसे एक अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाया जाने लगा है।

अतः हमें अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए तथा गर्वपूर्वक अपना सभी कार्यालयीन कार्य हिंदी में ही करना चाहिए। अध्यक्षीय संबोधन में केंद्र निदेशक सुश्री परवीन रहमान ने कहा कि हमें अपने कार्यों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को सिर्फ बढ़ाना ही नहीं है बल्कि दूसरों को प्रोत्साहित भी करना है। यह हमारे मान सम्मान और अस्मिता का प्रतीक है।

उत्तर मध्य रेलवे मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग, इलाहाबाद

समारोह की शुरुआत सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ की गई। कार्यक्रम के प्रारंभ में मंडल के अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री दिनेश कुमार सिंह ने समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का अभिनंदन किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप इलाहाबाद मंडल में राजभाषा के प्रचार-प्रयोग में बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा सप्ताह का आयोजन किया

गया था। उन्होंने कहा कि राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए लागू की जा रही नीति, प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है इसलिए मंडल के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। ताकि हिंदी को अपना संवैधानिक दर्जा मिल सके। इसके उपरान्त श्री राजेश कुमार गुप्ता के दल द्वारा एक मनभावन सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

राजभाषा सप्ताह के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में इलाहाबाद मंडल के 88 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में प्रशंसनीय कार्य करने के लिए मंडल रेल प्रबंधक द्वारा नकद पुरस्कार राशि, स्मृति चिन्ह और प्रमाण-पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक महोदय ने संबोधित करते हुए कहा कि मंडल में राजभाषा का कार्यान्वयन भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप हो रहा है। उन्होंने पुरस्कार विजेता अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि अब उनका हिंदी में कार्य करने का दायित्व और बढ़ गया है।

(पृष्ठ 33 का शेष)

- **तिलचट्टा** : तिलचट्टा (कॉक्रोच) बिना भोजन के करीब 45 दिन तक जिंदा रह सकता है।
- **छिपकली** : छिपकली कभी भी पानी नहीं पीती।
- **हमींग बर्ड** : 'हमींग बर्ड' संसार का सबसे छोटा पक्षी है।
- **जिराफ** : जिराफ किसी भी तरह की आवाज नहीं निकाल सकते।
- **चींटी** : चींटी अपने वजन से 3 गुना अधिक वजन उठा सकती है।
- **हाथी** : हाथी मनुष्य की गंध 3000 फुट की दूरी से पहचान जाता है।

- **इलैक्ट्रिक ईल** : इलैक्ट्रिक ईल ऐसी मछली है जिसकी पूंछ में बिजली पैदा करने वाले अंग होते हैं।
- **लाफींग जैक एस** : आस्ट्रेलिया का 'लाफींग जैक एस' पक्षी मनुष्य की भांति हंस सकता है।
- **स्पिंगशलाई** : अफ्रीका का 'स्पिंगशलाई' सर्प दूर से विष फैकता है।
- **कृष्ण सार मृग** : अफ्रीका का 'कृष्ण सार मृग' पानी नहीं पीता।
- **पनामा फ्रांग मेंढक** : पनामा देश में 'पनामा फ्रांग' नामक एक मेंढक पाया जाता है, जो केवल सांप खाता है। यह मेंढक 20 से 30 किलोग्राम तक वजन का होता है व इसके सिर पर दो सींग होते हैं।

संगोष्ठी/सम्मेलन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अमृतसर
(संयोजक आयकर विभाग)
कार्यालय : मुख्य आयकर आयुक्त, आयकर
भवन, मक्बूल रोड, अमृतसर-143001

अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति व मुख्य आयकर आयुक्त अमृतसर के मार्गदर्शन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अमृतसर द्वारा 29-7-2010 को आयकर विभाग, अमृतसर के कान्फ्रेंस हाल में वार्षिक "राजभाषा सेमिनार" का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों/निगमों/उपक्रमों तथा राष्ट्रीय बैंको से काफी अधिक संख्या में राजभाषा अधिकारियों/अनुवादकों/सहायकों ने भाग लिया। राजभाषा सेमिनार का उद्घाटन श्री हरभजन सिंह, आयकर आयुक्त-1, व. राजभाषा अधिकारी आयकर विभाग, अमृतसर ने किया। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के क्षेत्र में राजभाषा/हिंदी अधिकारी की भूमिका पर उन्होंने विस्तृत रूप से प्रकाश डाला तथा इस विषय में उपस्थित सदस्यों के विचार आमंत्रित किए। अपने अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी के कलिष्ट शब्दों का प्रयोग न करके बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

सेमिनार के दौरान राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वर्ष 2010-11 के लिये जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम की प्रत्येक मद पर विस्तृत चर्चा की गई तथा इसमें दिये गए लक्ष्यों को प्राप्त करने पर सदस्यों ने अपने-अपने कार्यालय/संस्थान के कार्य की प्रकृति अनुसार सुझाव दिए।

सभी सदस्यों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार की वेबसाइट WWW.rajbhasha.gov.in के मुख्य पृष्ठ, होम पेज तथा डाउनलोड पेज की प्रतियां उपलब्ध करवाई गई। राजभाषा विभाग के पोर्टल से डाउनलोड किए जाने वाले कार्यक्रमों की सूची भी उनके ध्यान में लाई गई।

मुख्य अतिथि महोदय ने अपने अनुभवों के आधार पर हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में राजभाषा अधिकारी/हिंदी कार्यान्वयन से जुड़े अधिकारियों की भूमिका पर विस्तृत टिप्पणी की।

सभी उपस्थित सदस्यों से अनुरोध किया गया कि प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के 10 दिन बाद की राजभाषा संबंधी प्रगति रिपोर्ट समिति कार्यालय को प्रेषित कर दी जाए।

सेमिनार के दौरान सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हिंदी अधिकारियों/कर्मचारियों की सक्रिय भूमिका पर विचार विमर्श किया गया।

सेमिनार के अंत में सदस्य सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सभी सदस्यों से अनुरोध किया गया कि वह नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा किए जा रहे सभी आयोजनों में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें ताकि समिति का स्थान क्षेत्र की अग्रणी समितियों में बना रहे।

मुंशी प्रेमचंद जयंती के अवसर पर
प.रे. राजकोट मंडल पर साहित्यिक
संगोष्ठी का आयोजन

मुंशी प्रेमचंद जयंती के उपलक्ष्य में पश्चिम रेलवे महिला समाज सेवा समिति, राजकोट एवं मंडल के राजभाषा विभाग द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 29-7-2010 को बच्चों को प्रेरित करने के उद्देश्य से एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बच्चों ने देशभक्ति गीत एवं अन्य कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती अल्का शर्मा, अध्यक्ष-महिला समिति थी। आपने अपने उद्बोधन में राजभाषा विभाग की इस बात के लिए प्रशंसा की कि यह विभाग बच्चों एवं महिलाओं में भी उनकी प्रतिभा विकसित करने के लिए प्रयास करता रहता है। आपने सभी बच्चों की कविताओं को उत्कृष्ट बताया

और सभी को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करते हुए समिति की ओर से विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा। आपने आशा व्यक्त की कि आगे और भी ऐसे ही कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

राजभाषा अधिकारी ने श्रीमती शर्मा, समिति की सचिव श्रीमती अपर्णा मिश्रा तथा अन्य सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा आश्वासन दिया कि राजभाषा विभाग आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करेगा।

उक्त कड़ी में दिनांक 30-7-2010 को अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिवारजनों हेतु राजभाषा विभाग द्वारा साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें दस व्यक्तियों ने भाग लिया। लगभग तीन घंटे तक चले इस कार्यक्रम में मुंशी प्रेमचंद के अलावा प्रसाद, पंत, दिनकर, कबीर, निराला आदि कवि/लेखकों के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री वेदपाल ने की जबकि समीक्षक एवं निर्णायक की जिम्मेदारी श्री आर.डी. मीना, वरमंसधि ने संभाली। कार्यक्रम में अन्य लोगों के अलावा अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री दयानंद गांधी, श्रीमती अल्का शर्मा - अध्यक्ष प.रे.म.स.से. समिति की गरिमामय उपस्थिति रही। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री वेदपाल जी ने कार्यक्रम की प्रशंसा की एवं चाहा कि ऐसे कार्यक्रम वर्ष में कम से कम 3/4 बार आयोजित हों।

कार्यक्रम का संचालन श्री पी.बी. सिंह- राजभाषा अधिकारी ने किया जबकि व्यवस्था संबंधी जिम्मेदारी राजभाषा विभाग के कर्मचारियों ने संभाली।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, महासागर भवन, ब्लाक-12, सी.जी.ओ. कंपलेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने एवं वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय विकास की जानकारी आम जनता तक पहुंचाने के उद्देश्य से हर वर्ष पृथ्वी विज्ञान से संबंधित किसी भी विषय पर राष्ट्रीय स्तर की महत्वपूर्ण संगोष्ठी आयोजित करता है। इस संगोष्ठी में देश भर के विभिन्न महत्वपूर्ण वैज्ञानिक संगठनों/संस्थाओं के पदाधिकारी विषय से संबंधित लेख हिंदी में प्रस्तुत करते हैं और बाद में इन लेखों को पुस्तक रूप में प्रकाशित कराया जाता है।

मंत्रालय अब तक विभिन्न विषयों पर ऐसी उन्नीस (19) संगोष्ठियां आयोजित कर चुका है। उन्नीसवीं संगोष्ठी 10 दिसंबर, 2010 को "मौसम और जलवायु का कृषि पर प्रभाव" विषय पर आयोजित की गई। कृषि एवं सहकारिता विभाग के सचिव श्री प्रवीर कुमार बासु इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि एवं राजभाषा विभाग की सचिव, श्रीमती वीणा उपाध्याय विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थी।

इस संगोष्ठी में 18 वीं संगोष्ठी के लेखों की पुस्तक "जलवायु परिवर्तन और समाज" का लोकार्पण भी किया गया साथ ही संगोष्ठी में भाग लेने वाले वैज्ञानिकों/प्रोफेसरों में से पांच प्रतिभागियों को उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

मंत्रालय द्वारा वैज्ञानिक एवं जनमानस के लिए उपयोगी ऐसे सामयिक विषय पर हिंदी माध्यम से संगोष्ठी आयोजित करने की काफी सराहना की गई है। ■

(पृष्ठ 37 का शेष)

एलोव फेरोक्स बाजार में अपनी पैठ बनाने में सफल हो जाता है तो निःसंदेह दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका और चीन दोनों की नींद उड़ा देगा। इससे बाजार में प्रतिस्पर्धा और भी कठिन हो जाएगी, परन्तु एक बात तो तय है कि एलोवेरा की मांग अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बढ़ती ही जाएगी।

निकट भविष्य में इस अमूल्य एलोवेरा पौधे से एक प्राकृतिक नमीकारक के रूप में असीमित आशायें लगी हुई हैं, जिसके फलस्वरूप जनमानस का स्वास्थ्य एवं सौंदर्य अक्षुण्ण बन सके एवं एक सुखमय जीवन की सुखद आस साकार हो सके।

पुरस्कार/प्रतियोगिताएं

आकाशवाणी पणजी (गोवा) में स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रध्वज तले राष्ट्रभाषा पुरस्कार

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 2010 को आकाशवाणी पणजी में केंद्र निदेशक श्री बी.डी. मजुमदार ने भारत सरकार, राजभाषा विभाग की हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन योजना वर्ष 2009-2010 के लिए छह अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान कर राष्ट्रध्वज तले सम्मानित किया। कार्यक्षेत्र (ड्यूटी रूम) में हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए ड्यूटी ऑफिसर श्री नंदा दीपक बट्टा और श्री संतोष पाडगांवकर को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। हिंदी में उत्कृष्ट समाचार प्रेषण के लिए श्री बालाजी प्रभुगांवकर समाचार संपादक तथा कैश बुक, चैक प्रेषण आदि लेखा क्रार्यों में हिंदी के उत्तम प्रयोग के लिए श्री राजेन्द्र सावंत को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किए गए। ड्यूटी ऑफिसर श्री प्रेमानंद कदम और श्री आशिष सातपुते को तृतीय पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार राजभाषा विभाग की हिंदी शिक्षण योजना की प्राज्ञ परीक्षा उत्कृष्ट अंकों के साथ उत्तीर्ण किए जाने पर इंजीनियर श्री विजी बर्गीस और श्री पी.बी. रविन्द्रन को राजभाषा विभाग हिंदी शिक्षण योजना के प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्री वी.एन. पागे केन्द्र अभियंता तथा श्री दिलीप देशपांडे उपनिदेशक समाचार ने समारोह को संबोधित करते हुए स्वतंत्रता दिवस की शुभकामना दी। अपने उद्बोधन में केंद्र निदेशक श्री बी.डी. मजुमदार ने कहा कि अपने दायित्वों के अनुरूप आकाशवाणी पणजी में जहां राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रेरणा और प्रोत्साहन के द्वारा गति दी जा रही है वहीं हिंदी में समाचार प्रेषण और संगीत के कार्यक्रमों में बीच-बीच में हिंदी में सुंदर उद्घोषणा इस केंद्र की विशेषता है। स्वतंत्रता दिवस की शुभकामना देते हुए राष्ट्रध्वज तले राष्ट्रभाषा हिंदी के पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को उन्होंने बधाई दी। आकाशवाणी क्लब के सचिव श्री दिनकर यादव अन्वेषक

ग्रेड। श्रोता अनुसंधान एकांश ने समारोह के आयोजन में विशेष भूमिका का निर्वाह किया। समारोह का संचालन आकाशवाणी पणजी राजभाषा समिति के सदस्य सचिव श्री खगेश्वर प्रसाद यादव हिंदी अधिकारी ने किया।

बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली अंचल, जीवन भारती, लेवल-5, टावर-1, 124, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-1

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में आशु भाषण प्रतियोगिता दिनांक 30 जुलाई, 2010 को दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में दिल्ली स्थित समस्त बैंकों के प्रतिभागियों के बीच 'हिंदी आशु भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में श्री सुरेन्द्र मोहन नय्यर, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), बैंकिंग प्रभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, श्री एस.डी. पांडेय, उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार एवं श्री एस. पी. कोहली, सदस्य सचिव, नराकास कार्यालय, पंजाब नेशनल बैंक थे। आंचलिक कार्यालय से महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रबंधक श्री अर्जुन पां. घुगल एवं श्री सी. एम. भनोत, उप महाप्रबंधक उपस्थित रहे। श्री नय्यर, संयुक्त निदेशक, वित्त मंत्रालय ने प्रतिभागियों को भारत सरकार की अपेक्षाओं एवं नवोन्मेषी कार्यक्रमों से अवगत करवाते हुए प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया,

1. सुश्री बिमला नेगी, इलाहाबाद बैंक - प्रथम
2. श्रीमति पूर्णिमा नायडू, भारतीय स्टेट बैंक - द्वितीय
3. श्री केशव मदान, सिंडीकेट बैंक - तृतीय तथा
4. श्री अतुल सक्सेना, बैंक ऑफ इंडिया - प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया।

श्री नय्यर ने बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित ऐसे कार्यक्रमों की सराहना की तथा कहा कि बैंक ऑफ इंडिया राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयास प्रशंसनीय हैं। मूलभूत अपेक्षाओं के अनुपालन के साथ ही साथ प्रत्येक स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की दिशा में बैंक ऑफ इंडिया सतत अग्रसर है।

उप रेशमकीट प्रजनन केंद्र, कुन्नूर केंद्रीय रेशम बोर्ड

केंद्र में वर्ष 2009-10 का राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन संबंधी प्राप्त प्रगति सराहनीय पाया है। राजभाषा विभाग, कोर्डाईट निर्माणी, अरुवनकाडु में 2-2-2010 को आयोजित न.रा.का.स. अर्ध-वार्षिक बैठक में इस केंद्र के श्री. जगदीशन, निम्न श्रेणी लिपिक, को प्रशासनिक विभाग के फाइलों पर राजभाषा हिंदी में प्रशंसनीय कार्य करने पर, उत्तरदायित्व हेतु "राजभाषा पाणिनी पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है।

श्री जगदीशन, निम्न श्रेणी लिपिक, बधिर और गूंगा होन पर भी, जो हिंदी शब्द और वाक्य में अंग्रेजी के साथ

लिखकर देने से, मेरे कठिन परिश्रम से, हिंदी में अब काम कर रहे हैं। इसके अलावा, मैं वर्ष 2002 से राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन संबंधी सभी काम खुद करती हूँ और इस केंद्र को वर्ष 2006-07 और 2008-09 में हिंदी में प्राप्त सराहनीय प्रगति के लिए श्रेष्ठ कार्य निष्पादन का चल वैजयन्ती शील्ड और प्रमाणपत्र से भी सम्मानित की गई थी।

एच एल एल लाइफकेयर लि. एच एल एल भवन, पूजप्पुरा तिरुवनंतपुरम-695012 केरल

एचएलएल लाइफकेयर को वर्ष 2008-09 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में किए गए उत्तम कार्यान्वयन के उपलक्ष्य में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा लगाए गए इंदिरा गाँधी राजभाषा शील्ड 'ग' क्षेत्र के प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। 14 सितंबर, 2010 को प्लेनरी हॉल, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में कंपनी सचिव एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष (सी ए एस), श्री वी.ए. शशिधरन नायर ने भारत के सम्माननीय उप राष्ट्रपति, श्री एम.हमीद अन्नसारी के करकमलों से यह पुरस्कार हासिल किया।

आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल कमल के समान है जिसका एक-एक दल एक-एक प्रांतीय भाषा और उसकी साहित्य-संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा ही नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सारी प्रांतीय बोलियां जिनमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने-अपने घर में (प्रांत में) रानी बन कर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य मणि हिंदी भारत-भारती होकर विराजती रहे।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

प्रशिक्षण

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, (हिंदी टंकण/कंप्यूटर/आशुलिपि गहन प्रशिक्षण केंद्र, कोलकाता का दिनांक 30 सितंबर, 2010 का पत्र सं. 1/2/2010-के हि प्र उ सं/ 503 से 653

विषय :- संघ सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके नियंत्रणाधीन निगमों, सार्वजनिक क्षेत्रों, लोक उद्यमों, अभिकरणों आदि के कर्मचारियों के लिए दिनांक 10-01-2011 से 20-12-2011 तक चलाये जाने वाले हिंदी शब्द संसाधन/टंकण एवं आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, बैंकों तथा अन्य कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए अन्य पाठ्यक्रम के साथ-साथ हिंदी शब्द संसाधन/टाइपलेखन और हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी चलाता है।

2. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, कोलकाता द्वारा चलाए जाने वाले हिंदी शब्द संसाधन/टाइपलेखन एवं हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का वर्ष 2011 (कैलेण्डर वर्ष) का कार्यक्रम आपको आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित किया जा रहा है :-

क्रम सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियाँ	प्रशिक्षण केन्द्र का नाम
01	हिंदी शं.सं. /टंकण (कंप्यूटर पर)	40 कार्यदिवस	10-01-2011 से 09-03-2011 तक	केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान (हिंदी टंकण/आशु.गहन प्रशिक्षण केन्द्र)
02	हिंदी शं.सं./टंकण (कंप्यूटर पर)	40 कार्यदिवस	10-03-2011 से 06-05-2011 तक	राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
03	हिंदी शं. सं. /टंकण (कंप्यूटर पर)	40 कार्यदिवस	02-06-2011 से 27-07-2011 तक	कमरा नं. 423, तीसरा तल, 1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट,
04	हिंदी आशुलिपि (कंप्यूटर पर)	80 कार्यदिवस	23-08-2011 से 20-12-2011 तक	(डलहौसी, टेलीफोन भवन के पूरब साइड चौराहे पर) कोलकाता- 700001

3. इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में निम्नांकित कर्मचारी नामित किए जा सकते हैं :-

(क) प्रोबेशनर

(ख) उन स्थानों के कर्मचारी जहाँ हिंदी टंकण या आशुलिपि का कोई प्रशिक्षण केंद्र नहीं है।

(ग) शिफ्ट ड्यूटी पर काम करने वाले कर्मचारी।

(घ) अन्य कर्मचारी जिनके लिए कार्यालय यह समझते हैं कि उनको पूर्णकालिक प्रशिक्षण देना लाभदायक होगा।

4. ये पाठ्यक्रम पूर्णकालिक हैं और प्रशिक्षण के लिए शुल्क नहीं लिया जाता। इन पाठ्यक्रमों की विषय वस्तु वही है जो हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत निर्धारित हैं। प्रशिक्षण की अवधि में प्रशिक्षार्थी प्रातः 9.30 से सायं 6.00 बजे तक प्रशिक्षण केंद्र पर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। पाठ्यक्रम के अंत में प्रशिक्षार्थियों की परीक्षा हिंदी शिक्षण योजना के परीक्षा के स्कंध द्वारा की जाती है। सफल प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र दिए जाते हैं। केंद्र सरकार के ऐसे कर्मचारी जो अधिक अंक प्राप्त करते हैं (टाइपलेखन में 90 प्रतिशत या अधिक और आशुलिपि में 88 प्रतिशत या अधिक) संबंधित नियमों के अधीन विहित शर्तें पूरी करने पर अपने कार्यालयों द्वारा नकद पुरस्कार के पात्र होंगे।

5. केंद्र सरकार के नियमों/उपक्रमों तथा राष्ट्रीकृत बैंकों आदि को प्रति कर्मचारी 50 (पचास) रुपये की दर से परीक्षा शुल्क देना होता है। परीक्षा शुल्क बैंक ड्राफ्ट द्वारा दिया जायेगा जो कि "उप निदेशक परीक्षा, हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली" के नाम से देय होगा।

6. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, कोलकाता में प्रशिक्षार्थियों के लिए भोजन एवं आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

7. इन पाठ्यक्रमों के लिए अर्हताएं निम्न प्रकार हैं :-

(क) हिंदी शब्द संसाधन/टंकण

1. सभी अवर श्रेणी लिपिकों, अंग्रेजी टंककों, कंप्यूटर ऑपरेटरों, डाटा एंट्री ऑपरेटरों, कर सहायकों, डाक सहायकों, कार्यालय सहायकों तथा दूरसंचार सहायकों के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य है।
2. प्रवर श्रेणी लिपिक (यू.डी.सी.), सहायकों एवं हिंदी अनुवादकों तथा सभी श्रेणी के अधिकारियों को भी स्वैच्छिक आधार पर नामित किया जा सकता है।
3. शैक्षणिक योग्यता :- हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य परीक्षा जैसे प्राज्ञ आदि उत्तीर्ण हों। दिनांक 27-10-1980 के राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन सं. 14016/17/88-रा.भा. (घ) के अनुसार हिन्दी टंकण के प्रशिक्षण के लिए उन सभी कर्मचारियों को जिनकी शैक्षणिक योग्यता हिंदी के साथ मिडिल अथवा समकक्ष परीक्षा जैसे प्रवीण आदि उत्तीर्ण हों, को भी प्रवेश दिया जा सकेगा।

(ख) हिंदी आशुलिपि

1. सभी वर्ग के आशुलिपिकों, वैयक्तिक सहायकों (पी.ए.), सीनीयर पी.ए. निजी सचिवों के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य है।
2. कक्षाओं में स्थान उपलब्ध होने पर ऐसे कर्मचारियों को भी प्रवेश दिया जा सकता है जिनके लिए हिंदी शब्द संसाधन/टंकण का प्रशिक्षण अनिवार्य है तथा जो हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी टंकण परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं और संबंधित कार्यालय यह प्रमाण-पत्र दे कि उनका यह प्रशिक्षण जनहित में है।
3. शैक्षणिक योग्यता :- हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा जैसे प्राज्ञ आदि उत्तीर्ण हों।
8. प्रशिक्षण क्षमता का पूरा लाभ उठाया जा सके इसलिए केवल उन्हीं कर्मचारियों को नामित किया जाए, जिन्हें निश्चित रूप से प्रशिक्षण के लिए कार्यमुक्त किया जा सके। प्रशिक्षण के दौरान कर्मचारियों को लम्बी अवधि का अवकाश स्वीकृत करना संभव नहीं होगा। सत्र के दौरान कर्मचारियों को ऐसा स्थानान्तरण न किया जाए जिससे उसके प्रशिक्षण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के बाद किसी भी कर्मचारी को सत्र के मध्य से वापस बुलाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।
9. आपसे अनुरोध है कि अपने प्रतिभागियों के नाम पाठ्यक्रम आरम्भ होने से कम-से-कम एक महीना पहले केन्द्र के सहायक निदेशक, श्री जीतेन्द्र प्रसाद को भिजवा दें एवं उनके प्रवेश की पुष्टि प्राप्त होने पर ही उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजा जाये, पाठ्यक्रमों के लिए नामित कर्मचारियों को प्रशिक्षण आरम्भ होने के दिन प्रशिक्षण केंद्र पर प्रातः 9.30 बजे उपस्थित होने के निर्देश भी दे दें परन्तु यदि किसी अवर श्रेणी लिपिक को आशुलिपिक पाठ्यक्रम के लिए नामित किया जाता है तो उनके प्रवेश की पुष्टि प्राप्त होने पर ही उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए।
10. पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर दिया जाएगा।

कार्यालय ज्ञापन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली का दिनांक 15 दिसंबर, 2010

का का.ज्ञा. सं. 20014/05/रा भा/का. 2

विषय : राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग (प्रोग्रेसिव) से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट के संशोधित प्रोफार्मा का प्रेषण ।

1. राजभाषा विभाग को समस्त मंत्रालयों/विभागों से राजभाषा हिंदी के प्रगामी (प्रोग्रेसिव) प्रयोग की स्थिति दर्शाते हुए तिमाही प्रगति रिपोर्ट, तथा इस पक्ष पर वार्षिक प्रगति दर्शाते हुए वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्राप्त कराई जाती है । इन प्रयोजनार्थ राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न संवैधानिक, वैधानिक तथा कार्यकारी आदेशों को दृष्टिगत रखते हुए प्रपत्र निर्धारित किए गए हैं । उल्लिखित प्रपत्रों में परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार अंतिम संशोधन समसंख्यक कार्यालय ज्ञापन दिनांक 29-4-2010 द्वारा किए गए थे ।

2. वर्तमान में प्रचलित प्रपत्र के गुणात्मक संवर्धन के लक्ष्य से यह आवश्यक पाया गया है कि इनके माध्यम से संबंधित मंत्रालयों/विभागों, तथा उनके अधीनस्थ/संबद्ध कार्यालयों/संगठनों/उपक्रमों द्वारा राजभाषा प्रयोग और प्रसार की दिशा में उठाए गए सकारात्मक कदमों का विवरण प्राप्त किया जाए । इससे ऐसे अभिनव प्रयोगों और पहलात्मक कार्रवाइयों, जिनसे वांछित सफलता प्राप्त हुई, की जानकारी का अन्य विभागों/संगठनों में प्रसार कर राजभाषा के प्रचलन और प्रयोग को और प्रोत्साहित किया जा सकता है । तदनुसार, प्रपत्र के भाग-I (तिमाही अंतराल के लिए निर्धारित) में निम्नांकित पक्षों पर सूचना की अपेक्षा की गई है :

(क) हिंदी सलाहकार समिति तथा विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय तथा अनुसरणात्मक कार्रवाई की स्थिति ।

(ख) विशिष्ट उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण ।

(ग) राजभाषा के प्रयोग हेतु उपलब्ध कराए गए प्रोत्साहनों का विवरण ।

3. प्रपत्र के भाग-II (वार्षिक अंतराल के लिए निर्धारित) में हिंदी भाषा, टंकण, आशुलिपि, अनुवाद तथा हिंदी कार्य में सहायक कंप्यूटर सॉफ्टवेयर की जानकारी के प्रशिक्षण की आगामी पांच वर्षों की योजना की सूचना, का समावेश किया गया है । ऐसा इसलिए आवश्यक है क्योंकि वर्तमान अनुमोदित नीति के अनुसार वर्ष 2015 तक केंद्रीय कार्यालयों/संगठनों के समस्त कर्मियों को उक्त क्षेत्रों में प्रशिक्षण देने का लक्ष्य है ।

3.1 संशोधित प्रपत्र संलग्नक-I व II पर हैं ।

4. उक्त वस्तुस्थिति के दृष्टिगत सभी मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध है कि मार्च, 2011 को समाप्त होने वाली तिमाही, तथा वर्ष 2010-11 की वार्षिक प्रगति आख्या संलग्न संशोधित प्रपत्रों में उपलब्ध कराने का कष्ट करें । आपसे अनुरोध है कि इन प्रपत्रों को अपने संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों को भेजते हुए निदेश देने की कृपा करें कि वे अपनी रिपोर्टें अपने नियंत्रक कार्यालयों को भेजने के साथ-साथ उनकी एक प्रति राजभाषा विभाग के संबंधित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को भी अवश्य भिजवाएं । इस विभाग के आठ क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों के क्षेत्राधिकार का विवरण, डाक पता, ई-मेल आई. डी., दूरभाष और फैक्स संख्या संलग्नक-III में हैं ।

5. आपसे अनुरोध है कि रिपोर्ट तैयार करते समय कृपया यह सुनिश्चित कर लिया जाए कि इसमें दी गई सूचना अद्यतन, संपूर्ण तथा संपुष्ट है । इन्हें संयुक्त सचिव (प्रशासन), जो प्रायः राजभाषा कार्यान्वयन का भी कार्य देखते हैं, के हस्ताक्षर से भेजने का अनुरोध है ।

6. ये प्रोफार्मा राजभाषा विभाग की वेबसाइट rajbhasha.gov.in पर भी उपलब्ध है।

7. यह कार्यालय ज्ञापन सचिव, राजभाषा विभाग के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों/संबंध व अधीनस्थ कार्यालय/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/स्वायत्त निकायों आदि में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट

.....को समाप्त तिमाही

भाग-I (प्रत्येक तिमाही में भरा जाए)

कार्यालय का नाम.....

संबंधित राजभाषा अधिकारी का फोन नं. एस.टी.डी.कोड.....फोन नं.

1. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी कागजात* की स्थिति

(क) जारी कागजात की कुल संख्या

(ख) इनमें से केवल अंग्रेजी में जारी किये गये कागजात

*इनमें सामान्य आदेश, ज्ञापन संकल्प, अधिसूचनाएं, नियम, करार, संविदा, टेंडर नोटिस, संसदीय प्रश्न, आदि शामिल हैं।

2. हिंदी में प्राप्त पत्रों की स्थिति (राजभाषा नियम-5)

(क) अनुभागों/डेस्कों में कार्यालय पद्धति मैनुअल के अध्याय 4, पैरा 12(1) के अनुसार निर्धारित डायरी रजिस्टर के अनुसार हिंदी में प्राप्त कुल पत्र

(ख) इनमें से कितनों के उत्तर अंग्रेजी में दिए गए

3. अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाने की स्थिति (केवल 'क' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के लिए)

	अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों की संख्या	इनमें से कितनों के उत्तर हिंदी में दिए गए
	1	2
'क' क्षेत्र से		
'ख' क्षेत्र से		

4. भेजे गये कुल पत्रों का ब्योरा

	हिंदी/द्विभाषी में	केवल अंग्रेजी में	भेजे गए पत्रों की कुल संख्या	हिंदी/द्विभाषी में भेजे गए पत्रों का प्रतिशत
	1	2	3	4
'क' क्षेत्र को				
'ख' क्षेत्र को				
'ग' क्षेत्र को				

5. फाइलों पर हिंदी में कार्य

(क) तिमाही के दौरान लिखी गई टिप्पणियों की संख्या

(ख) हिंदी में लिखी गई टिप्पणियों की संख्या

(ग) हिंदी में लिखी गई टिप्पणियों का प्रतिशत

2. अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिंदी के ज्ञान की स्थिति

			अधिकारी	कर्मचारी	कुल संख्या
			1	2	3
2(i)	(क)	अधिकारियों तथा कर्मचारियों की कुल संख्या			
	(ख)	उपर्युक्त (क) में से हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान (मैट्रिक/प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण अथवा समतुल्य/उच्चतर स्तर पर हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण किए) अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या			
	(ग)	उपर्युक्त (ख) में से हिंदी में प्रवीणता प्राप्त/हिंदी माध्यम में मैट्रिक/उसके समतुल्य/उससे उच्चतर स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण हुए अथवा हिंदी के वैकल्पिक विषय सहित स्नातक या समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा उत्तीर्ण हुए अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या			
	(घ)	उपर्युक्त (क) में से (ख) और (ग) को घटाते हुए कितने कर्मी हिंदी भाषा का प्रशिक्षण पा चुके हैं			
	(ङ)	हिंदी में प्रशिक्षण के लिए शेष ।			
	(च)	आगामी पांच वर्षों में प्रशिक्षण की कार्य योजना :-			
		(i) 2010 -11			
		(ii) 2011-12			
		(iii) 2012-13			
		(iv) 2013-14			
		(v) 2014-15			

			कुल संख्या	हिंदी में प्रशिक्षित कर्मिकों की संख्या	हिंदी में काम करने वालों की संख्या	प्रशिक्षण के लिए शेष
			1	2	3	4
2(ii)	(क)	आशुलिपि				
	(ख)	टंकक/लिपिक				
	(ग)	आगामी पांच वर्षों में प्रशिक्षण की कार्य योजना				
		(i) 2010-11				
		(ii) 2011-12				
		(iii) 2012-13				
		(iv) 2013-14				
		(v) 2014-15				

2(iii)	(क)	कुल अधिकारी/कर्मचारी जो अनुवाद कार्य करते हैं।	
	(ख)	उक्त (क) में से केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो से प्रशिक्षण प्राप्त।	
	(ग)	कितनों को प्रशिक्षित दिया जाना शेष है।	
	(घ)	आगामी पांच वर्षों में प्रशिक्षण की कार्य योजना :-	
		(i) 2010-11	
		(ii) 2011-12	
		(iii) 2012-13	
		(iv) 2013-14	
		(v) 2014-15	

3. हिंदी कार्य में सहायक विभिन्न सॉफ्टवेयरों की जानकारी तथा कंप्यूटर प्रशिक्षण की स्थिति

3(i)	सॉफ्टवेयरों के नाम	इन सॉफ्टवेयरों को प्रयोग करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या
	1	2

3(ii)	कुल अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या	कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए प्रशिक्षित अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या	कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या
	1	2	3
(क)			
(ख)	आगामी पांच वर्षों में प्रशिक्षण की कार्य योजना :-		
	(i) 2010-11		
	(ii) 2011-12		
	(iii) 2012-13		
	(iv) 2013-14		
	(v) 2014-15		

4. कंप्यूटर आदि से सम्बन्धित विवरण

	कुल संख्या	द्विभाषी	यूनिकोड समर्थित	केवल अंग्रेजी में
	1	2	3	4
4(i) कम्प्यूटर/लैपटॉप				

5. कोड, मैनुअल, मानकीकृत प्रपत्र आदि

	कुल संख्या	द्विभाषी/हिंदी में	केवल अंग्रेजी में
	1	2	3
(क) अधिनियम/नियम, कार्यालयीन कोड/मैनुअल प्रक्रिया साहित्य, आदि			
(ख) मानकीकृत प्रपत्र			

6. हिंदी कार्यशालाएं

तिमाही के दौरान कार्यशाला आयोजन की तिथि	प्रशिक्षित अधिकारियों/कर्मचारियों की संख्या (राजभाषा अधिकारियों तथा समूह 'घ' के कर्मचारियों को छोड़कर)
1	2

7. विभागीय/संगठनीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के आयोजन की तिथि

	महत्वपूर्ण निर्णय	अनुपालन की स्थिति
1.		
2.		
3.		
4.		

8. हिंदी सलाहकार समिति की बैठक के आयोजन की तिथि

(क)

गठन की तिथि	वैधता/समाप्ति की तिथि	पुनर्गठन की तिथि

(ख)

महत्वपूर्ण निर्णय	अनुसरणात्मक कार्रवाई

पहली बैठक

दूसरी बैठक

9. शीर्षस्थ (मंत्रालय/विभाग में संयुक्त सचिव स्तर तथा अन्य कार्यालयों आदि में प्रशासनिक प्रमुख/कार्यालय प्रमुख स्तर की अध्यक्षता में आयोजित बैठकें) प्रशासनिक बैठकें

(क) तिमाही के दौरान हुई शीर्षस्थ प्रशासनिक बैठकों की संख्या

(ख) ऐसी कितनी बैठकों में वार्तालाप/कार्रवाईयां पूरी तरह हिंदी में की गई

10. संसदीय राजभाषा समिति को दिए गए आश्वासनों की स्थिति :

	संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षण की तिथि	दिए गए आश्वासनों की प्रकृति/विषय	दिए गए आश्वासनों की संख्या	तिमाही के दौरान पूरे किए गए आश्वासनों की संख्या	शेष आश्वासनों की संख्या
	1	2	3	4	5
पिछली तिमाहियों के लंबित आश्वासन (यदि कोई हो)					
वर्तमान तिमाही में दिए गए आश्वासन					

11. हिंदी भाषा में प्रशिक्षण की स्थिति

हिंदी भाषा में प्रशिक्षण हेतु अवशेष अधिकारियों/कर्मियों की संख्या	वर्ष में प्रशिक्षित अधिकारियों/कर्मियों की संख्या

12. तिमाही के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से सम्बन्धित अन्य विशिष्ट उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण (विवरण संलग्न करें)

- (क) हिंदी दिवस
- (ख) हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा/माह
- (ग) हिंदी संगोष्ठी
- (घ) हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत पुरस्कृत पुस्तकों का विवरण
- (ङ) अन्य आयोजन

13. मंत्रालय/विभाग के संबद्ध/अधीनस्थ/कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि द्वारा राजभाषा के प्रयोग हेतु उपलब्ध कराए गए प्रोत्साहनों का विवरण

उल्लिखित सूचना उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर बनाई गई है तथा मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

मंत्रालय/विभाग/संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के हस्ताक्षर

अध्यक्ष का नाम

पदनाम

फोन नम्बर

फैक्स नम्बर

ई-मेल का पता

नोट : यह रिपोर्ट विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष से हस्ताक्षरित न होने पर लौटा दी जायेगी। कोई भी कॉलम खाली न छोड़ा जाए और सूचना स्पष्ट रूप से दी जाए।

भाग-II

(इस भाग में सूचनाएं पूरे वित्तीय वर्ष की दी जाएं। इसे केवल 31 मार्च को समाप्त तिमाही रिपोर्ट के भाग-I के साथ भेजा जाए।)

1. (i)	क्या कार्यालय राजभाषा नियम 10(4) (अर्थात् कार्यालय के कुल स्टाफ में से 80% को कार्यसाधक ज्ञान है) के अंतर्गत अधिसूचित का विवरण :-	हां/नहीं
--------	---	----------

(ii) मंत्रालय/विभाग/कार्यालय/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/स्वायत्त निकाय आदि के नियंत्रणाधीन कार्यालयों (यदि हों) की राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचना का विवरण

कुल कार्यालयों की संख्या	अधिसूचित कार्यालयों की संख्या	शेष की स्थिति
1	2	3

6. राजभाषा नियम 8(4) के अंतर्गत कार्यालयों/अनुभागों की संख्या जिन्हें सम्पूर्ण कार्य हिंदी में करने हेतु विनिर्दिष्ट किया गया है :

- (क) कुल कार्यालयों/प्रभागों/अनुभागों की संख्या
- (ख) हिंदी में कार्य के लिए विनिर्दिष्ट कार्यालयों/अनुभागों की संख्या

7. (क) हिंदी भाषा में प्रशिक्षण की स्थिति :

हिंदी भाषा में प्रशिक्षण हेतु अवशेष अधिकारियों/कर्मियों की संख्या	वर्ष में प्रशिक्षित अधिकारियों/कर्मियों की संख्या

(ख) मंत्रालयों/विभागों/संबद्ध/अधीनस्थ संस्थाओं/कार्यालयों के अंतर्गत प्रशिक्षण संस्थानों में राजभाषा के प्रयोग की स्थिति

- (i) पूरे वर्ष में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या
- (ii) हिंदी माध्यम से आयोजित
- (iii) मिली-जुली भाषा में आयोजित

(ग) प्रशिक्षण सामग्री

- (i) पूरे वर्ष में तैयार प्रशिक्षण सामग्री की कुल संख्या
- (ii) हिंदी/द्विभाषी सामग्री की संख्या
- (iii) केवल अंग्रेजी में सामग्री की संख्या

8. वर्ष के दौरान किए गए राजभाषा संबंधी निरीक्षण

- (क) (i) अनुभागों की कुल संख्या
- (ii) इनमें से निरीक्षित अनुभागों की संख्या
- (ख) (i) संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/.....
स्वायत्त निकायों (यदि हों) इत्यादि की कुल संख्या
- (ii) इनमें से निरीक्षित कार्यालयों की संख्या

9. पत्रिकाओं आदि का प्रकाशन

	कुल संख्या	हिंदी/द्विभाषी में	केवल अंग्रेजी में
	1	2	3
(क) पत्रिकाएं			
(ख) अन्य प्रकाशन			

10. हिंदी पुस्तकों की खरीद (पुस्तकालय में गई इलेक्ट्रॉनिक मीडियम में क्रय की गई पाठ्य सामग्री यथा सीडी, डीवीडी, डाक्यूमेंट्री व ई-बुक शामिल करते हुए)

- (i) वर्ष के दौरान पुस्तकों की खरीद पर कुल व्यय
- (ii) इसमें से हिंदी की पुस्तकों की खरीद पर व्यय

11. उप सचिव/समकक्ष एवं उनसे उच्च स्तर के अधिकारियों द्वारा हिंदी में कार्य

उच्च अधिकारियों की कुल संख्या	हिंदी जानने वाले अधिकारियों की संख्या	कालम 2 में से हिंदी में कार्य करने वालों की संख्या		
		70 प्रतिशत से अधिक	70 से 30 प्रतिशत तक	30 प्रतिशत से कम
1	2	3	4	5

12. सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी में पदों की स्थिति

पदनाम	पदों की संख्या		कब से रिक्त है
	स्वीकृत	रिक्त	
1	2	3	4
(क) मंत्रालय/विभागों/कार्यालय/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/स्वायत्त निकायों आदि के मुख्यालयों में।			
(ख) उपर्युक्त (क) के अधीन सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/यूनिटों में			

13. वेबसाइट की स्थिति

वेबसाइट का पता	आंशिक रूप से हिंदी में	पूरी तरह से द्विभाषी रूप में
1	2	3

14. विभाग/संगठन के हिंदी के प्रसारार्थ विशिष्ट उपलब्धियों तथा सफल अभिनव प्रयोगों का संक्षिप्त ब्यौरा :

15. हिंदी के प्रभावी प्रसार के लिए सुझाव :

उल्लिखित सूचना उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर बनाई गई है तथा मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

मंत्रालय/विभाग/संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के हस्ताक्षर

अध्यक्ष का नाम

पदनाम

दूरभाष नम्बर

फैक्स नम्बर

ई-मेल का पता

नोट : यह रिपोर्ट विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष से हस्ताक्षरित न होने पर लौटा दी जाएगी। कोई कॉलम खाली न छोड़ा जाए और सूचना स्पष्ट रूप से दी जाए।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली का दिनांक 14 दिसंबर, 2010 के
का.ज्ञा. सं. 21034/52/2010-रा.भा. (प्रशि.)

विषय :- हिंदी शिक्षण योजना तथा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के अधीन आयोजित की जाने वाली विभिन्न परीक्षाओं के परीक्षा शुल्क में वृद्धि।

उपर्युक्त विषय पर मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि भारत सरकार के नियंत्रणाधीन सरकारी निगमों/उपक्रमों/बैंकों/निकायों आदि के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी शिक्षण योजना एवं केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के अंतर्गत आयोजित की जाने वाली हिंदी प्रबोध, हिंदी प्रवीण, हिंदी प्राज्ञ तथा हिंदी टंकण/आशुलिपि की परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए प्रत्येक परीक्षार्थी को रुपए 100 (रुपए एक सौ मात्र) परीक्षा शुल्क के रूप में देना होगा।

2. यह कार्यालय ज्ञापन आंतरिक वित्त प्रभाग (वित्त-II), गृह मंत्रालय की दिनांक 3-11-2010 के डायरी संख्या 73015/वित्त. II/10 के तहत दी गई सहमति के आधार पर जारी किया जा रहा है।

3. यह आदेश कार्यालय ज्ञापन के जारी होने की तिथि से लागू होंगे।

राजभाषा हिंदी सबल सोपानों की ओर

—वीणा उपाध्याय
तत्कालीन सचिव, राजभाषा

कर्मठता, कार्यनिष्ठा और व्यवस्थित कार्य योजना के साथ नई उपलब्धियों, नई सफलताओं की ओर बढ़ते हुए उन्नति की नई परिभाषा लिखने में सक्षम सुश्री वीणा उपाध्याय भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1976 बैच की यू.पी. कांडर की अधिकारी हैं। भारत सरकार में आर्थिक कार्य विभाग (वित्त मंत्रालय), कृषि व सहकारिता विभाग और पर्यावरण व वन मंत्रालय तथा गृह मंत्रालय में काम करने का लंबा अनुभव रखने वाली सुश्री वीणा उपाध्याय वर्तमान में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग में सचिव के पद पर आसीन हैं। अपने कार्यों के माध्यम से सभी को प्रेरित करने वाली सुश्री वीणा उपाध्याय से राजभाषा हिंदी विषय पर 'विमानिका' (एयर इंडिया की पत्रिका) के साथ हुई बातचीत प्रस्तुत है

—संपादक

विमानिका : आजादी के 62 वर्ष बाद आज भारत में राजभाषा की दशा और दिशा के बारे में आप क्या सोचती हैं और क्या इस ओर किए जा रहे प्रयास संतोषजनक हैं?

वीणा उपाध्याय : देखिए, सच्चाई तो यही है कि आजादी के इतने वर्षों बाद हिंदी को जो स्थान मिलना चाहिए था वह नहीं मिल पाया है। इस दौरान फिल्मों, टी.वी. और प्रिंट मीडिया के माध्यम से हिंदी का अभूतपूर्व प्रसार हुआ है लेकिन शिक्षा जगत तथा शासकीय कार्यप्रणाली में उस अनुपात में कार्य नहीं हो पाया। इस तथ्य के साथ ही यह बात भी बिल्कुल सही है कि हिंदी के प्रति हमारी मानसिकता में बदलाव जरूर आया है। साठ और सत्तर के दशक के मुकाबले आज की मानसिकता बदली है। साठ के दशक में हिंदी के प्रति विरोध का जो भाव था उसमें ठोस रूप से कमी आई है। अभी हाल ही में मैंने विशाखापट्टनम में आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन में भाग लिया जहां आंध्र विश्वविद्यालय के कुलपति जी जो स्वयं बहुत अच्छी हिंदी बोलने में सक्षम नहीं थे, ने अपने वक्तव्य में शिक्षण में व्यापक तौर पर हिंदी के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी में सम्यक् प्रवीणता की प्राप्ति हेतु प्राज्ञोत्तर क्रैश कोर्स होना चाहिए। मैं समझती हूँ कि एक दक्षिण भारतीय राज्य के कुलपति का

यह कहना दक्षिण भारत में आ रहे इस परिवर्तन का ही द्योतक था।

आंध्र प्रदेश ही भारत का दक्षिण भारतीय राज्य है जहां हिंदी भवन का निर्माण किया गया है। आंध्र विश्वविद्यालय में राजभाषा हिंदी की नीति और कार्यान्वयन को समर्पित एक वर्षीय कोर्स चलाया जा रहा है। तमिलनाडू और केरल में राजभाषा हिंदी के प्रसार के लिए बहुत सी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां गठित की गई हैं जो बहुत अच्छा काम कर रही हैं। इससे धरातल स्तर पर, हिंदी के प्रति जागरूकता व सौहार्द में वृद्धि हो रही है।

इसी तरह गोवा में आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन में मुझे एक बात ने बहुत प्रभावित किया जब गोवा विश्वविद्यालय के कुलपति जी ने गोवा को राजभाषा कार्यान्वयन के 'ग' क्षेत्र से निकालकर 'ख' में रखने की सिफारिश की। हाल में ही दादरा नगर हवेली, दमन व दीव के प्रशासकों ने भी हमें लिखकर भेजा है कि इन क्षेत्रों को 'ग' क्षेत्र से हटाकर 'ख' क्षेत्र में वर्गीकृत करें। इस केंद्र शासित संघीय क्षेत्र के दोनों माननीय सांसदों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। इस तरह धीरे-धीरे हिंदी के प्रति धरातल परिवर्तन के साथ-साथ और अधिक सहृदयता का भाव नजर आ रहा है जो बहुत सकारात्मक है।

विमानिका : राजभाषा कार्यान्वयन के लिए जहाँ अधिनियम, नियम और संकल्प बने वहीं कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए अलग राजभाषा विभाग भी बनाए गए हैं। आज के संदर्भ में ये राजभाषा विभाग अलग विभाग बन कर रह गए हैं। पूरे संगठन में, पूरे संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए जो समन्वयन कार्य किया जाना था वो संभवतः संपन्न नहीं हो पाया और राजभाषा विभाग संगठन की मुख्यधारा से कहीं अलग हो गया ये मान लिया गया। इस संबंध में आपकी क्या राय है?

वीणा उपाध्याय : देखिए, विभिन्न उपक्रमों में राजभाषा विभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कई जगह मुख्यधारा से जुड़कर भी कार्य किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं जो बहुस्तरीय हैं और इन प्रयासों के परिणाम भी आ रहे हैं। विशेषकर, बैंकों और उपक्रमों में हिंदी का प्रयोग काफी बढ़ा है। अभी हाल ही में मैंने गोवा में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के राजभाषा अधिकारियों के अखिल भारतीय सम्मेलन को संबोधित किया। इस सम्मेलन में उन्होंने एक पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन रखी थी। उसमें उन्होंने दिखाया कि वर्ष 1919 में भी यूनियन बैंक में कार्यवृत्त द्विभाषी रूप से जारी किए जा रहे थे और वर्ष 1975 तक उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 100 बैठकें पूरी कर ली थीं। इस तरह राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में यूनियन बैंक का इतिहास बहुत ही समृद्ध रहा है। साथ ही एक बात और जो मैं यहां जरूर बताना चाहूंगी वह यह है कि वहां राजभाषा से जुड़े अधिकारियों को मुख्यधारा के अन्य विभागों में पदोन्नति का मौका दिया जाता है जो बहुत ही उत्साहवर्धक और आशावादी रखा है।

इसी तरह पीएनबी तथा एनटीपीसी में भी बहुत अच्छा काम हो रहा है। गुवाहाटी में एयरपोर्ट अथॉरिटी के कार्यालय में राजभाषा प्रसार की एक बहुत ही प्रेरणादायक योजना शुरू की गई है जिसके अंतर्गत जो भी कर्मचारी हिंदी में अच्छा काम करते हैं उन्हें उनके परिवार सहित मनपसंद गंतव्य की टिकट दी जाती है।

विमानिका : सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में जहाँ हम आर्थिक विकास की बात कर रहे हैं, विश्व से कदम मिलाने की सोच रहे हैं, ऐसी स्थिति में जब अंग्रेजी संप्रेरण की मुख्य भाषा के रूप में स्थापित हो रही है, हिंदी किस प्रकार अपना स्थान बनाए रख सकती है और इस दिशा में सरकार की ओर से क्या प्रयास रहेंगे?

वीणा उपाध्याय : सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी का प्रसार दोनों ही अंतरंग रूप से जुड़े हुए हैं। जहाँ तक इस दिशा में सरकार द्वारा काम किए जाने की बात है तो राजभाषा विभाग द्वारा इस क्षेत्र में कुछ टूलज विकसित करने के लिए सी-डेक के साथ एग्रीमेंट किया गया था। आप ये मानेंगे कि यह आसान क्षेत्र नहीं है; फिर भी जितनी प्रगति इस क्षेत्र में अभी तक हुई है वह संतोषजनक नहीं है। यहां मैं सी-डेक द्वारा विकसित दो टूलज 'श्रुतलेखन' और 'मंत्रा' की बात करना चाहूंगी। इन दोनों में से 'श्रुतलेखन' तो काफी हद तक ठीक है लेकिन हिंदी अनुवाद के लिए विकसित टूल 'मंत्रा' को उतनी सफलता नहीं मिली है। इसलिए अब हमने यह निर्णय लिया है कि यूजर डिपार्टमेंट और सॉफ्टवेयर डेवलपर के बीच संपर्क स्थापित किया जाना चाहिए क्योंकि हर विभाग, हर मंत्रालय में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों का विशेष संदर्भ होता है। इसलिए अलग-अलग स्थान पर एक ही शब्द का अर्थ अलग-अलग हो जाता है। सी-डेक ने हमें बताया है कि राज्यसभा सचिवालय के साथ इस प्रकार काम करने में उन्हें काफी सफलता मिली है। इसलिए हमने शुरुआत में पांच मंत्रालयों से यह अनुरोध किया है कि वे अपने-अपने मंत्रालय से दो या तीन व्यक्ति जिन्हें चैम्पियन कहा जाएगा को नामित करें जो सी-डेक के साथ मिलकर डोमेन स्पेशलिस्ट के रूप में काम कर सकें। अब अगर इसमें हमें सफलता मिलेगी तो अन्य विभागों और मंत्रालयों में भी हम इसी प्रयोग को आगे बढ़ाएंगे।

यह काम काफी महत्वपूर्ण है। इस परिवर्तन में समय लगना स्वाभाविक है लेकिन यह मानकर कि इस परिवर्तन में समय लगेगा हम कोई निश्चित रणनीति न बनाएं, ये ठीक नहीं होगा।

विमानिका: अभी हाल ही में आपने राजभाषा विभाग में कार्यभार संभाला है आपको कैसा लग रहा है और इस बीच आपने विभाग में क्या नया करने का प्रयास किया है।

वीणा उपाध्याय: मैंने 01 नवंबर, 2010 को यहां चार्ज लिया और मुझे अभी यहां आए लगभग तीन महीने हुए हैं। मुझे यहां काम करना बहुत अच्छा लग रहा है। मैं आपको बताना चाहूंगी कि हिंदी मेरे मन के बहुत करीब है और यह मेरा पसंदीदा विषय रहा है। कॉलेज में पढ़ते हुए मैं बी.ए. की परीक्षा में पूरे पंजाब विश्वविद्यालय में हिंदी विषय में प्रथम रही थी।

इसके अतिरिक्त मैंने बी.ए. ऑनर्स व एम. ए. अंग्रेजी साहित्य में किए। आई.ए.एस. की परीक्षा में भी दो पर्व अंग्रेजी साहित्य व एक हिंदी साहित्य का लिया। अतः मैं सहज रूप से द्विभाषी हूँ।

इस विभाग में काम करना इसलिए भी उत्साहपूर्ण लग रहा है क्योंकि गृहमंत्री महोदय राजभाषा प्रसार की ओर विशेष ध्यान देते हैं और रुचि लेते हैं। यहां आने के बाद सबसे महत्वपूर्ण पहल जो मैंने की है वह मंत्री महोदय के मार्गदर्शन में ही की है। हम जो क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित करते थे उन्हें और कारगर बनाने के लिए माननीय मंत्री महोदय जी ने इन सम्मेलनों को क्षेत्रीय विश्वविद्यालयों और छात्रों से जोड़ने का सुझाव दिया। पहले हम इन क्षेत्रीय सम्मेलनों का आयोजन किसी भी उपलब्ध स्थान पर करते थे परंतु अब हम कोशिश करते हैं कि यह आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में हो ताकि विश्वविद्यालयों के कुलपति, प्रोफेसर तथा छात्र इन सम्मेलनों से जुड़ सकें। अभी तक हमने विशाखापट्टनम और गोवा में इस प्रकार के सम्मेलन किए हैं तथा आगे ऐसे ही दो अन्य समारोह शिमला, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय तथा गंगटोक में भी करने की योजना है।

इसके अतिरिक्त मैंने विभाग की वेबसाइट के व्यापक सुधार की तरफ भी ध्यान दिया है क्योंकि मैं मानती हूँ कि विभाग की वेबसाइट बाहरी लोगों के समक्ष विभाग का चेहरा है। हमने इसे और सुव्यवस्थित, सुरुचिपूर्ण व सर्वपक्षीय बनाया है। राष्ट्रपति आदेशों की अद्यतन स्थिति, क्षेत्रीय अवस्थापना के सचिव प्रस्तुतिकरण के अतिरिक्त आयोजनों की व्यापक कवरेज तथा सदस्य अधिकारियों के चित्र व अर्हताओं के विवरण भी दिए गए हैं। हम अपनी वेबसाइट को बहुआयामी, व्यापक और गहन बना रहे हैं। वेबसाइट को अद्यतन रखने के लिए हमने एडिटोरियल बोर्ड भी गठित किया है। राजभाषा सचिव के रूप में मैं स्वयं उसकी अध्यक्षता करती हूँ। इस बोर्ड की नियमित रूप से माह के प्रति प्रथम तथा तृतीय बृहस्पतिवार को पाक्षिक बैठकें की जाती हैं।

एक और महत्वपूर्ण प्रयास जो हमने किया है वह है हिंदी के प्रसार के लिए विभाग का बजट बढ़ाने की कोशिश। आने वाले वर्ष में विभाग का बजट पाँच करोड़ रुपये से बढ़कर बीस करोड़ रुपए हुआ है। इससे प्रचार पर प्रचुर राशि का प्रयोग किया जाएगा। विभिन्न कल्पनाशील मुद्रण व

दृश्य-श्रव्य माध्यमों से व सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रावधानों, शब्दकोश, आई.टी. टूलज़ महापुरुषों के उद्गारों व उत्कृष्ट प्रयोगों (बेस्ट प्रैक्टिसिस) का व्यापक प्रसार किया जाएगा। विभिन्न प्रकार से विज्ञापनों और होर्डिंग द्वारा हम इस दिशा में और जागरूकता लाने का प्रयास करेंगे।

इसके अतिरिक्त हिंदी अनुवाद, कार्यशाला, पेपर सैटिंग, पुरस्कार राशि आदि से संबंधित पारिश्रमिक की दरें बहुत पुरानी थीं। हमने उन्हें बढ़ाया है। साथ ही इस क्षेत्र में अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा किए जा रहे कार्यों के मापदंड बहुत पुराने थे जिसकी वजह से कार्य उपलब्धि का स्तर बहुत कम हो रहा था और मैं समझती हूँ कि जैसे-जैसे आपका अनुभव बढ़ता जाता है, आपकी कार्यक्षमता भी बढ़ती है तो उसी हिसाब से कार्य के मापदंडों में भी बदलाव जरूरी था। हमने इस दिशा में सुधार किया है।

हमारी उपलब्धि का एक और हिस्सा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों से जुड़ा है। आज की तिथि में हमारे देश में कुल 274 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ हैं और हमारा प्रयास है कि शीघ्र ही यह संख्या 300 हो जाए। पिछले वर्षों में प्रतिवर्ष औसतन 4 से 5 'नराकास' (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ) जुड़ती थीं पर हम सुव्यवस्थित रूप से इस ओर काम कर रहे हैं और हमारा प्रयास है कि प्रतिवर्ष कम से कम 20 से 25 नई नराकास जुड़े। इसके अलावा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों के क्षेत्राधिकारों को और तर्कसंगत बनाने के साथ-साथ हमारे विभाग की अन्य इकाइयों के बीच आपसी समन्वय को भी मैंने और मजबूत करने की कोशिश की है और यह मेरा सौभाग्य है कि मंत्री महोदय की ओर से इस ओर मार्गदर्शन मिलने के साथ-साथ विभाग में मेरे अधिकारियों की टीम का भी मुझे पूरा सहयोग मिला है। यह सभी उपलब्धियाँ इसी का नतीजा हैं।

विमानिका : 'निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल' बरसों बरस पहले भारतेन्दु हरीशचन्द्र ने भाषा और उन्नति के जिन संदर्भों को जोड़ा था आज के समय में आप उन्हें कितना सटीक मानती हैं।

वीणा उपाध्याय: बिलकुल सही है बरसों बरस पहले लिखी गई भारतेन्दु जी कि यह पंक्तियाँ आज भी उतनी ही सटीक हैं। यह निर्विवाद सत्य है कि जो अपनी भाषा का सम्मान करेगा वह दूसरी भाषाओं का भी सम्मान करेगा।

आपकी भाषा आपकी पहचान होती है, आपकी संस्कृति की वाहिका होती है। भाषा के प्रति सम्मान के बिना आप संस्कृतिहीन, सभ्यताहीन समाज की ओर बढ़ने लगेंगे क्योंकि मैं मानती हूँ कि आपके जीवन का सांस्कृतिक, बौद्धिक पक्षों से संबंध भाषा के माध्यम से ही होता है।

विमानिका : विश्व मंच पर आज जिस तरह सभी राष्ट्र अपनी अलग पहचान बनाने के लिए प्रयासरत हैं आपके विचार में विश्व मंच पर भारत की पहचान बनाने में हिंदी क्या और कितनी भूमिका निभा सकती है ?

वीणा उपाध्याय : अगर आज की बात करें तो हिंदी विश्व मंच पर बोली जाने वाली तीसरी भाषा के रूप में है और आंकड़ों के अनुसार लगभग 135 यूनिवर्सिटियों में हिंदी पढ़ाई जाती है और लगभग 93 देशों में बोली जाती है। 110 करोड़ भारतीयों में से 70 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। विदेशों में जो भारतीय रहते हैं उनकी भी संपर्क भाषा हिंदी ही है।

विश्वमंच पर हिंदी की पहचान को और सुदृढ़ करने के लिए हिंदी को यूएन की भाषा बनाने के प्रयास जारी हैं और मैं मानती हूँ कि हिंदी की अपनी अलग पहचान बनी

हुई है। अभी हाल ही में मॉरिशस में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जहाँ मॉरिशस के राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने अपना अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। इस अवसर पर हिंदी के प्रसार पर विचार संगोष्ठी का भी आयोजन हुआ जिसमें मैंने व अन्य कई अंतरराष्ट्रीय स्तर के बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। मॉरिशस में हिंदी के प्रयोग के लिए बहुत सकारात्मक वातावरण है और मॉरिशस ने हिंदी के संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने में अपना समर्थन देने की उत्साहित तत्परता प्रकट की है।

विमानिका : अब एक व्यक्तिगत प्रश्न-आपकी रुचियाँ क्या हैं और आपकी व्यस्त दिनचर्या में फुरसत के क्षणों में आप क्या करना पसंद करती हैं ?

वीणा उपाध्याय : मुझे पढ़ने का बहुत शौक है। मैं आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और पर्यावरण आदि जैसे विषयों पर किताबें पढ़ना पसंद करती हूँ। इसके अलावा मुझे बागवानी का शौक है, व्यवस्थापरक सुधारों का शौक, नई जगहें देखना, नए लोगों से मिलना भी मुझे बहुत अच्छा लगता है।

प्रस्तुति : मेखला दत्ता, उप महाप्रबंधक, (राजभाषा)

लेखक कृपया ध्यान दें

‘राजभाषा भारती’ में प्रकाशनार्थ ज्ञान-विज्ञान की सभी विधाओं पर स्तरीय लेख आमंत्रित किए जाते हैं। लेख पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। लेख ए-4 आकार के कागज पर टाइप किया हुआ होना चाहिए जो सामान्यतः तीन हजार शब्दों से अधिक का न हो। कृपया नोट करें कि हस्तलिखित लेख स्वीकार नहीं किए जाएंगे। लेख के साथ इस आशय का घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है।

यदि किसी कारणवश किसी लेख को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा। कृपया इस संबंध में पत्राचार न करें।

कृपया लेख निम्नलिखित पते पर भेजें :—

संपादक/सहायक संपादक

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय)

कमरा सं. ए-4, द्वितीय तल, लोकनायक भवन,

खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

पाठकों के पत्र

“राजभाषा भारती” अंक 127 (अक्टूबर-दिसंबर, 2009) नवोदित सूर्य की भाँति ताजगी, स्वच्छता एवं उजाला प्रदान करती है। विद्वजनों के लेख ज्ञान का सागर होते हैं। वर्तमान में हिंदी की दशा व दिशा, बढ़ते कदम, फैलता दायरा प्रसन्नतादायी होता है। विश्व हिंदी सचिवालय, रोजगार व प्रसन्नता इण्टरनेट पर बढ़ते कदम हिंदी का उज्ज्वल भविष्य दर्शाते हैं। “देवनागरी लिपि एवं वर्तनी” ज्ञानवर्धक लगा। संपादकीय लेख गागर में सागर लगा। भाषा के सरलीकरण पर जोर देना बेहद अच्छा लगा।

—डॉ. आर. डी. चर्मा

434 (19-1) हुडा कैथल, (हरियाणा)-136027

“राजभाषा भारती” (अक्टूबर-दिसंबर, 2009) 127 से अंतिम पृष्ठ तक सुंदर एवं मोहक होने के साथ-साथ हिंदी के महत्व को प्रगट करता है। अंक का संपादकीय भी सदैव की तरह रोचक है। सभी स्तंभों के लेख राजभाषा के प्रचार-प्रसार और बढ़ते प्रयोग के प्रमाण का बोध कराते हैं। उच्चकोटि की विचारधाराओं और दार्शनिकता से ओतप्रोत हैं। चिंतन स्तंभ में श्री क्षेत्रपाल शर्मा द्वारा प्रस्तुत पांचवे क्रमांक का लेख “देवनागरी लिपि वर्तन एवं प्रयोग” तो विस्तृत व्याख्यापूर्ण वर्णन का बखाननीय प्रशंसनीय, अनुकरणीय नमूना ही है जिसमें अध्येता व अध्ययनकर्ता के लिए सूक्ष्म से सूक्ष्म बिंदुओं को हिंदी भाषा के व्याकरण के महत्व की बड़ी सराहनीय मीमांसा स्पष्ट की है। अनुस्वार, पूर्णविराम तथा स्वरों तथा व्यंजनों के क्रमबद्ध प्रयोगों व उपायोगों से अर्थ, अर्थ परिवर्तन को समझाने वाला व्याख्यापूर्ण लेख है यह जिसे पढ़कर हिंदी के अध्यापक व शिक्षक के ज्ञान में वृद्धि होना सहज सिद्ध है। इसी तरह से डॉ. इंद्र सेंगर ने अपने लेख “राजभाषा हिंदी की व्यवहार्यता” द्वारा दैनिक एवं कार्यालयीन जीवन में हिंदी की व्यावहारिक भूमिका को रुचिपूर्ण ढंग से उजागर किया है। संस्कृत स्तंभ के लेख-तमिल प्रदेश में मंदिर संस्कृति का विकास ऐतिहासिक क्रमिक प्रगति का बोधपूर्ण उल्लेख भी पठनीय तथा उल्लेखनीय है। विविध स्तंभ में डॉ. आरसु के निबंध में—“गांधी विवेक-हिंदी स्वराज” सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा देने वाले विचारोत्तेजक और दिशा निर्धारक तत्वों का समावेश किया गया है।

—हरिश्चंद्र सागरमल अग्रवाल

शिवकृपा भवन, वानखेडे नगर, डाबकी रोड, आकोला (विदर्भ), महाराष्ट्र-444002

त्रैमासिक पत्रिका “राजभाषा भारती” अंक 126 एवं 127 के माध्यम से कई कार्यालयों की हिंदी संबंधी गतिविधियों की अद्यतन सूचनाएं मिलती रहती हैं। पत्रिका में प्रकाशित साहित्यिक व विविध आदि सभी सामग्री पठनीय एवं प्रभावशाली है।

हमारी ओर से पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

—जे. प्रसाद

सहायक निदेशक (राजभाषा) क्षेत्रीय कार्यालय (ओड़िशा), कर्मचारी राज्य बीमा निगम,

प्लॉट नं. एच आई जी-3, गंगाधर मेहर नगर, जयदेव विहार, भुवनेश्वर-13

“राजभाषा भारती” का अंक 127 (अक्टूबर-दिसंबर, 2009) पत्रिका में राजभाषा हिंदी की व्यवहार्यता, नए-नए शब्दों तथा दिशा-निर्देशों के साथ-साथ वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता पर विचार तथा संविधान के सभी उपबंधों पर पुनः उच्चस्तरीय विचार-विमर्श की सख्त जरूरत जैसे लेखों का समावेश अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सराहनीय है।

—देवकी दे. शेटीगार

हिंदी अधिकारी, रक्षा लेखा अपर नियंत्रक प्रभारी,

वेतन लेखा कार्यालय (अन्य श्रेणी), तोपखाना/से.वा.र., लेखानगर, नाशिक-422009

“राजभाषा भारती” का अंक 127 (अक्टूबर-दिसंबर, 2009) पत्रिका में राजभाषा हिंदी की व्यवहार्यता, नए-नए शब्दों तथा दिशा-निर्देशों के साथ-साथ वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता पर विचार तथा संविधान में हिंदी की स्थिति पर लिखे गए पाठ में राजभाषा हिंदी से संबंधित संविधान के सभी उपबंधों पर पुनः उच्चस्तरीय विचार-विमर्श की सख्त जरूरत जैसे लेखों का समावेश अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सराहनीय है।

—एस. एस. राय

मेजर एंडजुटेन्ट कृते कमांडेंट,

21 असम राइफल्स, पिन-932021, मार्फत 99, सेना डाकघर

‘राजभाषा भारती’ का अंक 127 (अक्टूबर-दिसंबर 2009) पत्रिका में राजभाषा संबंधी जानकारी पत्रिका से मिलती है। काव्य मूल्य दलित विमर्श, जनसंचार, तमिल संस्कृति जैसे विषयों पर केंद्रीय विद्वानों के चिंतन भी ज्ञानवर्धक लगे।

—डॉ. आरसू

प्रोफेसर, हिंदी विभाग,

कालिकट विश्वविद्यालय, कालिकट, केरल-673635

‘राजभाषा भारती’ के अंक 127 (अक्टूबर-दिसंबर, 2009) पत्रिका में समाहित लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। विशेष रूप से डॉ. परमानंद पंचाल का ‘रोजगार और हिंदी’ तथा डॉ. इंद्र सेंगर का ‘राजभाषा हिंदी की व्यवहार्यता’ सरीखे आलेख रोचक जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ सोच के दायरे को भी बढ़ाते हैं।

पत्रिका की ‘सादगी में सुंदरता’ वास्तव में आकर्षक है। संपादक-मंडल इसके लिए बधाई का पात्र है।

—डॉ. वी. एम. बरेजा

प्रबंधक (रा. भा.),

ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान, असम

त्रैमासिक पत्रिका “राजभाषा भारती” (जुलाई-सितम्बर, 2009) में सामाजिक, सांस्कृतिक, वैचारिक, शैक्षणिक और चिंतनीय लेख रोचक और पठनीय हैं। जिस तरह हिंदी के बढ़ते आयाम की सारी जानकारीयों इस पत्रिका में समाहित हैं वैसे किसी दूसरी पत्रिका में मुझे देखने और पढ़ने को नहीं मिला।

प्रो. शंकर बुंदेल का लेख “भूमंडलीकरण के संदर्भ में हिंदी” श्री मुरारी प्रसाद का लेख “वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता”, डॉ. उत्तम पटेल की रचना “हिंदी शोध : सामप्रत स्थिति, चुनौतियां एवं सम्भावनाएँ”, श्री अमरीश सिन्हा, डॉ. हरीश कुमार सेठी, श्री देव प्रकाश मिश्र की रचना “दलित कठघरे में संत कबीर”, डॉ. विभा त्रिपाठी, श्री कुलदीप कुमार, डॉ. एम. एस. शर्मा, डॉ. अखिलेश शुक्ल, सी. वल्लभ डोभाल इत्यादि की रचनाएं काफी रोचक और साहित्यिक दृष्टि से उत्तम हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

हिंदी की शान को आगे बढ़ाने में सहायक और सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को ढेर सारी शुभकामनाएं।

—अवधेश कुमार

खान सर्वेक्षण पदाधिकारी,

मेघाहातुबुरु लौह अयस्क खदान रॉ मेटेरियल्स डिविजन, भारतीय इस्पात प्राधिकरण लि.,

पो. मेघाहातुबुरु, जिला-पश्चिमी सिंहभूम, झारखंड-833223

“राजभाषा भारती” अंक 127 (अक्टूबर-दिसंबर-2009) अंक में समाविष्ट चिन्तन में राजभाषा हिंदी को विभिन्न व्यापक व बहु आयामिक विवेचनात्मक तौल में उजागर करने का सफल प्रयास सराहनीय है। समाविष्ट विचारोत्तेजक, ज्ञानप्रद चिन्तन स्तम्भ, स्वमेव परिपक्व बौद्धिकता का विशिष्ट उच्चारण है और हिंदी की नवीनतम पहचान व व्यापकता के धरातल

को विवेचनात्मक और विश्लेषणात्मक पकड़ के जरिये एक निचोड़ में परखने का प्रस्तुति सचमुच में अभूतपूर्व है। साहित्यिक स्तम्भ में "काव्य के.....दृष्टिकोण" व "डॉ. रामकुमार शर्मा....." आदि के समीक्षात्मक लेखों से हमें एक नई दृष्टि मिलती है। विश्व हिंदी दर्शन, प्रबंधन, पत्रकारिता, संस्कृति व राजभाषा संबंधी गतिविधियों आदि स्तम्भों के मनन से प्रत्येक पाठक को एक और नई दिशा की ओर बढ़े चलने की सबल स्वर मिलती है। दक्ष व कुशल संपादक मण्डल विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

—शिबराज प्रधान

धूर्माचपरा टी गार्डन, पो. रामझोरा, जलपाईगुड़ी-(प.बं.)-735228

राजभाषा भारती का अक्टूबर - दिसम्बर, 2009 अंक 127 सम्पूर्ण देश में राष्ट्रभाषा हिंदी को जन-जन में राजभाषा के रूप में स्थापित करने हेतु एक सेतु की भूमिका निर्वहन कर रही है। अंक में संविधान में राजभाषा हिंदी की स्थिति और प्रास्थिति रोजगार और हिंदी की व्यवहार्यता, हिंदी शब्दों का सुन्दर लोकतंत्र, देवनागरी लिपि की प्रभावशाली सामग्री पढ़ने को मिली है। अंक में साहित्यिकी, विश्व हिंदी दर्शन, प्रबंधन, पत्रकारिता, संस्कृति के साथ राजभाषा संबंधी गतिविधियों पर रोचक सामग्री पठनीय बन पड़ी है।

—अशफाक कादरी

महमूद मंजिल, रामदेव मंदिर के सामने, मोहल्ला चूनगरान, बीकानेर-334001 (राजस्थान)

राजभाषा भारती पत्रिका में राजभाषा की विभिन्न गतिविधियों तथा रोचक विषयों का समावेश बहुत ही अच्छे ढंग से किया गया है। इस पत्रिका से हमारे निगम के कार्यालयों में हिंदी का प्रचार-प्रसार होगा तथा सरकारी कामकाज में हिंदी की गति बढ़ेगी।

धन्यवाद,

—कविता दास

उप-प्रबंधक (का. व प्रशा.)

नार्थ इस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कार्पोरेशन लिमिटेड, कार्मिक व प्रशासन स्कंध, नीपको भवन,

आर.जी बरूआ रोड, सुन्दरपुर, गुवाहाटी-5

"राजभाषा भारती" त्रैमासिक अक्टूबर-दिसम्बर, 2009 का प्राप्त धन्यवाद। 32 साल से लगातार "राजभाषा भारती" हिंदी में प्रकाशित हो रही है, गर्व की बात है। हर एक सरकारी कार्यालयों में श्रीगणेश होगा, तो हर राज्य उस ओर आकृष्ट होंगे। पत्रिका से काफी जानकारी प्राप्त होती है। संपादक मंडली साधुवाद के पात्र हैं।

—बी. एस. शांताबाई

प्रधान सचिव,

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बेंगलूर-560018

पत्रिका "राजभाषा भारती" अंक 127 का मुख आवरण "भारतीय मानचित्र की वास्तविक स्थितियों का समीकरण" आदि भाव सुस्पष्टता से परिलक्षित हो रहा है। राजभाषा ज्ञान पथ जलीय, थलीय एवं वायु सीमाओं को लांघता हुआ सुदूर राज्यों की संघटनाओं में, संवेदनाओं में एवं भावनाओं में आच्छादित होता जा रहा है। ज्ञानदीप की मनोगाथा के सजग प्रहरी, सदैव चेतनावान हों, यही शुभकामनाएँ हैं।

—त्रिरत्न

सहायक निदेशक (रा.भा.)

क्षेत्रीय कार्यालय (तमिलनाडु), कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन 143,

स्टर्लिंग रोड, चेन्नै-34

पत्रिका राजभाषा भारती का 127वां अंक में आपका यह प्रयास हमें बहुत सराहनीय लगा। उसमें प्रकाशित सभी रचनाएं सारगर्भित ज्ञानवर्धक हैं। अन्य कार्यालयों की गतिविधियों की जानकारी हमें प्रेरणा देती है। उपयोग में लाई गई भाषा सरल, सहज सुंदर है। सभी लेख तथा कविताएं पठनीय तथा संग्रहनीय हैं।

—म. ल. तांबे

वरिष्ठ लेखाधिकारी (र.ले.वि.), एच.ए.एल. (ना.प्र.), ओझर, नाशिक

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका “राजभाषा भारती” के 127वें (अक्टूबर-दिसम्बर, 2009) अंक में समाहित समस्त सामग्री पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है।

डॉ. एम. सी. पाण्डेय, का लेख “संविधान में राजभाषा हिंदी की स्थिति और प्रास्थिति” डॉ. राजेश्वरी चौधरी की “व्याख्या” काव्य के संबंध में नवीन दृष्टिकोण, डॉ. इन्द्र सेंगर का लेख “राजभाषा हिंदी की व्यावहार्यता”, श्री क्षेत्रपाल शर्मा का लेख, “देवनागरी लिपि, वर्तनी एवं प्रयोग”, श्री राकेश शर्मा का “विश्व हिंदी सचिवालय का सफरनामा”, श्री सी. एल. एस. टण्डन का लेख “भावनात्मक बुद्धिमत्ता”, बहुत उपयोगी हैं। डॉ. आरसु का लेख “गाँधी विवेक- हिन्द स्वराज में”, श्री राजेन्द्र सिंह का लेख “प्रभावी नेतृत्व एवं शाखा प्रबंधन में शाखा प्रबंधक की भूमिका” तथा पत्रिका का संपादकीय रोचक एवं सराहनीय हैं। राजभाषा संबंधी गतिविधियों एवं छायाचित्र संचाचारों के नियमित स्तम्भ प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायी हैं।

—अशोक कुमार भार्गव

लेखाधिकारी/राजभाषा

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग, प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), राजस्थान

त्रैमासिक पत्रिका “राजभाषा भारती” वास्तव में एक सशक्त माध्यम है राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए जो हिंदी प्रेमी के लिए ज्ञान का स्रोत का साधन है। हिंदी कार्यान्वयन योजनाओं एवं विभिन्न कार्यालयों द्वारा हिंदी गतिविधियों पर आधारित आपका प्रयास सराहनीय है। अंक 127 में प्रकाशित लेख “देवनागरी लिपि, वर्तनी एवं प्रयोग” लेखक क्षेत्रपाल शर्मा का प्रयास इन्हीं हिंदी सीखने वालों का मार्गदर्शन करता है। किंतु बड़े विनम्र के साथ कहना पड़ रहा है कि लेखन में कठिन शब्दों का जो प्रयोग किया गया है। इसे इस प्रकार के लेखों की आवश्यकता है, जो सरल भाषा में हो, तभी हम अपना दायरा बढ़ा सकते हैं।

—ए. जस्टिन

कार्यालय अध्यक्ष,

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, अण्डमान एवं निकोबार क्षेत्रीय केंद्र, पोर्ट ब्लेयर-744101

राजभाषा भारती अक्टूबर-दिसम्बर, 2009 अंक में डॉ. परमानंद पांचाल का आलेख “रोजगार और हिंदी” अत्यंत सामाजिक और उपयोगी रचना है। इस तरह के अन्य रोजगारोन्मुख आलेखों को आपकी लोकप्रिय पत्रिका में बराबर स्थान मिलना चाहिए। कुछ राज्यों में हिंदी की दयनीय स्थिति को देखकर रोना आता है। निःसन्देह आप भी परिचित होंगे। इस स्थिति से उबरने का एकमात्र तरीका यही है कि इस भाषा को उपयोगी और अत्यंत उपयोगी बनाया जाय। इसे रोजगार से जोड़ने की अत्यंत आवश्यकता है। प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ-साथ हिंदी में काम करने की पूरी छूट हर राज्य में मिलनी चाहिए। हम सबका दायित्व है कि हिंदी के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाया जाए।

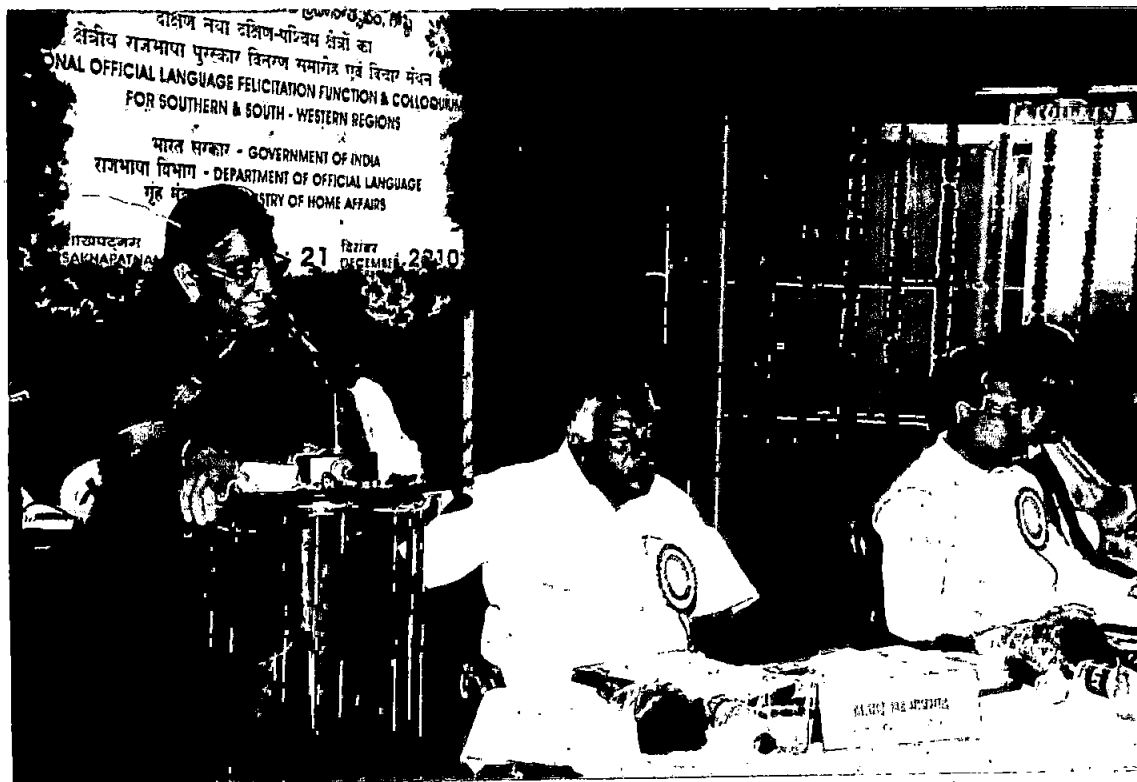
—डॉ. अकेलाभाइ

सचिव (मानद)

पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी, रेडियो कॉलानी, पो. रिन्जा, शिलांग-793006 (मेघालय)



विशाखापट्टणम में दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार समारोह एवं विचार मंथन में भाषण देते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय माकन जी ।



विशाखापट्टणम में दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार समारोह एवं विचार मंथन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए सुश्री वीणा उपाध्याय, सचिव भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ।



“यदि हम अंग्रेजी के आदी नहीं हो गए होते, तो यह समझने में देर नहीं लगती कि अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने से हमारी बौद्धिक चेतना जीवन से कट कर दूर हो गई है। हम अपनी जनता से अलग हो गए हैं, जाति के सर्वश्रेष्ठ विभागों का विकास रुक गया है और जो विचार हमें अंग्रेजी के माध्यम से मिले, उन्हें हम जनता में फैलाने में नाकामयाब रहे हैं। जो विरासत हमें अपने-अपने बाप-दादा से हासिल हुई, उसके आधार पर नवनिर्माण करने के बदले हमने उस विरासत को भूलना सीखा है। इस दुर्गति की मिसाल सारी दुनिया के इतिहास में नहीं है। यह तो राष्ट्रीय शोक का विषय है। आज की सबसे पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि हम अपनी देशी भाषाओं की ओर मुड़े और हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करें।”

महात्मा गांधी